- इस संग्रह का आरम्भ जिस काव्यमय कथा से हुआ है, उसमें इस पूरे सग्रह मे अंतर्निहित मूल भावना तथा प्रेरणा का उद्‌बोधन किया गया है।

- और अंतिम कहानी मे इस शताब्दी की आखिरी रात में अपने को प्रतिष्ठापित कर के लेखक ने अगली शताब्दी की अद्‌भुत परिकलपना प्रस्तुत की है।

- नाजी दमन के क्रूर हाथो से बाल-बाल बचे बीस विशिष्ट, ख्याति-प्राप्त लेखक जिन्होने नये, शांतिपूर्ण जर्मनी के निर्माण मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

- २० विशिष्ट, श्रेष्ठ कहानियाँ, प्रत्येक अपने लेखक की चहेती।

- २० आधुनिक लेखको की २० आधुनिक कहानियाँ।

बीसवीं सदी की आख़िरी रात

अनुवादक : ओम प्रकाश सिनहा

शब्दपीठ
१६४, सोहबतियाबाग, इलाहाबाद-६

प्रकाशक
शिव कुमार सहाय
शब्दपीठ
१९४, सोहबतियाबाग
इलाहाबाद-६



चित्रकार
दीना नाथ सरोदे



मुद्रक
श्री प्रकाश
धारा प्रेस
६०९, कटरा
इलाहाबाद-२



प्रथम संस्करण : अक्तूबर, १९६८ ईसवी
मूल्य : छह रुपये पचास पैसे

भूमिका

वाइमर नगर, जहाँ गेटे और शिलर ने अपने जीवन को जिया और अपने ग्रथो की रचना की थी, उन दक्षिण पश्चिमी पहाडियो के बीच बसा हुआ है जो आज जर्मन जनवादी गणतत्र के अतर्गत है। यह सस्कृति के मदिर जैसा है। और जिस शाही कोठी मे गेटे रहा करते थे तथा कस्बे के जिस सुन्दर मकान मे शिलर का निवास था वे आज अजायबघर बन गये है। जिन डेस्को पर वे लिखा करते थे, जिन कमरो मे वे अतिथियो का स्वागत-सत्कार करते थे, जिन कुर्सियो पर बैठते थे, जिन मेजो पर खाना खाते थे और जिन बिस्तरो पर वे सोते थे तथा प्राण-त्यागे थे वे ज्यो के त्यो उसी रूप मे आज भी बने हुए है जिस रूप मे वे उनका इस्तेमाल करते थे, ताकि दुनिया उन्हे देख सके।

नगर की छायादार सडको और अच्छी तरह सुरक्षित घास के मैदानो से आगे बढते ही एक अन्य मदिर है जिसे जर्मन जनवादी गणतत्र ने दुनिया के देखने के लिए सुरक्षित रखा है यह मदिर अनेको राष्ट्रो के उन हजारहो-हजार पुरुषो, स्त्रियो और बच्चो का स्मारक है, जिन्होने बुकेनवाल्ड यातना शिविर मे अपनी जान से हाथ धोया था। परम्परागत सास्कृतिक केन्द्र से, जो पुराना वाइमर नगर था, कुछ ही दूरी पर बुकेन-वाल्ड यातना शिविर के मुख्य भवन आज भी उसी रूप मे खडे हुए है जिस रूप मे वे उस समय खडे थे जब नाज़ियो ने उन्हे निर्मित किया था और मासूम लोगो को यातना देने और उन्हे मौत के घाट उतारने के लिए उनका इस्तेमाल किया था।

यहाँ एक भिन्न सस्कृति, हिटलरवादियो की सस्कृति, ऐसे रूप में देखी जा सकती है कि उसे कभी भुलाया न जा सके। यहाँ उन मृत वीरो की याद हो आती है, जिन्हे इस सस्कृति द्वारा कत्ल किया गया था। यहाँ उन जीवित वीरो का भी स्मरण हो आता है जिन्होंने यातना-शिकजो और भयोत्पादक आतकपूर्ण कोठरियो के बावजूद उस सस्कृति के विरुद्ध सघर्ष किया।

बुकेनवाल्ड से वापस लौटते समय आदमी चुपचाप यही आश्चर्य करता हुआ चलता है कि उस भयकर यातना और आतक मे कैसे कोई जीवित बचा रह गया? और वे लोग कैसे जीवट वाले होगे जिन्होने नाज़ी जेलो मे वर्षो बिताया होगा, और वे कैसे वीर होगे जिन्होने केवल भाग कर मौत से अपनी जान बचायी होगी?

लोग यातनाओ और आतक के बावजूद बचे ही रह गये। आपकी उनसे भेट भी होती है। आप उनसे बातचीत भी करते है। आप उनके मौत के मुँह से बच निकलने का राज़ जानने का प्रयत्न करते है। आपको इस प्रयत्न मे केवल एक सूत्र मिल पाता है—विश्वास का सूत्र जिसे भुठलाया नही जा सकता, एक ऐसा विश्वास जिससे वे सभी सुपरिचित थे . कि वे नाज़ीवाद के आतक से मुक्त जर्मनी को अपनी आँखो देखने के लिए जीवित रहेगे, एक ऐसे जर्मन राष्ट्र को देखने के लिए, जिसका सब-कुछ शाति तथा जीवन के स्तुत्य मार्गो के प्रति समर्पित होगा।

यह पुस्तक कुछ ऐसे जर्मन लेखको द्वारा लिखी हुई कहानियो का सग्रह है, जो उस दिन को देखने के लिए जीवित रहे जब उन्हे यातना शिविरो और कारागारो से मुक्ति मिली, जब उस देश-निकाले से उनको मुक्ति मिली जिसने उन्हे पृथ्वी के चारो कोनो पर ले जा पटका था, और तब उन्होंने अपने उस विश्वास को पूर्ण होते देखा। यह जर्मन जनवादी गणतत्र मे निवास कर रहे उन अनेको लेखको मे से थोडे से लेखको का

ही तबका है, जो इस अतीत और इस वर्तमान के साझीदार है, जो इस भविष्य के निर्माण के लिए कार्यरत है। इस तरह के व्यक्तिगत इतिहास को ले कर जीने वाले समस्त लेखको की रचनाओ का सकलन तैयार किया जाय तो शायद अनेक ग्रथ तैयार हो जायँगे।

इस पुस्तक मे सग्रहीत प्रत्येक कहानी को स्वय उसके लेखक ने अपनी प्रिय रचना के रूप मे चुना है। कुछ लेखको ने अपनी कथावस्तु के लिए अतीत की गहराइयो मे गोता लगाया है, कुछ ने अपने चारो ओर फैले ससार का विश्लेषण किया है और कुछ ने भविष्य का सपना देखा है। सभी ने पूरी ईमानदारी, लेखन-कौशल और मनोयोग से अपनी रचना का प्रणयन किया है।

हमे आशा है, पाठक इस पुस्तक का जर्मन कहानियो के एक स्तुत्य सकलन के रूप मे स्वागत करेंगे।

—प्रकाशक



अनुक्रम

विचार-बिन्दु		९-१४
मैं अवश्य देखूँगा वह दिन	वीलैंड हेर्जफील्ड	१०
परीक्षा-काल		१५-१०४
वह कैदी	वूल्फगंग जोहो	१६
दो मिनट	ब्रूनो एपिट्ज़	२६
पनाह	अन्ना सेगर्स	४२
पीला सितारा	एलेक्जेंडर एबुश	५४
काला मूर्ख	जूरिज़ बेजान	६६
मौन का पिंजड़ा	ओटो गोट्शे	७६
वह बूढ़ा लँगड़ा	विली ब्रेडेल	८२
नकाबों की वापसी	आर्नाल्ड ज्वेग	९२
संटिये	वाल्टर गॉरिश	१००
अन्तकाल		१०५-१३६
नील हंस की यात्रा	बोडो यूहसे	१०६
युवा सैंसर	एल्फ्रेड कुरेला	११८
बुढ़िया और चील	एलेक्स वेडिंग	१२४
शेयरहोल्डरों की बैठक	लुडविग रेन	१३२
१९४५ के बाद		१३७-२४८
तुम ऐसा नहीं कर सकते	हेलमट सैंकोवस्की	१३८
यातना शिविर का कमान्डर	स्टीफेन हर्मलीन	१८०
माँ और बेटा	एलफ्रीड बुर्यानिग	२०२
वह सुबह भी आ ही गयी	मैक्सिमिलियन शीर	२१६
सुन्दरी लियाने	लुडविग ट्यूरेक	२३८
आगे आने वाला समय		२४९-२६२
बीसवीं सदी की आखिरी रात	स्टीफन हीम	२५०

विचार-विन्दु

मै अवश्य देखूँगा वह दिन

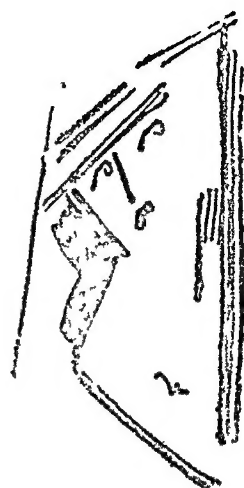
वीलैड हेर्ज़फील्ड

मैं अवश्य देखूँगा वह दिन

इस कविता के रचयिता

वीलैंड हेर्ज़फ़ील्ड

स्वयं अपनी मर्ज़ी से जर्मन बने हैं। सन् १८९६ में स्विटजरलैंड में जन्मे। बाल्य-काल आस्ट्रिया में बीता और विद्यार्थी-जीवन बर्लिन में। प्रथम विश्व-युद्ध के समय वे समाजवादी बन गये। सन् १९१८ में बर्लिन में मलिक पब्लिशिंग हाउस की स्थापना की और सन् १९३३ में उस समय तक वहीं जमे रहे जब तक उन्हें नाजियों से अपनी जान बचा कर भागना नहीं पड़ा। सन् १९३९ तक प्राग में प्रकाशन-कार्य जारी रखा और युवा लेखकों तथा कवियों को प्रोत्साहित करते रहे। काफी बड़ी मात्रा में सोवियत तथा अन्य प्रगतिशील साहित्य का प्रकाशन किया। न्यूयार्क जाने पर वहाँ सन् १९४८ तक वे एक फ़ासिस्ट-विरोधी पत्रकार के रूप में काम करते रहे। सन् १९४८ मे जर्मनी वापस लौट आये। सन् १९५९ तक लीपजिग विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर के रूप में काम किया। उनकी पुस्तकों में प्रमुख हैं 'एवरग्रीन' (१९४९), एक आत्मकथा 'रिटेन ऑन दि वे' (१९५८) और अपने उस कलाकार भाई जॉन हार्टफील्ड पर लिखी गयी पुस्तक, जिसने 'फ़ोटो मान्टेज' प्रक्रिया का विकास किया था। सन् १९५९ में हेनरिच हेइन पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।



मैं देखूँगा, अवश्य देखूँगा
वह दिन !
सम्भव है, मोटा चश्मा लगाना पड़े
पढ़ने को वह समाचार,
या कि मेरा युवा पुत्र
मदद करे मेरी,
कुरसी पर बैठे-बैठे,
देखने मे खिड़की से,
हर्ष से काँपते हुए,
या यह भी सम्भव है,
मेरा पौत्र पढ़ कर सुनाये
पुष्फ वृद्ध, अध व्यक्ति को !

कोई बात नही,

देखूँगा मै वह दिन,
जब कि योरप की राजधानियो में—
जहाँ सीटी बजाती थी केवल पुलिस,
जहाँ याद भी मेरी, मेरे मित्रो की
अपराध थी,
जहाँ वह जो हँसता था
मनुष्यद्वेषी था,
और वह जो रोता था,
रोता था अँधेरे मे——
मै देखूँगा वह दिन
जब दृढ-प्रतिज्ञ सैनिको की एक सेना,
न्याय की ध्वजा लिये,
गुजरेगी सहस्र नगरो से,
मार्च करती, मार्च करती, मार्च करती,
बढती, बढती और बढती,
जब कि हजार नगरो से,
पहाड़ियो से, खानों से, वनों से
(जहाँ वे घायल हरिण से रहते रहे)
लाखो लाख मिल रहे होगे उस सेना में—
एक नये, बेहतर संसार की
सेना मे।

मै देखूँगा वह दिन
जब वे जिन्होने
सीमाएँ तोड़ दी
और सैकडो अन्य बना डाली,
जिन्हो ने बन्दी बना लिया
योरप के राष्ट्रों को,
बदहवास,
माथे से भय का पसीना बहाते,
भागेगे खुले सीमांतो की ओर,
भाग निकलने को,
किसी दास की शरण में,
जो छिपा लेगा उन्हे ।
कोई सीमात न होगा,
महासागर के सिवा,
लाखो-लाख मे
कोई न होगा दास—
कुछ नही योरप के सिवा :
एक गरजती दृढ-प्रतिज्ञ सेना ।
वे बोलते है यद्यपि
अनेक भाषाएँ,
ससार समझता है
इन सैनिको को ।

अपरिचित, हैरान करते-से यद्यपि,
चेहरे उनके होंगे
भाइयों जैसे।

हर व्यक्ति हर जगह,
जो घृणा करता है
स्वस्तिका से,
जान लेगा यह,
जैसे मैं जानता हूँ :
यह मेरी सेना है।
सन्देह न करो—
मैं देखूँगा वह दिन :
और तुम भी।



परीक्षा-काल

वह कैदी
वूल्फ़गैंग जोहो

दो मिनट
ब्रूनो एपिट्ज़

पनाह
अन्ना सेगर्स

पीला सितारा
एलेक्जेंडर एब्रुश

काला मूर्ख
जूरिज ब्रेजान

मौत का पिंजड़ा
ओटो गोट्शे

वह बूढ़ा लँगड़ा
विली ब्रेडेल

नकाबों की वापसी
अर्नाल्ड ज्वीग

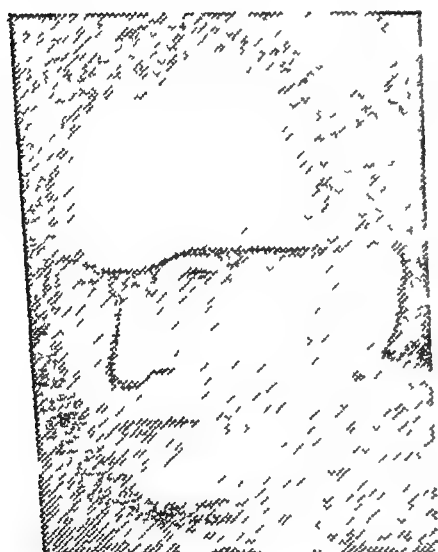
भेड़िये
वाल्टर गोरिश

वह कैदी

इस कहानी के लेखक

वूल्फ़गैंग जोहो

का सन् १९०८ में एक साहित्यिक परिवार में जन्म हुआ था। सन् १९२९ में वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो गये और विश्वविद्यालय में अपनी डॉक्टर की उपाधि प्राप्त करने के कार्य में जुट गये। सन् १९३७ में गेस्टैपो द्वारा अपनी गिरफ्तारी के पहले तक वे पत्रकारिता के पेशे में लगे रहे। उन्हें तीन वर्ष कैद की सजा भुगतनी पड़ी और रिहाई के बाद उन्हें पत्रकारिता का कार्य जारी रखने का अधिकार देने से इनकार कर दिया गया। सन् १९४३ में उन्हें बदनाम बटालियन नं० ९९९ (मृत्यु दून टुकड़ी) में जबर्दस्ती भर्ती कर लिया गया और युद्ध-बंदी बना लिया गया।



सन् १९४६ में वे जर्मनी वापस आये और बर्लिन के एक साहित्यिक साप्ताहिक पत्र में नौकरी कर ली। बाद में वे एक मासिक पत्र के प्रधान सम्पादक हो गये। उनके उपन्यासों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है: 'ऐन एंड टु ऑल इम्प्रिजनमेंट' तथा 'जेर्न. पीस्टॉन' (१९४९); 'एस्केप फ्रॉम लोनलीनेस' (१९५३), 'दि टर्निंग प्वाइंट' (१९५७)। इसके अतिरिक्त उन्होंने प्रारम्भिक काल के अत्यधिक कल्पनाशील कम्युनिस्ट विल्हेम वीटलिंग का रोचक जीवन-चरित्र भी लिखा है।



मैथियाज बहुत भारी-भरकम और भद्दा-सा बेवेरिया-निवासी था, जो किसी हिंसात्मक अपराध के कारण कंसेंट्रेशन कैम्प मे आ गया था। वह बडी मोटी बुद्धि का आदमी था इसलिये हम उसे हियारल के अति-रिक्त और कुछ नही कहते थे। वह अपने को स्वय अपने ही अन्दर सीमित रखना पसद करता था, और मौका मिलने पर अपनी मर्जी के मुताबिक काम भी किया करता था। अगर कोई उससे किसी अन्य टोली की मदद करने को कहता तो वह अपनी बाहो के बल्ले हिला कर बेवेरियाई बोली मे कहता—"मै ऐसा मूर्ख नही हूँ! तुम चाहते हो कि सारा काम मै कर दूँ और तुम सब लोग मजे उडाओ, क्यो ?"

और जब उसे किसी टोली मे काम करने का आदेश दे दिया जाता तो वह अपने हिस्से से कम काम करता, इस भय से कि कही उन लोगो का काम हल्का न हो जाय जो उस जैसे हट्टे-कट्टे और शक्तिशाली न थे। यदि कोई उसके खिलाफ गुर्राता तो वह जवाब देने की भी कभी परवाह न करता, और यदि हम राजनीतिक कैदी उसकी मोटी बुद्धि मे भाईचारे के व्यवहार का कोई विचार बैठाने की कोशिश करते तो वह घृणा से मुँह फेर लेता।

"ओफ तुम और तुम्हारी लम्बी तकरीरे! तुम राजनीतिज्ञ लोग हमेशा मूर्खतापूर्ण बकवास करते हो। तुम लोगो ने कुछ भी नहीं किया,

मगर तुम इतने चालाक हो कि अपने आपको तुमने यहाँ ला कर बंदी बनवा लिया !"

हियास्ल ऐसा आदमी दिखता था जिनके संबंध में कुछ भी कर पाने की आशा नहीं दिखती थी। लेकिन आश्चर्य की बात थी कि अत्यधिक स्वार्थपूर्ण काम कर के हर किसी को अपना विरोधी बना लेने के बाद वह एकाएक ही बदलने लगा।

बंदी शिविर में ऐसा नियम था कि कैदियों को महीने में एक बार चंद मार्क की तम्बाकू और खाने-पीने की चीजें खरीदने की इजाजत दी जाती थी। लेकिन इस खरीदारी की इजाजत तभी दी जाती थी जब किसी बंदी ने अपने कार्य के लिए प्राप्त अत्यल्प पारिश्रमिक में से एक निर्धारित रकम अलग इकट्ठी कर ली हो। यह रकम इसलिए जबरन इकट्ठी करवाई जाती थी ताकि यदि कोई कैदी कैदखाने में ही मौत के आगोश में सो जाय तो उसके कफन और क्रिया-कर्म का खर्च स्वयं उसके ही पारिश्रमिक में से एकत्र रकम से निकल आये। अतः कैदखाने के वाहियात भोजन को देखते हुये जीवित रहने के लिए आवश्यक थोड़ी-बहुत वस्तुएँ खरीदने की भी इजाज़त तभी दी जाती थी जब किसी कैदी ने अपनी अंत्येष्टि के लिए पर्याप्त रकम बचा ली हो।

अपनी बैरकों में हम राजनीतिक कैदियों ने यह सुझाव रखा था कि जिन लोगों ने अपनी अंत्येष्टि के लिए काफी रकम बचा ली हो और खरीदारी कर सकते हों, वे अपनी खरीदी हुई चीजों में से कुछ चीजें उन लोगों को अवश्य दें जो अभी कुछ भी खरीद सकने कि स्थिति में न हों। उस समय हममें से लगभग एक चौथाई लोग ऐसी अस्पृहणीय स्थिति में ही थे। चूँकि अन्य लोगों के पास कैदखाने की दूकान में खरीदारी करने के लिए तीन या अधिक-से-अधिक साढ़े तीन मार्क ही बचता था इसलिए उसमें से कुछ भी किसी दूसरे को देना उनके लिए बड़ी पीड़ा की बात थी। बड़ी आसानी से इस बात का अंदाज लगाया

जा सकता है कि यह त्याग करने को उनमे से कुछ लोगो को तैयार करने मे हमे कितनी कठिनाई का सामना करना पडा होगा। जव अत मे हमने उन सभी लोगो को यह त्याग करने को राजी कर लिया उस समय हमारी नही दल्कि सामुदायिक भावना की बहुत वडी विजय हुई थी। हालॉकि मै यह मिथ्याभिमान नही करना चाहता कि वे सभी यह त्याग सामुदायिक भावना से ही प्रेरित हो कर करते थे। कुछ लोग भिखमगई समाप्त करने और वाजार के दिन अपने ऊपर चारो ओर से जमी ईर्ष्यालु नजरो से वचने के लिए यह त्याग करने को तयार हो गये थे। कुछ अन्य लोग धारा के खिलाफ नही तैरना चाहते थे, लेकिन उन्हे जव-जव अपने हिस्से मे से दूसरो को कुछ देना पडता तव-तव हर वार वे भुन-भुनाते और गुर्राते जरूर थे। किसी भी जगह लोगो से चन्दा वसूलने मे जो कठिनाई हुआ करती है वही कठिनाई वहाँ भी हुआ करती थी।

हियाल उन्ही लोगो मे था जो स्वय अपने लिए कुछ भी खरीदारी करने की स्थिति मे न थे, अत उसे भी कुछ महीनो तक इस व्यवस्था का लाभ मिलता रहा। अत मे वह दिन आ गया जव उसने अपने कफन और अत्येष्टि के लिए पर्याप्त रकम इकट्ठी कर ली और पहली वार कैदखाने की दूकान पर जा सका। तभी एक ऐसी घटना हो गयी जिससे हम सब उवल पडे। हियाल ने अपने हिस्से मे से रत्ती भर भी किसी को देने से इन्कार कर दिया। अधिकाश लोगो की तरह वह भी अपने पूरे पैसे से तम्वाकू और सिगरेट पेपर खरीद लाया था। वह शान से बैठा सिगरेट रोल करने और वनाने मे व्यस्त था और वडे आनन्द से अपने सामने रखी तम्वाकू की ढेरी मे उँगलियाँ घुमा रहा था। वह हमारी माँगो, धमकियो, गालियो और श्रापो को सुन ही नही रहा था, जैसे वहरा हो।

वह अपने आप से ही चुनौती भरे स्वर मे भुनभुना रहा था—"इसका कुछ भी मतलव क्यो न हो, मैने यह सव अपनी मेहनत से कमाया

है। और मैं तो देखना चाहता हूँ कि कौन है वह माई का लाल जो इसमें से रत्ती भर चीज़ भी ले ले।"

एक क्रुद्ध भीड ने उसे घेर लिया। वे उसे कोस रहे थे और क्रोध से 'लालची कुत्ता' कह रहे थे। वहाँ हम इससे अधिक किसी का कोई अपमान नही कर सकते थे। यदि उस समय हियाम्ल कुछ भी बोल देता तो निश्चित रूप से मार-पीट हो जाती। लेकिन वह कुछ भी बोला नही। वह गूंगा और अधा हो गया था और चुपचाप सिगरेटे रोल करता जा रहा था। उसके सामने सिगरेटो की ढेर लग चुकी थी। वह रह-रह कर हाथ रोक कर उन्हे गिनने लगता था और उसके होठ विना कुछ बोले ही हिलते रहते थे। सम्पन्नता के हर्षोन्माद मे डूबे हुये, उसने सिगरेटो को वडी सफाई से कतारो मे सजा कर रख लिया। ऐसा लग रहा था जैसे जीवन मे पहली वार उसे यह अनुभूति हुई हो कि स्वामित्व क्या होता है। मुझे सचमुच यह विश्वास हो गया कि यदि कोई उससे एक सिगरेट भी लेने की कोशिश करता, तो वह उसकी शायद हत्या तक कर डालता। यदि यह सारा मामला इतना निर्लज्जतापूर्ण और अन्यायपूर्ण न होता तो उस आदिम जगली लालचीपन मे डूबे व्यक्ति पर हमे अफसोस होता। लेकिन हममे से किसी को उस पर अफसोस नही हुआ—क्योंकि महीनो से वह हमारी कमाई मे हिस्सा वँटाता रहा था।

समस्या उठ खडी हुई कि उसके साथ किया क्या जाय? किसी ने सुझाव रखा कि उसकी जम कर पिटाई की जाय, और इस सुझाव को सभी ने वहुत पसद किया। लेकिन हम लोग इसके खिलाफ थे, कुछ तो इसलिए कि हम मार-पीट करना पसद नही करते थे जव तक कि हमें मजबूर हो कर अतिम अस्त्र के रूप मे इसका इस्तेमाल न करना पड़े, और कुछ इसलिये कि हम अभी भी यह आशा कर रहे थे कि हम हियाम्ल को यह महसूस करवाने मे सफल होगे कि उसका व्यवहार कितना अधिक स्वार्थपूर्ण था। अत हमने अन्य लोगो को समझाया कि

यदि हम उसे पीटेंगे तो हमे अपनी खरीदारी भी बन्द कर देनी पडेगी। हमने सुझाव दिया कि मारने-पीटने के बजाय हियास्ल का बहिष्कार करना ज्यादा अच्छा रहेगा। हमे ऐसा व्यवहार करना चाहिये जसे वह हमारे बीच हो ही नही। कुछ लोगो ने इस सुझाव पर आपत्ति की।

"इससे उसे रत्ती भर भी चिन्ता नही होगी," उन लोगो ने विरोध मे कहा—"अकेला छोड दिये जाने पर वह तो शायद प्रसन्न ही होगा।"

इस आपत्ति के बावजूद हमारा ख्याल था कि इस तरकीब का प्रयोग करना चाहिये। इसमे सब से महत्वपूर्ण बात यह थी कि कोई भी आदमी बहिष्कार के इस बधन को तोडे नही। और इस बात का कोई खतरा इस मामले मे था ही नही, क्योकि हर आदमी उसके खिलाफ क्रोध से पागल हो रहा था। अत हमने शातिपूर्ण तरीको से हियास्ल को सामुदायिक जीवन का महत्व समझाने का प्रयत्न शुरू किया।

जो लोग कभी जेलखाने की चहारदीवारियो या कँटीले तारो के बीच बद नही किये गये है उन्हे शायद इस बात का कोई ज्ञान नही होता कि कैदी एक-दूसरे पर कितना अधिक निर्भर करते है, या एकदम अलग-अलग अकेला छोड दिया जाना या बद कर दिया जाना कैसा होता है। मुझे अच्छी तरह याद है कि उसका बहिष्कार करने के हमारे दृढ निश्चय कर लेने के बाद क्या हुआ।

हियास्ल हमारे पास आया।

"आज खाने को क्या है ?" उसने पूछा।

किसी ने कोई उत्तर नही दिया।

"आज खाने को क्या है ?" उसने अपने बगल के कैदी को धक्का दे कर इस बार और जोर से पूछा।

फिर कोई उत्तर नही मिला।

"अच्छा, यह बात है! ठीक है, तुम लोग गूँगे बन कर बैठे रहो। मुझे तुम्हारी परवाह नही है।" उसने कहा और जोर से हँस पडा।

वह अपने लॉकर के पास गया और एक सिगरेट निकाली। लेकिन वह दियासलाई खरीदना भूल गया था। अत वह मेज़ पर सिगरेट पीते बैठे एक व्यक्ति के पास गया और उससे दियासलाई माँगी। हियास्ल को उनसे या बैरक के किसी भी कैदी से दियासलाई नहीं मिल सकी।

"ठीक है, तुम सब लोग ! खैर, मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं, मूर्खो। जेल मे और बैरके भी तो है।" वह गुर्राया और हमे कोसता हुआ चला गया। कुछ देर बाद ही वह अपनी सिगरेट जला कर वापस आ गया।

दूसरे दिन वह इसमे सफल नहीं हो सकता था, क्योंकि हमने इस बात की भी व्यवस्था कर दी कि अन्य बैरकों के कैदी भी उसकी उपेक्षा करे। और उन लोगो ने इस कार्य को अच्छी तरह निभाया भी।

जो आदमी बैरको की ड्यूटी पर रहता था वह साधारणत. पहले से ही भोजन-पात्र हमे बाँट देता था ताकि हम तेज़ी से अपना खाना पा जायँ। लेकिन वह हियास्ल को भोजन-पात्र देना भूल गया, अतः हियास्ल को स्वय जा कर भोजन-पात्र लाना पडा और फिर खाना परोसने वाले के पीछे-पीछे दौडना पडा। उसने कुछ कहा नहीं, क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि हम उसका कुपित रूप देखे और उसे क्रोधित देख कर हमे सतोष प्राप्त हो। वह बाह्य रूप से निश्चल, अविचलित, चुपचाप बैठा खाना खाता रहा। खाने की मेज पर हो रही बातचीत उसके चारो ओर आच्छादित हो गई थी।

भोजन-पात्र बारी-बारी से कोई एक आदमी धोया करता था। हियास्ल ने बिना कुछ सोचे-समझे अपना जूठा भोजन-पात्र भी बढा दिया, लेकिन उसे चुपचाप वापस कर दिया गया। उसने दाँत पीस कर हमे कोसा और बडबडाता हुआ वाश-रूम मे चला गया—"तुम लोग मुझे झुका नहीं सकते—मैं किसी से दबने वाला आदमी नहीं हूँ।"

हमने हियास्ल को किस तरह बिल्कुल एकाकीपन की घुटन मे डाल

दिया इसका पूरा वृत्तात मै आपको विस्तार से नही सुनाऊँगा। जो लोग अत्यधिक सशयालु थे उन्होने भी देखा कि हर घटना के बाद उसमे कुछ-न-कुछ परिवर्तन दिखाई देता था। पहले वह अत्यधिक जिद और उद्दडता से अपने को अपने ही अन्दर सीमित रखता था, लेकिन अब वह कुछ-कुछ हया, चिन्ता और कुछ अटपटे ढग से ऐसा करता था। वह किसी, ऐसे विशाल जानवर-जैसा था, जो अन्दर-ही-अन्दर किसी अज्ञात आन्तरिक रोग मे क्षीण हो कर धीरे-धीरे अवनमित हो रहा था। लेकिन सब से आश्चर्यजनक बात यह थी कि यद्यपि वह हमेशा से भयकर धूम्रपान करने वाला था किन्तु अब वह शायद ही कभी सिगरेट छूता था—इसलिये नही कि उसके पास दियासलाई नही थी, क्योकि उसने तो बहुत पहले ही स्वय अपने आप ही धीरे-धीरे जलने वाला फ्यूज बना लिया था।

अत मे उसकी जिद और अकड वास्तव मे जवाब देने लगी। ऐसा लगने लगा जैसे उसकी ऐठ अपनी अतिम सीमा पर पहुँच गई हो, क्योकि वह बिना किसी के कहे ही बैरको मे छोटे-मोटे काम करने की कोशिश करने लगा। लेकिन वह भोजन-पात्र ले कर उन्हे धोने की कोशिश करता या झाडू लगाने के लिए झाडू उठाता तो उन्हे चुपचाप उसके हाथ से छीन लिया जाता।

ताज्जुब की बात थी कि सशयालु लोगो ने जिस बात की दृढ आशका की थी (और हम सब लोगो को भी जिस बात का भय था) वह नही घटित हुई। हम जानते थे कि महीने के अतिम दिनो मे सकट उत्पन्न होगा जब तम्बाकू की बडी कमी हो जाती थी या तम्बाकू सारी-की-सारी पी डाली गयी होती थी। लोगो के मिजाज उस समय बिगडे रहते थे, और छोटी-छोटी बातो पर लोग झगडा करने पर आमादा हो जाते थे। और बहुत अधिक धूम्रपान करने वाले लोग तो आधी-आधी सिगरेट या उसके अतिम टुकडे के लिए भी कुछ भी करने को तैयार हो जाते थे। यह हियास्ल के लिए अपने बहिष्कार को तोडने का बहुत बडा मौका

था, क्योकि उसके पास सिगरेटो का अच्छा-खासा भडार था और हम अच्छी तरह जानते थे कि यदि उसने हममे से ऐसे एक-दो लोगो को भी फोड लिया जो उससे सिगरेट लेने को राजी हो जायें तो अभी तक हमारे सारे किये-धरे पर पानी फिर जायगा। हमारी तरह हियारल ने भी यह बात अच्छी तरह समझ ही ली होगी।

लेकिन उसने किसी को भी अपने पक्ष मे करने के लिए यह घूस देने की कोई कोशिश नही की।

महीने के बिलकुल आखीर मे एक दिन जब कि किसी के पास सिगरेट नही रह गई थी और लोगो के मिजाज इतने बिगड गये थे कि निराशा और चिडचिडेपन के आकस्मिक उफान के बीच भूरा रहे थे, तभी एक असाधारण घटना घटित हुई। हममे से कुछ लोगो ने, जिनमे मै भी शामिल था, देखा कि हममे सब से ज्यादा धूम्रपान करने वाले कैदियो मे से एक हियारल के पास गया, उसके कधे पर इस तरह धौल जमाई जैसे सब-कुछ बिलकुल ठीक हो और हम सब के सबध बहुत अच्छे हो, और उससे पूछा कि क्या वह सिगरेट का एक टुकडा उसे दे सकेगा।

हियारल अपने लाकर के पास खडा था। वह इस तरह नाच गया जैसे उस पर तीव्र प्रहार किया गया हो। उसका चेहरा रक्ताभ हो उठा, उसके मुक्के तन गये और ऐसा लगा जैसे वह भी उलट कर प्रहार करने जा रहा है। वह कैदी चौंक-सा पडा और कई कदम पीछे हट गया।

"दोगले हरामी, मेरे पास तेरे लिए कुछ नही है!" हियारल चीख उठा—"मै किसी के हाथ कुछ नही बेचूंगा! मै अभी ऐसी स्थिति मे नही पहुँचा हूँ, समझे!"

एकाएक उसने एक दीर्घ निश्वास छोडा और इस तरह गुर्राया जैसे उसके गले मे कुछ अटक गया हो, जम गया हो। चारो ओर एकाएक ही छा गयी मौत की खामोशी मे घूम कर वह खडा हो गया और हकलाता हुआ बोला—"मैं जो कुछ कर रहा था वह ठीक नही था मै जानता

हूँ कि मै जगली सूअर-जैसा व्यवहार कर रहा था ..हाँ, मै अच्छी तरह जानता हूँ ।". .

कॉपती उँगलियो से उसने अपने लॉकर को चीर कर खोल दिया, उसमे से अपनी सिगरेटो का डब्बा निकाला और जोर से मेज पर पटक दिया ।

"यह लो !" वह वैसे ही कॉपते स्वर मे बोला—"इन्हे इस तरह बाँट लो कि हर किसी को थोडी-थोडी सिगरेटे मिल जायँ । इसमे इतनी काफी सिगरेटे है कि सब को मिल जायेंगी ."

और इसके पहले कि किसी को एक शब्द भी बोलने का मौका मिलता, वह तेजी से बैरक से बाहर चला गया । .

यही कहानी है हियारल की । इस घटना के बाद वह उस शिविर मे दूसरो की सबसे अधिक सहायता करने वाला व्यक्ति बन गया, जिसे देख कर कोई विश्वास नही कर सकता था कि वह वही पुराना हियारल था । कभी-कभी एक आघात मात्र की आवश्यकता हुआ करती है । लेकिन आवश्यकता इस बात की होती है कि सही रास्ते का अनुसरण किया जाय । मै यह विश्वास नही करता कि जिन लोगो के बारे मे लोग सोचते है कि उनके सबध मे कुछ भी नही किया जा सकता, वे सभी गये-बीते व्यक्ति ही हुआ करते है



दो मिनट

इस कहानी के लेखक

ब्रूनो एपिट्ज़

सन् १९०० में लीपजिग नगर में जन्म। तरुणावस्था भी पार नहीं कर पाये कि प्रगतिशील युवा आन्दोलन में शामिल हो गये और अभिनेता बन गये। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बनने के बाद १९२७ में लेखन-कार्य शुरू किया। नाजियों ने सन् १९३३ में इन्हें गिरफ़्तार कर लिया, और तीन महीने तक नजरबन्द रखा, फिर इन्हें रिहा कर दिया, और अगले ही वर्ष फिर गिरफ़्तार कर लिया। तीन वर्ष बाद बुकेनवाल्ड कैदी शिविर भेज दिया गया जहाँ वे महायुद्ध के अंत तक रहे। महायुद्ध के अन्त के साथ ही इन्हें भी मुक्ति प्राप्त हुई। सन् १९४५ से ये पत्रकारिता के पेशे में रहे हैं और थियेटर तथा डेफा फिल्म स्टूडियोज में नाटककार की हैसियत से काम करते रहे हैं। इन्होंने अनेक रेडियो नाटक भी लिखे हैं, लेकिन सब से अधिक प्रसिद्धि इनके उपन्यास 'नेकेड एमंग वुल्व्ज' से मिली। सन् १९५८ में प्रकाशित इस उपन्यास में बुकेनवाल्ड में प्रदर्शित वीरता, बलिदान और साहस की अत्यधिक रोचक कहानी कही गयी है। इस पुस्तक के अनुवाद हुये, फिल्म बनी और टेलीविजन पर भी उसका प्रदर्शन हुआ। इस उत्कृष्ट उपन्यास पर इस लेखक को राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रदान किया गया।



क्रिसमस के पूर्व की शाम को शहर के उस जेलखाने मे मौत का सन्नाटा छाया हुआ था। जेल मे निरतर उठने वाली आवाजे, बार-बार दरवाजो को बद करने और खोलने से होने वाली दरवाजो की चरमराहट, लोहे की सीढियो पर कैदियो को ऊपर ले जाने और नीचे ले आने से होने वाली आवाजे शात हो चुकी थी। बीच-बीच मे कानो के पर्दे फाड कर मस्तिष्क के अन्दर तक घुस जाने वाली और ज्ञानतंतुओ को कचोटने वाली घटी की वह कर्कश ध्वनि भी नही हो रही थी, जिसे बजा कर कैदियो को जिरह के लिए बुलाया जाता था।

निचली मजिल पर कार्यालय मे एक सर्जेन्ट सिगार पीता, अखबार पढता बैठा हुआ था। उसके पीछे कलेडर और दीवार के बीच से सदा-बहार की एक शाखा निकली हुई थी। जेल के सतरियो को छोड कर पुलीस के सारे आदमी क्रिसमस मनाने के लिए अपने-अपने घर चले गये थे।

मौत का सन्नाटा छाया हुआ था।

झाड़ू-बुहारी मे लगे हुये कैदियो ने जैसे कूडा-कबाड और धूल-गर्द के साथ व्यस्त कार्यकारी दिनो के शोर-गुल पर भी झाड़ू लगा दी थी। जो कुछ भी बच रहा था, वह थी यह बोझिल खामोशी, कैदियो की

कोठरियो के ताले पडे दरवाजो के वाहर छाई भयकर खामोशी । जेल-खाना ठसाठस भरा हुआ था । एक-एक कोठरी मे पाँच-पाँच, छह-छह कैदी ठूँस दिये गये थे । केवल एक व्यक्ति ऐसा था जिसे दूसरी मजिल पर कोठरी न० १४६ मे एकाकी कैद मे रखा गया था । इस कोठरी मे बैठा हुआ था बिल्कुल एकाकी, गेस्टेपो का एक कैदी लुडविग जर्मर ।

उसे वहाँ आये हुये अधिक समय नही हुआ था । शहर के उसके इलाके के सभी कामरेड महीनो पहले गिरफ्तार किये जा चुके थे, लेकिन उसे गेस्टैपो ने एक पखवारे पहले ही जेल मे डाला था । एक दिन बहुत तड़के पाँच बजे उसके मकान की घटी की कर्कश ध्वनि किरकिरा उठी । हेडी चौक कर विस्तर पर उठ बैठी ।

"लुडविग ! कौन हो सकता है यह ?"

'वे आ गये, हेडी !" एक फीकी मुस्कराहट के साथ उसने धीमे स्वर मे कहा ।

उनका बच्चा अपनी चारपाई पर शातिपूर्वक सोता रहा । उसकी नीद उसी समय टूटी जब उन अपरिचित व्यक्तियो ने शयन-कक्ष की सारी चीजो को उलटना-पलटना शुरु कर दिया । हेडी ने बुरी तरह डरे हुए अपने बच्चे को तुरन्त अपनी बाँहो मे समेट लिया ।

यह घटना दो हफ्ते पहले घटी थी । तब से जर्मर ने अपनी पत्नी को केवल एक बार देखा था, अपनी गिरफ्तारी के तीन दिन बाद । उसे उसकी कोठरी मे बुला कर लोहे की सीढियो से नीचे ले जाया गया था, और इस कार्रवाई से पहले उसने यही समझा था कि शायद उससे एक बार फिर जिरह की जायगी । लेकिन उसे एक ऐसे कमरे मे ले जाया गया जो बाहरी व्यक्तियो से भरा हुआ था । और अन्य कैदियो तथा उनसे भेट करने आये मुलाकातियो की भीड के बीच उसने एकाएक अपने आपको अपनी पत्नी के सामने खडा पाया ।

हेडी ने जब उसके दाढी बढे, विकृत चेहरे को देखा तो जैसे उसकी

आत्मा कराह उठी। जर्मर को स्वय इस बात का कोई ज्ञान न था कि उसका चेहरा कैसा लगने लगा था, क्योकि उसके पास आईना तो था नही, और वह अभी तक यह महसूस नही कर सका था कि उसमे कितने-कितने भयकर परिवर्तन आ गये थे।

इस मुलाकात के इनचार्ज पुलीस सतरियो ने कैदियो के रिश्तेदारो को दो मिनट बाद ही कमरे से बाहर निकालना शुरू कर दिया। कैदियो को ला कर फिर से उनकी कोठरियो मे बद कर दिया गया। इस सारी कार्रवाई में काफी धक्का-धुक्की हुई।

हेडी और लुडविग एक-दूसरे को नजर भर कर अभी देख भी नही पाये थे कि उन्हे फिर एक-दूसरे से दूर कर दिया गया। वह करीब-करीब दरवाजे तक पहुँच गयी तब एकाएक लुडविग ने महसूस किया कि वे दोनो एक-दूसरे से अभी तो एक शब्द भी बोल नही सके। हकलाते हुये किसी तरह वह एक वाक्य बोल सका। हेडी का चेहरा दुख से विकृत हो उठा।

"चिन्ता न करो हेडी। मै वापस आऊँगा। मै क्रिसमस मनाने घर आऊँगा। बेटे को मेरा ढेर सारा प्यार देना।"

और इतना कह कर उसने अपने विकृत हो उठे मुँह और बूढो की तरह पोपले जबडो को भूल कर मुस्कराने की कोशिश की। उन लोगो ने पहले ही दिन उसके दाँत तोड दिये थे।

गिरफ्तारियो के इस दौर मे पकडा जाने वाला अतिम व्यक्ति जर्मर ही था। शहर के उसके क्षेत्र मे नव-सगठित गुप्त पार्टी सगठन उसमे सम्मिलित समस्त कामरेडो की गिरफ्तारी से पूरी तरह टूट गया था। गेस्टेपो सेनाधिकारी जोचर ने गिरफ्तार व्यक्तियो को मार-मार कर उनसे थोडा-थोडा कर के सबूत उगलवा लिये थे। वह एक परिष्कृत व्यक्ति था और कैदियो को मारने-पीटने मे प्रत्यक्ष रूप से कोई हिस्सा नही लेता था। यदि वह किसी कैदी को गुप्त बातें उगलने के लिए किसी

तरह राजी नहीं कर पाता था तो वह उसे गुप्त कोठरी में ले आता था। यह एक एकान्त कोठरी थी, जिसमें एक छोटी मेज थी जिस पर एक टाइपराइटर रखा था एक कुर्सी कोठरी के बीचोंबीच पड़ी थी और एक कोने में पानी का नल भी था। इसके अतिरिक्त वहाँ एक गंदी खून से तर तौलिया भी टँगी हुई थी। यहाँ सादे वस्त्र पहने छः सैनिक ज़िद्दी कैदियों को जिरह के लिए तैयार करते थे।

ऐसे कैदियों से कहा जाता—"तो तू नहीं बोलेगा सुअर के बच्चे? देखता रह, अभी पन्द्रह मिनट में तू कोयल की तरह कूकने लगेगा।"

कैदी को कुर्सी में झोंक दिया जाता। दो आदमी उसके हाथों को कुर्सी के पीछे कस कर जकड़ लेते और दो अन्य आदमी उसके फैले हुए पैरों को सामने फर्श पर ज़ोर से दबा लेते। एक व्यक्ति पीछे से उसके बाल उखाड़ता और छठा आदमी उसके सामने उसके फैले हुए पैरों के बीच खड़ा हो कर अपने विशाल घूसों से उसे तब तक पीटता रहता जब तक उसकी चीखें उसके करुण क्रंदन और कराहों में खो न जातीं। जब वे यह महसूस करते कि कैदी उनके आदेश का पालन करने के लिए पर्याप्त मात्रा में तैयार हो चुका है, तो वे कुर्सी को ढकेल कर मेज़ के निकट ले जाते और बाहर तथा अन्दर से टूटे हुए कैदी को सैनिक अधिकारी के हवाले कर देते। कभी-कभी मार-पीट से बेहोश हो गये किसी कैदी को घसीट कर उन्हें पानी के नल के नीचे भी ले जाना पड़ता और उसके मुँह पर नल को खोल कर तब तक उस पर पानी पड़ने दिया जाता जब तक वह होश में न आ जाता।

बहुत से कामरेड इन यातनाओं को बर्दाश्त कर ले जाते। लेकिन कुछ ऐसे भी थे जिन्हें जब पीट-पीट कर खून से सना आकृतिहीन ढेर बना दिया जाता तो उनका मनोबल टूट जाता और वे अपने साथियों के नाम बता देते, अपने सम्पर्कों का राज़ खोल देते। इसी तरह जोचर को उस संगठन के सबंध में अपनी सारी सूचनाएँ प्राप्त होती रही थीं, जब तक

वह निश्चित रूप से यह नही जान गया कि शहर के उस क्षेत्र मे क्या हो रहा है। अब उसे एक कदम और आगे बढना था और गुप्त जिला पार्टी सगठन से स्थानीय सगठन के सम्पर्क के सबध मे जानकारी प्राप्त करनी थी। जैसा कि सामान्यत होता है, यह सम्पर्क केवल एक व्यक्ति के माध्यम से कायम रहता है। और जर्मर ही यह सम्पर्क कायम रखने वाला व्यक्ति था। उसी पर जोचर की अतिम आशा टिकी हुई थी। वह अगले उच्च सगठन तक पहुँचने के चक्र मे सबसे महत्वपूर्ण कडी था।

पिछले चौदह दिनो मे जर्मर वह सारी यातनाएँ भुगत चुका था जिन्हे उसके कामरेड भुगत चुके थे। वह कई बार उस एकान्त कोठरी मे घसीट कर ले जाया जा चुका था। शरीर से वह उन लोगो जैसा ही बलिष्ट था जो उसे पीटते थे और अब तक वह उनकी सारी यातनाएँ झेल ले गया था। जोरो से घूँसे भाँजते हुए वे उसे जितनी ही सख्ती से पीटते थे उतना ही ऐसा प्रतीत होता था जैसे वे लोहे की दीवार पर घूँसे मार रहे हो। जोचर को अपने मुकाबले का जोडीदार मिल गया था।

"तुम यहाँ से जिन्दा नही निकल सकोगे, बेटा!" वह आदमी गुर्रा उठता—"या तो तुम अपनी जबान खोलो या मै तुम्हे मार डालूँगा।"

क्रिसमस के पूर्व की शाम को बहुत अधिक देर हो चुकी थी और मौत का सन्नाटा छाया हुआ था।

जर्मर अपने स्टूल पर बैठा हुआ था। उसके हाथ उसकी जाँघो के नीचे सीधे दबे हुए थे। वह शोर-गुल के इस कुटिल और अशुभ अभाव के प्रति सजग हो उठा था जिससे उसके मन मे बडी पीडा हो रही थी।

छत पे लटकता एक अकेला बल्ब तारो की अपनी जाली के अदर से फीकी-फीकी-सी रोशनी बिखेर रहा था। जर्मर ने ऊपर की तरफ देखा। उसने अपनी नसो मे आश्चर्यजनक तनाव महसूस किया। उसने

अपने दाँत-रहित ऊपरी मसूढ़ों पर जीभ घुमाई, जिनसे घाव भरने लगे थे। उसका दिमाग खाली-खाली-सा लग रहा था। छत से फैलती नीली रोशनी ने उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। उसके दिमाग ने फिर से काम करना शुरू कर दिया।

उसने सोचा कि अपना स्टूल कोठरी के बीचोंबीच खसका ले जाय, शुरू में एक दौड़ लगाने वाले की तरह झुके, फिर झटके से उछल पड़े, एक हाथ ऊपर उठाये हुए। उसने सोचा, ऐसा कर पाने के पहले शायद उसे अनेकों बार प्रयत्न करना पड़े।. शीशे के टुकड़े रेजर ब्लेड जैसे ही तेज होंगे। एकाएक वह यह अनुभव कर के चौंक पड़ा कि वह अपने अँगूठे से अपनी नब्ज टटोल रहा है। और इस एहसास से वह जैसे वापस अपने आपे में आ गया।

जर्मर उठ खड़ा हुआ और इन मोहक विचारों को दिमाग से निकाल फेंकने का प्रयत्न करता हुआ अपनी कोठरी में इधर-से-उधर चहलकदमी करने लगा। वह जानता था, उसके दिमाग में इस तरह के विचार क्यों आ रहे थे। वह अपने सताये हुए शरीर और आत्मा से दूर भाग निकलने के किसी रास्ते की तलाश में था।

या तो तुम अपनी जबान खोलो या मैं तुम्हें मार डालूँगा..
घबराओ नहीं डैडी, मैं क्रिसमस मनाने घर आऊँगा

विचारों के इस तूफान में ये शब्द एक ही साथ तैर गये, जिसने जर्मर को खींच कर बहा ले जाने का खतरा उत्पन्न कर दिया था। लेकिन उसने अपने मनोबल की सारी ताकत लगा कर अपने आप को इस तूफान से निकाल लिया। इन्हीं विचारों ने उसके मन में यह प्रलोभन उत्पन्न किया था कि वह अपने उठे हुए हाथ से छत से लटक रहे बल्ब को चकनाचूर कर दे।

उसने सोचा, कैसा अभिशप्त सन्नाटा छाया हुआ है। कोई चीखता-

चिल्लाता क्यो नही ? कोई दरवाजा भडभडाना क्यो नही शुरू कर देता ? बाहर चलो ! हमे बाहर जाने दो .!

कोठरी के बीचोबीच खडा जर्मर एकाएक हँसने लगा, ऐसी हँसी जैसे भौंक रहा हो। उसकी हँसी उसके मुँह से इस तरह फूटी पड रही थी जैसे खुले हुए घाव से फूट रही हो।

"आज क्रिसमस है ! क्रिसमस !" वह बाजार मे फेरी देने वाले हरकारे की तरह गला फाड कर चिल्ला पडा।

उसकी हँसी खाँसी के बीच बदल कर एक पीडायुक्त चीख मे परिणत हो गयी। जर्मर झटके के साथ घूम कर दीवार के नजदीक पहुँच गया, माथा दीवार पर टिका कर खडा हो गया और रो पडा।

कैसा अच्छा लग रहा था यह

पीडा जैसे गर्म बारिश की तरह उसके अन्दर से बहती जा रही थी। एक लम्बा-चौडा बलिष्ट व्यक्ति था वह, लेकिन इस समय बच्चे की तरह फफक-फफक कर रो रहा था।

"मै केवल इसलिए रो रहा हूँ क्योकि रोने से बडा सुखद अनुभव हो रहा है क्योकि आज क्रिसमस है और मै आज तुम्हारे साथ घर पर मौजूद रहना चाहता था मेरी अच्छी-सी प्यारी-सी हेडी .मेरे नन्हे-मुन्ने प्यारे बेटे मुझसे तुम लोग नाराज न होना, नाराज न होना मै मजबूर हूँ, आ नही सकता मै कितना चाहता हूँ कि तुम लोगो के पास आ जाऊँ, कितना चाहता हूँ मै लेकिन मै आ नही सकता .।"

एकाएक कोठरी के दरवाजे की लोहे की छडो मे कडकडाहट हुई। चाभी जोर की आवाज के साथ दो बार घूमी और सतरी दरवाजा खोल कर सामने आ खडा हुआ।

जर्मर तेजी से घूम कर खडा हो गया और आतंकित नजरो से सतरी की ओर देखने लगा।

"आओ," सतरी ने केवल मात्र इतना ही कहा।

जर्मर अपने को तुरन्त सँभाल नहीं सका। उसके विचारों की अमित धारा अभी भी उलझन के दलदल में फँसी हुई थी। उसने जैसे मशीन की तरह अपनी जैकेट के बटन बंद किये और कोठरी के बाहर निकल आया। वे सूने गलियारे में चुपचाप चलते गये और फिर लोहे की सीढ़ियाँ उतर कर सब से निचली मंजिल पर पहुँच गये।

जर्मर ने सोचा, हेडी यहाँ आई होगी, जिसकी याद अभी भी उसके हृदय में गूँज रही है।

दूसरा संतरी उसे पुलीस स्टेशन ले गया। जर्मर रास्ता जानता था, क्योंकि उसे अक्सर जिरह के लिए वहाँ लाया जाता था। लेकिन इस बार वह खुशी से वहाँ गया, क्योंकि इस बार उसे एक सुखद आशा की अनुभूति हो रही थी। हेडी जरूर आई होगी। अब उसे हेडी का वहाँ आना निश्चित-सा लग रहा था। लेकिन उस कमरे में अकेला जोचर ही था, जिसमें संतरी उसे ले गया।

मगर जर्मर अपनी निराशा के प्रति जैसे सजग तक नहीं था। उसे महसूस हुआ जैसे उसके मस्तिष्क का सारा तनाव कम होता जा रहा हो और उसके हृदय में एक सर्द भावना छायी जा रही हो।

एक ही नजर में उसने सारी स्थिति को समझ लिया।

हरे फीते से बड़ी सावधानी से बँधा हुआ एक सफेद पैकेट मेज पर पड़ा हुआ था। जोचर का कोट कुर्सी की पीठ पर टँगा हुआ था, जहाँ उसने अभी-अभी उसे फेंका था। एक नया गहरा नीला सूट पहने हुए जोचर डेस्क पर बैठा हुआ था। उसकी आस्तीनों के नीचे की तरफ का ताजा, नया सफेद कफ चमक रहा था। वह निश्चय ही यहाँ से क्रिसमस की किसी पार्टी में जाने वाला होगा।

"बैठ जाओ, जर्मर।"

जोचर ने डेस्क के सामने रखी कुर्सी की तरफ इशारा किया और संतरी को उन्हें अकेला छोड़ कर वहाँ से चले जाने का इशारा

किया। उसने एक सिगरेट जलाई और पैकेट जर्मर की ओर बढ़ा दिया।

"सिगरेट ?"

जर्मर ने सिर हिला दिया।

जोचर ने इस इनकार पर कोई ध्यान नही दिया और सिगरेट के पैकेट को एक तरफ खिसका दिया।

"तुम्हे ताज्जुब हो रहा है कि मैने इस समय तुम्हे नीचे बुलाया।"

वह डेस्क के कोने पर बैठा हुआ था।

"आज क्रिसमस के पहले की सध्या है, जर्मर ..."

उसकी सम्पूर्ण रूपाकृति तथा आचरण और व्यवहार की तरह उसकी यह बाते भी पूर्णतया अनौपचारिक लग रही थी। जर्मर ने उसकी बात का कोई जवाब नही दिया। वह अपनी पत्नी और बच्चे के बारे मे सोच रहा था, जो उससे इतनी दूर थे, इतने अप्राप्य थे और इतने एकाकी थे.. और अपनी कमजोरी को वह किसी तरह पी गया। उसके घुटनो पर पडी उसकी मुट्ठियाँ जोर से कस गयी।

"पिछले चौदह दिनो मे मेरे मन मे तुम्हारे प्रति बडा आदर उत्पन्न हो गया है, जर्मर। तुम कमाल के आदमी हो। तुम जैसे आदमियो के सामने तो हमे आदर से सर झुकाना चाहिए।. मै तुम्हे घर भेजना चाहता हूँ। आज ... इसी वक्त ."

वह तेजी से उठ खडा हुआ और अपने आप को गुस्से से बुरा-भला कहता हुआ इधर-से-उधर चहलकदमी करने लगा।

"धिक्कार है इन बातो पर ! मै भी इन्सान हूँ। और कुछ भी हो, आज क्रिसमस है। हमे क्या दूसरो को थोडी-बहुत खुशी नही देनी चाहिए ? जरा सोचो तो ! तुम्हारी पत्नी, तुम्हारे छोटे-से बेटे को कैसा लगेगा ! एकाएक घटी बजेगी और तुम उन लोगो के सामने खडे होगे ... हे ईश्वर ! जर्मर मै तो बयान नही कर सकता कि वे लोग कितने खुश होगे तुम्हे देख कर !"

जर्मर ने अपना सर झुका लिया। जिस पीड़ा को वह आंसुओं के माध्यम से अभी तक बहा नहीं पाया था वह फिर ताज़ी हो कर उभर आयी। लेकिन इस सब के बावजूद वह अच्छी तरह जानता था कि यह उस शैतान की एक और चाल है। वह उसे किसी तरह पिघलाना चाहता है।

ज़ोचर जर्मर के काफी नजदीक आ गया और उसके पीछे से ही उससे बोलता रहा।

"ज़िद से कोई फायदा नहीं, जर्मर। तुम्हारा संगठन पूरी तरह टूट चुका है और यदि मैं तुम्हारे जिला सम्पर्क के सबंध में तुमसे कुछ न उगलवा पाऊँ तो भी मैं किसी और तरीके से उसका पता लगा लूँगा। हो सकता है इस काम में कुछ अधिक दिन लग जायँ, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं अधिक समय भी लगा सकता हूँ।"

वह रुक गया। जर्मर उदासीनता से, सूखी आँखें लिये बैठा रहा। ज़ोचर अत्यधिक तनाव का अनुभव करता हुआ इंतजार करता रहा। कुछ क्षण बाद जर्मर को उसकी आवाज फिर सुनाई पड़ने लगी, जो उसके दिमाग में जैसे छेद करती हुई घुसती जा रही थी।

"मैं तुम्हारा काम आसान बनाये दे रहा हूँ। अब तुम्हें असली नाम बताने की भी जरूरत नहीं। तुम उसका नकली नाम ही बता दो। बाकी सब-कुछ मैं स्वयं पता लगा लूँगा। मैं तुम्हें यहाँ इस वक्त वचन देता हूँ।"

जर्मर जानता था कि यह सारी बातें झूठी थीं, फरेब से भरी हुई थीं लेकिन फिर भी उसे मन-ही-मन में अपने आप से भयंकर संघर्ष करना पड़ रहा था।

वह सोचने लगा, आज क्रिसमस के पहले की शाम है। मैं घर की बत्ती जलाऊँगा ..केवल नकली नाम और फिर मैं एकाएक घर की बत्ती जलाऊँगा ..मैं कल्पना कर सकता हूँ, वे लोग कितने खुश होंगे। ..

जर्मर ने महसूस किया, वह अपने घुटनो के बीच अपने हाथो को दबाता जा रहा है। पहले उसने इस बात की ओर ध्यान नही दिया था। उसने अपने आप को संभाला और घूम कर जोचर के सामने मुँह कर के खड़ा हो गया, जो अपने पैर कुछ फैला कर खडा हुआ था और जिसके हाथ उसके कोट की जेबो मे थे।

"मुझे मेरी कोठरी मे वापस भेज दो।"

जोचर ने अफसोस प्रकट करते हुए अपने कधे हिलाये।

"अफसोस है .."

सतरी को बुलाने के लिए दरवाजे की तरफ जाते-जाते एकाएक जोचर ने अपना माथा ठोका।

"ओफ, मैं तो भूल ही गया था," उसने कुछ क्षमा याचना के से भाव से कहा। "तुम अपनी भेट भी नही लेना चाहते क्या ? तुम्हारी पत्नी इसे लाई है।"

वह डेस्क के निकट गया और उस छोटे-से साफ-सुथरे पैकेट को उठा लिया।

"क्या मेरी बीवी यहाँ आई थी ?" पीडायुक्त उत्तेजना के साथ जर्मर ने पूछा।

जोचर ने पैकेट को बडी सावधानी से फिर डेस्क पर रख दिया, और बहुत सोच-समझ कर जवाब दिया।

"वह अभी भी यही है, तुम्हारा इतजार कर रही है। वह अपने साथ तुम्हारे बेटे को भी लाई है। कितना नन्हा-मुन्ना प्यारा बच्चा है।"

जर्मर के अन्दर-ही-अन्दर एक चीख उमड-घुमड गयी और उसे अपने अन्दर-ही-अन्दर दबा देने की कोशिश मे उसे ऐसा लगा जैसे उसका सीना फट जायगा। वह जोर-जोर से साँसे लेने लगा। वह जैसे आँख बद किये हुए डेस्क के नजदीक गया।

"मेरी पत्नी ? तुमने कहा मेरी पत्नी.. ? कहाँ है वह ?"

ज़ोचर मुस्करा उठा। वह डेस्क के गिर्द घूम कर दूसरी तरफ गया और डेस्क पर पडे अपने डिस्पैच केस से एक कागज निकाल लाया।

"यह तुम्हारी तत्काल रिहाई का वारट है। देख रहे हो ? मैं अभी-अभी इस पर दस्तखत कर दूँगा, समझे ? अब सब-कुछ तुम पर निर्भर करता है।"

उसने उस कागज़ पर अपना हस्ताक्षर कर दिया। वह क्या कर रहा है इस बात की ओर जर्मर अर्द्ध-सचेत ही था।

"कहाँ है वह ?" किसी तरह साँस लेता हुआ बोला वह।

"वह मुख्य कार्यालय मे बैठी तुम्हारा ही इन्तजार कर रही है," ज़ोचर ने बडी सावधानी से उत्तर दिया।

जर्मर ने पलक झपकाई।

"वह यहाँ क्यो नही आयी ?"

ज़ोचर फिर मुस्कराया—उसकी मुस्काहट मैत्रीपूर्ण ही थी।

"मैं उसके सामने क्रिसमस का आश्चर्यपूर्ण तोहफा प्रस्तुत करना चाहता था।"

वह डेस्क के गिर्द फिर घूम गया और जर्मर के नजदीक आ गया। उसने जर्मर को हस्ताक्षर किया हुआ कागज दिखलाया।

"बडे भाग्यशाली हो तुम, है न ? इसमे सदेह नही कि तुम्हे इसके लिए एक छोटा-सा काम अभी करना बाकी है। तुम जानते हो तुम उसे कैसे कर सकते हो, जानते हो न ? लेकिन उसके बाद हम लोग साथ-साथ घर जा सकते हैं। हम दोनो अपने-अपने परिवार के बीच पहुँच सकते है। बोलो बूढे आदमी, जर्मर, इस बात का कोई महत्व है या नही ?"

जर्मर को गेस्टैपो अधिकारी की आँखो मे एक विचित्र-सी चमक दिखाई दी। वह अभी भी जोर-जोर से साँस ले रहा था। लेकिन उसने अपना सारा मनोवल अपनी भावनाओ से लडने पर ही केन्द्रित कर दिया था। वह अपने दिल की धडकनो को तव तक गिनने की कोशिश करता रहा जव तक वे धीमी नही पड गयी। उसके चेहरे की मासपेशियो का तनाव धीरे-धीरे ढीला पड गया और जव उसके मन मे निश्चित हो गया कि उसकी भावनाग्रस्त आत्मा ने अपना सनुलन फिर से वापस पा लिया लिया है, तो उसने वडे शान्त स्वर मे पूछा—"यहाँ से मुख्य कार्यालय पहुँचने मे कितना समय लगता है ?"

जोचर की भौंहे तन गयी, क्योकि उसे इस प्रश्न मे कोई तथ्य नही दिखाई दिया।

"दो मिनट से अधिक नही।"

"तो क्या नकली नाम तुम्हारे लिए इतना अधिक महत्व रखता है ?"

"निस्सन्देह। यदि ऐसा न होता तो शायद उसके वदले मे मै तुम्हारी रिहाई का प्रस्ताव न रखता।"

जर्मर ने एक वार फिर अपने ऊपर पूर्ण नियत्रण प्राप्त कर लिया था।

"अच्छी वात है," उसने ठडे स्वर मे कहा—"मै तुम्हे दो मिनट मे नाम वता दूँगा।"

जोचर मुस्करा उठा, उसकी आँखे चमक उठी।

"क्रिसमस मुबारक, जर्मर, क्रिसमस मुबारक !" वह खुशी से वोल उठा। वह दौड कर डेस्क के निकट गया, अपनी नोटवुक मे से एक पन्ना फाड लिया और एक पेसिल ले कर तैयार हो कर खडा हो गया।

जर्मर अधमुँदी आँखों से उसकी सारी हरकतों को देख रहा था।

"मैं तुम्हें दो मिनट में वह नाम बतला दूँगा, लेकिन अपनी पत्नी की उपस्थिति में ही।

ज़ोचर ने पेंसिल पटक दी। वह अपने जाल में स्वयं ही फँस गया था। उसने जर्मर की ओर घूर कर देखा। जर्मर अपनी मुस्कराहट रोक नहीं सका।

"जर्मर!" ज़ोचर हकलाता हुआ बोला—"यह सब नहीं चलेगा।"

इसके पहले कि ज़ोचर उसे रोक पाता, जर्मर ने झपट कर वह छोटा पैकेट उठा लिया। पैकेट पंख जैसा हल्का था। उसने उसे चीर-फाड़ कर खोल डाला। वह चॉकलेट का एक खाली डब्बा था।

क्रोध से ज़ोचर की आकृति विकृत हो उठी। उसने डेस्क पर लगी घंटी का बटन दबाया। संतरी फौरन हाजिर हो गया। एक ही डग में गेस्टेपो अधिकारी जर्मर के सामने आ खड़ा हुआ।

"सुअर के बच्चे!" वह चीख उठा, और जर्मर के हल्के-हल्के मुस्कराते मुँह के बीचोंबीच एक घूँसा जड़ दिया। खून की एक बूँद ज़ोचर की आस्तीन के सफेद-उजले कफ पर टपक पड़ी।

"इस सुअर को यहाँ से ले जाओ।" वह गरज उठा।

जर्मर संतरी की ओर घूम गया।

जर्मर जब लोहे की सीढ़ियाँ चढ़ कर अपनी कोठरी में वापस गया उस समय तक कैदी सो चुके थे और सन्नाटा और गहरा हो गया था। संतरी ने उसे कोठरी में बंद कर दिया।

कोठरी में अँधेरा छाया हुआ था। दो क्षण जर्मर कोठरी के बीचो-

बीच खड़ा रहा। उसकी शक्ति की अंतिम बूंदे जैसे निचुड कर उसके शरीर से बाहर निकलती जा रही थी। बुरी तरह थक कर श्रान्त जर्मर ने फिर अपना सर दीवार पर टिका दिया। उसने अपनी आँखे बद कर ली, लेकिन रोया नही।

"मैं नहीं आ सकता. .मुझसे नाराज मत होना. नाराज मत होना " अपने अदर उमडते अधकार के बीच फुसफुसाहटपूर्ण स्वर मे वह कहता रहा।

काफ़ी दूर पर अपने रास्ते पर भरभराती हुई चली जा रही एक अकेली ट्राम की हल्की ध्वनि कोठरी मे गूँज उठी।



पनाह

इस कहानी की लेखिका

अन्ना सेगर्स

विश्व-प्रसिद्ध जर्मन उपन्यासकार हैं। सन् १९०० में मेन्ज में जन्म हुआ था। कोलोन एवं हेडेलबर्ग के विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया। सन् १९२८ में वे कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित हुई। जब १९३३ में नाजियो ने शक्ति ग्रहण कर लिया, तो गिरफ्तार कर ली गयीं, लेकिन किसी तरह भाग कर पेरिस पहुँच गयीं। यहाँ फासिस्ट-विरोधी पत्रो के लिए तब तक कार्य करती रहीं, जब तक १९४० में भागने को विवश नहीं हो गयी। १९४१ में मेक्सिको पहुँची, जहाँ 'स्वतंत्र जर्मनी' आन्दोलन मे भाग लिया। १९४७ मे जर्मनी वापस आने पर कुछ समय तक जर्मन लेखक यूनियन के अध्यक्ष के रूप में कार्य करती रही। एकेडेमी ऑफ आर्ट्स के संस्थापक सदस्यो मे से एक है। इनकी कृतियो की लम्बी सूची मे प्रसिद्ध 'सेवेथ क्रास', 'दि डेड स्टे यन्ग' (इन दोनो लघु उपन्यासो का अँग्रेजी अनुवाद सेवेन सीज बुक्स द्वारा प्रकाशित किया गया) और 'दि डेसिशन' (१९५९) भी सम्मिलित हैं। इन्हें सन् १९५१ में लेनिन शांति पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है, और १९५१ एवं १९५९ में राष्ट्रीय पुरस्कार।





सितम्बर १६४० की सुबह की बात है। जर्मनो द्वारा अधिकृत देशो मे लगाया गया विशाल स्वस्तिक झडा पेरिस के प्लेस दि ला कन्कार्द मे फहरा रहा था। दूकानो के सामने ग्राहको की कतारे उतनी ही लम्बी थी जितनी स्वय सडके। खराद का काम करने वाले की पत्नी और तीन बच्चो की माँ लूइस म्युनिएर ने सुना कि चौदहवे एरोन्दिजमेन्ट की एक दूकान मे अडे बिक रहे थे।

वह दौड कर बाहर गयी। घटे भर तक कतार मे खडी रहने के बाद उसे पाँच अडे मिले—परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए एक-एक अडा। उसे याद आया कि उसके स्कूल की एक पुरानी सहेली एनिटे बिलर्द उसी सडक पर एक होटल मे काम करती थी। उससे मिलने के लिए वह होटल के अन्दर गयी। एनिटे सामान्यतया एक शान्त और समझदार महिला थी, इसलिए उसे बहुत अधिक परेशान देख कर लूइस आश्चर्य मे पड गयी।

जब लूइस खिडकियो और वाश-बेसिनो की सफाई करने मे उसकी मदद कर रही थी, तब एनिटे ने उसे बताया कि कल दोपहर मे गेस्टैपो ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया था। होटल के रजिस्टर मे उसने

अपने को एक अल्सेसियन लिखवाया था, लेकिन वाद मे मालूम हुआ कि वह वास्तव मे कुछ साल पहले एक जर्मन वन्दी पडाव मे भाग निकला था।

वह एक खिडकी मे पालिश कर रही थी, और एनिटे अपनी कहानी सुनाती जा रही थी। वह व्यक्ति लॉ सेन्टे ले जाया गया है और जल्द ही जर्मनी वापस भेज दिया जायगा और तव शायद उसे गोली मार दी जायगी। वह उस व्यक्ति के दुर्भाग्य के कारण परेशान नही थी, क्योंकि आदमी आदमी ही है, और युद्ध भी चल ही रहा है। वास्तव मे उसकी परेशानी का कारण था उस व्यक्ति का वेटा। उसका वारह वर्षीय एक वेटा था, जो उसके ही कमरे मे रहता था, पेरिस के स्कूल मे पढने जाता था, और उसी की तरह फ्रासीसी भाषा अच्छी तरह वोल लेता था। उसकी माँ मर चुकी थी और सारी परिस्थिति विल्कुल गड्ड-मड्ड-सी हो गई थी, जैसा कि इन विदेशियो के साथ साधारणतया होता है।

जव वह लडका स्कूल से लौटा, तो उन लोगो ने उसके पिता की गिरफ्तारी के सबध मे उसे वताया। वह न कुछ वोला और न उसने आँसू ही बहाये। लेकिन जब गेस्टैपो के अफसर ने उससे अपना सामान बाँध कर अगले दिन जर्मनी मे अपने रिश्तेदारो के पास वापस जाने के लिए तैयार रहने को कहा, तो वह एकाएक जोर दे कर वोला कि जर्मनी वापस जाने के वजाय वह किसी चलती कार के सामने कूद पडना ज्यादा पसन्द करेगा। इस पर गेस्टैपो के उस अफसर ने सख्ती के साथ कहा कि जर्मनी वापस जाने या न जाने का सवाल नही था, वल्कि सवाल यह था कि वह अपने रिश्तेदारो के पास वापस जायगा या वच्चो के जेल मे।

उस लडके ने रात को एनिटे को सव-कुछ वताया था और उससे सहायता माँगी थी। प्रात काल तडके ही वह उसे अपने मित्रो के पास लिवा ले गई थी, जो कि एक कॉफे के मालिक थे। इस समय वह वही प्रतीक्षा कर रहा था। उसने सोचा था कि उस लडके की देख-रेख करने के लिए कोई-न-कोई तैयार हो जायगा, लेकिन अभी तक उसे नकारात्मक

उत्तर ही मिला था, क्योंकि लोग आतंकित थे। स्वय उसकी मकान मालकिन जर्मनो से बुरी तरह डरती थी और इस बात पर क्रुद्ध थी कि वह लडका भाग गया था।

लूइस ने चुपचाप यह सब सुना। जब एनिटे ने अपनी बात समाप्त की, तो उसने कहा—"मै ऐसे किसी लडके की देख-रेख करना चाहती हूँ।"

एनिटे ने उसे उस कॉफे का नाम बता दिया।

"और तुम्हे उस लडके के पास उसके कपडे ले जाने में डर तो न लगेगा, क्यो ?" उसने पूछा।

लूइस ने कॉफे के मालिक को एनिटे का पत्र दिया, जिस पर वह उसे बिलियर्ड-कक्ष मे लिवा ले गया, जो सवेरे उस समय बन्द था। और वहाँ वह लडका सेहन को टकटकी बाँधे देख रहा था। वह उसके बडे लडके जितना ही बडा था, और कपडे भी वैसे ही पहने था। उसकी आँखे भूरी थी और उसके नाक-नक्श मे कुछ भी ऐसा नही था जिससे यह लगता कि वह विदेशी था। उसने उसे तीव्र दृष्टि से देखा, लेकिन उसे धन्यवाद नही दिया।

अभी तक लूइस दूसरी माताओ जैसी ही एक माँ थी। वह कतारों मे खडी होती थी, कुछ नही से कुछ बना डालती थी और बहुत थोडे से बहुत-कुछ, और गृहस्थी के काम-काज के अलावा छोटे-छोटे अन्य काम भी करती थी। वह सब उसने निश्चित ही मान लिया था। लेकिन अब जब कि उस लडके की नजर उसके ऊपर जमी हुई थी, उसकी कोई बात निश्चित मान लेने की सीमा बहुत अधिक बढ गयी और उसका सामना करने की उसकी ताकत भी बढ गयी।

"आज शाम को सात बजे बाजार से बाहर कॉफे बियर्द आ जाना," उसने कहा।

फिर वह घर की ओर भागी, क्योंकि उसे ऐसी चीजें तैयार करनी थी जो थोडी होने पर भी बहुत का काम करें और खाने मे स्वादिष्ट भी हो। उसका पति घर वापस आ गया था। उसने साल भर मेजिनो लाइन की किलेबन्दी मे काम किया था। तीन हफ्ते पहले उसे सेना से अवकाश मिल गया था, और अब वह अपनी पुरानी फैक्टरी मे ही, जो अभी पिछले ही हफ्ते फिर से खुल गई थी, आधे समय काम करता था। अपनी फुर्सत का अधिकाश समय वह होटली मे बिताता था, लेकिन हमेशा वह स्वय पर क्रुद्ध हो कर घर आता था, क्योंकि वहाँ वह अपनी छोटी-सी आय का कुछ भाग गँवा आता था।

लूइस इतनी परेशान थी कि वह उसकी उत्तेजित मन स्थिति को न समझ सकी। जो कुछ होने जा रहा था, उसके लिए उसे तैयार करने के निमित्त वह अडे फोटते हुए उसे वह सब-कुछ बताने लगी जो हुआ था। लेकिन जब वह अपनी कहानी के उस स्थल पर पहुँची, जहाँ वह लडका होटल से भाग निकला था और जर्मनो से बचने के लिए छिपने का कोई स्थान तलाश कर रहा था, तब उसने लूइस को टोक कर कहा—"ऐसी वाहियात बात को बढावा दे कर तुम्हारी सहेली एनिटे ने बडी मूर्खता की। उसकी जगह मैं होता तो मैं तो उसे बन्द कर देता। वह जर्मन लडका अपने देशवासियो से जिस तरह चाहे निपटे, हमे इस फेर मे नही पडना चाहिये। उस जर्मन ने अपने बेटे की देख-भाल के लिए कोई व्यवस्था नही की, इसलिये वह अफसर उस लडके को उसके घर भेज कर ठीक ही करेगा। वास्तविकता तो यह है कि हिटलर ने सारे ससार पर कब्जा कर लिया है और कितनी भी बातचीत की जाय, स्थिति बदल नही सकती।"

उसकी पत्नी ने समझदारी से काम ले कर तेजी से विषय बदल दिया। इस समय पहली बार उसकी समझ मे आया कि उसके पति मे कितना परिवर्तन आ गया था। पहले वह प्रत्येक हडताल और प्रदर्शन मे

शामिल होता था, और चौदह जुलाई को तो इस तरह व्यवहार कर रहा था जैसे वह स्वय अकेले ही वस्टिले पर चढाई कर देगा। लेकिन वह परियो की कहानी के देव क्रिस्टाफर की तरह था, उसने सोचा, और उसी की तरह बहुतेरे ऐसे लोग है जो उसी पक्ष मे मिल जाना चाहते है जो अधिक शक्तिशाली हो। परिणाम यह होता है कि अन्त मे ऐसे लोग शैतान के रूप मे दिखाई देते है। लेकिन अफसोस करना न तो उसका स्वभाव ही था और न इसके लिए उसके व्यस्त जीवन मे समय ही था। यह व्यक्ति उसका पति था, वह उसकी पत्नी, और एक विदेशी लडका भी था जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

शाम को वह बाजार के निकट उस कॉफे मे गयी। "मै कल तक तुम्हे अपने घर नही लिवा जा सकती," उसने उस लडके को बताया।

उसे घूरते हुए उसने कहा—"अगर तुम्हे डर लग रहा हो तो तुम कुछ न करो।"

लूइस ने रुखाई के साथ उत्तर दिया कि बस एक दिन इन्तजार करने की ही बात तो है। लूइस ने कॉफे की मालकिन से उस लडके को उस रात अपने यहाँ रखे रहने का अनुरोध किया। उसने उसे बताया कि वह उसका भतीजा था। इस प्रकार के अनुरोध मे कोई विशेष बात नही थी, क्योकि पेरिस उस समय शरणार्थियो से भरा पडा था।

"कल मैं अपनी चचेरी बहन एलिस से मिली थी," अगले दिन उसने अपने पति से कहा—"उसका पति पिटीविएर्स के युद्ध-बन्दी अस्पताल मे है और वह दो दिनो के लिए जा कर उसे देखना चाहती है। उसने मुझसे कहा है कि जब तक वह वापस न आ जाय, तब तक मैं उसके लड़के को रखे रहूँ।"

उसके पति ने, जो अपने घर की चहारदीवारी मे अजनबियो को रखना पसन्द नही करता था, कहा कि वह जरा होशियार रहे कही वह लडका

उसी के गले न पड जाय। सो उसने एक गद्दा और बिछा दिया और उस लडके को लिवा लाने के लिए गयी।

"तुम घर क्यो नही जाना चाहते ?" रास्ते मे उसने प्रश्न किया।

"अगर तुम डर रही हो, तो तुम मुझे यही छोड सकती हो," उसने दुहराया—"मै अपने रिश्तेदारो के पास वापस नही जाऊँगा। हिटलर ने मेरे माँ-बाप को गिरफ्तार करवा लिया। वे पर्चियाँ लिखते, छापते और बाँटते थे। मेरी माँ मर गयी। देख लो मेरा आगे का एक दांत नदारद है। उन्होने इसे स्कूल मे तोड दिया था, क्योकि मैने उनका गीत गाने से इन्कार कर दिया था। मेरे रिश्तेदार भी नाजी हैं। उन्होने मेरे साथ बडा ही भद्दा व्यवहार किया, और मेरे माँ-बाप के खिलाफ बडी ही वाहियात बाते कही।"

लूइस ने उससे कहा कि वह इस संबध मे किसी और से कुछ न कहे—न उसके पति से, न बच्चो से, और न पडोसियो से ही।

उसके बच्चो ने भी उस अजनवी लडके को कुछ खास पसन्द नही किया और न उन्होने विशेष रूप से नापसन्द ही किया। वह अपने आप ही मे डूबा रहता और कभी हँसता नही था। उसका पति तुरन्त ही उसे नापसन्द करने लगा। उसका कहना था कि उस लडके के चेहरे का भाव देख कर उसे चिढ होती थी। घर के राशन मे उस लडके का हिस्सा लगाने के लिए वह अपनी पत्नी को डाँटता और उसकी चचेरी बहन पर इस बात के लिए भुनभुनाता कि वह अपने बेटे का भार उन लोगो के ऊपर लाद गयी। सामान्यतया उसकी बडबडाहट इस बात पर समाप्त होती थी कि उन्हे युद्ध मे किस तरह हार खानी पडी। जर्मनो ने देश पर कब्जा जरूर कर लिया था, लेकिन कम-से-कम वे अनुशासित तो थे और यह तो जानते थे कि व्यवस्था किस तरह कायम रखी जा सकती है।

एक बार जब उस लडके ने दूध की बाल्टी गिरा दी, तो वह उछल पड़ा और उसने उसे मारा।

"वहाँ जाने के वजाय यहाँ रहना फिर भी वेहतर है," बाद मे उस लड़के ने लूइस से उस समय कहा जब वह उसे सान्त्वना देने लगी।

"स्वाद बदलने के लिए मैं अच्छी पनीर खाना चाहता हूँ," एक दिन सुवह उसके पति ने कहा।

उस शाम को जब वह घर आया, तो वह वहुत उत्तेजित था।

"जानती हो, आज मैंने क्या देखा ?" उसने दीर्घ निश्वास छोडते हुए कहा—"पनीर से लदी हुई एक विशाल जर्मन लारी। वे जो कुछ भी चाहते हैं, खरीद लेते हैं। वे लाखो वैंक नोट छापते है और खर्च करते है।"

दो-तीन हफ्ते वाद लूइस पुन. अपनी सहेली एनिटे से मिलने गयी।

एनिटे उससे मिल कर जरा भी खुश नही हुई और उसने उसे चेतावनी दी कि वह वहाँ न आया करे। गेस्टैपो वाले कोस रहे थे और धमकी दे रहे थे। उन्होने यह पता लगा लिया था कि उस लडके ने रात कहाँ विताई थी, कोई औरत वहाँ गई भी थी, और फिर वे दोनो अलग-अलग समय पर वहाँ से रवाना हो गये थे। घर लौटते समय रास्ते मे लूइस उस खतरे के वारे मे सोच रही थी, जिसमे वह स्वय अपने आपको और अपने परिवार को फँसाये दे रही थी।

लेकिन ज्यो-ज्यो वह उस वात के सबध मे सोचती थी जो उसने अप्रत्याशित आवेश के वशीभूत कर डाला था, त्यो-त्यो उसे विश्वास होता जा रहा था कि उसने ठीक किया था—विशेषकर यह देखते हुए कि किस तरह खुली हुई दूकानो के सामने लगी कतारे लगी रहती थीं, बन्द दुकानो के शटर गिरे रहते थे, दरवाजो पर स्वस्तिक चिन्ह लग गये थे, और विशाल सडको पर तेजी से दौडती हुई जर्मन कारे किस तरह जोर-जोर से हार्न बजाती थी। जब वह अपनी रसोई मे वापस आयी, तो उसने स्वागत के नये भाव से उस लडके के वालो को सहलाया।

उसके पति ने शिकायत की कि वह उस लडके के पीछे दीवानी हो

रही थी। उसे अपने बेटों के लिए अफसोस होता था, इसलिए वह अपना गुस्सा उस अजनबी बच्चे पर उतारता था। अब उसकी आशाएँ एक दुखमय और बंधनयुक्त भविष्य की पूर्वसूचनाओं में परिवर्तित हो गई थीं। वह लड़का इतना शांत और सतर्क रहता था कि दंड देने के लिए वह कोई वास्तविक मौका देता ही नहीं था, लेकिन फिर भी उसका पति उसे पीटता था यह कह कर कि उसका भाव बड़ा ही अशिष्ट था।

वह अपनी फुर्सत का समय हॉली में जा कर बिताया करता था, लेकिन यह थोड़ी सी मजेदारी भी जो उसे कुछ प्रसन्नता प्रदान करती थी उससे छीन ली गयी थी। गली की नुक्कड़ पर स्थित एक लोहार-खाने पर जर्मनों ने कब्जा कर लिया था, और अब तक शांत और स्वस्तिक से मुक्त रहने वाली वह गली अब जर्मन कारीगरों से भरी रहती थी और वहाँ मरम्मत के लिए खड़ी जर्मन गाड़ियों की भीड़ लगी रहती थी। नाजी सैनिक हॉली में भरे रहते थे और वहीं मौज करते थे।

लूइस के पति को उनकी शक्ल फूटी आँख भी नहीं भाती थी। लूइस अब अकसर उसे रसोई घर की मेज पर उदास बैठा पाती थी। एक बार जब वह घंटे भर तक अपना सिर हाथों के बीच टिकाये और आँखें फाड़े वहाँ निश्चल बैठा रहा, तो उसने पूछा कि वह क्या सोच रहा था।

"अरे, सब कुछ और किसी के बारे में नहीं," उसने उत्तर दिया—"और कुछ असामान्य बातों के संबंध में भी। मैं उस जर्मन के बारे में सोच रहा था, जिसके संबंध में तुम्हारी सहेली एनिट ने तुम्हें बताया था। याद है? वही जर्मन जो हिटलर के खिलाफ था, और जिसे जर्मनों ने यहाँ गिरफ्तार कर लिया था। मैं जानना चाहता हूँ कि उसका और उसके बेटे का क्या हुआ।"

"इधर एक दिन मैं एनिटे से मिली थी,' उसकी पत्नी ने उत्तर दिया—"वे उस जर्मन को ला सन्टे ले गये थे। हो सकता है कि अब तक

वह मार भी डाला गया हो। लड़का गायब हो गया है। पेरिस विशाल नगर है। उसे कही-न-कही शरण मिल गई होगी।"

चूँकि लोग जर्मनो के बीच पीना पसन्द नही करते थे, इसलिए पड़ोसी अकसर म्यूनिएर के रसोई घर मे आ कर पीते-पिलाते थे। यह सब-कुछ ऐसा था, जो पहले ऐसे ही कभी होता था और जो म्यूनिएर पहले पसन्द भी न करता था। उनमे से अधिकाश उसके सहयोगी थे और वे चीजो के बारे मे बडी ही स्पष्टता से बाते करते थे। उसके बॉस ने अपना कार्यालय जर्मन कमिसार को सौप दिया था, जो अपनी इच्छानुसार आता जाता था। जर्मन विशेषज्ञ उस सारे माल की जॉच-तौल कर पास करते थे, जो फैक्टरी से बाहर जाता था। प्रशासन वह सब छिपाने का कोई भी प्रयत्न अब नही करता था जिसके लिए वे काम कर रहे थे। चोरी की धातु के बने यत्र जहाज से पूर्व को भेज दिये जाते थे, दूसरे देशो का गला काटने के लिए। श्रमजीवियो के लिए इस सब का फल यह होता था कि उन्हे कम काम करना पडता, उनका वेतन काट लिया जाता और उनका जबर्दस्ती तबादला कर दिया जाता था।

लूइस ने परदे गिरा दिये और उन लोगो ने अपना स्वर धीमा कर दिया। वह अजनबी लडका उन लोगो को सामने से देखने से बचता था, जैसे उसे भय हो कि उसकी आँखो की कटुता उसके हृदय की बात को प्रकट कर देगी। वह इतना पीला और दुबला हो गया था कि म्युनिएर उसकी ओर चिढ से देख कर कहता कि वह शायद बीमार है और उससे उसके बच्चो को भी छूत लग जायगी।

लूइस ने खुद ही अपने नाम एक पत्र लिखा था, जिसमे उसकी चचेरी बहन ने अनुरोध किया था कि वह उस लडके को कुछ दिन और रखे रहे, क्योकि उसका पति वास्तव मे बहुत बीमार था और वह एक कमरा खोज कर कुछ समय वही रहना चाहती थी।

"उसने अपने बच्चे की समस्या का बडा आसान हल निकाल लिया है," म्यूनिएर बडबडाया।

लूइस ने उस लड़के की प्रशसा की और उसने अपने पति को याद दिलाया कि वह रोज़ सुबह चार बजे उठ कर बाजार जाता था और अभी उसी दिन राशन का निशान लगवाये बिना ही वह गोमास खरीद लाया था।

हमेशा से सदिग्ध चरित्र वाली दो बहनें उसी सेहन मे खुलने वाले दो कमरो मे रहती थी जिसमे म्युनिएर के दरवाजे खुलते थे। उन्हे होली मे जा कर जर्मन कारीगरो की गोदो मे बैठने की आदत पड गई थी। स्थानीय पुलीस का सिपाही कुछ समय तक उन पर नजर रखे रहा, फिर उन्हे थाने मे लिवा ले गया, जहाँ उनके आँसुओ और विरोध के बावजूद उनके नाम वेश्याओ की सूची मे दर्ज कर लिये गये। इससे गली का प्रत्येक व्यक्ति खुश हुआ, लेकिन इससे उन बहिनो का व्यवहार और भी भद्दा हो गया। जर्मन कारीगर उनके कमरो मे आते-जाते और सेहन में ठाट से बैठते। म्युनिएर की रसोई मे उनकी आवाजें सुनाई पडती, और वह एव उसके साथी इससे बहुत परेशान थे।

म्युनिएर ने जर्मन अनुशासन की प्रशसा करना छोड दिया था। काम पर और घर मे उसकी जिन्दगी, उसकी छोटी-बडी खुशियाँ, उसका आराम, उसकी इज्जत, उसकी शाति, उसका खाना और यहाँ तक कि वह वायु भी जो वह अपने अन्दर खीचता—सब-कुछ पूरी तरह और क्रमानुसार विषाक्त हो गया था।

एक दिन जब म्युनिएर अपनी पत्नी के साथ अकेला था, तो इतने लम्बे मौन के बाद वह फूट पडा—"उन लोगो ने हमारे ऊपर अधिकार जमा रखा है और हम कुछ भी नही कर सकते। काश ससार मे कोई

और अधिक ताकतवर होता। लेकिन हम तो शक्तिहीन है। यदि हम अपना मुँह खोलते है, तो वे हमे पीट-पीट कर मार डालते है। उस जर्मन को, जिसके बारे मे एनिटे ने तुम्हे बताया था, तुम भूल गई होगी। लेकिन मैं तो नही भूला हूँ। उसने कम-से-कम कुछ जोखिम तो उठाया ही। और उसका वेटा—मैं उसकी इज्जत करता हूँ। तुम्हारी चचेरी बहन अपने वच्चे वाली गडबडी से चाहे जैसे निपटे। उसमे मुझे जरा भी दिलचस्पी नही है। लेकिन मै उस जर्मन लडके को किसी भी दिन शरण दे सकता था। वह एक काम तो होता। मैं उसका अपने बेटो से ज्यादा ख्याल करता। मै उसे ज्यादा अच्छा खिलाता-पिलाता भी। जरा सोचो तो, हम ऐसा कोई लडका अपने यहाँ रख ही ले, ये सैनिक यहाँ इसी तरह आते-जाते हो और कभी उन्हे शक भी न हो कि मै क्या कर रहा हूँ, कि मैं वास्तव मे किस तरह का आदमी हूँ या यहाँ मै किसे छिपाये हूँ! मैं खुले दिल से उस जैसे लडके का स्वागत करूँगा।"

उसकी पत्नी ने अपनी पीठ उसकी ओर घुमा दी।

"तुमने उसे पहले ही से रख लिया है," उसने कहा।

मैंने एनिटे से यह कहानी सुनी, जो अपने पिछले काम से ऊब गई थी और जो सोलहवे एरोन्डिसमेन्ट पर स्थित मेरे होटेल मे काम करने लगी थी।

●

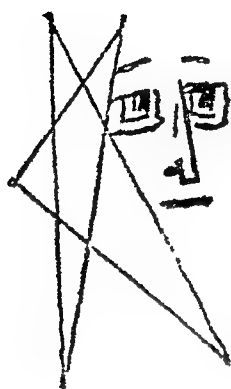
पीला सितारा

इस कहानी के लेखक

एलेक्जेडर एबुश

जिस समय नाज़ियो ने देश की वागडोर अपने हाथों मे ली उसके काफ़ी समय पहले से कम्युनिस्ट रहे आये थे। जन्म सन् १९०२ में नरेम्बर्ग में हुआ था। सन १९३३ में जर्मनी छोड़ देना पड़ा। फिर मेक्सिको चले गये और जाते समय रास्ते में पेरिस में 'दि बाउन बुक ऑफ दि हिटलर टेरर' के सम्पादन में सहायता की। मेक्सिको में जर्मन भाषा के दो पत्रों 'रेड फ्लैग' तथा 'न्यू जर्मनी' का सम्पादन किया। सन् १९४६ में स्वदेश वापस लौटने पर पहले लीग ऑफ कल्चर के सचिव पद और बाद में जर्मन जनवादी गणराज्य के सांस्कृतिक मंत्री के पद पर कार्य किया। अनेक महत्वपूर्ण मार्क्सवादी साहित्यिक अध्ययन ग्रंथ प्रस्तुत किये हैं और छोटे सांस्कृतिक निवन्ध भी लिखे हैं। लम्बी कृतियों में 'ए नेशन ऑन दि रॉन्ग रोड' (१९४६), 'लिटरेचर एंड रियालटी' (१९५२), समसामयिक जर्मन साहित्य पर एक पुस्तक (१९५३), शिलर का जीवन-चरित्र (१९५५) तथा जर्मन कवि जोहानेस आर० वेचर पर भी एक पुस्तक शामिल है। सन् १९५५ मे उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया था।





लिस्बन मे शर्पा मिन्टो पर कई सौ यहूदी चढा लिये गये जो सीधे जर्मनी से आये थे, पुरुष तथा स्त्रियाँ, अधिकाश वयोवृद्ध लोग। उनकी आयु और सैन डोमिन्गो या क्यूबा के लिए उनके प्रवेश-पत्र ही उनके तथा लुबलिन की यहूदी बस्तियो की भयकर यातनाओ अथवा रोकिट्नो की दलदलो मे निश्चित मृत्यु के बीच दीवार बन कर खडे हो गये थे। उन्हे जहाज़ के अगले हिस्से मे ठूँस दिया गया, और वहाँ उन्हे हवा की कमी और जहाज चलने से होने वाली बीमारियो से बहुत अधिक कष्ट सहन करना पडा।

जहाज के पिछले भाग मे एक दूसरी ही दुनिया बसी हुई थी। वहाँ भी फ्रास और उत्तरी अफ्रीका से आये शरणार्थियो की कम भीड-भाड नही थी। इनमे से अधिकाश स्वस्थ नौजवान लोग थे। बहुतेरे राजनीतिक रुझान के लोग थे और इनमे से बहुतेरे ऐसे लोग भी थे जो फ्रासीसी यातना शिविरो की भयकर यातनाओ को भी किसी तरह झेल गये थे। यहाँ लोग जर्मनी के बारे मे ही ज्यादा बातचीत कर रहे थे और उनके बीच मौजूद बहुत से जर्मन यह सोच रहे थे कि वे कब स्वदेश लौट सकेगे और उन्हे कब एक स्वतत्र जर्मनी के लिए सघर्ष करने का मौका मिल सकेगा। लेकिन इस बातचीत के बीच रह-रह कर यह निराशाजनक

वाक्य भी सुनने को मिल जाता था कि सभी जर्मन तो हिटलर के पक्ष मे है। जो लोग ऐसी निराशाजनक वात वीच-वीच मे वोल देते थे वे यहूदी थे, जिन्हे अनेक वर्षो से एक देश से दूसरे देश भगाया जाता रहा है और जो अव इस विश्वास के साथ जा रहे थे कि यूरोप से यह उनकी अंतिम विदा है।

अनेक कडई निराशाओ के फलस्वरूप मन मे जमी धारणाओ के पुर्ननिरीक्षण के लिए उन्हे अभी-अभी सीधे जर्मनी से चले आ रहे यहूदियो से वात करने के लिए केवल कुछ कदम आगे वढाने की जरूरत पडती थी। हालाँकि जर्मनी के वारे मे उनके मुँह से कुछ भी कहलवा पाना आसान काम न था। इसके लिए उनके वगल मे जहाज की छत पर वर्षा, हवा और धूप मे घटो उठना-वैठना और लेटना पडता और धीरे-धीरे नित्य थोडी-थोडी वातचीत कर के उनका विश्वास प्राप्त करना पडता था। लेकिन जैसे-जैसे जहाज सैन डोमिन्गो की ओर दक्षिण दिशा मे आगे और आगे वढता जाता वैसे-वैसे नये गोलार्द्ध की आनन्ददायक धूप जैसे चुप्पी और आत्म-सयम के अंतिम घेरे को भी पूरी तरह तोडती जाती थी।

सव से पहले चुप्पी तोडी एक महिला ने जिसके सुन्दर वाल सफेद हो चले थे। उसकी वातचीत, रूप-रग और पहनावे तथा सामान्य आचरण ने तुरन्त ही स्पष्ट कर दिया कि वह मध्यम श्रेणी के परिवार से आई है। वह हेसेन के एक छोटे-से ग्रामीण कस्वे से आई थी।

"मेरा परिवार उसी स्थान पर पिछले डेढ सौ साल से रहता रहा है," उसने कहना शुरू किया। "जव किसानो ने सुना कि हम लोग कस्वा छोड कर जा रहे हे तो गुप्त रूप से वे सभी एक-एक कर के हमे विदा करने आये। उनकी पत्नियाँ हमारे साथ रोयी। और एक ने तो वह वात कह भी डाली जो अन्य सभी लोगो के दिमाग मे भी उमड-घुमड़ रही थी, कि यदि हिटलर विजयी हो गया तो हमारे लिए वह दिन आप लोगो से भी अधिक अशुभ सिद्ध होगा।"

वियना से आयी अधेड स्त्रियो के एक गुट ने भी बातचीत करना और अपने दुर्भाग्य का दुखडा रोना शुरू कर दिया। उनमे से एक स्त्री ऐसी थी जिसका पति प्रथम विश्व-युद्ध मे अपग हो गया था। उस स्त्री को सेना के एक आदमी ने स्वय उसी के मकान के उसके कमरे मे भयकर रूप से पीटा था। एक अन्य स्त्री ने हमे बताया कि अंतिम दिन तक वह किस तरह लुबलिन भेजे जाने के भय से त्रस्त रही है। तीसरी स्त्री ने बताया कि एक ऐसे परिवार ने, जो हमेशा से उसके प्रति बहुत कृपालु रहा है, उसे थोडी-सी मछली दी थी, जिसे खरीदने की यहूदियो को इजाजत नही थी। इस पर संतरी ने उसे खूब बुरा-भला कहा था और उसे तहखाने की एक कोठरी मे बद कर दिया गया था, और फिर उसे घसीटते हुए पुलीस स्टेशन ले जाया गया था।

उनकी कहानियो से इतना स्पष्ट था कि यद्यपि आस्ट्रिया पर जर्मन लोगो ने साढे तीन वर्षो से कब्जा कर रखा था, फिर भी वहाँ अभी भी कुछ पुलीस अफसर ऐसे थे जो नाजियो की यातनाओ के शिकार यहूदी लोगो के प्रति सहानुभूति प्रकट करते थे, चाहे ऐसा वे बहुत सावधानी-पूर्वक ही क्यो न करे।

"इन क्रूरताओ के बारे मे साधारण लोग क्या कहते है ?" मैने पूछा।

मछलियो वाली स्त्री बोली कि उसके तो बहुत से कैथोलिक मित्र है।

वह कहती गयी—"नवम्बर के आरम्भ मे जब मै वियना से रवाना हुआ उस समय तक उनमे से बहुतो को पूर्वी मोर्चे से यह समाचार प्राप्त हो चुका था कि उनके बेटे, दामाद या भाई मारे गये है।"

"अनेक गैर-यहूदी लोग भी नाजियो के सख्त खिलाफ है," अपग व्यक्ति की पत्नी ने अपनी आवाज को फुसफुसाहट के स्वर जैसी धीमी बना कर बोली—"एक विशाल कारखाने से एक आदमी मुझ से मिलने आया था। और वह मेरे साथ जो भी दुर्व्यवहार हुए थे उन सब का विस्तृत ब्यौरा तथा सेना के जिस आदमी ने मुझे पीटा था उसका नाम

भी मुझ से पूछ ले गया। वे लोग बाद में ऐसे लोगो से निपटने के लिए उनकी पूरी सूची बना कर रख रहे हैं।"

'मछली वाली स्त्री' ने कहा—"जब मैं देश छोड़ने की तैयारी कर रही थी उस समय मेरा एक विशेष कार्यालय से पाला पड़ गया। उसके अफसर का व्यवहार मैत्रीपूर्ण था और उसने बड़ी शीघ्रतापूर्वक मेरी सारी व्यवस्था कर दी। वह मुझ से पूछने लगा—'आप लोग यहीं क्यों नहीं बनी रहतीं ? आखिर आप लोग क्यूबा किस लिए जाना चाहती हैं ? और विशेष रूप से इस समय जब कि यह सारी गंदगी निश्चित रूप से बहुत जल्द समाप्त हो जायगी।"

वियना गुट के निकट ही यात्रियो का एक अन्य गुट साधारणत. एक साथ ही बैठा करता था। उस गुट के लोग बर्लिन, कोयनिग्सबर्ग, फ्रैंकफर्ट-ऑन-मेन, राइनलैंड और फ्रैंकोनिया से आये थे और इस यात्रा मे ही इन लोगो ने अपने बहुत से दोस्त बना लिए थे। जर्मनी छोड़ने के पहले उन्होंने जो अंतिम बात सुनी थी वह हिटलर की यह घोषणा थी कि अक्तूबर मे होने वाला जर्मन आक्रमण लाल सेना के लिए अंतिम पराजय सिद्ध होगा। अब वे रोज़ बड़ी बेचैनी से उस संक्षिप्त रेडियो-समाचार का इंतज़ार करते जो मध्यान्ह के समय प्रसारित होता था। कारण यह था कि इस लम्बी समुद्री यात्रा मे हमें समाचार-पत्र मिलते ही न थे और चर्चा के लिए हमारे पास अफवाहों के सिवाय और कुछ नहीं था। सोवियत सेनाओं की सफलताओं के समाचारों से उन्हें बड़ा आश्चर्य होता था, लेकिन इससे उन्हें अधिक स्वतंत्रतापूर्वक बातचीत करने का प्रोत्साहन भी मिलता था और अब तो उन्होंने भी अपने किस्से सुनाने शुरू कर दिये।

एक जवान लड़की को उसके हृदय-रोग के कारण इस यात्रा पर अपने माता-पिता के साथ जाने का बहाना मिल गया था। पता नहीं उसे सचमुच ही हृदय-रोग था या इस रोग का अनुसंधान उस गेस्टैपो डाक्टर

ने किया था जिसने उसकी परीक्षा की थी। उस लड़की ने अपनी जेब से अपना पीला सितारा निकाला।

"आप लोगो ने ऐसा सितारा कभी देखा है ?" उसने आस-पास बैठे लोगो से प्रश्न किया, और उस पर लिखे 'जूड' शब्द की ओर इशारा किया, जो बडे अलकृत ढग से इस तरह लिखा गया था कि वह यहूदी कला का नमूना दिखे। "आप लोग जानते है इन अक्षरो का क्या अर्थ है ?...इटली और जर्मनी की वधिया बैठ गयी ."

उसकी इस बात से बातचीत का सिलसिला घूम कर इस बहस मे परिणत हो गया कि यहूदी सितारे के प्रथम प्रचार के प्रति जर्मनी मे लोगो की कैसी प्रतिक्रिया हुई थी।

"फ्रैंकफर्ट मे यहूदियो को दूसरी ट्राम-कार के सामने वाले प्लैटफार्म पर ही खडे होने की अनुमति थी," एक बूढे व्यक्ति ने फ्रैंकफर्ट लहजे मे कहना शुरू किया—"एक बार एक आर्य जब ट्राम-कार पर सवार हुआ तो कडक्टर ने उससे भी कहा कि वह कार के बीचोबीच चला जाय।" उस व्यक्ति ने रुखाई से जवाब दिया—'जब तक मेरा दिमाग ठिकाने है मै यही खडा रहूँगा। जब मै सनक जाऊँगा तो वहाँ फौरन चला जाऊँगा।'

"हमारे राशन कार्डो पर मे बच्चो के लिए भी सब्जी या फल मिलने की कोई व्यवस्था नही है। एक बार एक यहूदी परिवार के मकान की तलाशी लेते समय पुलीस को एक पौड टमाटर प्राप्त हो गया और उस परिवार को इस जुर्म के लिए १५० मार्क जुर्माना देना पडा। लेकिन पीला सितारा प्रचारित कर दिये जाने के बाद आर्य मित्रो ने हमारे लिए खाना-पीना लाना शुरू कर दिया और अपने तहखानो मे छिपने की जगह भी देने लगे। बहुत से लोग तो इतने सभ्य और सुसस्कृत थे कि वे यहूदियो के खिलाफ नाजियो की साजिश मे शामिल हो ही नही सकते थे।"

बातचीत के दौरान सभ्य और सुसस्कृत शब्द अकसर ही सुनने को मिल जाता था।

"औसत र्बालिन-निवासी शायद इतना अधिक सभ्य और मुसरकृत है कि वह गोयबेल्स की वातो पर विश्वास करने को तैयार ही नही हो सकता," र्बालिन की एक अधेड स्त्री ने कहा। "पहले दिन जव मुझे यहूदी सितारा पहन कर कस्बे की रेलवे से यात्रा करनी पडी तो मेरे सामने बैठी एक महिला मुझे बरावर ताकती रही। मैने देखा वह कुछ लिख रही थी। जव वह चार्लाटिनवर्ग स्टेशन पर गाडी से उतरी तो उसने मुझे एक किताव दी। मुझे उस किताव मे कागज का एक पुर्जा मिला जिस पर उसने लिखा था—'जव मैने आपको कोट पर सितारा लगा कर सामने बैठी देखा तो मुझे अपनी पूरी जाति पर इतनी शर्म मालूम हुई कि मैं वेकावू हो उठी। कृपया इस पुरतक को भेट-स्वरूप स्वीकार कीजिये।' "

कस्वे की रेलवे की चर्चा सुन कर भूतपूर्व अध्यापक तथा एक विशाल कारखाने मे काम करने वाले एक अन्य र्बालिन-निवासी को एक ऐसी घटना याद आ गयी जो स्वय उसके साथ ही घटित हुई थी।

उसने कहना शुरू किया—"सिगरेट की दूकानो पर 'यहूदियो के लिए प्रवेश-निषेध' का साइनबोर्ड लगा दिया गया था। जव हमने पहले दिन पीले सितारे पहने तो अन्य कर्मचारियो ने कस्वे की रेलवे पर काम करने जाते समय रास्ते मे हमे सिगार और सिगरेटे दी। मेरे एक मित्र के वगल मे जो व्यक्ति वैठा था उसकी कॉलर पर स्वस्तिक का चिन्ह था। उसे एकाएक लगा कि उस आदमी ने उसकी जेव मे कोई चीज डाल दी। मेरा मित्र वहुत अधिक आतकित हो उठा, क्योकि उसने समझा कि यह उसे उत्तेजित करने का तरीका था। लेकिन जव वह ट्रेन से वाहर निकला और अपनी जेव मे टटोल कर देखा तो उसे एक मीट सैडविच मिला, जिसे उस व्यक्ति ने उसकी जेव मे डाल दिया था।"

अव इस वातचीत मे एक सरकारी अफसर की विधवा भी शामिल हो गयी, जो उसी तरह वोलती थी और वैसी ही दिखती थी जो कुछ वह वास्तव मे थी।

"राइनलैंड के जिस हिस्से मे हम लोग रहते थे वहाँ हम लोगो को यहूदी सितारा पहना दिये जाने के बाद भी हमारे साथ लोगो का व्यवहार बहुत अच्छा था। कुछ लफंगो को छोड कर कभी कोई सडक पर हम पर बोलियाँ तक नही कसता था। नेयुन मे, जहाँ लगभग सभी कैथोलिक थे, एक अजनबी व्यक्ति ने मेरे भतीजे को देख कर अपनी हैट उतार कर उसका अभिवादन किया। मेरा भतीजा रुक गया और उस अजनबी से कहा कि वह तो उसे जानता भी नही।

"उस अजनबी ने कहा—'मैं उन सबको हैट उतार कर अभिवादन करता हूं जो पीला सितारा पहने होते है।' और एक छोटे से गॉव मे मेरी एक रिश्ते की बहन है जिसने मेयर से कहा कि यदि वह अब उससे सडक पर बात नही करेगा तो उसे इस बात से कोई शिकायत नही होगी।

"मगर मेयर ने फौरन जवाब दिया—'भविष्य मे तो मै और खुल कर तुम्हारा अभिवादन किया करूँगा।' "

अब डूसेल्डार्फ से आयी एक स्त्री ने मेरे चिर परिचित राइनलैंड के लहजे मे कहना शुरू किया—"मुझे जब पहले दिन पीला सितारा पहनना पडा तो मै बहुत अधिक भयभीत हुई। लोगो के चेहरे की तरफ देखने की मेरी हिम्मत न पडती। लेकिन जब मैं सिगरेट की दूकान के सामने लगी लाइन के बगल से निकली तो किसी ने मुझ से जोर से कहा, 'हलो!' मुझे ठेला खीचती एक स्त्री ने रोक लिया और फिर मुझ से पूछने लगी कि क्या वह सितारा मुझे खरीदना पडा था।

"मैंने जवाब दिया—'हाँ दस फेनिग्स मे।'

"'वे लोग आखिर क्यो सनक गये है।' उसने गुर्रा कर कहा।"

अब जिस व्यक्ति से मेरी बातचीत हुई वह कोयनिग्सबर्ग से आया हुआ एक बुद्धिजीवी था। वह यहूदियो को मिली यातनाओ के अतिरिक्त अन्य अनेक बातो के सबध मे बाते करता रहा।

"मेरे अनेको आर्य मित्र थे जो मेरे पीले सितारे को पहनने के बाद

भी मुझसे बातचीत करते रहे, मिलते-जुलते रहे। बड़े सुगम्य और भले लोग है वे जिनसे बीसो वर्ष से मेरा परिचय रहा है। उनमे से एक व्यक्ति हवाई जहाज के एक कारखाने का फोरमैन था, जिसमे तीन हजार से अधिक मजदूर काम करते थे। रोज सुबह मजदूर पहला-पहला सवाल यही करते—'विदेशी रेडियो पर क्या नया समाचार आया ?' मेरे आर्य मित्र को पक्का विश्वास था कि जनता की ऐसी मन स्थिति में हिटलर विजयी नही हो सकता, और विशेष रूप से अब तो वह और भी नही जीत सकता, जब कि प्रत्येक व्यक्ति के मन मे यह भय उत्पन्न हो गया है कि दुश्मन की तरफ से अब अमेरिकी भी युद्ध मे कूद पड़ेंगे।"

"क्या जर्मन रेडियो का दावा सच है कि सोवियत हवाबाज कभी भी कोमनिग्सवर्ग पर हमला करने मे सफल नही हो सके?" मैने उनसे पूछा।

"अरे नही साहब, यह दावा कतई सच नही है। उन लोगो ने हम पर जाने कितनी बार जोरदार हमले किये है।"

गाड़ीवान की भूरी टोपी पहने एक बर्लिन-निवासी ने ब्रिटिश हवाई हमलो, विशेष रूप से मई १९४१ मे हुये हमलो के बारे मे बताने लगा। उसने बताया कि सेंट जार्ज चर्च के निकट मकानो की एक पूरी कतार को बिलकुल तहस-नहस कर दिया गया था, और आपेरा हाउस उन्टर डेन लिंडेन स्थित नगर-पुस्तकालय, कैसर विल्हेम स्ट्रैसी तथा फहर-बेलिनर स्ट्रैसी के मकानो, स्कोयनबर्ग स्थित टाउन हॉल तथा लेहर्टर स्टेशन पुल को इस तरह विनष्ट कर दिया गया था कि वे मलबे के ढेर बन गये थे। लेकिन इसके बाद हमले बहुत जल्दी-जल्दी नही हुये और नुकसान भी कम ही हुये।

उसने दो छोटी-छोटी कहानियाँ भी सुनाई जो नयी-नयी लोक-कथा जैसी लग रही थी।

"ब्लूमेन स्ट्रैसी मे यहूदियो को हवाई हमला सुरक्षा केन्द्रो का इस्तेमाल करने की इजाजत न थी। उनसे कहा गया था कि वे बचाव

के लिए एक व्यापारी की दूकान के तहखाने का उपयोग करें। लेकिन नये नियम लागू होने के बाद पहले ही हवाई हमले मे आर्यो के सुरक्षा केन्द्र पर सीधा आक्रमण हो गया और उस केन्द्र मे छिपे सभी लोग मलवे के नीचे दफन हो गये। वह व्यापारी, जो कट्टर प्रोटेस्टैंट था, हमले के बाद बोला, 'हमले से यहूदियो को सब से अधिक नुकसान पहुँचना था, लेकिन ईश्वर की यह इच्छा नही थी।' "

जिन घरो मे ऐसा हुआ था उनकी सही-सही सख्या बताने के लिए वह रुका, और फिर कहने लगा—"जानते है, जब हम पोट्सडैम स्टेशन की ओर चल चुके थे उस समय तक हिटलर ने खून के प्यासे यहूदी-विरोधी परचे बटवाना आवश्यक समझा, जिनमे जनता से कहा गया था कि एक-एक जर्मन सैनिक की मृत्यु के लिए यहूदी ही जिम्मेदार है। यदि जर्मन जनता सचमुच ही इतने यहूदी-विरोधी होते तो इन नौ वर्षो के बाद हममे से एक भी जीवित न बचा होता। अभी भी वहाँ बहुतेरे सुसभ्य, भले लोग है, यह बात और है कि वे अपनी जबान नही खोलते।"

एक स्थूलकाय नाटी स्त्री, जिसके बाल असमय ही पक गये थे, बीच-बीच मे हमारी बातचीत मे शामिल हो जाती थी। उसकी आँखो के नीचे की काली छाया बताती थी कि उसने बहुत आँसू बहाये है। लेकिन उसे इस बातचीत मे शामिल होने के लिए राजी करने मे काफी समय लग गया।

"आप तो शायद एसेन से आ रही है, है न ?" मैने उससे पूछा।

"नही, लकिन मै वहाँ से बहुत दूर नही रहती थी," मुस्काराहट की प्रेत-जैसी छाया होठो पर बिखेर कर वह बोली—"लगता है, आप बोली पहचानते है ?"

और इसके बाद उसने मुझे बताया कि उस पर पिछले दिनो क्या-क्या गुजरी थी।

उसने कहना शुरू किया—"मेरे पास स्वय अपना और अपने पद्रह-

वर्षीय बेटे का एक वर्ष का वीसा था। मैं शीघ्र ही अपने बेटे सहित अपने पति से मिलने वाली थी, जो तीन साल पहले अमरीका चले गये थे। पिछली सदियो मे पूरे तेरह हफ्तो तक रोज रात मे हम पर हवाई हमले होते रहे। मेरा बेटा हमलो के कारण अब सो भी नही पाता था। उसकी निद्रा-स्नायु मे निर्जीव हो चुकी थी। हमने स्नायुविक अस्वस्थता के इलाज के लिए उसे एक यहूदी सैनिटोरियम मे भेज दिया। एक दिन सैनिटोरियम के सारे मरीज पोलैंड भेज दिये गये। वहाँ उन्हे गैस से दम घोट कर मार डाला गया, जिनमे मेरा बेटा भी था।"

यह स्त्री, जिसके मासूम बेटे को नाजियो ने मौत के घाट उतार दिया था, यदि मन से इस विश्वास को हमेशा-हमेशा के लिए निकाल चुकी होती कि जर्मन लोगो मे तनिक भी अच्छाई बची नही है, तो आश्चर्य की बात न होती और उसके मन की स्थिति को सहज ही समझा जा सकता। लेकिन इतना होने पर भी उसने मुझ से यही बताया कि सारे-के-सारे खान-कर्मचारी स्वय अपनी स्थिति से ही नही बल्कि पूरे नाज़ी शासन से कितने अधिक असतुष्ट थे।

उसने बताया—"हमारे पडोस मे ही एक सैनिक रहता था। वह स्पष्ट शब्दो मे कहा करता था कि उसे एडोल्फ हिटलर के प्रति कोई आस्था नही है और यदि उसे हिटलर के प्रति आस्था होती तो वह कभी हमसे बात न करता। वह कहता, 'यदि वह विजयी हो जायगा तो हम सब लोगो की बर्बादी हो जायगी और तब हमे हर वर्दीधारी के जूते चाटने होगे।' जब मैं बर्लिन से गुजर रही थी तो एक अन्य सैनिक ने मेरा पीला सितारा देख कर मुझसे माफी माँगी। 'मैं सामान ढोने मे आपकी बहुत मदद करना चाहता हूँ,' उदास स्वर मे उसने कहा—'मगर मेरे करने से यहाँ बडी अप्रिय स्थिति पैदा हो जायगी।'

"एक खान-कर्मचारी ने एक दिन मेरी एक सहेली को सडक पर रोक कर उसके पीले सितारे की ओर सकेत करते हुए कहा था—'इसे अपने

दिल मे बहुत अधिक न बिठाइये। जब कयामत का दिन आयेगा तो कम-से-कम हम यह तो जान सकेंगे, कि वास्तव मे हम कहाँ किस स्थिति मे हैं और तब हम गलती से गलत लोगो को दड देते नही फिरेगे।' "

यही वह बाते है जो सर्पा पिन्टो जहाज मे सवार उन लोगो के हृदय से निकल रही थी जो अभी अक्तूबर या नवम्बर १९४१ मे ही जर्मनी छोड कर रवाना हुए थे। इन बातो से हमे यह समझने मे सहायता मिल सकती है कि हिटलर का प्रचार अधिकारी गोयबेल्स क्यो लगातार 'यहूदियो के मित्रो' को गालियाँ देता जा रहा था और उसे क्यो दस नाजी आज्ञाएँ प्रकाशित करनी पडी थी। जर्मनी के हर कोने से आ रहे इन लोगो ने जहाज पर जो कुछ कहा उसकी सच्चाई मे शायद कोई भी सदेह नही कर सकता।

जब जहाज सैन डोमिन्गो, क्यूबा तथा मेक्सिको के बन्दरगाहो पर जा लगा और इन अधेड यात्रियो ने अपने सूर्य की किरणो मे तपे और प्रसन्न बेटे-बेटियो को समुद्र के किनारे अपना इतजार करते देखा, तो वे खुशी से उछलते हुये किनारे की तरफ दौड पडे। वे एक नया जीवन आरम्भ कर रहे थे—ऐसा जीवन जिसमे किसी पीले सितारे का कोई स्थान न था।

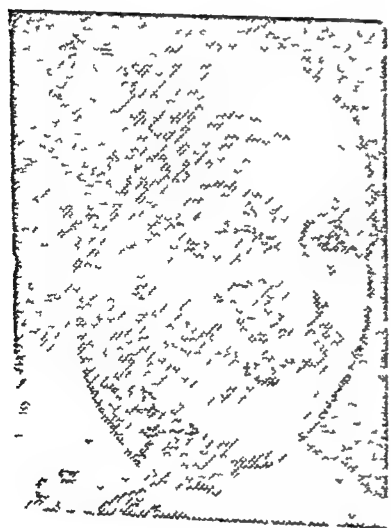
लेकिन मेरे मन मे उस यहूदी स्त्री की छाया सब से अधिक गहराई से जमी हुई है जो मौत के आगोश में सुला दिये गये अपने मासूम बेटे को छोड कर हमारे साथ समुद्र की यात्रा कर रही थी अपने पति से मिलन के लिए, लेकिन जिसने अपने दुख के अथाह सागर के बीच भी यह नही भुलाया था कि अभी भी कुछ ऐसे जर्मन मौजूद है जो हिटलर से नफरत करते है।

काला मूर्ख

इस कहानी के लेखक

यूरिज ब्रेजान

सॉर्व लेखक तथा कवि हैं। सन १९१६ ईसवी मे जन्म हुआ था। नाज़ियों का शासन कायम हो जाने के बाद उस समय तक एक राष्ट्रीय प्रतिरोध दल के साथ कार्य करते जब तक कि इन्हे भाग कर पोलैंड और



चेकोस्लोवाकिया नहीं जाना पड़ा। सन् १९३८ ईसवी मे गुप्त रूप से ड्रेसडेन लौट आये किन्तु फिर भी गिरफ़्तार हो गये और जेल में डाल दिये गये। युद्ध छिड़ जाने पर उन्हे जबर्दस्ती सेना में भर्ती कर लिया गया। सन् १९४५ ईसवी में जर्मनी वापस आने पर सॉर्ब लोगो के ही बीच युवा वर्ग का और सांस्कृतिक कार्य करना आरम्भ कर दिया। इनकी कविताओं, कहानियो तथा उपन्यासो से एक सॉर्ब गाँव का जीवन बोलता है। इनकी प्रकाशित रचनाओ मे 'कॉर्न ग्रोज इन दि बाल्क' (१९५१), 'फ़िफ़्टी-टू वीक्स मेक ए इयर' (सन् १९५३ मे प्रकाशित, १९५५ मे फ़िल्म-निर्माण), 'दि स्टूडेन्ट' (१९५८) तथा 'दि फ़ॉलो इयर्स' (१९६१) प्रमुख हैं। अंतिम रचना से ही प्रस्तुत कहानी उद्धृत की गई है। १९५१ मे राष्ट्रीय पुरस्कार तथा १९५९ मे सॉर्व ने साहित्यिक पुरस्कार भी प्राप्त किया।



पत्थर की खान मे काम करने का फेलिक्स का यह तीसरा दिन था। उसका वेतन छ. पेन्स प्रति घटा था।

वे लोग फर्श मे लगाये जाने वाले पत्थर निकाल रहे थे, तीखे किनारे वाले पाँच-पाँच इच के टुकडे। इस दल मे माइकेल डॉमश, क्लेरनेट-वादक जॉन शस्टर, पीटर तथा फेलिक्स थे।

बुलडोज़र का ड्राइवर हल्की धूप मे पत्थरो के एक ढेर पर बैठा हुआ था, सिगरेट के कश खीचता आराम करता हुआ।

"तुम लोगो को मेरे लिए काम कर-कर के जान देने की कोई ज़रूरत नही," वह बोला—"पत्थर बहुत जल्द वहाँ पहुँच जायँगे।"

"कहाँ ?" क्लैरनेट-वादक पूछ बैठा।

"नूरेम्बर्ग," ड्राइवर बोला—"ताकि सारा काम जोर-शोर से चल सके। मेरा मतलब है मार्च करता हुआ चल सके।"

तभी फोरमैन उधर आ निकला। बोला—"तुम लोग आलसियो की तरह हरामखोरी करते बैठे रहोगे तो मै तुम्हारी मज़दूरी एक पेनी प्रति घटे के हिसाब से काट लूँगा।"

और वह वहाँ से चला गया।

ड्राइवर कहने लगा—"आज दोपहर के खाने के समय एक आदमी आ रहा है, जो इस बात का पूरा ब्यौरा देगा कि यह काम आप लोगो को क्यो शीघ्रतापूर्वक खत्म कर डालना चाहिए।"

"कौन है वह ?" नाइकेल ने पूछा।

"शायद काला मूर्ख।"

जर्मन श्रमिक मोर्चे के वरिष्ठ अधिकारियो को उन्होने 'काला मूर्ख' नाम ही दे रखा था।

नाइकेल ने अनजाने ही थूक दिया, फिर शेड की लोहे की गर्डरो पर पत्थर के कुछ बडे-बडे टुकडे फेकने लगा। वह जोर से मुस्करा दिया। बोला—"अगर बॉस आ जाय तो उससे कह देना कि मैं चला गया।"

वह पत्थर निकालने की खान के गहरे गड्ढे मे नीची सीढियाँ उतरता हुआ अदृश्य हो गया। वह हर जगह आँखो की सुरक्षा के लिए पहने जाने वाले धूप के चश्मे को ढूँढता फिर रहा था। उसने यहाँ-वहाँ मजदूरी करने वाली जर्जर बुढ़ियो से दो-एक बातें की, कुन्चन्क और जैकब हैनुन्च से बोला, और अपने चश्मे को ढूँढ़ता आगे बढ गया। उसने बढईखाने मे ढुँढ़ाई की, फिर मजदूरो की कोठरियों मे ढूँढता फिरा और अंत मे वह कैंटीन मे हूटर देने वाले की भट्ठी पर पहुँच गया। जब उसे अपना चश्मा कही नही मिला तो उसने अपने पैंट की जेब मे हाथ डाला—चश्मा जेब मे ही पड़ा था। उसने चश्मा जेब से निकाल कर उसे अपनी नाक पर लगा लिया और सड़क के ऊपरी सतह पर जडे जाने वाले पत्थरो के निकट वापस चला गया।

"फोरमैन यहाँ आया था ?" उसने तेजी से पूछा।

"नही।" जवाब मिल गया।

"शायद काला मूर्ख आ गया है, और वह उसी के साथ है," उसने सिर हिलाते हुए कहा। . .

दोपहर के खाने के समय जब उन लोगो ने कैन्टीन मे झाँक कर देखा तो काला मूर्ख फोरमैन के साथ एक कोने मे बैठा दिखाई दिया। माइकेल ने फेलिक्स को हाथ हिला कर इशारा किया। वह उसे कैन्टीन के पीछे खीच ले गया। बोला—"अगर कोई आये तो तुम सीटी बजा देना।"

फ़ेलिक्स के सामने सीटी बजाने का कोई मौका नही आया। माइकेल मन-ही-मन घबराता हुआ कैन्टीन की छत पर चढ कर चिमनी के निकट पहुँच गया। उसने चिमनी पर एक प्लेट रख दी, फिर तेजी से उतर आया।

"कुछ समझे ?" उतर कर उसने पूछा।

फेलिक्स ने सिर हिला दिया।

"अभी देखना," माइकेल फिर बोला।

कैन्टीन टसाटस भर गई थी, बेंचो पर बैठे लोग तेजी से प्लेटो पर चम्मच खटका रहे थे और अपना खाना गले के नीचे उतार रहे थे। काला मूर्ख अभी भी फोरमैन के साथ एक कोने मे बैठा हुआ था।

हर आदमी प्रसन्न दिख रहा था। एक मोटा-ताज़ा व्यक्ति बेश्च, जो कभी एक फार्म मे राजगीर का काम करता था, जोर से चिल्ला कर बोला—"अरे भाई विली, आज अपने पुराने साथियो को ब्राडी न पिला डालो ! तुम तो अब बडी तरक्की कर गये हो, उसकी खुशी मे कुछ खिलाना-पिलाना तो चाहिए !"

विली मेस्सेर ही काला मूर्ख था। पहले वह पत्थर की खान मे काम करता था। वह स्वय यह कभी नही जान पाया कि वह किस पक्ष मे है।

लेकिन हिटलर के कब्ज़े के दो हफ्ते पहले एकाएक ही उसने अपनी टेढी नाक को हवा मे ऊपर उठा कर तिरस्कार से नाक सिकोडी और भूरी कमीज़ पहन ली। अब वह भूरे ही जूते पहनता था और एक पुराना भूरा सूट भी पहनता था। उसकी ऐंठे हुए घुटनो वाली टाँगे पहले ही जैसी धनुपाकार बनी हुई थी, और उसके चेहरे को देख कर यदि कोई निष्कर्ष निकाला जाय तो कहना पडेगा कि वह पहले से भी ज्यादा मूर्ख दिखने लगा था। इस समय वह अपनी नाक फडफडाता अजीब आवाज़ करता बैठा हुआ था।

माइकेल ने हूटर देने वाले को इशारा किया, जिसका काम भट्ठे की प्लेट को भोजन-पात्रो के लिए पर्याप्त मात्रा मे गरम रखना था। हूटर देने वाले ने भट्ठे मे उत्साहपूर्वक और लकडियाँ झोंक दी। फोरमैन चौक कर उसकी ओर देखने लगा।

"मैं भट्ठी को ठंढी नही होने दूँगा," अपनी ओर फारमैन को ताकते देख कर हूटर देने वाला बोल उठा।

काला मूर्ख कोने मे ही अपनी जगह पर खडा हो गया और बोलने के लिए अपने को तैयार करता हुआ अपने गिलास की ब्राडी घुटक गया। माइकेल चिल्ला उठा—"हमे एक शब्द भी सुनाई नही पड रहा है बिली। हम तुम्हारी एक-एक बात अच्छी तरह सुनना चाहते है।"

"मगर मैंने तो अभी बोलना शुरू भी नही किया," काला मूर्ख बोला।

माइकेल फिर चिल्लाया—"अरे भाई बिली, हमारी समझ मे एक शब्द भी नही आ रहा है, और शायद अभी-अभी तुमने कोई महत्वपूर्ण बात कही है।"

"आप कमरे के बीच मे आ जाइये, बिली साहब!" कोई अन्य व्यक्ति ज़ोर से चिल्ला कर बोला।

कमरे के बीचोबीच खडे होने के लिए केवल एक स्थान था—भट्ठी के सामने या पीछे।

काला मूर्ख भट्ठी के सामने आ खडा हुआ। उसके पीछे भट्ठी के तवे में वनी दरारो और भट्ठी के मुँह से धुआँ निकल-निकल कर उसके इर्द-गिर्द छाने लगा।

फेलिक्स ने माइकेल को आँख मार कर कहा—"अब मुझे सुनाई पड़ने लगा।" पत्थर की खान के फोरमैन को भी अब उसकी बात समझ मे आने लगी। उसकी आदत थी कि वह अपने मनोभावो को बाइबिल जैसी भाषा मे प्रकट किया करता था। वह सोचने लगा, यदि तुम ईश्वर के पुत्र हो तो अब अपनी रक्षा करो। मज़दूर मोर्चा क्षेत्र के उस जोशीले वक्ता की समझ मे कुछ नहीं आया, और उसने बोलना शुरू कर दिया। कैन्टीन के क्षीणकाय मैनेजर ने, जिसकी बोली सलाद की क्रीम जैसी सुकोमल थी, तुरन्त अनुरोध किया—"विली साहब, आप सॉरबियन भाषा मे बोलें तो बडी कृपा हो। हम लोग आपकी एक-एक बात को सुनना और समझना चाहते है, समझे आप?"

और लोगों ने भी यही अनुरोध दोहरा दिया, कुछ कम कोमल स्वर में ही किन्तु इसी कारण के आधार पर।

काला मूर्ख तीव्र गति से विचार करने और बोलने की कोशिश मे ज़रा देर मे ही पसीने-पसीने हो गया। वह सोच रहा था, वाह ये गँवार मेरी बातो को इतना महत्व देते है। लेकिन सारबियन भाषा मे बोलने की मनाही थी, या यो कहे कि उस भाषा मे बोलना अवाछनीय बात थी। मगर उसने सोचा एक अच्छे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यहाँ सॉरबियन भाषा मे बोलना शायद ठीक ही होगा और मुझे धूम्रपान के कारण खाँसी भी आ रही है। इतना ख्याल आते ही उसने खूब खकार कर पहले अपना गला साफ किया।

कैन्टीन मे मौजूद सभी लोग उसे मैत्रीपूर्ण दृष्टि से देख रहे थे। केवल टेढी नाक वाला तूफानी घुडसवार जैसे स्वभाव वाला कुटिल लॉरेंज़ ही नाराज दिख रहा था। जोशीले वक्ता उस काले मूर्ख ने सॉरवियन भाषा मे भाषण देने का निश्चय किया।

पहले ही वाक्यो मे उसकी जबान लडखडा गयी। उसने अपना भाषण जर्मन भाषा मे याद किया था और सॉरवियन भाषा मे वह साधारण लोगो की भाषा ही जानता था। उसे जो कुछ अपने भाषण मे कहना था उसे गँवारू बोलचाल की भाषा मे नही बाँधा जा सकता था। वह पहले ही वाक्य बोलने मे हकलाने लगा। सभी लोग हँस पडे। काले मूर्ख का चेहरा सुर्ख हो गया। और उसकी बेहूदी खाँसी और भी पीडाकारक थी। भट्ठी से निकल रहा धुआँ उसके इर्द-गिर्द तेजी से छाता जा रहा था और पूरी कैन्टीन मे फैलता जा रहा था। कैन्टीन मे बैठे लोग भी अपने पाइपो के कश-पर-कश खीच कर धुएँ के बादल उडा रहे थे।

"भट्ठी से धुआँ निकल रहा है," काला मूर्ख बोला।

हूटर देने वाले ने भट्ठे के मुह पर से ढक्कन को हटा कर बडी व्यग्रता से कोयले को खोदने लगा। धुएँ के बादल और भी गहरे हो गये। हूटर देने वाला बोला—"भट्ठी से अभी भी धुँआ निकल रहा है विली, लेकिन ज्यादा नही।"

काला मूर्ख अब अंतिम दो कतारो मे बैठे व्यक्तियो के चेहरो को भी साफ-साफ पहचान नही पा रहा था।

"अपना भाषण जारी रक्खो, विली।" कुछ लोग चिल्लाये।

"खिडकियो या दरवाजे को खोल दीजिये," वह बोला। फोरमैन दरवाज़े के बगल मे बैठा हुआ था। वह काले मूर्ख के अनुरोध के बावजूद

अपने स्थान पर ज्यो का त्यो जमा वैठा रहा। उसके पीछे वैठा लॉरेंज खिड़की खोलने लगा।

"पागल हो गये हो!" माइकिल चिल्ला पडा—"पहले तो हम अपने काम पर बन्दरो की तरह पसीने-पसीने होते रहते है और अब तुम हमें हवा के झोको मे बिठाना चाहते हो ?"

सभी लोग विरोध की आवाज मिलाने लगे। कुटिल नाक वाला लॉरेंज झोके के साथ अपनी कतार से निकला और कैन्टीन से वाहर चला गया। उसने दरवाजे को इतनी जोर का झटका दे कर भडभडा कर खोला कि ऊँची-खाली मेज़ो पर रखे खाली मग और वर्तन खडखडा उठे।

फोरमैन तिरस्कारपूर्ण मुस्कराहट के साथ वोला—"ये हज़रत तूफानी घुडसवार जैसे तेज-तर्रार समझे जाते है।"

"लेकिन जैसा आप कहते है, यदि भट्ठी इतना ही अधिक धुँआ फेकती है, तो फिर मजदूर मोर्चा आखिर किस मर्ज की दवा है, वह आखिर किस काम के लिए है ?" राजगीर बेन्श गुर्राया।

उसकी वातो की प्रतिक्रियास्वरूप लोगो ने जिस तरह की आवाजें की उनसे स्पष्ट था कि सभी उसकी बात से सहमत थे।

काले मूर्ख को लगा जैसे वह सुअर के गोश्त का एक टुकडा हो जिसे पकाया जा रहा हो। उसे लग रहा था जैसे उसकी आँखे निकली पड़ रही हो और अपने साथ उसके मस्तिष्क को भी बाहर निकाले ले रही हो।

"और मजदूर मोर्चे मे अव तो तुम्हारी आवाज वहुत सुनी जाती है," वेश ने अपनी वात जारी रखी—"यदि भट्ठी से वहुत अधिक धुआँ निकलता है तो इसकी जिम्मेदारी मजदूर मोर्चे की है कि वह उसकी

मरम्मत करवाये। रही हम लोगो की बात, तो हम तो इस धुएँ के आदी हो चुके है।

"बिल्कुल ठीक, भट्ठी को ठीक करवाना मज़दूर मोर्चे का ही काम है," सभी लोगो ने गुर्रा कर समर्थन किया।

फेलिक्स हेनुश भी गुर्राहट मे शामिल हो गया। काला मूर्ख केवल इतना बुदबुदा पाया—"मज़दूर मोर्चा..."

और तभी हूटर देने वाला ज़मीन पर ढेर हो गया।

"धुएँ का ज़हर!" सभी लोग एक साथ चिल्ला पडे और हूटर देने वाले को उठा कर स्वच्छ हवा मे ले जाने के लिए दौड पडे। पाँच व्यक्ति उसे उठा कर बाहर ले गये और अन्य पचास व्यक्ति धक्का-धुक्की करते हुए उन लोगो को अपनी-अपनी सलाह देने के लिए बाहर निकलने लगे जो हूटरमैन को होश मे लाने की कोशिश कर रहे थे।

मौका मिलते ही पत्थर की खान का फोरमैन भी बाहर खिसक गया। काला मूर्ख भट्ठी के मुँह से फूट-फूट कर घुमडते धुएँ के बादलो को असहाय दृष्टि से देखता खडा रहा। लगभग दस आदमी उसके इर्द-गिर्द खडे हुए थे, और वे सभी एक साथ बोल रहे थे।

"अगर तुम हमारे वही पुराने मित्र हो बिली, तो तुम पूरी तत्परता से कोशिश कर के मज़दूर मोर्चे को हमारी कैन्टीन की भट्ठी दुरुस्त करने को मजबूर करो।"

वे उसे घेरे रहे और उसे धकियाते हुए तब तक आगे बढाते गये जब तक कैन्टीन की खिडकी के निकट नही पहुँच गये।

वेन्श ने ब्राडी लाने का आदेश दिया। उन्होने काले मूर्ख के स्वास्थ्य की कामना करते हुए ब्राडी पी। ब्राडी की गिलासे एक-दूसरे से टकरा

कर वे बोले—"तुम्हारी स्वास्थ्य की शुभकामना सहित, विली ! अपने हितैषी के लिए शुभकामना सहित ?" और वे एक ही घूंट मे ब्राडी अपने गले के नीचे उतार गये ।

और फिर उन लोगो ने उसके कधों को जोर से थपथपाया—उसके प्रति ईमानदारी से भरपूर मित्रता के भाव से ही, लेकिन काफी रूक्षता के साथ । उसके कधे थपथपा कर वे उसे अकेला छोड़ कर चले गये, ताकि वह पूरी शाति के साथ ब्राडी के विल का भुगतान कर सके ।

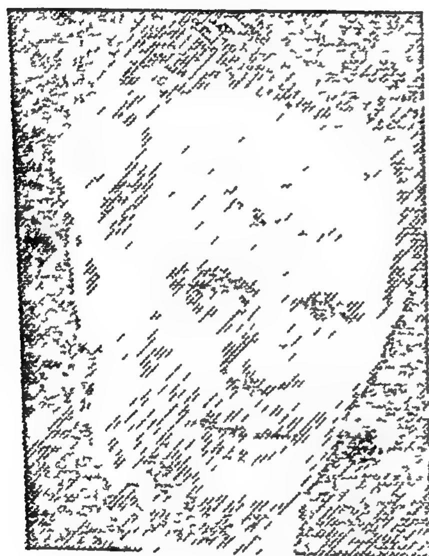


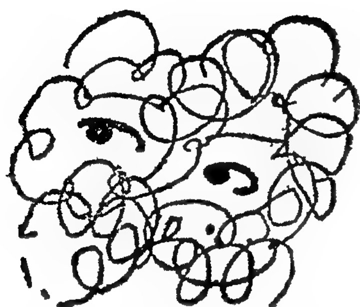
मौत का पिंजड़ा

इस कहानी के लेखक

ओटो गोट्शे

आइजेलवेन मे खदान से काम करने वाले एक श्रमिक के घर में सन् १९०४ ईसवी मे पैदा हुए। पेशे से वे नल बनाने वाले थे। चौदह वर्ष की उम्र मे ही वे समाजवादी हो गये थे, और अठारह वर्ष एवं पुनः बीस वर्ष की उम्र मे अपने राजनीतिक कार्यकलाप के कारण जेल जाना पड़ा। बीसवीं सदी के दूसरे दशक में वामपक्षीय अखबारो में और साम्यवादी दल के एक अधिकारी के रूप मे कार्य किया। १९२७ ईसवी में वे सोवियत रूस गये। नाजियो द्वारा वे १९३३ ईसवी मे गिरफ्तार कर के सॉनेनवर्ग सैनिक शिविर भेज दिये गये। .. १९३४ ईसवी में रिहा हो कर व साम्यवादी गुप्त कार्य में लग गये और नाजियों के अधिकार के काल भर इसे जारी रखा। १९४० ईसवी में फासी विरोधी मध्यम जर्मन श्रमजीवी गुट को संगठित करने में सहायता दी। १९४८ ईसवी से अनेक सरकारी पदों पर काम किया। १९६० ईसवी मे वे राज्य परिषद सचिव हुये। १९१८ ईसवी से जर्मन जनवादी गणतंत्र में भूमि-सुधार के समय तक जर्मन क्रांति के इतिहास पर चार उपन्यास लिखे।





जब जर्मनी पर फासीवाद की छाया पडी तो नाजियो ने एटर्सबर्ग के सागर तट के जगलो के बीच बुकेनवाल्ड यातना शिविर कायम किया। इतिहास मे इस बात का उल्लेख किया जायगा कि यह मौत के भयानक पिंजडो मे से एक था, जिसमे हमारे हजारो बहादुर देश प्रेमियो और योरप के प्रत्येक देश के अपने घरो से उखाड फेंके गये लाखो को अकथनीय यातनाएँ दी गयी—उनकी हत्या कर दी गयी, पीटते-पीटते मार डाला गया, जहरीली गैस दे दी गयी, जिन्दा जला डाला गया या जगली कुत्तो द्वारा नुचवा डाला गया।

बुकेनवाल्ड शिविर के लोहे के फाटक पर जो सिद्धात ढला था, वह था "जैसे को तैसा"। विएना के सगीतकार लेओपोल्डी ने ये शब्द १६३८ मे देखे थे, जब साथी पीडितो के एक गुट के साथ उस फाटक से परेड के मैदान मे उसे ले जाया गया। उसने वे कुन्दे भी देखे थे, जिनसे पीटने से पहले कैदियो को बाँध दिया जाता था।

"जैसे को तैसा" का अर्थ था भूख, पत्थर के कारखानो मे कडी मेहनत, निर्दय यातना और मौत।

लेओपोल्डी एक यहूदी था, जो कुछ हफ्तो से अधिक जीवित रहने की आशा नही कर सकता था। साम्यवादी योद्धा कैदी नम्बर ५,०४४

राबर्ट सिवर्ट, जो कि दूसरे कामरेडो की जानें बचाने के लिए अपना जीवन हजारो बार खतरे मे डाल चुका था, उसने मृत्यु की टुकडी से उसे बचाने की एक तरकीब खोज निकाली। अगर सिवर्ट की तरकीब काम न देती, तो लिओपोल्डी भी मृत्यु के मुख मे पहुँच ही जाता। सिवर्ट ने उसे राजगीरो की एक टोली मे पहुँचा दिया और उसे कन्नी चलाना सिखाया।

हमारे अच्छे-से-अच्छे आदमी और योरप के गुलाम बना लिये गये लोग नाज़ी यातना शिविरो मे कष्ट भोग रहे थे, किन्तु फिर भी उन्होने जीवन मे अपना विश्वास और मुक्ति की आशा नही त्यागी थी। और जो गीत वे गाते थे, वह उनके सुखद भविष्य के प्रति उनकी आस्था तथा साहस की उद्घोषणा करते थे। लेकिन बुकेनवाल्ड मे अभी तक कोई भी गीत नही गाया गया था।...

उसी साल कमान्डर रोएडेल ने कैदियो को एक शिविर गीत तैयार करने की आज्ञा दी। उसने इसके लिए उन्हे दो दिन का समय दिया।

और उन दो दिनो मे लेहर के नाट्यगीत के रचयिता ने बुकेनवाल्ड गीत लिखा, और लिओपाल्डी ने उसकी धुन तैयार की। उसके बाद कैदी उसका पूर्वाभ्यास करने लगे।

खून से रंगे शिविर प्रताडक रोएडेल ने कुछ कैदियो के सामने आ कर वह गीत गाने की आज्ञा दी।

और उनका गम्भीर एव उदासी से भरा वह गीत विद्युत तरग भरे कँटीले तारो के बाडो के पीछे परेड के मैदान से ऊपर उठने लगा.

ऐ बुकेनवाल्ड,
सर्वदा ही

याद रखूंगा तुझे मै,
भाग्य था
जो पास तेरे
मुझे लाया।
जो कि तुझ से
हो अपरिचित
समझ क्या पाये
कि कितना अधिक अद्भुत
और कितना मधुर होता
वह कि जो उन्मुक्त जीवन !

रोएडेल ने लय की आलोचना की।

"अरे बेवकूफो ! यह एक मार्च गीत समझा जाता है !" वह चीखा और अपने हाथो को ऊपर-नीचे हिलाने लगा उस लय को बताने के लिए जो वह चाहता था। इस तरह वह उन आशाओ और आकाक्षाओ का उपहास करने लगा, जिन्हे गाने वाले कैदियो और सगीतकार ने उस धुन मे प्रस्तुत किया था।

उसे कभी यह मालूम नही होने दिया गया कि उस गीत की धुन एक यहूदी सगीतकार ने तैयार की थी, क्योकि तब उसकी मृत्यु निश्चित थी और सिवर्ट एव उसके कामरेडो को भी भयानक यातनाएँ दी जाती।

इस तरह बुकेनवाल्ड गीत का जन्म हुआ।

विदेश की सहायता से पेश्तर इसके कि युद्ध छिडता, सुप्रसिद्ध गीतकार लिओपोल्डी को बुकेनवाल्ड से रिहाई प्राप्त हुई। उसे छिपा कर सीमा से बाहर पहुँचा दिया गया। लेकिन लाखो अन्य लोगो को उस यातना शिविर मे अन्त तक भयकर यातनाएँ सहनी पडी। जो उस शिविर

में रह गये थे, उन्हे उसकी फिर कोई खबर नही मिली और उन्होने समझा कि वह मर गया होगा।

सन् १९४२ मे जर्मनी के विरुद्ध सघर्ष करने वाले मँजे हुये लडाकुओ की एक टोली आस्ट्रिया के यातना शिविर से बचे हुये लोगो की एक सभा मे सम्मिलित होने के लिए विएना गयी, जिसमे सिवर्ट, जिसकी दोस्ताना सहायता से बहुतेरो की जाने बची थी, रोजा थेएलयन भी थे।

वहाँ पर फ्रासीसी, पोलैंडवासी रूसी, चेकोस्लोवाक, डच और जर्मन शिविर के बचे हुये लोगो का वहाँ आनन्दमय पूर्नमिलन हुआ। एक शाम को सिवर्ट के आस्ट्रियाई मित्र कार्ल डिरमेयर और मैक्सल डम्स्चविग उसे एक रात्रि क्लब मे लिवा ले गये। वहाँ एक सुन्दर स्थान था, जहाँ सान्ध्यकालीन सुन्दर वस्त्र पहने मर्दो और औरतो की खासी भीड जमा थी। उस लम्बे कमरे के एक सिरे पर स्थित मच से कोमल सुमधुर सगीत गुजरित हो रहा था। लेकिन वहाँ के वातावरण ने सिवर्ट को बेचैन कर दिया, क्योकि जेल मे रहते-रहते, जहाँ उसने कितने ही लोगो को अपनी आँखो के सामने मरते देखा था, वह सख्त हो गया था। और सम्भवत उसके अन्दर उसकी अपनी आत्मा भी कितनी ही बार मर चुकी थी। उसे घुटन अनुभव होने लगी और उसने वहाँ से विदा होना चाहा।

लेकिन तभी एक अद्भुत बात हुई। मच से आता वह सगीत धीरे-धीरे दबते-दबते बहुत अधिक धीमा हो गया और विलीन होते उन स्वरो के अन्दर मे बुकेनवाल्ड गीत उभरने लगा—पहले मन्द स्वर मे, और फिर उसके स्वर तीव्र होते गये। यहाँ तक कि वह धमाका मारते-से स्वरो मे परिणत हो गया।

एकाएक वहाँ शान्ति हो गयी। कमरे मे प्रत्येक व्यक्ति को आभास हुआ कि कोई असामान्य बात हो रही है।

संगीत सचालक घूम कर मच पर आगे आ गया।

"देवियो और बहनो! आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि अभी आप ने बुकेनवाल्ड यातना शिविर गीत सुना है। मुझे क्षमा कीजिये। मुझे इसे प्रस्तुत करना ही पडा। जिस व्यक्ति ने मेरी जान बचाई थी, वह अभी-अभी अन्दर प्रविष्ट हुआ है।"

लिओपोल्डी मच से उछल कर नीचे उतरा, दौड कर सिवर्ट के पास पहुँचा, उसे अपनी बाँह मे भर लिया और उसका चुम्बन किया।

कमरे मे भन-भनाहट फैल गयी, जिसके बाद तालियो की जोरदार गड़गडाहट हुई। सिवर्ट एकाएक मित्रो और अपरिचितो की भीड से घिर गया और उस व्यक्ति की आँखों मे आँसू आ गये, जिसका हृदय अनेक मित्रों की मौत का दृश्य देख कर कठोर हो गया था।



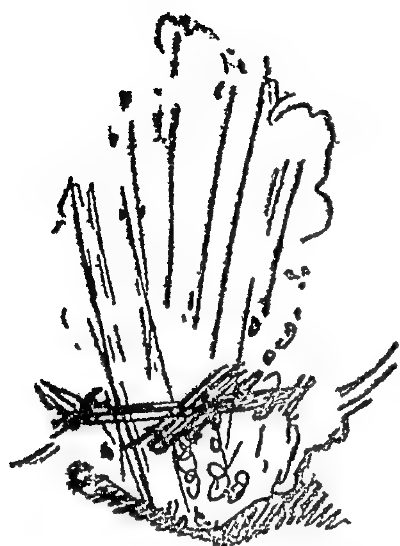
वह बूढ़ा लँगड़ा

इस कहानी के लेखक

विली ब्रेडेल

सन् १९०१ ईसवी मे हैम्बर्ग नगर मे जन्म हुआ। अपनी युवावस्था में बन्दरगाह के जहाजी कारखानो मे काम किया। जैसे ही साम्यवादी दल की स्थापना हुई, इसके सदस्य बन गये। सन् १९२० ईसवी में एक नाविक थे, और बाद मे पत्रकारिता का पेशा अपनाया। सन् १९३३ ईसवी मे यातना शिविर मे भेज दिये गये, लेकिन एक साल बाद ही उन्हे रिहा कर दिया गया और तब भाग कर चेकोस्लोवाकिया तथा सोवियत सघ गये। सन् १९३७ और १९३९ के बीच स्पेन म अन्तर्राष्ट्रीय टुकड़ियो के साथ मिल कर लड़ते रहे, और फिर सोवियत रूस वापस आ कर सन् १९४१ मे "स्वतंत्र जर्मनी" समिति के सदस्य बन गये। स्तालिनग्राड के युद्ध मे एक रूसी तमगा प्राप्त किया। सन् १९४५ ईसवी में जर्मनी वापस आ कर महत्वपूर्ण असैनिक पदो पर काम करते रहे और साहित्यिक पत्रों का सम्पादन भी किया। अनेक ऐतिहासिक पुस्तकें, बीसवी सदी श्रमजीवी वर्ग के जीवन की कथाएँ, और स्पेन एवं नाजियो की कहानियाँ लिखी हैं तथा दो पुरस्कार भी मिले हैं।





"हमे फिर से बताओ, मैथियास, कि तुम्हारा पैर कैसे कटा।"

जर्मन गुप्तचर ने अपने कामरेडो की ओर मक्कारी से आँख मारी, क्योकि जिस किसी ने भी यहाँ पहरेदारी की थी, वह जानता था कि मथियास की टाँग कटने की कम-से कम तीन कहानियाँ थी—प्रत्येक दूसरे से कही अधिक काल्पनिक।

उनमे से एक कहानी मे बन्दरगाह के पहरेदार मैथियास का दावा था कि टेम्स नदी के मुहाने पर साहसिक आक्रमण के दौरान उसकी टाँग कटी थी।

"अठाइस सेन्टीमीटर का एक हथगोला हमारे जहाज की छत पर आ कर गिरा और उसने मेरे बाएँ पैर को उडा दिया। इसके अतिरिक्त कोई और नुकसान नही हुआ।"

दूसरे अवसरो पर उसने कहा था कि उसने हेलागोलैण्ड के पास बहुत से ब्रिटिश लडाकू जलपोतो से युद्ध के दौरान एकाएक एक भयानक विस्फोट सुना था।

"हमारे तोप की मीनार पर सीधा निशाना लगा। उससे खासी गडवडी हुई थी। मैंने पूरा चक्कर लगा कर देखा, सभी लोग मर गये थे। मै ही एक तोपची वहाँ वचा था। मैंने तोप मे गोला भरा, निशाना लगाया और तोप चला दी—और वाद मे मैंने देखा कि मेरा पैर गोले के वार से टुकडे-टुकडे हो गया। आप कल्पना कर सकते है कि उस समय मुझे कैसा लगा होगा।"

लेकिन इसके साथ-ही-साथ वह दावा करता था कि यह दुर्घटना श्रैगरक मे घटी थी।

"जलपोत गोलो की मार से टुकडे-टुकडे हो कर जल रहा था। मैं चकराया हुआ सा डेक पर पडा था। सव-कुछ अधकार मे खो गया था। जव मुझे होश आया, तो मैं विलहेल्मगेवेन के नौ सेना अस्पताल मे पड़ा था। मेरा वायाँ पैर जल कर साफ हो गया था। पेन्ज़र की जिन चादरो पर मैं पडा था, वह गर्म हो कर लाल हो गई थी।"

वूढे नाविक मैथियास, जो अव कुछ मोटा हो रहा था, जव कभी इन कहानियो मे से कोई एक कहानी सुनाता था, तो जर्मन पहरेदार ठहाका मार कर हँस पडते थे। फिन्केनवर्डर के निकट उनका पहरेदारी का काम आसान तो था, किन्तु वडा नीरस। जव उनका अफसर शहर जा कर रात वहाँ विताता था, तो उनके मनोरजन के लिए जहाज पर दो लडकियाँ आ जाती थी, वर्ना वहाँ शाम को गप-शप करने और ताश खेलने के सिवाय और कुछ भी करने को नही रहता था।

वे रेलिंग के ऊपर से नीचे पैर लटकाये आगे की मीनार पर वैठ जाते और सायकालीन आकाश मे विखरे तारो को घूरते-रहते, जो इस धरती की सारी गडवडी से दूर मौन तथा स्थिर दिखते थे।

मैथियास स्टोएवर पहिये के हैन्डिल पर झुका था अपने लकडी वाले पैर को आगे फैलाये हुये। उसने अपने घुमावदार पाइप का एक कश खीचा। लेकिन वह प्रकट रूप से मौन था और उस शाम को वह अपने

विचारो मे खोया हुआ था—जैसा कि सामान्यत वह नही रहता था। प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि उसके बेटे पॉल को अब तक अपने यू-बोट के साथ वापस आ जाना चाहिये था। लगभग साठ वर्ष का वह बूढा दस वर्षो से अधिक समुद्र पर रह चुका था, लेकिन उसकी नजरो मे पन-डुब्बियाँ शैतान की आविष्कार की थी, न कि नावे, और ससार की किसी भी चीज के लोभ मे वह पानी के अन्दर चलने वाले इन जलपोतो मे से किसी एक पर कदम न रखता। और जो चीज उसे बराबर परेशान किये रहती थी, वह अब वास्तव मे हो गई थी—उसका बेटा पॉल सागर के अन्दर ऐसे ही एक बख्तर बन्द जहाज मे बन्द था।

"क्या मामला है, मैथियास ?" किसी ने अधीरतापूर्वक प्रश्न किया—"हमे उत्सुकता मे मत डाले रहो।"

"अगर मुझे ठीक-ठीक याद है" किसी दूसरे व्यक्ति ने उसे चिढ़ाया—" तो तुमने एक बार कहा था कि एक अँग्रेजी हथगोले से तुम्हारी टाँग नही कटी थी, बल्कि एक शार्क मछली ने उसे चबा लिया था।"

मैथियास ने हामी के भाव से सिर हिला दिया।

"हाँ तुम्हे ठीक याद है। यह शार्क मछली की ही करतूत थी।"

सब लोग पुन ठहाका मार कर हँस पडे। बूढा जाल मे फँस रहा था।

"हाँ, तो जरा वह किस्सा सुनाओ!"

वे अब उससे कोई नयी ही डीगभरी कहानी सुनना चाहते थे।

"अच्छा बेटो," उस बूढे ने कहना शुरू किया और इस बार वह भयानक रूप से गम्भीर था— "अच्छा, अब मै तुम लोगो को बताता हूँ कि सचमुच क्या हुआ था जब मेरी टॉग कटी थी।"

उसके बोलने के ढग ने उन्हे आश्चर्य मे डाल दिया और साथ ही उनका ध्यान भी आकर्षित कर लिया।

मैथियास स्टोएवर ने अपना पाइप ठकठका कर राख गिरा दी, अपनी कहानी के भुगतान की पहली किस्त के रूप मे जर्मन गुप्तचर की तम्वाकू की थैली से उसे धीरे धीरे फिर भरा, उसे जलाया और जव वह उसे मुँह मे लगा कर कश खीचने जा रहा था, तो उसने कहानी प्रारम्भ की।

"अच्छा, तो यह वात सन् १५ के ग्रीष्म ऋतु की है यहाँ से कुछ दूर, स्वाइनम्युएन्डी वन्दरगाह मे यह घटना घटी थी "

"तो तुम्हारी टाँग स्वाइनम्युएन्डी वन्दरगाह पर कटी थी ?" किसी ने प्रश्न किया और वे सव हँस पडे।

वूढे ने अपना वडा शक्तिशाली सिर ऊपर उठा कर उनकी ओर देखा और आगे कहा—"हाँ, मेरी टाँग स्वाइनम्युएन्डी में कटी थी।"

"और वहाँ इसे शार्क मछली चवा गई थी ?"

और भी हँसी हुई और कोई चिल्लाया—"इन्हे वताने दो न, तुम लोग क्यो दखल देते हो ?"

"हाँ, शार्क मछली की ही यह करतूत थी," मैथियास ने असामान्य गम्भीर स्वर मे कहा, और विना जरा भी मुस्कराये वह आगे कहता गया—"जव सेना के लिए मेरा वुलावा आया, तो मेरी एक प्रेमिका थी, जो स्वाइनम्युएन्डी मे काम करती थी। उससे मेरी सगाई हो चुकी थी। उसका नाम था मार्था। सुन्दर, खिला हुआ शरीर, और मौज मजे के लिए तैयार। तुम लोग समझ सकते हो कि मुझे उस समय कितनी खुशी हुई होगी, जव हमारा फ्राउएनलॉव नामक जलपोत वास्तव मे स्वाइनम्युएन्डी पर रुका। काफी लम्वे अरसे तक उससे दूर रहने के वाद मुझे फिर अच्छी खासी मजेदारी हासिल हुई। हम रोज शाम को मिलते थे और जव मैं डेक ड्यूटी पर होता था तो मैं छिपा कर उसे जहाज पर लिवा ले जाता था।"

क्षण भर के लिए रुक कर उसने पाइप का कश खीचा और वह

धुएँ के सुरसुरे को अपने सामने विचारमग्न भाव से बाहर फेंकने लगा। फिर एकाएक उसने कहानी को इस तरह आगे बढाया, जैसे वह किसी दूसरे की कहानी सुना रहा हो।

"लेकिन एक दिन सब-कुछ खत्म हो गया। वह नही आयी। वह घर पर भी नही थी। और अगले दिन वह कही भी मुझे नही मिली।"

"मैने तो समझा था कि तुम हमे यह बतलाने जा रहे थे कि तुम्हारी टाँग कैसे कटी थी, है न ?"

"ठीक है, ठीक है," उस बूढे ने उत्तर दिया—"यह सब उसी का भाग है। हाँ तो मैं जानता था कि इसके पीछे कोई राज जरूर है। यह बतलाने की जरूरत नही कि उस समय मैं कैसा अनुभव कर रहा था। बस मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि वह लडकी मुझे बहुत पसन्द थी। हमने तय कर लिया था कि शीघ्र ही हम शादी कर लेगे और तभी यह घटना घटी। मै कुछ समझ ही न पाया। लेकिन अपने एक दोस्त से मुझे पता चल गया था कि क्या हुआ था। हमारे जहाज के एक वारन्ट आफिसर ने उसका दिमाग बदल दिया और उसे मुझ से छीन लिया।"

मैथियास ने जोर-जोर से पाइप के कश खीचे।

"खैर, अन्त मे कुछ मिनटो के लिए मार्था से मेरी भेट हो गयी। हम स्वाइनम्युएन्डी के कृत्रिम बन्दरगाह पर मिले। मैने उसे यह समझाने की कोशिश की कि वह केवल मुसीबत ही मोल ले रही थी, क्योकि एक अफसर किस्म का आदमी और विशेषकर वह व्यक्ति एक उच्च अफसर था—उससे कभी शादी न करेगा। जब मैं उससे बाते कर रहा था, तभी वह अफसर वहाँ आ धमका। वह जरूर हम पर नजर रखे रहा होगा। मैने सलामी दी। उसने मुझे वहाँ से चले जाने का आदेश दिया। मेरा दिमाग काम नही कर रहा था—एक तरह से मै स्तब्ध सा हो गया था और मैं वहाँ से नही हटा। और फिर मुझे—ऐसा न करना चाहिये था, क्योकि कुछ भी हो वह अफसर था—मैने उसकी गर्दन दबोच ली। उसने

अपना रिवाल्वर निकाल लिया और मुझ पर गोली चला दी। मुझे अपनी जाँघ मे तेज दर्द की अनुभूति हुई। उसने मेरे चेहरे पर घूँसा चला दिया और मै उस कृत्रिम बन्दरगाह के बाँध से नीचे पानी के किनारे चट्टानो पर जा गिरा। यह गोली लगने और मेरे गिरने का ही नतीजा था। वे मेरी टाँग नही बचा सके और इस तरह उस शख्स की बदौलत मै लँगड़ा हो गया। तो इस तरह वह मेरे लिये एक प्रकार से गार्क जैसा ही था, ठीक कहता हूँ न ?"

वृद्ध टकटकी बाँध कर सामने देखने लगा और उसने अनावस्थित भाव से पाइप का कश खींचा।

"पहले तो तुमने ही उस पर वार किया था ?" जर्मन गुप्तचरो मे से एक ने कहा।

वृद्ध ने हामी के भाव से सिर हिलाया।

"और तुम युद्ध मे हुये लँगडे करार दे दिये गये, है न ?" किसी ने पूछा।

"हाँ, वे सारे मामले को दबा देना चाहते थे।"

"और उस लडकी का क्या हुआ ?"

बूढे ने पाइप का गहरा कश खीच कर कहा—"तीन हफ्तो मे ही उनके बीच सब-कुछ खत्म हो गया। उसके बाद उसने मुझे बहुत से खत लिखे, जिनमे उसने मुझ से माफी माँगी थी। मैने उन खतो का जवाब नही दिया। फिर उनसे मेरा सम्पर्क बिल्कुल ही टूट गया। हाँ, तो यह मामला था। इस तरह मैं अपनी टाँग से हाथ धो बैठा और अपनी प्रेमिका से भी।"

"जोकिम !" किसी ने पुकारा—"तुम्हारे पिता फाएनलाब मे थे न ? तुम कभी उनसे पूछना कि वह इस प्रेम-व्यापार के बारे मे कुछ जानते हैं।"

वृद्ध ने तेजी से ऊपर देखा।

"जोकिम को काफी अरसे तक प्रतीक्षा करनी पडेगी, क्योकि उसके पिता ब्यूनस एयर्स मे है।" किसी और ने कहा।

मैथियास जोकिम नाम के युवक की ओर मुडा।

"क्या तुम्हारे पिता फाएनलाब मे थे ?"

"हाँ।"

"अफसर थे ?"

"हाँ, द्वितीय अफसर।"

"द्वितीय अफसर !" वृद्ध ने दुहराया और फिर वह विचारो मे खो गया।

"ओह ! एक नाविक का भेद खुलने जा रहा है।"

"ऐसा न होगा !" वृद्ध ने कहा।

"अच्छा, उस अफसर का नाम क्या था, जिसने तुम्हारी प्रेमिका को तुम से छीन लिया था ?"

जर्मन गुप्तचर जोकिम उठ खडा हुआ।

"नही-नही, तुम जहाँ हो वही रहो !" अन्य लोगो ने कहा। मैथियास पाइप का गहरा कश खीचता हुआ उस युवक की ओर देखता रहा।"

"हाँ, तो तुम्हारे प्रतिद्वन्दी का नाम क्या था, बूढे ?"

"हैन्स म्यूएलर।"

जर्मन गुप्तचर निराश हो गये।

"तब तो वह जोकिम के पिता नही थे।'

जर्मन गुप्तचर जोकिम मुस्करा कर फिर बैठ गया।

"मेरा ख्याल है कि मैथियास ने आज पहली बार हमे सच्ची कहानी सुनाई है," किसी ने राय दी।

बन्दरगाह का पहरेदार उठ कर चक्कर लगाने चला गया। उसने उन पहरेदारो मे से एक से पूछा कि जोकिम के परिवार का नाम क्या था।

"जोकिम जरा रुको। हाँ, तो उसका नाम है वान क्रेकेल ?"

अँधेरा हो चुका था, जिससे जर्मन गुप्तचर मैथियाम का चेहरा न देख सके।

अगले दिन मेथियास जब अपने ऊपर के कमरे मे गया, तो वहाँ उसकी मेज़ पर नौसेना विभाग का एक पत्र पड़ा था। उस बूढे लँगडे पर मृत्यु की जैसी पीलाहट आ गयी। तो अब यह निश्चित ही था। वह फिर कभी पॉल से मिल न पायेगा। कभी नही . वहाँ वह काफी देर तक बिल्कुल निश्चल खडा रहा. .। घुटन भरा क्रोध उसके अन्दर उमड़ रहा था। वह चाडाल ब्यूनस एयर्स मे सुरक्षित बैठा था और उसका बेटा बन्दरगाह के पहरेदारो के साथ मौज कर रहा था। हर जगह ऐसा ही होता है। बदमाशो के लिए जिन लोगो को अपने सुख और जीवन की तिलाजलि दे देनी पड़ती है, वे उस जैसे गरीब लोग ही होते है, उसने सोचा। तानाशाह हिटलर चाहे जो कहे, जैसा अन्याय पिछले युद्ध मे हुआ था वैसा ही इसमे भी हो रहा है। उस अफसर का बेटा एक जर्मन गुप्तचर है, और उसे लडाई के मोर्चे पर नही जाना पडा। वह यहाँ रह कर मजे मे जहाजो की पहरेदारी कर रहा है.. सब-के-सब भाड मे जायँ।

बूढा अपने छोटे-से कमरे मे हाथ मे वह पत्र पकडे इस सिरे से उस सिरे तक चहलकदमी करता रहा।. 'मुझ जैसे लोगो को हमेशा बुरा-से-बुरा ही मिलता है," उसने सोचा, और हमेशा रगबाज जन्टिलमैनो को कुछ नही होता। ऐसा ही हमेशा हर जगह होता है।.. उसके चौडे कधे इस तरह झुक गये जैसे वह भारी बोझ ढो रहा हो।

फिर वह अपने कमरे से झपट कर बाहर आया और तेजी से सीधी सीढियो पर उतरने लगा।

"मेरा बेटा मर गया!" उसने बगल के कमरे मे रहने वाली स्त्री को बुला कर उसे वह पत्र दिखलाया।

बाहर, सड़क पर उसने धक्के दे कर कुजटे की दूकान का दरवाजा

खोला और फिर पेटरसन से चीख कर वह बोला—"मेरा बेटा मर गया।"

वह पत्र को अपने हाथ मे पकडे हुये था और इसके पहले कि कुँजडा पेटरसन कुछ कह पाये वह तेजी से आगे बढ गया।

पुल पर उसकी भेट सिपाही ऑटो बेनलीन से हुई, जिसे वह वर्षो से जानता था।

उसका और कोई दोस्त नही था, लेकिन जिस किसी से उसकी भेट हो रही थी उसी से यह बता देने की प्रेरणा उसे हो रही थी कि उसका बेटा मर गया। और उन सब को वह नौ सेना विभाग से आया हुआ पत्र दिखा रहा था। वह सारे दिन इधर-उधर घूमता रहा, यहाँ तक कि शाम हो गयी। थका-माँदा और उदास बूढा डॉक पर वापस आ गया पुन अपनी ड्यूटी करने के लिए।

अगले दिन सुबह हैम्बर्ग मे सनसनी फैल गयी। बारूद और युद्ध सामग्रियो से लदे फ्रेया नामक जलपोत मे रात को आग लग गई थी। उन लोगो को उस जलते जलपोत को डुबो देना पडा, ताकि विस्फोट न हो, जिसका परिणाम बडा भयकर होता।

उस दुर्घटना मे दो आदमियो की जाने गई थी—एक टाँग वाले पहरेदार मैथियास एटोएवर और एक जर्मन गुप्तचर वॉन क्रेकेल की।

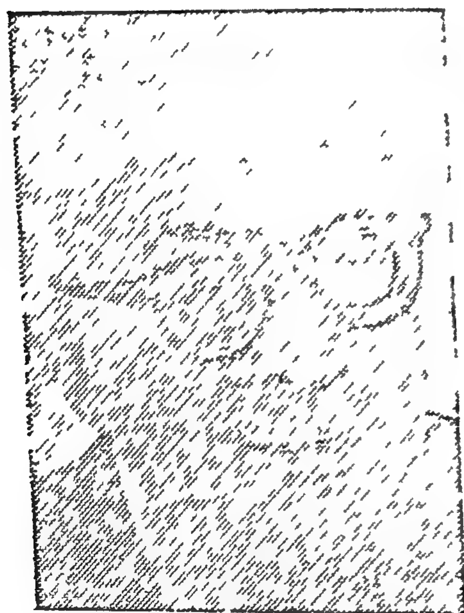


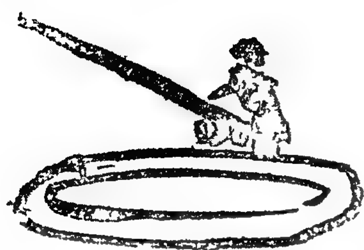
नकावों की वापसी

इस कहानी के लेखक

आर्नल्ड ज़्वेग

लब्धप्रसिद्ध उपन्यासकार, निवंधकार और नाटककार हैं। जन्म सन् १८८७ ई० मे साइलेसिया मे हुआ। कला के इतिहास, दर्शन शास्त्र और जर्मन साहित्य का अध्ययन किया और वाद में अर्थशास्त्र एवं समाज शास्त्र का भी। बीसवीं सदी के दूसरे दशक मे वर्लिन मे एक यहूदी साहित्यिक पत्र का सम्पादन किया। सन् १८३३ ई० मे जर्मनी छोड़ने के लिए विवश होने पर योरप से होते हुए इसराइल की यात्रा की, और वहाँ विक्टरी लीग की स्थापना करने मे सहायक हुए जिसने नाजी आक्रमण के वाद लाल सेना की मदद की। जर्मनी वापस आने के वाद कुछ समय तक एकेडेमी ऑफ आर्टस के अध्यक्ष रहे और पी० ई० एन० के अध्यक्ष भी। ये वहुत लिखने वाले रचनाकार हैं, जिनके उपन्यासो में "केस ऑफ सार्जेन्ट ग्रिशा" और "दि ऐक्स ऑफ वैन्ड्सवेक" प्रसिद्ध हैं। "ए विट ऑफ व्लड" नामक लघु कथाओं का संग्रह सेवेन सीज पुस्तकमाला में प्रकाशित हो चुका है। सन् १९५१ ई० मे नेशनल प्राइज़ और १९५८ ई० मे लेनिन पीस प्राइज़ प्राप्त हुए।





यह बात लन्दन मे कोई बम गिरने के बहुत पहले की है, जब कि कुछ योरप निवासी यह आशा करते थे कि हिटलर को कुछ छोटे-छोटे देश सौप कर आगे आने वाले इस महान् विनाश को रोका जा सकता था। दरवाज़े पर दस्तक होने के कारण हेनरी ब्राउन अपनी पहली नीद से हडबडा कर उठ बैठा। वह जल्दी ही सो गया था राजनीतिक सकट के उस जमाने से थक कर, जो एकाएक पानी के होज की तरह योरप को धमकाता हुआ प्रगट हो गया था। लन्दन की सडको पर उसके कार्यालयो और दूकानो मे लोगो को इसकी पूरी स्पष्टता से अनुभूति हुई थी। और उसके मेजबान ने क्षमा भाव से सिर हिलाते हुये उसे बतलाया था कि उसे उठ कर गैस का नकाब पहनना पडेगा।

वह १९३८ का सितम्बर माह था। रात मे ११ बजे विशेषतया स्वय अपने भले के हेतु दुबारा काम पर बुलाने जाने के लिए शिकायत करने का किसी को अधिकार नही था। डॉगरियो की तरह कटी भूरी वर्दियाँ पहने दो लडकियाँ और एक लम्बा युवक मैत्री भाव से मुस्कराते हुये शयन कक्ष मे प्रतीक्षा कर रहे थे। पैंतालीस वर्षीय मध्यम कद का पायजामे के ऊपर भूरा ड्रैसिंग गाऊन पहने मेहमान कुर्सी पर बैठने और गैस के नकाब से साँस लेने के पहले यह नही समझ सका कि यह सब क्यो हो रहा था। उन लडकियो मे से एक ने दफ्ती का एक टुकडा

वायु-छन्न के ऊपर दवा दिया, जिससे उसके चेहरे पर लगा नकाव तुरन्त थरथरा उठा, हवा निकल गयी और वह फटे हुये गुब्बारे की तरह पिचक गया। दूसरी लडकी ने सन्तोप के भाव से सिर हिलाया। नकाव ठीक बैठता था, उसमे कोई भी छेद नही था और उसका चश्मा भी अड नही रहा था। गौराग युवक ने नम्रतापूर्वक नकाव उसे थमा दिया और प्रसन्नतापूर्वक कहा—"इसके लिए आपको कुछ देना नही है, श्रीमान।"

अपने कमरे मे वापस आ कर हेनरी ने गैस का नकाव आलमारी पर रख दिया। क्षण भर के लिए उसके घुटने ढीले पड़ गये और वह पलँग के सिरे पर धम्म से वैठ गया। वहाँ रखा था वह। तेइस वर्षो वाद यह चीज़ फिर मिली थी—भूरी, रवर की आँखो के स्थान पर वडी-वडी पारदर्शक पट्टियाँ, वडे काम की। उसका दिल धीरे-धीरे और भारीपन के साथ चल रहा था। यह चीज़ शैतान के पास रहती तो अच्छा होता, उसने तो इसकी माँग भी नही की थी।

वह फिर लेट गया और रोशनी बुझा कर सोने की कोशिश करने लगा। लेकिन यह असभव था। उसकी वन्द आँखो के सामने उसके अतिम खदक का चित्र नाच उठा, जिसके मुहाने पर भूरे तम्बू का चौकोर था। वह एक वार फिर भूसे के वोरे पर पडा था लाखो सैनिको मे से एक के रूप मे, भारी जूते पहने, पट्टियाँ वँधाये और ब्रीचेज़ पतलून पहने, जो कि फ्लैन्डर्स की मिट्टी मे सना होने के कारण सख्त हो गया था। हवा के झोके के चौखट पर लगने के कारण उसके शयनकक्ष की खिडकी की मन्द खडखडाहट दो मील दूर होते ड्रमफायर की तीव्र घनघनाहट की याद दिला रही थी। यह सव असहनीय हो रहा था।

वह उठ वैठा। विजली की रोशनी उसके शान्त भाव से सजे कमरे मे भर गयी। उसने कपडे पहने और हैट व वरसाती ले कर वह

बाहर निकल पडा। लैम्पो की तेज रोशनी के नीचे सडक सुनसान पडी थी और सितम्बर की हवा बन्दूक की नली से गिरते खाली कारतूसो की तरह एल्म्स के पेडो से झरती हुई पत्तियो से खेल रही थी।

अपनी जेबो मे नीचे तक हाथ डाले हुये वह मुख्य सडक तक चल कर गया, बगल की एक गली मे प्रविष्ट हुआ और अपनी चाल तेज कर दी। उसके ध्यान मे यह भी नही आया कि यह एक गलत मोड था। जो हो उसके चारो ओर लन्दन जैसे बिल्कुल बदल गया था। हैम्प्स रेड के मकानो के वे तीखे तिकोनी अँग्रेजी मकानो से अधिक उत्तरी फ्रास के मकानो जैसे दिख रहे थे—आमीन्स के जैसे या उसके पडोस के छोटे-छोटे कस्बो मे से एक के जैसे।

ठडे क्रोध से वह काँप उठा। सब-कुछ बेकार। लाखो आदमी मर गये वह सारी पीडा और कष्ट, वह सारा नीरस व्यापार, भयानक प्रयास, उस अधे और नासमझीपूर्ण मार-काट की कटुता। इस सब से लोगो ने कुछ नही सीखा। निर्णय करने की शक्ति, दूरदर्शिता—ये दुष्प्राप्य, ऐश की चीजे हो रही है। गोलियो की बौछार के बीच मे झपटना, जमीन पर लेट जाना, उछल कर फिर से खडे हो जाना, लोगो के मुलायम और अविरोधक पेटो मे सगीने भोकना, झपट कर पीछे लौटना, बम से बने हुये सुराखो मे हाँफना-काँपना, आखिरी क्षण मे भयानकता से हथगोले फेकना—यह सब-कुछ बेकार गया। वे फिर आ गये, जर्मन लोग, यहाँ तक कि उनकी लोहे की टोपियाँ भी। ठीक १९१४ की तरह। उसके वयस्क जीवन का बेहतरीन भाग बरबाद हो गया। योरप एक बार फिर मालगाडी जैसा हो गया है—अडतालीस आदमियो या छह घोडो के लिए।

घास और पेडो से भरे एक खुले चौकोर मैदान मे वह गली खत्म हुई। अब वह जान गया था कि वह कहाँ था। एक तेज आर्क लैम्प

की रोशनी मे आदमियो की एक टोली को खुदाई करते देखा। वे एक खन्दक खोद रहे थे। पुराने वृक्षो मे से तीन, जिनसे उसे प्यार हो गया था, जमीन पर पडे थे। उनके स्थान पर फ्लैक गन की लोहे की सँकरी नली वादलो की ओर तनी हुई थी धमकाती और खोजती हुई, गौरैयो पर निशाना साधे एक वालक की हवाई वन्दूक की तरह। "गौरैयाँ" अभी वहाँ नही थी, लेकिन वे आयेगी ही। उनकी कोई कमी न रहेगी।

ब्राउन खुदाई करते लोगो की वगल मे आर्क लैम्प की रोशनी के वीच रुक गया, ताकि वे यह न समझे कि वह जासूसी कर रहा था। खुदाई करने वाले स्पष्टत प्रसन्न मन स्थिति मे थे। सभवत. वे कुछ समय से वेकार रहे थे। अपनी जेवो मे हाथ डाले हुये वह उनकी तरफ देख रहा था और सोच रहा था कि यह सव फिर कैसे हो गया। क्या यह वला ११ नवम्वर, १९१८ को ११ वजे सवेरे ठीक से दफनाई नही गई थी? क्या लोगो ने अपनी सगीनो को जमीन पर गडा कर, थूक कर आवाज नही लगाई थी—"अन्त मे (हमने इसे दफना ही दिया)।"

उसने जेव टटोल कर पाइप निकाला, हवा से वचाव करने के लिए विना सोचे ही पीछे मुडा, हैट चेहरे पर नीचे झुकाई और पाइप जलाया। वह अभी भी वढिया अँग्रेजी तम्वाकू से आधा भरा था।

ऊपर क्लाइड मे उसकी युवा पत्नी थी, जिसे वह प्यार करता था, और दो नन्ही वच्चियाँ। यह वडी अच्छी वात थी, उसने सोचा। अगर फिर से लडाई छिडेगी, तो कम-से-कम वह यह जानता तो होगा कि वह अपने हाथ मे वन्दूक क्यो लिये हुये था और उसके पास हथगोले क्यो थे। लेकिन क्या लडाई छिडनी ही चाहिये? आखिर यह छिडे ही क्यो? क्या केवल इसलिये कि उत्तरी सागर के उस पार उन दोगलो के पास उनके अधीन काफी जमीन, लोग और शक्ति नही थी? वह शक्ति नही चाहता। उसे अपने परिवार से प्यार था, अपने काम,

अपने जीवन, उन डाक टिकटो से भी, जिन्हे वह अपनी नन्ही बच्चियो लिली और रूथ के लिए एकत्र कर रहा था। लेकिन शयनकक्ष मे उसके पीछे मेन्टिलपीस के ऊपर गैस का नकाब टूबका बैठा था और अपनी वडी-बडी शीशे की आँखो के द्वारा उस पर और उसकी कामनाओ पर मुस्करा रहा था। यह एक दु स्वप्न था, एक खोपडी थी, एक वरवल्फ था जो अपनी सुअर जैसी थुथनी से जमीन खोद कर लाशे निकालता है। उसके मुँह को कोसनो और मिट्टी से बन्द कर देना चाहिये। उसने उसे अपने सामने इस तरह देखा जैसे वह सारे आकाश को आच्छादित किये हो— आकाश को जो शीशे के चौखटे के वजाय पीलाहट से भरी चमक वाले वादल के साथ वैसा ही श्यामल-श्वेत दिख रहा था।

अगर घटनाएँ इस प्रकार हो रही थी, तो इसमे उसका कोई दोष नही था। वह उन लोगो का शिकार था, जो राजनीति को व्यवसाय वनाये हुये थे, ठीक उसी तरह जिस तरह वह कागज वेचने का व्यापार करता था। अन्तर केवल इतना ही था कि वे अपने व्यापार के वारे मे उससे बहुत कम जानते थे जितना वह कागज विक्रय व्यापार के सबध मे जानता था, वरना वे लन्दन को इतनी कम तैयारी के साथ इस सकट का सामना न करने देते।

उस पेड के तने से टिके खडे-खडे, जिसे वह अपने कधे के जोडो के बीच एक दूसरी रीढ की तरह अनुभव कर रहा था, धीरे-धीरे एक विचार ने, जो शरीर के उस भाग यानी कमर से उठा जहाँ कभी कारतूस की पेटी बँधी रहती थी, उसके ऊपर कब्जा जमा लिया। वह विचार चुपचाप उठ कर उसके गले तक आया, उसे राल निगलने को मजबूर कर दिया, उसके मुँह मे कडुवा स्वाद भर दिया, और भीतर की ओर से उसके खोपडे पर दबाव डालने लगा।

नहीं, नहीं !

वह इसे स्वीकार तो नहीं करना चाहता था, लेकिन यह विचार वास्तविक था, जो बिना किसी सन्देह के साफ-साफ उनसे फुसफुसा कर कह रहा था कि इस मामले में उनका भी दोष था।

उसे शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है। उसे उस गन्दे खेल को, जिसे राजनीति कहते हैं, दूसरों के ऊपर इतनी स्वतंत्रता से नहीं छोड़ देना चाहिये था। लेकिन उसने इसकी कोई चिन्ता नहीं की थी वह अपना अनुभव भूल गया था, और उसने संसार की घटनाओं के क्रम के संबंध में कुछ वृद्ध बुजुर्गों के विचार स्वीकार कर लिये थे। वे ऐसा विश्वास करते रहे थे कि उनका रास्ता अच्छे भले जर्मन राष्ट्रवादियों से [illegible] रहा है, उनका या तो इस तथ्य की ओर ध्यान ही नहीं गया था या उन्होंने ध्यान देना चाहा ही नहीं कि १९१७ और १९१८ के विश्व विजय का स्वप्न देखने वालों ने शक्ति प्राप्त कर ली [illegible]। वे अब अपने दल-बल सहित गणतंत्र राज्य के इस ओर से उस ओर मार्च कर रहे थे जिसे उन्होंने अपने पैरों के नीचे रौंद डाला था और [illegible] के लिए परेड कर रहे थे। ११ नवम्बर भविष्य के परदे [illegible] अभी टिपरेरी पहुँचने के लिए काफी लम्बा [illegible] था, यदि हिटलर को सत्य का साक्षात कराने [illegible] स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिए [illegible]

[illegible] में अपना [illegible] फेंक दिया और चेहरे पर [illegible]। [illegible] जा कर अपना कोट [illegible] जैसे वह [illegible] में काम करते- [illegible] मुझे छोड़ दो।"

[illegible] से हँसा, सिर हिलाया।

खाँसा और फिर अँधेरे मे पीछे हट गया। हेनरी इच्छा-शक्ति लगा कर जमीन पर फावडा चलाने लगा। उसके शरीर की सारी मास-पेशियो को एकाएक यह क्षण याद आ गया। और जब वह खुदाई कर रहा था, तो उसने तय कर लिया था कि अब आगे से वह उन सभी तथाकथित भले लोगो के कार्यो की जाँच करेगा और कुछ दे दिला कर शान्त करने वालो एव सत्य पर पर्दा डालने वालो की कार्यवाइयो पर नजर रखेगा, ठीक वैसी ही सतर्कता और अविश्वास के साथ जिस तरह वह अब उस मिट्टी को देख रहा था जिसे वह खोद कर फेंक रहा था—इस तरह जैसे दुश्मन नीचे लेटा हो।

उसके मेन्टिलपीस पर रखा हुआ गैस का नकाब मुस्कराया करे। वह अच्छाई, वास्तविकता और उस समय की मान्यता, जिसने अभी-अभी १२ बजाया था, के प्रति जागरूक हो गया था।

अब वह पुन. जा कर सो सकता था।



भेड़िये

इस कहानी के लेखक

वाल्टर गॉरिश

सन् १९०९ ई० मे रूब्र क्षेत्र के वूपरटाल नामक स्थान पर जन्म हुआ था। बाइस वर्ष की अवस्था मे साम्यवादी दल में प्रविष्ट हुए। जब नाज़ियों ने शक्ति हथिया ली, तो जर्मनी भाग कर चले गये फिर योरप मे भटकते रहने के बाद एक अफसर के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय टुकड़ियो मे शामिल होने के लिए स्पेन गये। सन् १९४० ई० मे फ्रांसीसी पुलीस ने इन्हे नाज़ियों को सौंप दिया, जिस पर राजद्रोह के आरोप में कारावास एवं यातना शिविर में रखे जाने की सजा हुई। तीन वर्ष बाद कुख्यात 'मृत्यु टुकड़ी' मे शामिल होने के लिए विवश किये गये, लेकिन भाग कर लाल सेना मे शामिल हो गये। सन् १९४५ई० से वर्लिन में रह रहे हैं। उनकी दो प्रसिद्ध कृतियां हैं—सन् १९४० ई० मे रचित "फार स्पेन्स फ्रीडम" जो एक स्पेनिश कृषक के गणवादी सेना के अफसर बनने की कथा है, और 'दि साउन्डिग ट्रैंक' जो एक फ्रासीसी नजरबन्दी शिविर में बन्द एक जर्मन युवक की कहानी है एक नाटक और अनेक उत्तम चित्र-पट कथाएँ भी लिखी हैं।

कीचड़ से प्रगट हुआ एक पशु,
नाम था मानव !
झाड दो कीचड
यदि ध्येय हो बनना मानव !



उस स्त्री का जीवन लम्वे सूखे के वाद एक सोते की तरह धीरे-धीरे समाप्त हो गया। पलग पर लेटी-लेटी वह एक सोवियत स्त्री कैदी को देख रही थी, जो बम वर्षा से वर्वाद हुए उस कारखाने के फाटक पर बैठी हुई पुरानी ईंटो मे से चूना खुरच रही थी। उसके पीछे लगा गिट्टियो का ढेर उसकी उस हवा से कुछ रक्षा कर रहा था, जो भुरभुरी बर्फ विखेर रही थी।

उस लडकी ने हिचकिचाते हुए हाथ वढा कर दूसरी ईंट उठाई, जो छूट कर गिर गयी, क्योकि उसके हाथ ठडक से ठिठुर गये थे।

उसके पास दस्ताना नही है, मरती हुई महिला ने सोचा और इस विचार ने उसके अन्दर एक अपरिहार्य लोभी इच्छा भर दी। किसी ऐसे व्यक्ति की तरह जो वहुत समय से भूखा रहा हो और जिसे अन्त मे पेट भर खाने का मौका मिला हो। उसके गालो की ऊँची हड्डियो पर ज्वर की छाई हुई ललाई चमकदार गुलाबी रग मे परिणत हो गयी।

वह कपडे पहनने लगी अनावश्यक प्रयास से बचते हुए। जब वह तैयार हो गयी, तो वार्डरोब के पास जा कर उसने एक जोडा दस्ताना वाहर निकाला। वे दस्ताने उसके वेटे विली के थे, जो अठारह वर्ष की

उम्र मे ही पूर्व मे एक टैंक-युद्ध के दौरान मर गया था। आखिरी बार जब वह छुट्टी पर घर आया था, तो उसने एक संगीत सभा मे वेला बजाया था और अखबारो ने लिखा था कि वह एक होनहार वेलावादक था। यह याद करती हुई मुलायम ऊन को सहलाती, वह कुछ सेकेन्ड तक वहाँ खडी रही। फिर फ्लैट से निकल कर वह सतर्कतापूर्वक सीढियाँ उतर गयी।

सडक मे वह रही हवा उसकी साँस को काँच की तरह काट रही थी। वह उसके आक्रान्त फेफडो मे भरी जा रही थी दर्दभरी चुभन के साथ। उस लडकी के पास आते समय वह एक सुव्यवस्थित भारी शिकारी जैकेट पहने वृद्ध के पास से गुजरी। उस जैकेट पर एक आइरन क्रास फर्स्ट क्लास तमगा लगा था, जो उसे प्रथम विश्व युद्ध मे मिला होगा। उस वृद्ध की तेज नन्ही आँखो ने तुरन्त उस पैकेट को देख लिया, जिसे वह लिये हुए थी।

"एक कदम और बढती तो उस रूसी से भिड जाती," उसने कहा।

उस स्त्री ने उसकी आवाज मे निहित धमकी के स्वर को किसी निस्सीम कुल्प जैसी चीज की तरह अनुभव किया, लेकिन उसने अपनी थरथराती साँस के बावजूद चेहरे पर मैत्रीपूर्ण मुस्कान लाने की भरसक कोशिश की और वह उपयुक्त उत्तर खोजने की तेजी से कोशिश करने लगी। लेकिन जब उसने अपना मुँह खोला, तो केवल भौंकती खाँसी ही बाहर निकली।

"इस मौसम मे आपको बिस्तर पर ही पडी रहना चाहिए," वृद्ध व्यक्ति ने सहानुभूति के साथ कहा। उसने विचारमग्न भाव से उसके कमजोर शरीर पर दृष्टि डाली और भारी कदम रखता हुआ आगे बढ गया।

वह स्त्री उस रूसी लडकी के बगल से आगे बढ कर एक मिष्ठानखाने की दूकान के सामने रुक गयी। वह वहाँ गिरती बर्फ की फुहार मे जमीन

मे गडे डडे की तरह खडी थी। चक्कर काटते वर्फ के गालो ने उसके दर्द और थकावट को कम कर दिया। उसने उत्सुकतापूर्वक सडक पर दृष्टि डाली। उसकी आँखो से सारी मुलायमियत गायब हो गयी और उनमे उस वर्फ जैसी तीखी चमक भर गयी, जो दूकान की खिडकी पर सुई जैसे नुकीले दानो की तरह चिपकी थी। उसने कुछ लोगो के चले जाने की प्रतीक्षा की और आखिर सडक खाली हो गयी। वह लडकी के पास तेजी से लौटी। उसने ठड से नीले पड गये उसके युवा चेहरे को देखा।

"इन्हे ले लो!" उसने कहा।

वह वहाँ से जाने के लिए मुड कर सीधी हो ही रही थी कि उसके पीछे से आई एक आवाज ने उसे रोक दिया।

"इस तरह की चीजे हम स्वय भी इस्तेमाल कर सकते है," उस वृद्ध व्यक्ति ने उस लडकी के हाथ से दस्ताने छीनते हुए कहा।

उसने उस बीमार स्त्री को गर्दन के पीछे से सख्ती से पकड लिया।

"तुम्हारे लिए अच्छा यही होगा, कि तुम मेरे साथ थाने चलो," उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

वह उसे अपने आगे ढकेलता हुआ ले चला। कुछ सडके पार करने के बाद वे निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचे। वह लडखडाती हुई चन्द सीढियाँ चढी और धुएँ से भरे पहरे वाले कमरे मे प्रविष्ट हुई। ड्यूटी वाले पुलीस अधिकारी ने दृष्टि ऊपर उठा कर रुखाई के भाव से उन्हे देखा।

"यह दुश्मन की मदद कर रही थी," उस स्त्री की ओर अपना सिर झटक कर वृद्ध व्यक्ति ने रिपोर्ट किया। उसने दस्ताने पुलीस अधिकारी के सामने पटक दिये।

"अच्छा!" उसे घूरते हुए अफसर ने कहा—"तुम्हारे दिमाग मे यह विचार कैसे आया?"

लेकिन वह वहाँ अलग-थलग सी इस तरह खड़ी रही, जैसे वह पत्थर की बन गई हो। स्वेच्छाचारी कार्यवाई के सिद्धान्त अब उसके लिए कत्तई वास्तविक नही थे। वह एक छाया थी। कर सको तो पता लगा लो, उसने सोचा, राजसत्ता युक्त महत्ता के साथ।

"अच्छी बात है, तुम इस पर कल तक सोच-विचार कर लेना!" पुलीस अफसर ने खुल कर मुस्कराते हुए कहा और अपने मातहतो मे से एक को आदेश दिया।

वे उस स्त्री को एक कोठरी में ले गये। वह ठड से काँपती हुई ठडे तख्ते के किनारे पर बैठ गयी। मिनट धीरे-धीरे घिसटते हुए घन्टो मे परिणत होते गये। सर्दी भरी कँपकँपाहट जरा-जरा देर बाद उसकी पीठ पर दौडती रही। बहुत देर तक वह तख्ते के सिरे पर बैठी थी।

फिर सीने मे हुई कठोर पीडा ने उसके झुके हुए शरीर को सीधा कर दिया। जीवन रक्त उसके मुँह से जोर के साथ अवरोधहीन बाढ के रूप मे निकला और उसने उसके जमते शरीर को एक गर्म लाल लबादे की तरह ढँक लिया। वह उठ कर हल्के कदमो से बर्फ की फुहारो में काम करती उस लडकी की ओर बढी।

स्वप्नावस्था और जागरण के बीच झूलती उस स्त्री ने चादर से एक पट्टी फाडी और उसके एक सिरे पर फदा बाँधा। उसने इस तरह बनाई हुई उस रस्सी को ऊपर की ओर सीखचो पर फेक दिया। खून की एक और उल्टी से उसका दिमाग हल्का-हल्का हिलने लगा। अपने पैरो की धरती के मात्र ज्ञान के साथ वह स्त्री अब उस लड़की के सामने खडी थी। वह आगे की ओर झुकी वे दस्ताने देने के लिए और उसका सिर जेल की कोठरी की दीवार से टकरा गया।

"वे भेड़िये!" वह चीखी।

फिर उसने अपना सिर फदे मे डाल दिया।



अन्तर्काल

नील हस की यात्रा
बोडो यूह्से

युवा सेन्सर
एल्फ्रेड कुरेला

बुढिया और चील
एलेक्स वेडिंग

शेयरहोल्डरों की बैठक
लुडविग रेन

नील हंस की यात्रा

इस कहानी के लेखक

बोडो यूह्से

सन् १६०४ ईसवी में रस्टार में जन्म हुआ और पिता प्रशा के एक 'अधिकारी थे। अपनी आयु के द्वितीय दशक में ही परिवार की परम्परा को तोड़ कर साम्यवादी दल मे सम्मिलित हो गये। सन् १६३३ ईसवी मे पेरिस भाग गये और फिर सन् १६३६ ईसवी मे स्पेन। दो वर्षों तक अन्तर्राष्ट्रीय टुकड़ियो के साथ मिल कर युद्ध करते रहे और उसके बाद मेक्सिको पहुँचे। सन् १६४२ ईसवी में जर्मनी वापस आ गये और कुछ समय तक एक साहित्यिक पत्रिका के सम्पादक रहे। लीग ऑफ कल्चर के साथ काम किया और लेखक संघ के अध्यक्ष रहे। सन् १६६३ ईसवी में अपनी मृत्यु के पूर्व तक एकेडेमी ऑफ़ आर्ट्स के सदस्य रहे। सन् १६४४ ईसवी मे पहली बार अँग्रेजी में और सन् १६४७ ईसवी मे जर्मन भाषा में प्रकाशित उनका उपन्यास 'लेफ्टिनेन्ट बर्ट्रम' सेवेन सीज बुक्स के लिए १६६३ ईसवी मे चुना गया। जर्मन संघर्ष आन्दोलन पर प्रथम महाकाव्य तुल्य उपन्यास 'दि पैट्रियट्स' सन् १६५४ ईसवी मे प्रकाशित हुआ। इस कृति के लिए उसी वर्ष नेशनल प्राइज भी प्रदान किया गया।





""तावूत ले चलने के लिए मुझे कोई नही मिला," पिटे कच्चे फर्श पर दृष्टि जमाये हुए, सैंकेज क्रिस्टोवल ने कहा। मिगुएल ने उस व्यक्ति की ओर सिर हिलाया, जो दरवाज़े मे, अनुरोध करता किन्तु धमकाता हुआ भी, खडा था।

"तुम यहाँ के लिए अजनबी हो न," मिगुएल ने कहा।

"मै तुम्हारे साथ गाँव मे सात वर्ष रहा हूँ," दूसरे व्यक्ति ने शिकायत करते हुए कहा।

हाँ, लेकिन तुम तीन आदमियो की हत्या भी तो कर चुके हो, मिगुएल ने सोचा। यह बात उसने मुँह से नही कही। अभी तक गाँव मे किसी ने भी यह कहने की हिम्मत नही की थी।

"मै समझता हूँ कि आखिर मुझे ही अपने बच्चे का तावूत ले जाना पडेगा," सैंकेज क्रिस्टोवल ने अरुचिकर हँसी के साथ कहा। इस वार मिगुएल ने नीचे देखा।

"वडी ही वाहियात बात है," उस व्यक्ति ने जोर से कहा, अपने हाथ-पैर फैलाते हुए, यहाँ तक कि पूरा दरवाज़ा ही उससे भर गया।

मिगुएल ने अनुभव किया, कि झोपडी मे अँधेरा वढता जा रहा है और उसे फिर ऊपर देखने का साहस नही हुआ।

"हाँ," सैंकेज़ क्रिस्टोवल ने अन्दर आते हुए कहा—"वात यही है, है न ? लोग कहेगे कि इस व्यक्ति का एक ऐसा दोस्त भी नही है, जो इसके मृत बच्चे को क़ब्रगाह तक ले जाये।"

उसने अपनी सिगरेट खुले दरवाजे से वाहर सडक पर फेंक दी, जहाँ एक मुर्गी उस पर टोट मारने लगी।

"मेरे लिए सब बराबर है," उसने अपनी सामान्य रूखी आवाज मे कहा—"मुझे इस वात की परवाह नही कि लोग क्या कहते हैं। लेकिन कारमेला—इससे कारमेला का दिल टूट जायगा।"

यह बात अनुरोध से अधिक चुनौती जैसी लगी। उसने नज़र उठा कर आगन्तुक की ओर देखा, तो मिगुएल उसकी काली आँखो में एक दुखकर चमक दिखी, किसी बुरी वात की पूर्वसूचना। वह फौरन समझ गया, कि सैंकेज़ क्रिस्टोवल क्या सोच रहा था और आतकित हो उठा।

खैर, उसने ताबूत ले जाने का वादा कर दिया—जैसे यह तो होना ही चाहिए और किसी दूसरी वात का सवाल ही न हो। जैसे ही कार्मेला का नाम लिया गया, वह अपने आपे मे नही रहा, वह पराजित हो गया और एक पीडामय मधुर अनुभूति उसके दिल, दिमाग और अगो मे दौडने लगी। यह जान कर उसे क्लेश हुआ, कि वह दुखी थी। यह समझ कर उसे नशा आ गया कि वह उसकी मदद कर सकता था।

"उसके लिए मै यह काम करूँगा," उसने निर्लज्जतापूवक कहा।

जब क्रिस्टोबल चला गया, तो मिगुएल पुआल की चटाई पर पैर मोड कर बैठ गया और उस दिन के बारे मे सोचने लगा, जिसे वह और क्रिस्टोबल एक-दूसरे की आँखो मे देखते समय याद कर रहे थे।

जैसे ही सामने सुदूर पर्वतो पर कटु हरा प्रकाश छा गया था, वे रवाना हो गये थे। उन्हे बहुत दूर जाना था। तीन धूल-भरे घटो तक पैदल चलने के बाद भी वे अपने निर्दिष्ट स्थान से आधी दूर ही पहुँचे थे। धूप उनके कधो पर बोझ की तरह पड रही थी। सूखे पठार पर फैली

सेहुड की बीहड़ता के बीच सर्पाकार रास्ता दब्बूपन के भाव से जाता था। उस रेगिस्तान मे कोई और चीज़ पनपती ही न थी—लेकिन कितनी विविधता तथा अधिकता से सेहुड उगते थे वहाँ। कष्टमय रूप से चमकते आकाश मे मोटी पायेदार दीवारें गम्भीर भाव से ऊँची उठी हुई थी, मोटे बदमस्त आदमियो की तरह चारो ओर खडे ठूँठो मे शताब्दियो की शक्ति केन्द्रित थी, रेखागणित की नाना आकृतियो की तरह चौडी कालीने-सी रेत पर फैली हुई थी, तग पगडडी पर हरे सर्प रेग रहे थे। रक्त जैसे सुर्ख़, पीले और सफेद रेशमी फूल प्रलोभनकारी ढग से चारो ओर अपनी पखडियाँ फैलाये हुए थे, लेकिन उन्ही के साथ-साथ हजारो विविध प्रकार के काँटे चमडे जैसी हरी छाल से निकले हुए थे। काँटे कही कही ऐसे बारीक थे, कि वे पौधे पर झलमलाते। सुनहली वस्त्र को तरह फैले हुए थे। अन्य काँटो मे सुई जैसी नोके थी, और कुछ तो और भी मज़बूत तथा तलवार की तरह टेढे थे। ये सब-के-सब मनुष्य तथा पशु की प्यास के विरुद्ध जीवनदायक रस के कड़ुवाहट भरे बचाव के लिए चुनौती पूर्वक निकले हुए थे।

काफी गर्मी थी, और चारो ओर दूर-दूर तक सीधे और झुके हुए, कडे और लचीले, तीर की नोको और कँटीले हुको जैसे काँटो की दीवारो के अतिरिक्त कुछ दिखाई नही दे रहा था। बचाव कार्य का अतिक्रमण कर, ये काँटे पगडडी पर आगे आ जाते थे और चलते हुए राहगीरो के सफेद, फीके पडे, पुराने कपडे फाड देते थे, या उनकी नगी बाँहो पर रक्तिम खरोच लगा देते थे। काँटो की शत्रुता निर्दय की, और ग्रीष्मकाल की उस तपिश मे आतक उत्पन्न कर रही थी।

जो कतार के अन्त मे चलते मिगुएल के मुख मे इतनी लार भी नही रह गयी थी, कि वह डोरे को तकली के सूराख मे डालने के लिए अपना अँगूठा तर कर सके। आगे चलती हुई स्त्रियो की तरह—उसकी बहनें, पेटरा और कोञ्चा तथा और भी आगे कार्मेला—वह भी चलते हुए सूत

कात रहा था; जब रास्ता ऊपर उठता था, तो वह उसकी गुलाबी एड़ियाँ देख पाता था, इतना ही देख पा रहा था कार्मेला को। कार्मेला का पति, सैंकेज क्रिस्टोवल, सबसे आगे चल रहा था। कुटिलतापूर्ण भाव व्यक्त था उसके चेहरे पर। उसकी त्वचा का रंग बहुत गहरा था और माथे की सीधाई से कटे हुए उसके काले पसीने से तर बाल सिर से धूने की तरह चिपके हुए थे। उसकी रात्रि जैसी काली आँखें चमक रही थी।

जब कभी सैंकेज क्रिस्टोवल रुक कर अपने हाथ-पांव सीधे करता था—यद्यपि उसे इसकी कोई जरूरत नही थी, क्योंकि वह कोई बोझ नही लिए हुए था—तो वे सब रुक जाते थे और जब वह फिर चलने लगता था, तो सब उसके पीछे-पीछे चलने लगते थे, कार्मेला, दोनो बहनें और सब से पीछे मिगुएल।

पहले वह बाते करते रहे थे, सैंकेज क्रिस्टोवल धूम्रपान करता रहा था और बहने विनोदपूर्ण कहानियाँ कहती रही थी। केवल मिगुएल मौन रहा था, और उसकी मखमली आँखो की दृष्टि केवल कार्मेला के चेहरे पर नकाब की तरह पडती रही थी।

उनके पैरो के नीचे से उठ-उठ कर गर्द चक्कर काट रही थी और तेज धूप के कारण उन्हे सिर झुकाये रखना पड रहा था। एक सूखे चश्मे के आरपार एक पेड का तना पुल का काम कर रहा था। एक पथरीली चट्टान दूसरे किनारे पर उठी हुई थी। रास्ता टेढा-मेढा ऊपर जाता था और मिगुएल बगल से कार्मेला का चेहरा देख सकता था। उसके ताँबिये चेहरे का बगली भाग जलते आकाश की पृष्ठभूमि में तीखा दिख रहा था। उसकी कनपटियो की रेखाओ मे नीली चमक थी। जब वह उससे कुछ ऊपर चल रही थी, तो मिगुएल को उसके अस्तित्व की परिपक्वता तथा गौरव की अनुभूति हुई और वह आनन्द से अभिभूत हो उठा, यहाँ तक कि उसके मुख से आकस्मिक प्रसन्नता भरी चीख निकल गयी।

पहले भी उसे देख कर ऐसी ही भावनाओ की अनुभूति हुई थी।

पहला मौका था तीन वर्ष पहले पड़ोस के गाँव मे एक त्यौहार पर।
उस वार भी विलकुल अनपेक्षित भाव से और विना किसी पूर्व सूचना अथवा आभास के आतंकजनक तीव्रता से वह एक ऐसी भावना से अभिभूत हो उठा, जिसका वर्णन करना उसके लिए असम्भव था—अपने-आप को विचार द्वारा भी वह उसे नही वता सकता था। वह उसकी कामना करता था, वह उसकी ओर खिच रहा था। उसके अस्तित्व की गहराइयो मे इस सद्योत्पन्न ज्ञान की लौ थी, कि उसके लिए पूर्णता, आनन्द, प्रेम, इस ससार मे सपूर्णतायुक्त अस्तित्व कार्मेला के अन्दर ही निहित था।

ऐसा ही हुआ था तीन वर्प पहले गोली चलाने की गैलरियो, पाँसा फेकने के स्टालो, सगीत तथा पियक्कडो के शोर-शरावे के वीच। ऐसी ही अनुभूति होती थी उसे, जव कभी वह उसे देखता था।

किन्तु उसने कभी इस आग्रह के प्रति समर्पण नही किया था। उसे इससे डर लगा था और वह इससे भाग खडा हुआ था। जव कार्मेला ने इस अजनवी से विवाह किया था—जिसके वारे मे कोई कुछ नही जानता था, कि वह कहाँ से आया था या जीविका के लिए वह क्या करता था—उसने उसे हो जाने दिया था, मूक तथा सन्त्रास से भरे रह कर। उसने इस सवध मे कुछ नही कहा था और यह अनुमान लगाना कठिन था कि उसके मस्तिष्क मे क्या था। अब कार्मेला के सैंकेज क्रिस्टोबल से एक बच्चा हो चुका था और वह इक्समीक्विलपान के वाज़ार की ओर आज्ञाकारितपूर्वक उसके पीछे-पीछे चल रही थी, पीठ पर मिट्टी के बर्तन लादे और एक कपडे मे लिपटे बच्चे को सीने पर दवाये।

मिगुएल ने ऊपर कार्मेला की ओर देखा, उसके जादू का अनुभव किया और अपनी निष्क्रियता पर उसे लज्जा आयी।

फिर वे चौडी सफेद सडक पर आ गये। सैंकेज क्रिस्टोबल ने घृणा-भाव से मिगुएल की ओर देखा, जो स्त्रियो की तरह तकली चला रहा था। कार्मेला ने भी मुड कर उसकी ओर देखा, जव वे नाले से

निकल कर ऊपर सडक पर आये। उसके सफेद ब्लाउज़ में गने पर पीली कढाई थी, लेकिन वह फटा हुआ था और उसकी लाल त्वचा तथा अभी से क्लात हुई छातियाँ यहाँ-वहाँ छेदो के अन्दर से चमक रही थी। वह लगभग प्रफुल्ल गति से उछल कर ऊपर सडक पर पहुँच गयी, और जब इसके नगे पैरो के तलुओ का गर्म असफाल्त ने स्पर्श हुआ, तो वह हँस पडी। वह अपने पति के चिडचिडे चेहरे पर भी हँसी, हालाँकि वह उससे भलीभाँति परिचित थी। वह अपनी तकली घुमा कर सूत कात रही थी और समान गति से कदम रखती चल रही थी।

जब वे सडक पार कर रहे थे, तो एक कार सनसनाते हुए तीर की तरह उनके पास से गुजर गयी। स्त्रियाँ चीख पडी और वे सब तितर-वितर हो गये, खिन्न सैवेज क्रिस्टोवल भी। लेकिन जब वे इक्समीक्विल-पान जाने वाली सडक के उस पार पहुँच गये, तो अपना गौरव पुन. प्राप्त कर लिया। वह शान और खिन्न भाव से स्त्रियो के आगे-आगे चलने लगा। मिगुएल उन लोगो के पीछे-पीछे चल रहा था, लज्जाशील और आह्लादित।

वाज़ार ने वहुत-से लोगो को आकृष्ट किया था, इसलिए जब वे वहाँ पहुँचे, तो उसका वडा-सा चौक पहले ही से भर गया था। मिगुएल तथा स्त्रियो के चौक के निकट एक गली मे अपने लिए स्थान प्राप्त कर लिया, कार्मेला ने एक ओर तथा मिगुएल और उसकी वहनो ने दूसरी ओर। धक्का-मुक्की करते जाते लोगो के वीच से मिगुएल दूसरी ओर खड़ी कार्मेला की तरफ मुस्कराती, दीन आँखो से देख रहा था। घुटनो के वल वैठ कर, कार्मेला ने अपने सामने ज़मीन पर मिट्टी के वर्तन और एक शाल, जिसे खुद वुना था, फैला दिये। वच्चा वडल मे लिपटा उसके पीछे नाली मे लेटा था।

चौक के दूर के सिरे से सगीत तथा आतशवाजी की पटपटाहट की आवाज़े आ रही थी। मिगुएल की वहनो ने मासल हरी पत्तियो पर पनीर और कुछ टूपूना फैला रखे थे और ग्राहको का इन्तज़ार कर रही

थी। मिगुएल अपनी पुआल की चटाइयों के बीच बैठा था, जो उसने खम्भों की तरह खड़ी कर रखी थी। उसे उस बोझ से छुटकारा पा जाने की खुशी थी और उसे कोई चिन्ता न थी। उसकी नज़र कार्मेला के ऊपर चक्कर काट रही थी।

कार्मेला के मिट्टी के बर्तन अच्छे बिके। लम्बी सुराहियो और चौडे गोले प्यालो की अच्छी माँग थी। खरीदार उन्हे उँगलियो की गाँठो से बजा कर देखते थे, कि वे चिटके तो नही है, कुछ मोल-भाव करते थे और कार्मेला द्वारा माँगी हुई कीमत का दो-तिहाई देते थे।

सैंकेज़ क्रिस्टोबल रह-रह कर पलक्यूरिया से निकल कर आता था, बाकी बचे बर्तन गिनता था, हिसाब लगाता था कि कितने बिके और कार्मेला से पैसे ले लेता था। फिर जेबो मे हाथ डाले हुए ही, वह लापरवाही से पलक्यूरिया के दोहरे स्प्रिग वाले दरवाजो को धक्का दे कर पुन. अन्दर चला जाता था और इस प्रक्रिया मे जोर-जोर से गाने की आवाज तथा गिटार का सगीत बाहर निकलता था।

इस जाँच-पडताल के दौरान एक बार सैंकेज क्रिस्टोबल ने देखा कि कार्मेला ने शाल बेच डाला था। उसने उसकी कीमत का पैसा माँगा। कार्मेला को पसोपेश हुआ, क्योकि शाल उसी ने तैयार किया था और उस पैसे से वह बच्चे के लिए एक कोट खरीदना चाहती थी। लेकिन सैंकेज क्रिस्टोबल, जो अब तक नशे मे धुत्त हो चुका था, उसे ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ देने लगा। कार्मेला ने तेजी से दो पेसो दे दिये। यह उसे बहुत कम मालूम हुआ। उसने चिल्ला कर कहा कि वह उसे धोखा दे रही है और उसे और भी ज़ोर से गालियाँ देने लगा, न केवल उन लोगो ने, जो वहाँ आराम कर रहे थे, यह सुना, बल्कि गली की दूसरी ओर मिगुएल ने भी। वह तेजी से दौड कर आया और चुपचाप खड़ा रहा, जब कि क्रोध से उबलते सैंकेज़ क्रिस्टोबल ने सारे बर्तन अपने डंडे से चूर कर दिये। इसके बाद वह फिर पलक्यूरिया के अन्दर चला

गया। जो लोग यह सब देख रहे थे, उनमे से किसी ने भी जरा-सी भी हर्कत नही की। यदि वह चाहता, तो वर्तन तोडने के बजाय कार्मेला को पीटता—यह भी केवल एक मजेदार तमाशा ही होता।

सो मिगुएल के लिए भी खामोश रहना ही कायदे की बात थी। लेकिन सेकेज क्रिस्टोवल के पीछे पलक्यूरिया के दरवाजे वन्द हो जाने के बाद भी इसका दिल तेजी से धडकता रहा। मिगुएल कार्मेला को, रोते हुए वर्तनो के लाल-भूरे टुकडे इकट्ठा करते हुए देख रहा था। कार्मेला के हाथ कॉप रहे थे, और उसकी झुकी हुई पीठ पर ऐसी निराशा की झलक थी कि मिगुएल, पेश्तर इसके कि वह समझ पाता कि वह क्या कर रहा है, घुटनो के वल वैठ कर टुकडे विनने मे उसकी सहायता करने लगा। उनके हाथो का स्पर्श हुआ, और कार्मेला ने सिर उठाया। उसकी आँखें अव भी भीगी हुई थी, लेकिन उसका मुख मुस्करा पडा, जव उसने देखा कि उसकी वगल मे मिगुएल था।

कार्मेला का हाथ पकडे हुए, मिगुएल उठ खडा हुआ और उसे ले जाने लगा। वह उसे वाजार की चौक मे इस तरह ले गया, जैसे वह उसकी दुलहिन हो, और एक अद्भुत उष्णता तथा गर्व-भाव उसके सारे शरीर मे फैल रहा था। उसका चेहरा चमक रहा था। इधर-उधर खडे हुए लोगो को धकियाता हुआ वह आगे वढ रहा था। उसने पी नही थी, लेकिन उसे लग रहा था कि जैसे उसने पी ली हो। सगीत जोर पकडता गया, भीड घनी होती गयी, यहाँ तक कि कार्मेला के कधों और नितवो का दवाव उसके शरीर पर पडने लगा। धूप से उसके आँसू सूख गये थे। कार्मेला की आँखो मे ऐसी निर्मल तथा पवित्र चमक थी जैसी पहले कभी नही थी। अव उनमे कोमलता तथा आज्ञाकारिता ही न थी, वल्कि उनमे व्यक्त था जीवन तथा अभियान का आनन्द जिसका जन्म सगीत की ध्वनि से, इतने लोगो के वीच होने की उत्तेजना से, मिगुएल की कामनापूर्ण विवश करती दृष्टियो से और किसी के द्वारा

इच्छित होने की गौरवपूर्ण अनुभूति से हुआ था। चक्कर झूले को घेरे खड़ी भीड के बीच वह मिगुएल के आगे-आगे चल रही थी।

धरती की तरह, चक्कर झूला अपनी धुरी पर घूम रहा था। विचित्र जीवो से आबाद था वह—लाल बकरे, पीले हाथी, हरे चीते, एक बहुत बडी तितली, जिस पर बैठा जा सकता था। एक लाउड-स्पीकर से सगीत प्रसारित हो रहा था। चार गन्दे लडके और एक बूढा, जिसकी बायी आँख पर पट्टी बँधी थी, चक्कर झूले को चला रहे थे। कार्मेला ने उन्हे नही देखा, वह उन जानवरो को देख रही थी जो उसके पास चक्कर खाते गुजर रहे थे, और उन लोगो को जो उन पर सवार थे, गभीर पुरुष तथा स्त्रियाँ, जो चक्करो मे घुमाये जा रहे थे।

मिगुएल को बोध हुआ, कि ऐसी ही एक 'चक्कर यात्रा' करने की कार्मेला की कितनी बड़ी इच्छा थी। उसने उसका हाथ पकड लिया—प्रसन्नतापूर्वक किन्तु फिर भी कुछ पसोपेश के साथ—जब कि चक्कर झूले की मथर गति क्रमश· धीमी हो कर स्थिर हो गयी। यात्री, जिन्होने उस यात्रा के दौरान एक मासपेशी भी नही हिलाई थी, अब सुदृढ धरती पर फिर उतरे, चमकते आश्चर्यान्वित चेहरे लिये। कार्मेला ने बिना हिचक मिगुएल के हाथ के दबाव का प्रत्युत्तर दिया। वह उस पीले हाथी पर चढना नही चाहती थी, जो उनके सामने रूका था, उसके बजाय उसने तिरछी गर्दन वाले नीले हस की ओर इशारा किया; उसके चौडे फैले डैनो के बीच एक सीट थी, जिस पर उन दोनो के बैठने के लिए काफी जगह थी। वे उस पर साथ-साथ बैठ गये। जब तक चक्कर झूला स्थिर रहा, वे अपनी आँखे झुकाये रहे, लोगो की दृष्टियो से बचने के लिए, जो चारो ओर खडे थे, घूरते और हँसी-मजाक करते। लेकिन जब झूला धीरे-धीरे चलने लगा और नीचे खडे लोग, वृक्ष तथा सगीत वाले शामियाने के ढले लोहे के शेर झूमते हुए पास से गुजरने लगे, तो उनके सँवलाये चेहरो पर खुशी फैल गयी। वे हाथ मे हाथ दिये,

एक-दूसरे की आँखो मे आँखे डाले बैठे रहे। अपने अन्दर भरी हुई उस आनन्दमय अनुभूति के उत्पत्ति-प्रसग की उन्हे कोई चिन्ता न थी। वे केवल यह जानते थे, कि वह उन दोनो के अन्दर समान रूप से चमकती-दमकती प्रज्वलित थी। नीले हस वाली उस यात्रा ने उन्हे सुख के दिव्य लोक मे पहुँचा दिया। कार्मेला और मिगुएल के लिए यह अनुभूति सबसे सुन्दर चीज़ थी, स्वय प्रेम जैसी सुन्दर।

जब वह यात्रा समाप्त हुई तो वह स्वप्न यकायक टूट गया। सैंकेज़ क्रिस्टोवल चक्कर झूले के सामने कार्मेला का इन्तज़ार कर रहा था। उसने एक शब्द भी नही कहा, लेकिन उसकी आँखो मे जलती तीखी आग ने कार्मेला की सारी खुशी समाप्त कर दी। मिगुएल तो समझ रहा था कि उसे वही छुरा मार दिया जायेगा, लेकिन सैंकेज क्रिस्टोवल इतनी पिये हुए था, कि उसके लिए ऐसा कुछ कर सकना सम्भव ही न था। कार्मेला और मिगुएल को उसे चौक से ले जाना पडा, और घर वापसी के दौरान लम्बी, एकान्त सड़क पर उसे सँभाले रहने मे उन्हे बडी दिक्कत उठानी पडी।

जब मिगुएल ने कार्मेला के ख्याल से बच्चे के शव को कब्रिस्तान तक ले जाने का वादा कर दिया, तो सैंकेज क्रिस्टोवल ने उसे उसी धमकी-भरी नज़र से नापा-तोला, जिससे उसने उसे उस समय देखा था, जब नीले हस वाली यात्रा के अन्त मे वह चक्कर झूले से उतरा था।

मिगुएल को उस नज़र की अनुभूति उस समय भी हो रही थी, जब वह अन्त मे सैंकेज के झोपडे को गया। उसने उस समय भी अनुभव किया, जब बहुत हल्के, छोटे-से सफेद ताबूत को अपने कधे पर उठाया। वह उसे तब भी अनुभव किया, जब वह कब्रिस्तान की ढलान पर चढ रहा था, क्योकि सैंकेज क्रिस्टोवल उसके पीछे-पीछे चल रहा था। अपने

पति के पीछे लड़खड़ाती हुई चलती कार्मेला की रुलाई मिगुएल सुन रहा था। कार्मेला के पीछे-पीछे मिगुएल की बहनें, पेटरा और कोन्चा चल रही थी। वह उनकी रुलाई भी सुन रहा था। उसने सडक पर लोगों को कहते सुना, मिगुएल तावूत ले जा रहा है।"

जैसा उचित था, वह धीरे-धीरे चल रहा था, यद्यपि उसका भय वढता जा रहा था। जब वे गाँव के वाहर पहुँच गये, तभी उसे गर्दन मोड़ कर अपने कधे के ऊपर से सैंकेज़ क्रिस्टोवल की ओर, जो सिर झुकाये हुए ज़मीन की ओर ताक रहा था, देखने का साहस हुआ। लेकिन मिगुएल अभी फिर मुड़ा ही था, कि उसे फिर अपनी गर्दन पर उस धमकी भरी दृष्टि का दवाव अनुभव हुआ।

उन्होने उस छोटे-से तावूत को कब्र के अन्दर झुका कर रख दिया और उसके निकट क्षण भर रुके रहे। मृत वच्चे की माँ कार्मेला के साथ दोनो वहने तथा सैंकेज क्रिस्टोवल कब्र की एक ओर, और तावूत-वाहक मिगुएल दूसरी ओर। इस वार उससे कोई भूल नही हुई। इस वार सैंकेज की नजर ने उसे जकड दिया। मिगुएल भाग जाना चाहता था, लेकिन उसका भय इतना बढ गया था, कि वह हिल भी नही सकता था। सैंकेज क्रिस्टोवल उछल कर खुली हुई कब्र के दूसरी ओर पहुँच गया। उसने मिगुएल की गर्दन पकड ली, और अपने लम्बे चाकू से उस पर एक वार और फिर दूसरी बार वार किया। मिगुएल के चारो ओर धरती चक्कर काटने लगी—पहले धीरे-धीरे, और फिर तेजी से और तेजी से, ठीक उसी तरह जैसे नीले हस वाली यात्रा के समय हुआ था। हवा झोके के साथ उसके कानो पर से गुजर रही थी। उसे लग रहा था, कि उसे सगीत तथा कार्मेला की हँसी सुनाई पड़ रही थी। वह धम-से धरती पर गिर पडा।

●

युवा सेंसर

इस कहानी के लेखक

ऐलफ्रेड कुरेला

सन् १८९५ ईसवी मे ब्रीग मे जन्म हुआ। म्युनिक मे अप्लाईड आर्ट्'स का अध्ययन किया। सन् १९१८ ईसवी मे कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना होने पर, उसमे सम्मिलित हुए और सन् १९१९ ई० मे नवोदित सोवियत यूनियन की यात्रा की. जर्मनी वापस आ कर, बर्लिन मे एक वामपक्षी पत्रिका का सम्पादन किया। अगला मुकाम पेरिस था, जहाँ सन् १९३३ ईसवी में गये। उस महानगर से मास्को रवाना हुए, जहाँ एक आलोचक तथा अनुवादक के रूप मे काम करते रहे। कमेटी के समाचारपत्र "फ्री जर्मनी" के सम्पादक थे। सन् १९५४ ईसवी मे जर्मनी वापस आने पर लिपजिग मे राइटर्स इंस्टीट्यूट की स्थापना मे सहायक हुए, और उसके निदेशक थे। उनकी प्रकाशित कृतियो में सम्मिलित हैं: "मसोलिनी अनमास्क्ड" (१९३१ ईसवी); फ्रेंच से अनेक अनुवाद; उन्नीसवीं शताब्दी के रूसी क्रान्तिकारी लेखको तथा आधुनिक सोवियत लेखकों के अनुवाद; एक आत्मकथात्मक ऐतिहासिक विवरण, मार्क्स-वादी साहित्यिक आलोचना की एक पुस्तक तथा एक उपन्यास "ग्रोनो पेपर्स"



१८९८ ईसवी मे बुलगारियाई श्रामिको ने अपने इतिहास में पहली बार मई दिवस पर सडको पर परेड किया। सोफिया मे पुलिस से झडप हो गयी, और श्रामिको ने, जिनमे अनेक बहुत कम उम्र के लोग थे, अच्छा बचाव उपस्थित किया। पुलिस वालो के सिरो पर ईंटो और लोहे के टुकडो की वारिश हुई, और दोनो ओर अनेक हताहतो के साथ वह दिन समाप्त हुआ।

जिन लोगो ने परेड मे भाग लिया था, उन मे उस बडे मुद्रण-सस्थान के कुछ श्रमिक भी थे, जो लिबरल पार्टी का पत्र प्रकाशित करता था। उस पत्र का सम्पादक का रेडिस्लावोफ नाम का एक वकील। २ मई को उसका नियमित सम्पादकीय ठीक समय पर मुद्रणालय मे पहुँचा। मई दिवस को जो कुछ हुआ था, उससे सोफिया मे मध्यवर्गीय लोग विचलित हो उठे थे।

रेडिस्लावोफ की कापी की एक विचित्रता यह होती थी, कि—उसको पढ पाना असम्भव होता था। उस सारे मुद्रणालय मे केवल दो श्रामिक ऐसे थे, जो उसकी लिखावट पढ पाते थे—एक अनुभवी वृद्ध कम्पोजीटर और एक युवा व्यक्ति, जिसका उम्मीदवारी-काल अभी-अभी समाप्त हुआ था। २ मई को वृद्ध कम्पोजीटर वीमार था, इसलिये उस लडके को ही उस लेख को कम्पोज करना था।

युवा कम्पोजीटर ने तुरन्त कार्य आरम्भ कर दिया। लेकिन

कुछ पंक्तियाँ कर चुकने के वाद ही उसे लगा, कि उसे काम रोक कर पूरी पाण्डुलिपि पढ लेनी चाहिये। पढ चुकने के वाद, उसने उसे मोड़ दिया, और फोरमैन के पास गया।

"इसे वापस लीजिये। मैं इसे कम्पोज न करूँगा।"

फोरमैन हैरान रह गया। इस लडके को क्या हो गया है ?

"नही, मै इससे कोई सरोकार रखना नही चाहता," उसने कहा। उसने पाण्डुलिपि मे उँगली दौडा कर एक पैराग्राफ की ओर इशारा किया, जिसमे कहा गया था, कि जिन श्रमिको ने मई दिवस को परेड किया था, वे गये-बीते डाकू, चोर और राज्य के शत्रु हैं। सरकार को उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाइयाँ करनी चाहिये, वगैरा-वगैरा।

फोरमैन देर-तक समझाता-बुझाता रहा, लेकिन युवा कम्पोज़ीटर ने उस सम्पादकीय को कम्पोज़ करने से कतई इन्कार कर दिया। वह अपने टाइप वाले केसो के पास वापस गया, और उसने दूसरा काम शुरू कर दिया।

कुछ देर वाद रेडिस्लावोफ प्रेस आया, यह देखने के लिए, कि काम कैसा हो रहा है। फोरमैन ने उसे वह घटना सुनाई, तो वह तुरन्त कम्पोज़िंग वाले कमरे मे गया।

"तो तुम सम्पादकीय कम्पोज़ करने से इन्कार कर रहे हो ? कान खोल कर सुनो, लडके, तुम मेरे नौकर हो, और मे तुम्हे तनख्वाह देता हूँ। मैं तुम से जो कुछ कहूँ, वह तुम्हे करना चाहिये, और जो कुछ तुम कर रहे हो, उसके अर्थ को लेकर चिन्ता न करनी चाहिये।"

"मै जानता हूँ, कि मेरे कर्त्तव्य क्या हैं," लड़के ने उत्तर दिया—"लेकिन मैं उस लेख को कम्पोज़ न करूँगा।"

"आखिर क्यो ?"

"वह श्रमिको के अपमान से भरा हुआ है। ऐसे कामो मे मै कभी हाथ न लगाऊँगा, और न कोई और श्रमिक ही लगायेगा।"

"अच्छा, हम अभी देखते है। यह लेख दूसरे कम्पोजीटर को दे दो," रेडिस्लावोफ ने फोरमैन से कहा, और सम्पादकीय कार्यालय मे चला गया।

यह कह देने भर से क्या होता है, फोरमैन ने सोचा, जो जानता था, कि कोई और अध्यक्ष की लिखावट पढ ही नही सकता था। उसने उसे खुद पढने की कोशिश की, लेकिन उसका सिर-पैर कुछ उसकी समझ मे नही आया। अन्त में हार कर, रेडिस्लावोफ को यह बताने के लिए, कि स्थिति क्या है, वह आफिस के अन्दर गया।

युवा कम्पोजीटर को, जो यह सारी कार्रवाई मुस्कराता हुआ देख रहा था, कोई ताज्जुब नही हुआ, जब उसे थोडी देर बाद सम्पादक के कार्यालय मे बुलाया गया। वहाँ उसने उस पाडुलिपि को लिये हुए क्रोध से उबलते अध्यक्ष को इधर से उधर चहलकदमी करते पाया।

"क्यो, क्या बात है ? तुम इसे कम्पोज क्यो नही कर सकते ?"

"यह मै आपको पहले ही बता चुका हूँ। इसमे गन्दी अपमानजनक बातें भरी हुई हैं। श्रमिक चोर और लुटेरे नही है।"

"हाँ, शायद अब नही है। तुम एक भले नौजवान हो। लेकिन सब तो तुम्हारी तरह के नही है।"

"नही, वे सब है," लडके ने जोर देते हुए कहा। "वे सब मेरी तरह के है या मुझसे भी बेहतर। खास कर वे सब, जिन्होने कल परेड किया था।"

रेडिस्लावोफ ने फिर इधर से उधर टहलना शुरू कर दिया। इस लड़के का क्या किया जाय ? यकायक वह मुडा।

"अच्छा, वे अश कौन-से हैं, जो तुम्हे पसन्द नही है ?"

कम्पोज़ीटर ने वह पक्तियाँ दिखाई, जिन्हे पढ कर वह इतना, क्रोधित हो उठा था, और रेडिवस्लावोफ ने एक लाल पेन्सिल निकाल ली।

"अच्छी बात है" आह भर कर, उसने कहा "इन्हे मैं काटे देता हूँ।"

३ मई, १८९८, को सोफिया के उदार दलीय समाचार पत्र में मई दिवस के सम्बन्ध मे नये विचारो से भरा सम्पादकीय लेख ही प्रकाशित हुआ।

सत्रह वर्ष बाद प्रथम महायुद्ध ज़ोरो से चल रहा था। युद्ध मे फँसे हुए सभी अन्य देशो की तरह, बुलगारिया मे भी सरकार ने सैनिक सेन्सर लागू कर रखा था। क्रान्तिकारी श्रमिक दल, तथाकथित नैरो सोशलिस्ट्स, विरोधी पक्ष मे था। ससद मे इन लोगो ने हाल ही सेन्सरशिप के प्रति आपत्ति प्रकट की थी, इसलिये कि श्रमजीवी वर्ग के पत्रो के विरुद्ध इसका अनुचित रूप से उपयोग किया जा रहा था।

उस समय बुलगारिया के प्रधान मत्री कोई और नही, पहले के वकील रेडिस्लावोफ ही थे। लेकिन वह युवा कम्पोज़ीटर अब क्रान्तिकारी समाजवादियो द्वारा निर्वाचित ससद सदस्य था और उसी को उन लोगो ने सेन्सरशिप के प्रति आपत्ति पर बोलने के लिए चुना था।

युवा सदस्य का भाषण अभी रंग पर आ ही रहा था, कि यकायक पीछे से उठ कर, प्रधान मत्री ने उसे टोका।

"अरे! तुम इस सेन्सरशिप पर एतराज कर रहे हो? क्या तुम

भूल गये, सत्रह साल पहले तुम ने ही प्रेस मे मेरा लेख सेन्सर किया था ?"

वक्ता का उत्तर तैयार था।

"हाँ, उस समय मैंने उसे इसलिये सेन्सर किया था, कि वह श्रमिको के विरुद्ध था। ठीक उसी कारण से अब मैं आपको सेन्सरशिप के विरुद्ध हूँ—इसलिये कि इसका उपयोग श्रमिको के विरुद्ध किया जा रहा है !"

उस कम्पोजीटर का नाम, जो १९१५ मे बुलगारियायी ससद का सदस्य बन गया था—जार्जी डिमिटरॉफ था। १९३४ के ग्रीष्मकाल मे उसने मुझे यह कहानी मास्को मे सुनाई थी।



बुढ़िया और चील

इस कहानी की लेखिका

एलेक्स वेडिंग

वही ग्रेटे हैं जिन्हे स्वर्गीय चेक-जर्मन लेखक एफ०सी० वीशकॉफ ने अपनी पुस्तकें समर्पित की हैं। अपने ही प्रयत्नों से बनी लेखिका (सन् १९५६ ईसवी मे गेटे पुरस्कार प्राप्त) एवं अपने पति की सहकर्मिणी तथा हम-सफर। दोनों साथ-साथ नाज़ियों के आतंक से भाग निकले—पहले पेरिस पहुँचे और फिर अमरीका, जहाँ एलिस आइलैण्ड पर साम्य-वादी विदेशियों के रूप में रोक रखे गये। युद्धोपरांत दूसरी यात्रा में सीधे वाशिंगटन, डी० सी० पहुँचे, जहाँ उनके पति चेको-स्लोवाकियाई राजदूत और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में सर्वाधिकार प्राप्त मंत्री नियुक्त हुए। बाद में स्वीडेन और चीन में अन्य कूटनीतिक सेवाओ के पश्चात् दोनो बर्लिन लौटे, जहाँ उनके पति की सन् १९५५ ईसवी मे मृत्यु हो गयी। एलेक्स वेडिंग किशोरो के लिए पुस्तकें लिखने वाली एक अत्यधिक लोकप्रिय लेखिका हैं। इस पुस्तक की यह परी-कथा उनकी नवीन पुस्तक "ह्यूबर्ट दि, हीपोपोटैमस" से ली गई है, जो अफ्रीका की एक कथा है और जो उस महाद्वीप की यात्रा के उपरांत लिखी गई थी।





किसी समय की बात है कि एक उडती हुई चील एक बुढिया के पास आयी। उस बुढिया के पैर मे एक फोडा निकला हुआ था और वह बुरी तरह रो रही थी।

"ऐ नेक स्त्री," उस चील ने उस पर मँडराते हुये कहा—"मैने पहले कभी इतना बडा फोडा नही देखा ! तुम चलती-फिरती कैसे हो ?"

"मै चल-फिर कहाँ पाती हूँ ?" बुढिया कराह कर बोली।

"तुम मनुष्य लोग हो !" उस पक्षी ने कहा—"अगर मै तुम्हारे साथ आज कोई भलाई करूँ, तो कल तुम जरूर मेरे साथ बुराई करके अपना आभार प्रकट करोगी !"

"अरे, नही-नही ! मै कभी भी ऐसा कुछ न करूँगी !" बुढिया ने विरोध किया।

तो चील ने बुढिया की मदद करने का निश्चय किया।

"अपनी आँखें बन्द करो," चील बोली—"अब आँखे खोलो !"

बुढ़िया ने वैसा ही किया जैसा उससे करने को कहा गया था, पहले आँखे मूँदी और फिर खोली।

"अब अपने पैर को देखो, चील ने कहा।

पैर पर फोड़े का कोई चिह्न नहीं रह गया था।

इसके बाद चील ने उससे अपनी आँखे फिर बन्द करने को कहा। और जब उसे आँखे खोलने का फिर आदेश दिया गया, तो उसके चारों ओर के पेड कटे पड़े थे और जमीन बराबर हो गई थी। बुढ़िया ने पुनः आँखे बन्द की। और फिर जब उसे आँखें खोलने की इजाजत दी गयी, तो चारो ओर ऊँचे सुन्दर घर खड़े दिख रहे थे।

एक बार और चील ने उससे आँखें मूँदने को कहा और उसने पुन जब चारो ओर नजर दौड़ाई, तो उसने अपने को एक नगर में पाया और वह नगर विशाल था।

"यह नगर तुम्हारा है, बुढ़िया।' मित्र चील बोली।

बुढ़िया खुशी से विह्वल हो उठी।

"ओह, धन्यवाद-धन्यवाद।" वह चीखी—"और इसके बदले मे मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकती हूँ?"

"मैं तुम से कुछ भी नही चाहती," चील ने घोषित किया—"एक मात्र चीज जो मैं लेना चाहती हूँ वह है यूकिलिप्टस का पेड़।"

"लेकिन वह तो बहुत छोटी चीज है। खैर, जैसा तुम चाहो। वह पेड तुम्हारा ही है।' बुढ़िया ने कहा।

तब चील यूकिलिप्टस के उस पेड पर उड़ कर गयी, जहाँ उसने अपने लिये एक घोंसला तैयार किया और उसमे दो अडे दिये। फिर वह

उन्हे ढँक कर, उन पर तब तक बैठी रही सेने के लिए जब तक उनमे से बच्चे पैदा नही हो गये ।

उसके नन्हे-नन्हे बच्चे उन अडो मे से निकले ही थे, कि वह चारे की खोज में उड गयी ।

बुढिया का पोता उसके साथ रहता था । वह रोने-मचलने लगा—"ओवा । ओवा । ओवा ।"

"तुझे क्या हुआ ?" उसकी दादी ने प्रश्न किया ।

"मै चील का एक बच्चा खाना चाहता हूँ," वह बच्चा मचलता हुआ बोला ।

"लेकिन ऐसी चीज मैं तेरे लिये कहाँ पाऊँ ?"

परन्तु बच्चा अपनी रुलाई बन्द करने को तैयार न था ।

"ओवा । वू—हू ।" वह मचल-मचल कर रोता ही रहा—"मैं चील का एक बच्चा चाहता हूँ । मै चील का एक बच्चा खाना चाहता हूँ ! मै चील का एक बच्चा खाना चाहता "

वह रोता ही रहा, रोता ही रहा, चिल्लाता चीखता हुआ ।

"अगर मुझे चील का एक बच्चा खाने को नही मिलता, तो मै मर जाऊँगा ।"

"मै केवल उस बात के लिए अपने बच्चे को मरने नही दे सकती," बुढिया मुनमुनाई और उसने निश्चय कर लिया ।

"आओ, लोगो, अपनी कुल्हाडियाँ ले आओ ।" उसने अपने पडोसियो को आवाज दे कर कहा—"जा कर उस यूकिलिप्टस के पेड़

को काट कर गिरा दो और उसमे लगे घोंसले से चील के बच्चे को मेरे लिये ले आओ।"

बस लोग पेड़ को काटने लगे।

"पिंग-पिंग ! पिंग-पिंग ! पिंग-पिंग !" उनकी कुल्हाड़ियाँ गाने लगी।

पेड जब गिरने ही वाला था, तो उन बच्चों मे से बड़े ने अपना सिर घोसले के बाहर निकाला और सीटी जैसी आवाज मे अपनी माँ को पुकारा—

"सैंन्गो, पक्षी, सुनो-सुनो !
सैंन्गो, पक्षी, चील का बच्चा,
सैंन्गो, पक्षी, सुनो-सुनो !
चारे की खोज करते पक्षी, वापस आओ, वापस आओ !
सैंन्गो, पक्षी, सुनो-सुनो !
सैंन्गो ओ.. ओ !"

मदद के लिए चीखते बच्चे की आवाज़ कान मे पड़ते ही माता चील तेजी से वापस उड चली। उसके फडफड़ाते पंखो मे "वा . वा वा " की आवाज़ हो रही थी।

चील पेड पर आ कर उतरी।

"सैन्ग्यूरी।" वह चीखी।

और यूकिलिप्टस का वह पेड, जो अब रेसे से टँगा था, पुन तन कर खडा हो गया। जमीन फट गयी और उसमे वे सभी लोग समा गये जो पेड को काटने मे व्यस्त थे।

माता चील अब अपने बच्चो को वह चारा खिलाने लगी, जो वह उनके लिए ले आई थी। फिर उसने उनकी चोचे और पर साफ किये।

"अब मै फिर जाती हूँ।" चील ने कहा।

बुढिया का पोता उसी तरह जिद पकडे रोता-मिनमिनाता जा रहा था, और अन्त मे बुढिया का धैर्य टूट गया।

'जा कर उस पेड को गिरा दो," उसने अपने नौकरो को पुन आदेश दिया—"मेरे पोते को चील का बच्चा खाने के लिए मिलना ही चाहिये।"

आदेश पा कर उसके नौकर यूकिलिप्टस के पेड की ओर बढे।

"पिग-पिग! पिग-पिग! पिग-पिग!" उनकी कुल्हाडियाँ फिर बजने लगी।

जब पेड की चोटी जमीन को लगभग छूने लगी, तब नन्हे चील ने अपना सिर घोसले के बाहर निकाल कर देखा और उसने फिर अपनी माँ को सीटी जैसी आवाज मे पुकार लगायी—

"सैन्गो, पक्षी, सुनो-सुनो!
सैन्गो, पक्षी, चील का बच्चा,
सैन्गो, पक्षी, सुनो-सुनो!
चारे की खोज करते पक्षी, वापस आओ, वापस आओ!
सैन्गो, पक्षी, सुनो-सुनो!
सैन्गो ओ . ओ!"

वह अपनी माँ के लिए चीखता रहा, चीखता रहा, चीखता रहा, लेकिन कोई उत्तर नही मिला। पेड धमाके के साथ जमीन पर गिर पडा।

धम ! धम !

अब चील के बच्चो को घोसले से निकालने मे इन आदमियो को कोई दिक्कत नही हुई। फिर भी किसी तरह उनमे से एक पर फडफडाता निकल भागा। वह उड कर एक बावा-बावा वृक्ष पर पहुँच गया।

वे दूसरे बच्चे को उस बुढिया के पास ले आये। उसने उसे अपने पोते के लिए भूना—बिल्कुल उसी तरह जिस तरह उसने इच्छा की थी—उबाले केले के साथ मिला कर।

थोडी देर बाद ही माता चील लौट कर आयी। जब उसने यूकिलिप्टस के वृक्ष को जमीन पर गिरा देखा तो वह आतकित हो उठी। फिर उसने अपने एक बच्चे को बावा-बावा वृक्ष पर छिपा पाया। उसने उससे पूछा कि क्या हुआ था और बच्चे ने उसे सब कुछ बता दिया।

इस तरह माता चील तेजी से अपने चौडे पखो के सहारे उडती हुई नगर मे बुढिया के घर की तरफ चल दी। जब वह वहाँ पहुँची, तो बुढिया का पोता भुने बच्चे को लगभग खा चुका था।

"मैं तुम्हे बधाई देती हूँ !" तीखे स्वर मे वह चील चीखी।

फिर वह पुन उड चली और जब वह नगर के किनारे पहुँची तो अपना जादू फेकने लगी।

"सैन्यूरी !" उसने कहा और सब लोग गायब हो गये।

"सैन्चूरी !" उसने पुन कहा और मकान ढह गये। एक भी मकान खड़ा नही रह गया।

"सैन्च्यूरी !" उसने एक बार फिर कहा और फोडा पुन बुढिया के पैर पर उग आया।

"ऐ बुढिया, इस सबके लिए तेरे सिवा और कोई दोषी नही है।" चील ने कहा।



शेयरहोल्डरों की बैठक

इस कहानी के लेखक

लुडविग रेन

सन् १८८६ ईसवी में ड्रेसडेन में जन्म हुआ। एक प्रशियाई जंकर परिवार के पुत्र थे। पहले विश्वयुद्ध में अगले मोरचे पर एक अफसर के रूप में लड़ते हुए जो अनुभव प्राप्त हुए, उन्हीं की वदौलत वे एक बुर्जुआ से कट्टर समाजवादी बन गये। सन् १९२८ ईसवी में कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित हुए और बर्लिन के एक वामपक्षी पत्र के सम्पादन का कार्यभार ग्रहण किया। सन् १९३३ ईसवी में नाजियों ने तुरन्त गिरफ़्तार कर लिया और तीन साल की सजा दे कर जेल में डाल दिया। भाग कर स्विटज़रलैंड चले गये और सन् १९३६ ईसवी में स्पेन गये, फिर स्पेनी प्रजातंत्र के लिए सहायता प्राप्त करने के निमित्त अमेरिका की यात्रा भी की। सन् १९३९ ईसवी में योरप लौटने पर फ्रांसीसियों ने नज़रबन्द कर दिया। दूसरी बार भाग निकलने पर मेक्सिको पहुँच गये, जहाँ सन् १९४७ ईसवी में जर्मनी वापस आने तक रहे। उनकी अनेक पुस्तकों में सम्मिलित है "वॉर ऐंड पोस्ट-वॉर (१९२८-३० ईसवी), "अरिस्टाक्रेसी इन डेकलाइन" (१९४४ ईसवी) तथा बच्चों की यथेष्ट विविध पुस्तकें। सन् १९५५ ईसवी में राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रदान किया गया...





क़ानून के अनुसार शेयरहोल्डरो की नियमित सभा करने का समय हो गया था। हर वॉन सेलो और फ्रॉवलीन वॉन बैलेंसटेड्ट ने ताले लगे दरवाजो के पीछे इसकी तैयारी की।

जब नियत दिन आया, तो वकील दफ्तर मे कुरसियाँ लग गयी और मेज के चारो ओर लगा दी गयी।

बर्ग पहले आया और फ्रावलीन वॉन वैलेसटेड्ट ने उसे दरवाजे पर रोका।

"यह है आपका—खैर, आप तो जानते ही है कि यह क्या है। शेयरहोल्डर के रूप मे आपका मुनाफे का औपचारिक प्रतिशत क्या होगा, यह आपको बाद मे मालूम होगा," उसे एक लिफाफा देते हुए, वह बोली।

बर्ग को यह जानने की उत्कठा थी, कि "आप जानते है कि क्या" कितना है, लेकिन वहाँ ऐसा कोई एकान्त कोना न था, जहाँ वह लिफाफे को छिपा कर खोल सकता। इसलिए वह पाखाने मे घुस गया, जहाँ उसने लिफाफा खोला और उसके अन्दर ढेर सारे बैंक-नोट देख कर वह आश्चर्य मे पड गया। बैंक-नोट उसने अपनी पाकेट-बुक मे रख लिये।

जब वह वापस आया, तो फ़ावलीन वॉन वैलैसटेड्ट उसी समय नि-
कलीं और निकलने के लिये भीतरी दफ्तर के दरवाजे पर जा रही थीं।

वह अन्दर चला गया, जहाँ उसने वकील को दफ्तर में इधर उत्तेजनापूर्वक टहलते और वॉन सेलो को कागजों के एक ढेर को उलटते-पलटते देखा।

घंटी बजी। लम्बा-तड़गा हमेशा से अधिक चाक-चौबन्द दिखाता फ्रेंज दरवाज़े की ओर लपका। सैनिक रोब-दाब के साथ तन कर चलते और पूर्णतया सचेत दिखते हुए, जनरल वान कोयनेविट्ज अन्दर आये।

"हमें कहाँ बैठना है?" शालीनतापूर्वक हरेक को सिर झुका कर नमस्कार करते हुए, उन्होंने पूछा।

"यहीं पर लोज," सेलो ने उत्तर दिया। उत्तेजना से उसका चेहरा तुड-मुड रहा था।

फ़ावलिन वैलैसटेड्ट ने जनरल की ओर और झुक कर उन्हें एक लिफाफा थमा दिया।

"इसे अभी न खोलिये लोज। यह बिलकुल ठीक है," वह गुन-गुनायी।

जनरल ने खुशमिजाजी से सर हिलाया और आगे की ओर वकील के दफ्तर के अन्दर चले गये।

उनके बाद एक बैंक का मालिक आया और फिर सेलो की नन्ही सीठी माता, "हर एक्सिलेंसी", जिन्होंने एक ठंडी भाँपती दृष्टि चारों ओर दौड़ायी। उनके चुने हुये शब्द और मिज़ाज लेने वाला बोलने का ढंग उनके सन्देही स्वभाव से मेल नहीं खाता था।

उनके वाद एक नोटरी-मेजर आये, जिन्हे अपने महत्व का वहुत अधिक ज्ञान था ।

और फ्रावलिन वॉन वेलेसटेड्ट ने हरेक को एक लिफाफा दिया उन्ही शब्दो के साथ

"इसे अभी न खोलिये प्लीज । यह विलकुल ठीक है ।"

वे सब वैठ गये । फ्रावलिन वॉन वेलेसटेड्ट ने सिग्रेट और सिगार पेश किये ।

वकील की भावनाहीन आवाज ने अपेक्षायुक्त मौन भग किया ।

"अत. मैं घोपित करता हूँ कि शेयरहोल्डरो की यह सभा आरम्भ हो रही है और हर वॉन सेलो से रिपोर्ट पेश करने का अनुरोध करता हूँ ।"

सेलो अपने कागजात पर झुका बैठा रहा । उसने कुल बिक्री और मुनाफे के आँकडे पेश किये । लेकिन उस समय के डालर विनिमय के हिसाव से बताई गयी रकमे बहुत कम थी । सम्भवत कोई भी उन्हे महत्व नही दे सकता था ।

"जैसा आप देख रहे है," आश्चर्यजनक आत्म-विश्वास के साथ सेलो ने कहा, जो खुराफात वह बक रहा था उसे देखते हुये, "कम्पनी ने अच्छा विकास किया है । हमारा व्यापार फैल रहा है । लम्बे-चौडे निवेश किये गये है । वस्तु-सूचियो और दफ्तर के फर्नीचर की कीमते सब अदा कर दी गई है ।"

इसके वाद सेलो ने कुल मुनाफे और प्रत्येक शेयरहोल्डर को प्राप्त होने वाली रकमो की घोपणा की । बर्ग ने अपने लिफाफे मे जो कुछ पाया था, वह कुल मुनाफे के उसके औपचारिक भाग का चौगुना था ।

"देवियो और सज्जनो," वकील ने पूछा—"इस रिपोर्ट पर किसी को कुछ कहना है ?"

वर्ग ने जनरल की ओर देखा, जो अपनी तीक्ष्ण मेधा के लिए प्रसिद्ध थे। अगर सेलो की रिपोर्ट ऊपरी तौर पर देखी जाती, तो इस कम्पनी का बहुत पहले ही दिवाला निकल जाना चाहिये था। लेकिन जनरल ने कुछ नही कहा। वर्ग को उनकी आँखो मे एक ऐसा भाव दिखा जो पहले कभी नही दिखा था। वह सोचने लगा, कि क्या उसने जनरल का अधिक मूल्य आँक लिया था।

उसने बैंक-मालिक को देखा, जो वित्तीय स्थिति की जाँच ज्यादा अच्छी तरह कर सकता था। लेकिन उसमे भी कोई दिलचस्पी नही दिखी। नोटरी महाशय स्पष्टत मजा ले-ले कर अपने काले सिगार का कश ले रहे थे।

यहाँ किसी को यह मालूम न था, कि अन्यो के लिफाफो मे क्या था। वर्ग सोचने लगा, कि क्या सेलो ने प्रत्येक शेयरहोल्डर को उसके महत्व के अनुसार मुनाफे का हिस्सा दिया है, उसके शेयरो की सख्या के अनुसार नही। जो हो, उसे विश्वास था कि वह सब रकमे रिश्वत के रूप मे दी गई थी, ताकि ये उच्च सुसम्मानित नागरिक अपनी ज़बाने बन्द रखे।

"क्या मै जान लूँ, कि आप लोगो ने प्रबधक की रिपोर्ट की पुष्टि कर दी ?" वकील ने प्रश्न किया।

अनुमोदन की भुनभुनाहट हुई और वे उसी तरह शालीनतापूर्वक चले गये, जैसे आये थे।



१९४५ के बाद

तुम ऐसा नही कर सकते
हेल्मट सैकोवस्की

यातना शिविर का कमान्डर
स्टीफेन हर्मलिन

माँ और वेटा
एलफ्रीड व्रुयनिग

वह सुबह भी आ ही गयी
मैक्सिमिलियन शीर

सुन्दरी लियाने
लुडविग ट्यूरेक

तुम ऐसा नहीं कर सकते

इस कहानी के लेखक

हेल्मट सैकोवस्की

उन जर्मन लेखकों की अगली पंक्ति में गिने जाते हैं जिन्हें दूसरे महायुद्ध के बाद देश के पूर्वी क्षेत्र में विकसित नये जर्मनी ने अपनी लेखन-कला को प्रकाश में लाने का मौका दिया। पहले जंगलों में काम करते थे और वन-विज्ञान के विशेषज्ञ हैं। अब उपन्यास और कहानियाँ ही नहीं, टेलीविजन और थियेटर के लिए भी लिखते हैं और पूर्वी जर्मनी के जाने-माने लेखकों में गिने जाते हैं।



शोलज़ेनब्रुएक निचली पहाडियो पर बसा है। केवल सौ व्यक्तियो का एक नन्हा-सा गाँव। उलझी झाडियो और छोटे-छोटे वृक्षो के बीच लाल छतो वाली कृषिशालाओ का एक समूह।

उस गाँव मे कोई गिरजा नही है। इसलिये धार्मिक लोगो को अपनी स्तोत्र पुस्तके ले कर पहाडियो के उस पार पडोस के गाँव को जाना पडता है। इस गाँव मे कोई दूकान भी नही है। लेकिन वहाँ एक कब्रिस्तान जरूर है—बदरग होती लकडी के बाड से घिरी भूमि का एक खुला टुकडा। यहाँ झुके सबीलो के अगल-बगल वे मौसम के अनुसार आलू, जई या तिनपतिया बो देते है। उनका विश्वास था कि कोई भी किसान मरने के बाद वहाँ आराम महसूस करेगा, क्योकि इस भूमि का सदुपयोग हो रहा है।

मिट्टी के गिरते-पडते उस भद्दे दमकल गृह के ऊपर एक सालो पहले निर्मित एक मीनार भी है—एक मामूली-सी मीनार लेकिन उससे काम चल जाता है। जरूरत के वक्त के लिए गाँव वालो का अपना अन्त्येष्टि घन्टा है, जिसके हल्के टनटनाहट से उन्हे कोई परेशानी नही होती।

ऐसे है शोलजेनबुएक के लोग, शान्त और समझदार।

इसलिये सहकारी कृषिशाला आरम्भ करने का निर्णय अत्यधिक उत्साह का नही बल्कि सभवत. शान्तिपूर्ण विचार-विमर्श का फल था।

यहाँ की जमीन भारी है और ग्रीष्म काल देर से आता है—नीचे की घाटियो से हफ्ते बाद। लोग अलग-अलग इस अचल की ओर ऐसे ही रुख करते हैं। इसलिये उन लोगो ने सोचा कि उन्हे एक साथ मिल कर प्रयत्न और कार्य करना चाहिये। कुछ लोगो ने शुरुआत की, और अब उन सभी ने अनेक बडे-बडे गाँवो की तरह सहकारिता स्थापित कर ली है।

कुछ हफ्ते पहले सहकारिता का नया अध्यक्ष आया था—एक युवक, जिसके बारे मे कहा जाता है कि उसने डिप्लोमा प्राप्त किया है। उससे वे लोग सतुष्ट थे।

फिर वहाँ ग्वाला था। लेकिन वे उससे सतुष्ट नही थे।

नमी और कुहरे से भरे मौसम के बाद ग्रीष्म काल वापस आ गया था। मेरी हेसेनपुट के बाग मे सूर्यमुखी एक साथ अपने भारी-भरकम सिर इस तरह झुकाये हुये थे, जैसे गाँव के गप्पे लडाती बूढी औरतें, और बाड के किनारे-किनारे यहाँ-वहाँ शोख डेल्या की क्यारियाँ थी। सहकारिता वाले फसल के कारण काम में बुरी तरह व्यस्त थे। खेतो मे अन्न की बालियाँ लम्बी कतारो मे अभी भी दिखाई पड़ती थी। ऐसे दिनो मे गाँव सुनसान हो जाता था और कृपिशालाएँ धूप मे ऊँघती-सी लगती थी। कभी-कभी कोई मुर्गी चहक उठती थी, लेकिन कुत्ते भी खेतो में चूहो का पीछा कर रहे थे।

लटकती आलमारियो के निकट गोल-मटोल मेरी हेसेनपुट अपने छोटे-छोटे पैरो पर उनकी धब्बेदार शीशे मे अपने आप को देखने के लिए। आज वह खेतो से जल्दी ही घर आ गई थी, क्योकि वह पडोस के गाँव से रोटी ले आना चाहती थी।

मेरी ने जब अपनी मोटी-सी चोटी को एक बहुत बडे से बन के रूप मे ऊपर की ओर उछाला, तो वह उसकी उँगलियो मे से सर्प की तरह सरक गयी। वह शीशे के सामने से हट आयी और उसने अपनी कुहनी से रसोई की निचली खिडकी को ठेल कर खोल दिया।

"समझ मे नही आता कि आज गायो को क्या हो गया है," उसने अपने आप से ही कहा— "वे पागलो की तरह रम्भा रही है।"

मेरी का अस्सी वर्षीय बूढा ससुर हेसेनपुट स्टोव के निकट लकडी की सन्दूक पर झुका बैठा था। अपने विकृत, बूढे मुँह से पाइप निकाल कर वह भुनभुनाया—"सारा दिन बीत गया। कुछ खाने को नही मिला। सारा दिन बीत गया। तुम्हारी सहकारिता भी एक बला ही है। कोई काम नही बनता। कुछ भी ठीक नही उतरता। मैं लॉनी को रम्भाते सुन रहा हूँ।"

मेरी ने भड से खिडकी बन्द कर दी। "सुनते होगे," उसने झिडका, "ठीक है, ठीक है, तुम उसका रम्भाना सुनते होगे। लेकिन उसके बारे मे बडबडाओ नही। सब-कुछ आखीर मे ठीक हो जायगा। गडबडी बस ग्वाला के कारण हो रही है। मैं तो कहती हूँ यह शर्म और बेइज्जती की बात है।"

उसने अपनी मोटी कमर के गिर्द एक ताज़ा कलफ किया हुआ ऐप्रन बाँधा, कील से कधे वाला झोला उतारा और वह सँकरे दरवाजे मे से बाहर निकल गयी, बूढे से झिडक कर यह कहते हुये कि वह सुअर का चारा तैयार रखे और इस बात का ख्याल रखे कि कुत्ते रसोई मे घुस कर सब-कुछ गडबड न कर दे। अलटेनरोड के लिए रवाना होने के पहले उसने गो-कक्ष मे नज़र डालने का निश्चय किया।

जैसे ही उसने गो-कक्ष का दरवाजा खोला, उष्ण गध की एक लहर

उसकी ओर आयी। गाएँ दो लम्बी, लाल भूरी कतारो मे नाँदो की ओर मुँह किये खडी थी। लेकिन उसने तत्काल ही देख लिया कि नाँदे बिल्कुल खाली थी—तिनपतिया की एक पत्ती भी नही थी उनमे। अपने सिरो को बेचैनी से झौकारते हुये गायो ने उसे घूरा। उनके पैरो से बंधी जजीरे खडखडा उठी। ग्वाला मटके कहाँ था? चारा देने का समय कब का बीत चुका था।

सूखी घास के मचान पर एक छोटी-सी आकृति हिल कर बाहर निकली, जो घास से भरे फार्क के नीचे लगभग छिपी हुई थी। वह ग्वाला की लडकी लॉटी थी—दुबली-पतली, नन्ही लॉटी, जो निश्चय ही पन्द्रह वर्ष से अधिक की नही थी।

मेरी गो-कक्ष के बीच मे अनाज से भरे एक बोरे की तरह खडी थी भारी और आदेशात्मक अन्दाज मे। जब उसने देखा कि वह कार्य उस बच्ची की सामर्थ्य से परे था, तो उसका क्रोध भडक उठा। वह आगे बढ़ी अपने हाथ से ऐप्रन की जेब मे सिक्को को खनखनाती हुई।

"तेरा बाप कहाँ है?" उसने गुर्रा कर प्रश्न किया।

लॉटी ने चारे को पटक दिया और अपनी गर्दन मे लिपटे घास के कुछ तिनको को झाडा।

"हौली मे," उसने इस तरह कहा कि जैसे वह रो पडेगी।" आज उसे किसी चीज की चिन्ता नही है। माँ उसे लिवाने गई है। हम नही चाहते कि वह काम छोडे। क्योकि बच्चे के दूध का सवाल भी है।"—उसने कहा।

जो कुछ हुआ था, वह सब मेरी ने सुना।

मटके का सहकारिता के अध्यक्ष से झगडा हो गया था, जैसा कि इन

दिनों अक्सर हो जाता था। लॉटी ठीक-ठीक नही जानती थी कि झगडा क्यो हुआ था। शायद उसके बाप ने गोशाला के किसी आदमी के साथ शराब पी थी। जेगोग को यह अच्छा नही लगा था, और तब उसने कहा था कि मटके को अकेले ही सूखी घास गाडियो से उतारनी पडेगी, क्योंकि बाकी तमाम लोगो की खेतो मे जरूरत थी। इस पर उसके बाप ने कहा था कि यह उसका काम नही था और उसने अपना फार्क फेंक दिया था और जब दूसरी गाडी आयी, तो अब वह धमकी दे रहा था कि वह अपना काम बिल्कुल ही छोड देगा। लेकिन बच्चों के कारण वे नही चाहते थे, कि वह काम छोडे और इसलिये भी कि घर मे बहुत धूप आती थी। लॉटी ने अपनी बाँह मे नाक पोछ ली।

मेरी ने सिर हिलाया। यह शर्म और बेइज्जती की बात है, उसने सोचा और उसे इस विचार से एक प्रकार का सतोष मिला कि मटके वास्तव मे उनमे से एक नही था। शोल्जेनब्रुएक मे किसी ने भी इस बुरी तरह व्यवहार न किया होता। लेकिन मुश्किल तो यह थी कि कोई और गउओ की देख-भाल करने वाला भी, तो न था।

उसे यह दिखाना अच्छा नही लगा, लेकिन मेरी को उस बच्ची के लिए अफसोस था। उसने लॉटी के हाथ से फार्क छीन लिया।" ये मुझे दे दे," वह शिकायत के स्वर मे बोली—"तू दुहना शुरू कर दे। मै कुछ चारा डाले देती हूँ। तेरे लिये यह बहुत भारी है।" फिर उसने उसको सान्त्वना दी—"चुप रहो, चुप रहो! रोओ नही!"

वह खटर-पटर करती हुई सूखी घास के मचान पर चढ गयी। यह सोचती हुई, कि अब अल्टेनरोड जा कर रोटी लाने का समय न मिलेगा और उसे फ्राव शुल्ज से उधार ले कर काम चलाना पडेगा। मेरी गायो के बीच घुस गयी अपने साफ-सुथरे ऐप्रन की जरा भी परवाह किये बिना।

लॉनी की हालत अब भी वैसी ही थी। दुबलाई हुई। उसने मेरी के चेहरे पर अपनी थक्केदार पूँछ उछाली। "मुड़ जा, कम्बख्त !"

उसने अपना गुस्सा गायो पर उतारा और कोसती, गाली बकती अपने बढिया जूतो से कूडे को कचरती फिरी। उस कमबख्त ने आखिरी बार इस शेड को कब साफ किया था, उसने सोचा और वह बराबर फार्क से सूखी घास उठा-उठा कर नाँदो मे डालती रही, यहाँ तक कि सभी गाये सतुष्ट हो कर चारा खाने लगी।

अब उसे जा कर जेगोग से मिलना चाहिये, उसने सोचा। कुछ तो करना ही होगा।

गाँव की हौली का बैठक कमरा अन्य ग्रामीण हौली के बैठक कमरो जैसा था—मामूली खुरदुरी मेजें और बेन्चे, दीमक लगे नक्कासीदार पायो का फटी गद्दी वाला सोफा, दीवार पर पेन्डुलम वाली एक पुरानी घड़ी और धुएँ के धब्बो से भरी दीवारो पर आबकारियो के विज्ञापन। उसमे बाकी छोड़ी हुई बियर की सडान्ध भरी दुर्गन्धि फैली थी।

मटके, अपने सिर को हाथो पर टिकाये सिगार चबाता हुआ सुस्ती से मेज पर अधलेटा सा बैठा था।

जब से नया अध्यक्ष आया था, तभी से हेनरिच मटके का मिजाज बिगडा रहता था। यह नया आदमी एक धृष्ट व्यक्ति था। वह समझता था कि वह सब-कुछ उनसे भिन्न और बेहतर तरीकों से कर सकता था जिनके वे आदी थे। विशेपकर मटके गोकक्ष मे जो कुछ करता था, वह सब उसे पसन्द नही था। उन लोगो को तो आभारी होना चाहिये था, कि उनके पास मटके जैसा आदमी था। क्या वह जानता नही था कि गउओ के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये ? एक बहुत बडे ताल्लुकदार

और वाद में अन्य कई वडे किसानो के यहाँ वह ग्वाले का काम सालो कर चुका था, और उस सवका आखिर कुछ तो महत्व था यह ही। शख्स हमेशा गडवडी की शिकायत करता रहता था। उन लोगो को तो खुश होना चाहिये था कि वह उनके लिए काम कर रहा था, खास कर ऐसी हालत मे जव कि आदमियो की इतनी कमी थी।

उसने काम अव छोड ही दिया है। अव तो जेगोश जव आ कर उससे हाथ जोड़ कर और घुटने टेक कर चिरौरी-विनती करेगा, तभी वह फिर दूध की वाल्टी को हाथ लगायेगा।

'एक पेग और बियर दो, अन्ना, और श्नैप्स," मटके गुर्राया और उसने सिगार के टुकडे को थूक दिया। उसने अपनी पुतलियाँ कठिनाई से उठाईं और वार के पीछे खडी स्त्री को पथराई आँखो से घूरा। हेन-रिच मटके वदमस्त हो चुका था।

"तुम वहुत काफी पी चुके हो," अपने हाथो को वार पर टिकाये हुये उसने उत्तर दिया—"वेहतर होगा कि अव तुम घर जाओ।" वह क्रोधित थी। वह अव सुअर के वाडे और वाग मे काम करना चाहती थी। इस वक्त यहाँ शराव वेचते खडे रहने का समय नही था।

"मैंने कहा, एक और बियर दो," मटके गुर्राया।

"अव चलो, वावा," श्रीमती मटके ने कहा, जो उसकी वगल मे वैठी थी। एक नाटी, सकोची स्त्री, जो इस आदमी के साथ रहते-रहते शुष्क और अस्पष्ट सी हो गई थी। मटके जो कुछ कमाता था, सव पी डालता था, और घर के लिए या उसके और वच्चो के लिए कुछ भी नही छोडता था।

"घर चलो," उसने अनुनय किया। वह जानती थी कि यदि वह वहाँ और रुका रहा तो वह काम से लौटने वाले लोगो को पिलाने मे पैसा

बरबाद करेगा, क्योकि वे उससे बेजा फायदा उठाते थे और उसकी हाँकने की आदत को बढावा देते थे। क्या ? हेनरिच मटके की तरह यहाँ पाँच सौ मार्क और कौन कमाता था ? इसी तरह की बाते—वह सब जानती थी और परिणाम यह था कि कपडे-लत्तो के लिए, बच्चो के लिए या एक साइडबोर्ड खरीदने के लिए कभी कुछ भी नही बचता था। वृद्धा श्रीमती सेमलर के पास भी शीशे वाला साइडबोर्ड था, और वह क्या थी—एक दिन मे काम करने वाली मजदूरिनी ही तो।

"अब चलो, बाबा," उसने कहा—"जेगोश क्या कहेंगे ?"

मटके ने अपने कधे से उसका हाथ झटक दिया।

"जबान बन्द कर और यहाँ से चली जा," उसने कहा। उसने एक सिगरेट जलाने की कोशिश की। दियासलाई की लौ उसके अस्थिर हाथ मे थरथराई।

उस स्त्री की आँखे एकाएक फैल गयी और उसने हाथ अपने मुँह पर रख लिया। जेगोश उसी समय कमरे मे दाखिल हुआ था। उसके पीछे हाथो को ऐप्रन की जेब मे डाले और हाँफती हुई गोल-मटोल मेरी हेसेन-पुट थी।

जेगोश ने धीरे-धीरे कमरे को पार किया। कोई बोला नही। फर्श के तख्ते चरमराये और कबर्ड पर रखे हुये गिलास खनखना उठे। वह मटके और उसकी पत्नी के सामने रुक गया, जो बेचैनी से अपने शाल को नोच रही थी।

फिर यह पी रहा है, जेगोश ने सोचा। यह हमारी सहकारिता के लिए बेकार है। यह सुअर है। इस पर कभी भरोसा नही किया जा सकता। यह पूरा पियक्कड है।

उसने महिला के चेहरे की ओर देखा, जिस पर थकान के चिह्न थे

और जिस पर समय से पहले झुर्रियाँ पड गई थी और उसे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे वह उसकी आँखो को पहली बार देख रहा हो। वे बडी, काली और कान्तिहीन थी, बीमार गाय की आँखो जैसी।

कोई बोला नही। घडी टिकटिकाती रही। बार पर झुक कर मेरी ने उसके पीछे खडी महिला से अर्थपूर्ण दृष्टि-विनिमय किया। झटके अपने गिलास मे घूर रहा था।

ग्वाला नये अध्यक्ष से घृणा करता था, जो बराबर उसके काम करने के तरीको पर भुनभुनाता रहता था। जब झटके साफ-साफ सोचने की स्थिति मे हुआ, तो योजना बनाने लगा कि वह क्या करेगा, किस तरह चीखे-चिल्लायेगा, और उसका क्या करने का इरादा था—कि वह उसकी तोद मे कूडे-करकट वाले फार्क को घुसेड देगा।

लेकिन जब जेगोश उसके सामने होता और वह अपनी उधडी विन्ड जैकेट की जेबो मे गहराई तक हाथो को डाले हुये खडा होता और अपनी शान्त, चालाकी-भरी आँखो से उसे घूरता, तो झटके की बोलती बन्द हो जाती और वह न कुछ कर ही पाता और न कुछ कह ही पाता। वह जेगोश की उच्चता के सामने चापलूसी के भाव से दब कर रह जाता।

और इस समय भी उसे दबना ही पडा। जब जेगोश ने कहा—"अब तुम्हारे लिये अच्छा यही होगा कि यहाँ से बाहर चलते बनो!" तो वह बिना कुछ बोले झूमता हुआ उठा, और मेज पर कुछ सिक्के फेंक कर झटके के साथ हुक से अपनी टोपी उठा कर बाहर निकल गया।

वह दरवाजे की चौखट से धक्का खा कर लडखडा गया, झुकी सीढियो पर फिसल कर सिर के बल गिरा, और गाली बकता हुआ धूल भरी सडक पर घुमडी खाने लगा। अब वह अपने आप उठ नही सकता था।

'उसका हाजमा ठीक नही है," उसकी पत्नी ने कँपकँपाते होठो से

कहा—"उसमे हजम करने की ताकत नही है। वह बस जरा मी ही पी सकता है।"

मेरी, जेगोश और उसने मिल कर उसे उठाया। जेगोश जानता था कि अब वह उस दिन काम करने के योग्य नही रह गया था।

खेतिहर मजदूरो का फोरमैन स्कल्ज अपनी साइकिल पर उधर आ निकला और जब उस छोटे-से जुलूस को देखने के लिए उसने अपनी साइकिल मोडी, तो जेगोश ने हाथ हिला कर उसे इशारा किया कि वह भी आ कर उन लोगो मे शामिल हो जाय। जेगोश उससे पूछना चाहता था कि खेतो का काम कैसा चल रहा था।

स्कल्ज मटके के घर तक उनके साथ गया। मटके को सडक से अन्दर पहुँचा कर वे बाते कर लेगे। गॉव के दो बच्चे दौड कर आ पहुँचे थे उस तमाशे को देखने के लिए।

लोग अपने बीच मटके का सहारा दिये हुये थे। वह उन्हे ढकेल देने का प्रयत्न कर रहा था और उन्हे भद्दी बाते कह रहा था।

श्रीमती मटके शर्म से गडी जा रही थी और वह मेरी की बगल मे एक पीटे गये कुत्ते की तरह शाल के अन्दर रेगती सी प्रतीत हो रही थी। कैसा था उसका जीवन उस व्यक्ति के साथ! अब तो यह जिन्दगी जिन्दगी ही नही थी। अब वे यहाँ से भी निकाल दिये जायेगे, उसने सोचा। और तब उनका क्या होगा? वे कहाँ जायेगे? वह कुछ भी नही समझ पा रही थी।

मेरी अपने होठ भीचे हुये थी। ऐसे लोगो के लिए उसके मन मे घृणा के सिवाय और कुछ नही था। उसने उस स्त्री से एक शब्द भी नही कहा।

उन लोगो ने उसे एक कुर्सी पर बैठा दिया। दरवाजे पर जमा हो गये बच्चो को उसकी पत्नी ने भगा दिया।

"बाबा ने आज फिर ज्यादा पी ली," एक पॉचवर्षीय बच्चे ने कहा, जिसके बिखरे बाल उसकी धृष्ट आँखो पर चूहो पूँछो की तरह लटके हुये थे। वह मुस्करा पडा। वह जानता था कि इस मामले मे दखल न देना ही उसके लिए बेहतर होगा।

जेगोश ने चारो ओर नजर दौडाई। वह मटके के घर मे आज पहली बार आया था। हर तरफ लापरवाही नज़र आ रही थी। भद्दे पायो वाली मेज़-कुर्सियाँ, खिडकी पर फटे परदे, और हर तरफ धूल-गर्द। श्रीमती मटके ने कुर्सियो और मेज पर पडी कुछ चीजो को झपट कर हटा लिया। लेकिन इससे भी वहाँ की सामान्य गन्दगी मे कोई फर्क नही पडा। उसने एक गद्दी पलट दी और जेगोश से उस पर बैठने का आग्रह किया।

लेकिन वह खडा ही रहा। उसका चेहरा कठोर और अन्यमनस्क था।

"कल जब तुम होश मे रहोगे, तो मै तुमसे बात करूँगा," उसने मटके की ओर देखते हुये कहा। लेकिन वह अगले दिन तक प्रतीक्षा न कर सका। उसे उसी समय कुछ कहना था। वह क्रोध से घुटा जा रहा था।

"कैसे ढग है तुम्हारे!" उसने अपनी ओर लाल किनारो वाली नेत्रो से देखते व्यक्ति को घूरते हुये कहा।" सोचो, तुम कितना कमाते हो। लेकिन पीने के सिवाय तुम्हे और कुछ भी सूझता ही नही—काम के समय भी पीना, काम के बाद भी पीना। और देखो तो इस सुअर बाड़े मे अपने बाल-बच्चो के साथ तुम किस तरह रहते हो।" उसने जैसे शब्दो को थूकते हुये कहा। इस पर मटके उठ कर खडा हो गया। कुर्सी खटाक से गिर पडी। मटके के अन्दर विस्मृत आत्मसम्मान की टिम-

टिमाहट लपक पड़ी। उसने क्या कहा था ? उसने अपना सिर बहरे व्यक्ति की तरह एक ओर झुका दिया। उसने क्या कहा था ? वह किस तरह रहता है, इससे किसी को क्या मतलब ? वह सदैव इसी तरह रहता है, सदैव इससे बेहतर कोई चीज़ पाने के लिए किसी ने उसे कभी मौका ही कहाँ दिया ?

वह अपना सिर एक ओर झुकाये रोष से उबलता हुआ खडा था। वह सोच नही पा रहा था। वह बस इतना ही जानता था कि उस सुअर ने, जो उसके सामने खडा था, उसकी ज़िन्दगी नरक बना दी थी, उसे उसका कभी-कभी पी लेना भी बुरा लगता था, वह उसे बरबाद कर देना चाहता था और उस पर कुदृष्टि रखता था।

लौ की एक चादर-सी फैल गयी उसके मस्तिष्क के आर-पार, और वह चादर तब तक गायब नही हो सकती थी जब तक वह उसके कुटिल चेहरे पर घूँसा न जमा दे और उन कुटिल आँखो पर लगे चश्मे को तोड न दे।

"सुअर का बाडा—यही मैंने कहा था," जेगोग ने दुहराया।

मटके इस तरह तन गया जैसे उसे मार पड गई हो, फिर उसने लकडी के बक्स के ऊपर पडे आग कुरेदने वाले छड को झटके के साथ उठा लिया और उसे हवा मे घुमाया।

भय से काँपती और अपने हाथो को ठुड्डी पर कसे उसकी पत्नी जानवर की तरह चीख पडी।

लेकिन इसके पहले कि ग्वाला उसके ऊपर वार कर पाता, जेगोग ने मटके पर वार कर दिया—उसके सीने पर इतने जोर से घूँसा जमा दिया उसने कि वह फर्श पर ढेर हो गया। छड उसके हाथ से गिर कर फ़र्श पर सरक गया।

उसकी पत्नी सिसकती हुई उसकी बगल मे भय से दुबक कर बैठ गयी, जो वदरग काठ के फर्श पर मृत सा पडा था।

जेगोश ने अपनी आँखो पर आ गये वालो को पीछे हटाये बिना यह जाने कि वह क्या कर रहा था। उसके गाल की एक शिरा ऐंठ गयी। "इसे बिस्तरे पर लिटा दो," उसने बैठे गले से कहा—"इसकी सहायता करो, मेरी।"

जेगोश गाँव की सडक पर तेजी से चल पडा। उसके माथे पर विचारमग्नता के कारण शिकने पडी थी। रीछ जैसे लम्बे-चौडे वाल्टर स्कल्ज को उसके साथ चलने मे दिक्कत हो रही थी।

स्कल्ज ने ही मौन भग किया। "मटके को यहाँ से निकाल देने के लिए इतना ही काफी है," जेगोश की ओर मुड कर तीव्र दृष्टि से देखते हुये उसने प्रत्येक वाक्य पर जोर देते हुये कहा—"वहुत हो चुका। वह छड ले कर आपकी ओर लपका था। मै इस वात का गवाह हूँ। हमे अव उसे निकाल ही देना चाहिये। वह हमारी सहकारिता के लिए काफी अरसे से कलक हो गया है। वह पीता है। वह गउओ को बरबाद कर रहा है। जव मै अपनी गाय के बारे मे सोचता हूँ।.. वह आप पर वार करने जा रहा था। वह आपको मार डालता। हमे पुलिस को बुलाना चाहिये। हमे यही करना है।"

जेगोश एक शब्द भी नही बोल सका। जो कुछ हुआ था, उससे वह बहुत अधिक परेशान हो उठा था।

उसे अपनी रक्षा करनी ही पडी थी, नही तो मटके उस छड से उस पर वार कर बैठता। वह अभी भी इस विचार से परेशान था कि उसने एक व्यक्ति को पीटा था—सहकारिता के एक कर्मचारी को, सभवत

एक रोगी को। और अगर वह वास्तव मे घायल हो गया होता तो ? उसे हिंसा से नफरत थी उसका संपूर्ण स्वभाव ही इसके विरुद्ध था। लेकिन उस व्यक्ति ने उसे इसके लिए विवश कर दिया था।

जो कुछ हुआ था, उसके संबध मे सोचते-सोचते क्रोध फिर उसके अन्दर भढक उठा।

"उसे अलग करना ही पडेगा। कोई इस बात का विरोध न करेगा।"

औचित्य उसके पक्ष मे था। अगर कार्यकर्ता इसी तरह उस पर हाथ उठाना शुरू कर देगे, तो क्या होगा ? यही तो हुआ था आज। मामला इस हद तक पहुँच गया है। उसे भटके से निपटना ही पडेगा, उसने सोचा। लेकिन उसकी पत्नी भी तो है।

क्षण भर के लिए रुक कर उसने गहरी साँस खीची। अपनी अपर्याप्तता के विचार ने उसे चिन्तित कर दिया। इतने वर्षों के पठन-अध्ययन से क्या लाभ हुआ, यदि वह ऐसी स्थिति से निपटने के लिए अपने घूँसे के सिवाय और कोई उपाय न सोच सका ? एकाएक उसे ध्यान आया कि इस कार्य मे अपनी अभिरुचि के कारण वह इस प्रदेश मे नही आया था। उसे उससे कही बडा और कही जटिल कार्य करना था। लेकिन तभी उसने अपनी बगल मे चलते व्यक्ति को देखा, जो आश्चर्य से उसकी ओर घूर रहा था, और वह यह भी जानता था कि वह अकेला ही नही था।

"आओ," उसने स्कल्ज के कधे को पकड कर कहा—"चलो चले।" वह अभी भी शान्त नही हो पाया था। ग्वाले को अलग कर देना उचित नही था, क्योकि यदि वह भटके से इस तरह निपटेगा, तो उसके साथ उसकी पत्नी और बच्चो को भी भोगना पडेगा और वह अपने मन से

अपराध की भावना को हटा नही सका। उसे कोई और उपाय आज-माना चाहिये।

"हमे डाक्टर को बुलाना चाहिये। यह ज्यादा जरूरी है।" उसने कहा और स्कल्ज की बाँह पकड़ ली।

उस शाम को सहकारिता के अन्य सदस्य कार्यालय मे आये। दो चिन्तित तथा कौतूहल युक्त महिलाएँ भी आयी। उन्हे जहाँ भी जगह मिली बैठ गयी—कुर्सियो पर और दो मेज पर भी। तम्बाकू के नीले धुएँ के बादलो के बीच वह अनावृत्त बल्ब चाँद की तरह चमक रहा था।

मोटी मेरी हेसेनपुट आराम कुर्सी पर जमक कर बैठी हुई थी और उसने अपनी बाहे सीने पर बांध रखी थी। उसकी नन्ही-नन्ही आँखे रोप से चमक रही थी। वह अपनी बात पहले ही कह चुकी थी—कभी-कभी तो इतनी हाँफी के साथ कि साँस की कमी के कारण वह अपने वाक्यो को ठीक-ठीक पूरा भी नही कर पाती थी। मामला इस प्रकार था। उसके पास सफर के लिए एक भी पावरोटी नही थी और हर हालत मे यह बात शर्म और कलक की है कि गाँव मे कोई सहकारिता स्टोर नही था और यह जेगोश की एक सनक ही थी कि उससे नर्स का काम कराया गया और एक ऐसे घर मे जहाँ कूडे-करकट और गन्दगी के कारण आसानी से घूमा भी नही जा सकता था। डाक्टर वहाँ पहुँच गया था, उसने क्रोधपूर्वक अपनी बात समाप्त की। उसने मटके को शान्त करने के लिए उसे स्नायुओ का एक इन्जेक्शन दिया था। मटके अब सो गया था। लेकिन लेने मेज़ पर बैठी रो रही थी और उसकी आँखो व नाक से पानी इस तरह टपक रहा था कि उसे देख कर मुँह से चीख निकल जाय। कुछ-न-कुछ तो करना ही होगा, मेरी ने आग्रह किया। अपने वृद्ध श्वसुर का सामना करने मे उसे शर्म लग रही थी।

डेस्क के पीछे बैठा जेगोश अपनी उँगलियो मे घूमती पेन्सिल को घूरता हुआ सब-कुछ सतर्कतापूर्वक सुन रहा था।

हाँ, इसकी तो जरूरत ही है, अन्यो ने कहा। उसे बहुत आगे बढ जाने दिया गया। मटके के संबध मे कुछ-न-कुछ करना ही होगा। वह सहकारिता के लिए वास्तविक खतरा था। उन्हे उससे अवश्य छुटकारा पा लेना होगा, और तुरन्त ही।

जेगोश को मटके की पत्नी का ख्याल आया। उसकी आँखे बीमार जानवर जैसी थी, और उसके कई बच्चे भी थे। वह जानता था कि दूसरो के मुकाबिले मे टिक पाना कठिना होगा।

"हम इस मामले को इस तरह नही निपटा सकते," उसने धीरे-धीरे कहा और अपनी आँखे ऊपर उठाई। "हम इस सारे समय मे चुप-चाप देखते रहे है और हमे उसके विस्फोटो से डर लगता रहा है। लेकिन दरअसल कभी किसी ने क्या उसकी मदद करने की कोशिश की है ? स्थिति को बदलना ही होगा, आप लोगो की यह बात ठीक ही है। लेकिन हम उसे एक पुराने फार्क की तरह कूडे के ढेर मे तो नही फेक सकते। हम ऐसा नही कर सकते।"

वे सिर हिलाते हुये मुस्कराते रहे। विचारमग्नता से स्कल्ज के चेहरे पर शिकने पड गई थी। उसने इस तरह गहरी साँस खीची, जैसे वह कुछ कहना चाह रहा हो, जिसे अपने अन्दर रोक पाना असभव हो।

लेकिन जेगोश ने उसे बोलने नही दिया। उसे और भी कहना था। "जिस स्थिति मे वह है, उसके लिए केवल उसी को दोषी नही ठहराया जा सकता। इन सारे वर्षो मे वह कृषिशाला का एक सेवक रहा है। स्थिति यह है, और अभी भी वह कृपिशाला का एक सेवक ही है।"

"आप ठीक कह रहे है," स्कल्ज ने कहा और अपने चेहरे को व्यग्य भाव से मोडा-तोडा। "वह कृपिशाला के एक सेवक की तरह रहता है, व्यवहार करता है, लेकिन एक किसान की तरह नही।" अन्यो ने हँस कर सहमति प्रगट की।

"इसमे हँसने की क्या वात है ?" जेगोश ने कहा। और वह इस वात से उदास हो गया, कि वे सब उसका मतलब समझ नही रहे थे।" जो कोई भी इतने दिनो तक सेवक ग्वाला रहा है, वह अपने भूतकाल को पुरानी रद्दी कमीज की तरह उतार कर फेक नही सकता। क्या आप लोग समझते है कि आप योग्य सहकारिता कृषक वन गये है ?"

उन्हे यह वात अच्छी नही लगी।

कभी-कभी वे उसकी वात विल्कुल ही नही समझ पाते थे। अकसर उसके विचार वास्तव मे विचित्र होते है। जो हो, वह एक सच्चा किसान नही है, उसने पाठशाला मे शिक्षा पाई है।

लेकिन जेगोश अब अपने मटके के लिए सघर्ष कर रहा था—वह मटके, जो अभी कुछ घटे पहले ही उसे घूँसे मार कर गिरा देना चाहता था। सब से पहले तो उन्हे पता लगाना होगा कि उस आदमी का स्वास्थ्य ठीक है या नही, उसके पेट मे क्या गडवडी है, और तव उन्हे यह निर्णय लेना पडेगा कि उसकी पत्नी और वच्चो का क्या होना चाहिए, जेगोश ने आग्रहपूर्वक कहा। इसलिये अत मे उन लोगो ने मामले को यही पर छोड दिया।

हेनरिच मटके वीमार वना रहा। वह विस्तरे पर लेटा था। लाल रग की चारखानेदार रजाई वह नीचे से ठुड्डी तक ओढे हुये था। उसके हाथ सिर के पीछे थे और वह छत की ओर घूर रहा था। छत की सफेदी की हुई धन्नियो पर दो मक्खियाँ रेग रही थी। वगल के कमरे यानी रसोई मे वच्चे चुपचाप खेल रहे थे। छोटा वच्चा भी नही रो रहा था। उसे रोने ही नही दिया जा रहा था वाप वीमार था।

मोटी फफ्फस मेरी ने गो-कक्ष का काम सभाल लिया था। लेनी मटके ने वहाँ अपनी शक्ल दिखाने की हिम्मत नही की। वह घर पर ही रही।

वह स्टोव की वगल में रखे जस्ते की नाद पर झुकी हुई थी। रोज़ ही बच्चों के गमछे साफ करने पड़ते थे। आँसू गालों से ढुलक कर उसके मुँह पर आ रहे थे और उसके होंठों को नमकीन स्वाद मिल रहा था।

पाँच वर्षीय बच्चा उससे चिपक गया और अपने काले छितरे वालों के बीच से ऊपर देखने लगा। "बप्पा वडा भयानक है," उसने कहा, मानो वह सान्त्वना देना चाहता हो।

उसने उसके वाल थपथपाये और नकारात्मक भाव से सिर हिलाया।

"बप्पा भयानक नहीं है" वह घुटे स्वर में बोली—"वह बीमार है। अब जा अपने भैया के साथ खेलो। उसके लिए गाय की एक तस्वीर वना दो।"

इन सब का क्या होगा।

दरवाज़े पर पड़ती दस्तक सुन कर वह उछल पड़ी। उसने अपने ऐप्रन में जल्दी-जल्दी हाथ पोंछे। दरवाजे की दस्तकें उसे हमेशा चौंका देती थीं। हर बार वह सोचती थी कि जरूर सहकारिता से कोई आया होगा यह कहने के लिये : लो, अपने कागजात सम्भालो।...

लेकिन इस वक्त आल्तरनाद के वृद्ध डाक्टर वेन्जिल आये थे जिन्हें अन्दर प्रवेश करते समय झुकना पड़ा। उसने फीकी मुस्कराहट के साथ उनकी ओर देखा। वे कृपकों के समान लम्बे-चौड़े थे।

वे उसके साथ बैठ गये। उसने ऐप्रन से एक कुर्सी साफ की। उन्होंने उससे बच्चों और चूजों के बारे में पूछ-ताँछ की। वह इन डाक्टर से नहीं शर्माती थी। उसने उन्हें बताया कि छोटा बच्चा अभी बोल नहीं पाता।

उसे इस संबंध में परेशान नहीं होना चाहिये, उन्होंने कहा। बच्चा जल्दी ही काफी बोलने लगेगा। उनका भी एक ऐसा ही बच्चा था। वह पूरा पाँच वर्ष का हो गया था, फिर भी जल में बड़ी मछली की तरह

खामोश ही रहता था। लेकिन अब वह एक विद्यार्थी था। ऐसा ही उसके बच्चे के साथ क्यो न होगा ?

बच्चे भी उनसे शर्माते नही थे। टेढे पैर वाला एक बच्चा घिसटता हुआ पास आ कर डाक्टर के घुडसवारी वाले जूते पर चढ-उतर रहा था और पाँच वर्षीय दूसरा बच्चा उनके काले बैग को खोल रहा था।

फिर डाक्टर अन्दर गये मटके को देखने के लिए। मटके छत की ओर घूर रहा था।

उसकी पत्नी दरवाजे से टिकी झुकी खडी थी। उसकी ठुड्डी उसके सीने पर थी। आगे क्या होगा ? वह सोच रही थी। वे उसे अलग कर देगे, इस बात का उसे विश्वास था।

बेन्जेल उसकी पलँग के निकट एक कुर्सी खीच कर बैठ गये।

"नीद तो अच्छी आयी न ?" उन्होने पूछा।

मटके छत की ओर घूरता ही रहा। मक्खियाँ उस पर खेल रही थी।

डाक्टर ने मटके को बतलाया कि सहकारिता के लोगो की राय थी कि वह अस्पताल जा कर अपनी जाँच कराये। स्वय उनकी भी यही राय थी। उन्हे यह पता लगाना चाहिये कि बहुत अधिक पीने से उसमे स्नायु दोष तो नही आ गया है या फिर उसके पेट मे तो कोई गडबडी नही है। और इस बात का निर्णय वे उसकी अच्छी तरह परीक्षा करने के बाद ही कर सकते थे। इसलिये अगले दिन उसे ले जाने के लिए एक कार जायगी। वे उसके लिए एक कार भी भेज रहे थे, क्योकि स्टेशन वहाँ से काफी दूर था।

मटके ने बिस्तरे पर करवट बदली और डाक्टर की ओर टकटकी लगा कर देखने लगा।

"तो वे मुझसे जल्दी छुटकारा नही पाना चाहते, हूँह ?" उसने नक-

नका कर कहा—"हफ्तो के लिए मुझे अस्पताल मे भेजने के बाद वे मुझे अलग कर देगे, हुँह ?"

"चुप रहो," डाक्टर ने मटके के इस विस्फोट से अप्रभावित रह कर कहा और अगर वे तुम्हारे सारे परिवार को ही निकाल बाहर करे, तो भी तुम उन्हे दोषी नही ठहरा सकते, वे बोले। मटके ने काफी भद्दा व्यवहार किया था। लेकिन वह इसके बारे मे कुछ जानता नही था, और यह उसका काम भी नही था।

अपने दिल मे मटके समझ रहा था कि डाक्टर ठीक कह रहे थे। अगर वे उसे अलग कर देते है, तो भी उन्हे दोष नही दिया जा सकता। अपनी पत्नी की तरह वह भी किसी के आ कर यह बताने की प्रतीक्षा कर रहा था कि वह सहकारिता से बर्खास्त कर दिया गया है।

और अब अस्पताल जाने की बात थी। वह किसी जाल का सदेह कर रहा था। इसके पीछे कुछ-न-कुछ अवश्य होगा—कोई षडयन्त्र जिसकी योजना उन लोगो ने बनाई होगी।

लेकिन जितना उसे सदेह था, उससे कही अधिक क्रोध था जेगोश पर उसे मार गिराने के लिए। उसे लगा कि वह जेगोश की बराबरी नही कर सकता था, इसलिये उसने सतर्क रहने का निश्चय कर लिया। वह कल अस्पताल जायगा। इससे उसे दो या तीन हफ्ते का समय मिल जायगा, और इस बीच उन्हे उसे पैसा तो देना ही पडेगा। वे उससे छुट्टी पा लेना चाहते थे, इसलिये वे उसे अस्पताल भेज रहे थे। तब वे बाद मे यह भी कर सकेंगे—"देखो, हमने इस सुअर की मदद भी की थी।" ठीक है, दो-तीन हफ्ते और सही और उसके बाद वह सोचेगा कि उसे क्या करना चाहिये।

अगले दिन असतुष्ट और सहकारिता के अनुग्रह से वचित मटके लडखडाता हुआ कार मे बैठ गया। आश्चर्य और कुतूहल से मुँह बाये लडके कार को घेरे खडे थे। कार चल पडी और गर्मी की तेज धूप मे

देहाती सडक पर बढने लगी। मटके ने एक वार भी घूम कर नही देखा। उसने लेनी को भी नही देखा, जो तब तक हाथ हिला कर उसे विदा देती रही जब तक कि उसका हाथ थके पक्षी के डैने की तरह नीचे गिर नही गया। अब वह अकेली थी।

जेगोश उस शाम को उससे मिलने आया। लेनी जानती थी कि कोई-न-कोई अवश्य आयेगा और वह चिन्ता से परेशान थी। उसने सिर हिला कर इशारे से अपनी ज्येष्ठ पुत्री लॉटी को बैठक मे बच्चो के पास जाने को कहा। नाराजगी के भाव से सिर को झटका दे कर लॉटी ने सिलाई वाले कपडे को तेजी से उठा लिया और फिर वह बाहर चली गयी। "यह हमेशा अपनी राय भी जाहिर करना चाहती है," लेनी ने कहा मौन को भग करने और अपनी परेशानी को छिपाने के लिए। फिर उसने जेगोश से बैठने का आग्रह किया। जेगोश ने एक सिगरेट जलाई। जब वह परेशान र.ता था, तो उसे सिगरेट पीनी ही पडती थी।

"लेनी," उसने सकुचाते हुये कहना शुरू किया और धुएँ का एक लच्छा बाहर फेका, "तुम जानती हो कि मुझे मजबूर हो कर उसे मारना पडा था।"

'क्यो विवश होना पडा था उसे ?' लेनी ने सोचा 'वह मुझसे क्या चाहता है ?'

"साफ बात तो यह है," जेगोश आगे कहता गया, "कि और लोग हेनरिच को काम करने नही देना चाहते। यह तो तुम जानती ही हो कि वह कैसा है।"

'हाँ, मै जानती हूँ कि वह कैसा है', उसने सोचा—'और यह कोई भी नही जानता कि मुझे क्या भोगना पडा है। लेकिन मै उन्हे उसके विरुद्ध एक शब्द भी न कहने दूँगी। आखिर वह मेरा पति है। अब वे

उससे काम नही लेना चाहते। यह बात मैं बराबर जानती थी। तो मामला यहाँ तक पहुँच गया।" उसने अपना गला पकड़ लिया।

"मैं उसे काम से हटाना नही चाहता। कम-से-कम उसके कारण नही, जो कुछ हुआ। लेकिन मैं अकेले उन सब को राजी न कर पाऊँगा। इस काम मे तुम्हे मेरी मदद करनी होगी, लेनी।"

'हे ईश्वर, मैं क्या मदद कर सकती हूँ?' तो! उसने सोचा—'अन्य लोग मटके को रखना ही नही चाहते और बच्चे कितने छोटे हैं अभी।'

तब उसकी समझ मे आया कि जेगोश ने वास्तव मे क्या कहा था, यानी यह कि वह मटके को हटाना नही चाहता था। उसने उसे शंकित भाव से देखा, लेकिन आशा की एक किरण भी उसके अन्दर फूटने लगी थी।

"यहाँ की हालत को बदलना ही होगा, लेनी।" उसने चारो ओर नज़र दौडायी।" सब कुछ बदल ही जाना चाहिये। इस तरह की गर्मी सहकारी खेती से मेल नही खाती। देखो, अन्य लोग कैसे रह रहे हैं।"

"और गो-कक्ष की दशा भी बदलनी ही पडेगी," जेगोश आगे बोलता गया—'इसीलिए आज मैं तुम्हारे पास आया हूँ। मेरी गायो का काम नही कर सकती। हमे खेतो मे उसकी जरूरत है। और जो हो, यह काम उसके योग्य भी नही है। गायो का काम तुम्हे सम्भाल लेना चाहिये, लेनी। यही मैं तुम से कहना चाहता था।"

वह इतनी आश्चर्य चकित हुई कि वह कुछ बोल भी न सकी। पहला विचार जो उसके अन्दर उठा, वह यह था कि वह मात्र स्त्री है और बीस गायो का काम न सम्भाल सकेगी। लेकिन कृतज्ञता भाव की बाढ ने तमाम अन्य विचारो को बहा दिया। उसने एक शब्द भी नही कहा, लेकिन जब जेगोश जाने लगा तो उसने हाथो मे उसका हाथ कस लिया।

इसके बाद उस समय किसानो की और विशेषकर ग्रामीण स्त्रियो को

चर्चा का एक अच्छा मसाला मिल गया, जब जेगोश ने लेनी के लिए सहकारिता से एक, आलमारी मँगाई। इससे एक हलचल मच गयी। लोग नुक्कडो पर खडे हो कर कानाफूसी करने लगे। जब जेगोश इतनी दूर निकल गया कि वह कुछ सुन न सके, तो कुछ लोगो ने कहा कि या तो यह गप मात्र है। कभी ऐसी बात सुनी नही गयी या फिर उसकी नीयत खराब है। ऐसा हो सकता है—आखिर उसने मटके की मरम्मत भी तो की थी।

कुछ ने तो उसके मुँह पर भी कहा कि उन्हे तो उससे कभी कोई उपहार नही मिला। उन्हे तो हर जीज प्राप्त कग्ने के लिए मेहनत करनी पडती थी। जहाँ तक मटके लोगो का सबध था, वे तो बिल्कुल गये बीते थे और उन्हे आलमारी का उपयोग ही कहाँ मालूम था ?

लेकिन आखीर मे जेगोश की ही चली। मटके-परिवार के लोगो के लिए अपना सुधार कर पाना कठिन काम था, उसने कहा, अन्यो से बहुत अधिक कम। और यदि उन्हे डर हो कि मटके-परिवार के लोग चीजो को ठीक से नही रख सकेंगे, तो साल के आखीर मे उसके हिस्से से आलमारी की कीमत काटी जा सकती है। उसने एक रसीद भी लिख दी, ताकि उनके पास यह लिखित आश्वासन रहे। अन्ततोगत्वा वे राजी हो गये, हालाँकि उनमे से कुछ ही ये समझ सके कि वास्तव मे उसके मन मे क्या था। मेरी हेसेनपुट ने भी कहा कि यदि वह मटके को इसलिये पैसा दिलाना चाहता है तो दिलाये, लेकिन यह बात ठीक नही है। उस सुस्त गधे को मखमल ओढाने की कोई जरूरत नही है। एक आलमारी, जरा सोचो तो !

स्कल्ज ने दूध वाली मोटर मे आल्टरननोड से वह आलमारी ला कर पहुँचा दी। दो व्यक्तियो ने उस आलमारी को उतारने मे उसकी मदद की।

लेनी की आँखो मे आँसू भर आये, जब उसकी यह समझ मे आया कि वह आलमारी सचमुच उसी के लिए है।

मेरी यह देखने के लिए उत्सुक थी कि ग्वाले की पत्नी उसे किस तरह ग्रहण करती है। जब मोटर आ रही थी तो वह उधर से गुजर रही थी, इसलिये वह बाड के ऊपर झुक कर देखने लगी। उसकी बाहों पर दो पुराने पर्दे थे, जो लेनी के लिए थे। वह दिखलाना चाहती थी कि वह इत्तफाक से आ गई थी, लेकिन वह सचमुच पहाड के ऊपर से गाडी के आने की प्रतीक्षा कर रही थी।

वे लोग आलमारी को घर के अन्दर ले गये। किसी ने यह न सोचा होगा, कि दो दिन पहले तक वे इसे एक विचित्र बात समझते थे। वे ऐसा व्यवहार कर रहे थे जैसे वे लेनी को यह मूल्यवान भेट व्यक्तिगत रूप मे दे रहे हो। गर्म से अभिभूत लेनी बिल्कुल मूक थी। वह पास ही विवश-सी खडी थी और मेरी ने 'वाइफे' को, जैसा कि वह आलमारी को कहती थी, रखवाने का काम अपने ऊपर ले लिया था। उन्हे एक ओर खाली दीवार से सटा कर आलमारी रखने के लिए बडा ही अच्छा स्थान मिल गया और मटके के गन्दे कमरे की कायापलट हो गयी। मेरी ने लेनी को कुछ सफाई करने मे मदद देने का निश्चय किया। वह तो बस यह देखना चाहती थी कि आलमारी दरअसल कैसी लगती थी, उसने कहा। लेनी ने विरोध किया, लेकिन मेरी मानने वाली नही थी।

मेरी अपने हाथो और घुटनो के बल टिक गयी, हालाँकि वह यह सोच कर नही आई थी। लाँटी मटके के दरवाजे पर खडी थी हाथ मे जाली की बुनाई लिये हुये और बच्चो की भीड को बाहर ही रोके हुये थी। बाल्टी मे झाड़न को निचोडते हुये मेरी ने अपनी सामान्य मुँहफट्टपन से कहा कि लाँटी को गायो की चिन्ता करने की जरूरत नही, बल्कि उसके बजाय वह घर मे कुछ और काम कर सकती है। कम-से-कम बच्चो के बाल तो सँवार ही सकती है। लेनी को यह बात भी अच्छी नही लगी।

लॉटी को बहुत कम काम करना पडता है, उसने कहा। लेकिन लॉटी का चेहरा लाल हो उठा और वह एक झाडन लाने चली गयी।

अब चूंकि लेनी के पास आल्मारी हो गई थी, वह फर्श पर पालिस करने लगी और उसे पर्दे पाने की भी खुशी थी। उन्हे ठीक कराने के लिए रफूगरो की जरूरत थी। कभी-कभी वह हाथ बाँधे आल्मारी और खिडकियो को प्रशसात्मक दृष्टि से देखती खडी रहती—जैसे उसे विश्वास ही नही होता था कि वह सब-कुछ उसका ही है। अब उसके पास एक 'सर्वोत्तम कमरा था और वह बच्चो को उसमे खेलने नही देती थी। यदि उनमे से किसी के द्वारा पालिस किये फर्श पर चिह्न बन जाता, तो वह नाराज होती।

जिस दिन सुबह लेनी ने गायो का काम सम्भाला, धवल कुहासा गाँव के ऊपर छाया हुआ था।

वह करवट बदलती हुई उखडी नीद मे पडी, और गायो एव मटके के स्वप्न देखती रही।

उजाला होने के बहुत पहले से ही वह घडी को देखने लगी इस डर से कि कही वह अधिक सो न जाय।

अब वह गाँव की कीचड और पहियो की लीको से भरी सडक पर जल्दी-जल्दी चलने लगी। वह सडक कृषको के बागो और एक-दूसरे मे गुँथे बेर के पुराने पेडो के बीच से होती हुई गाँव के निचले हिस्से को जाती थी।

ठड पड रही थी। वह काँपने लगी और उसने शाल अपनी गर्दन से लपेट ली। उसे एक विचित्र भावना की अनुभूति हो रही थी, जैसे वह ऐसे नये कपडे पहने हो जिन्हे गाँव के किसी भी आदमी ने न देखा हो।

इस विचार से कि रास्ते में लोग उसे देखेंगे, [illegible] हुई किन्तु गयी भी। आखिरकार वह गायों का काम सम्भालने जा रही थी।

उतने तड़के उसे कोई भी न मिला। कुछ खिड़कियों से मन्द [illegible] टिमटिमाहट निकल रही थी, जो [illegible] धीरे प्रकाश में [illegible] कर रही थी।

गो-कक्ष गर्म था। शीघ्र ही उसका शरीर भी गर्म हो उठा। उसने गायों की सुपरिचित महक पाई और सुपरिचित आवाजें सुनीं। लेकिन उसे घबराहट महसूस हो रही थी। वह जानती नहीं थी कि क्या वह यहाँ का काम सम्भाल पायेगी। तेईस गायें! इतनी बड़ी जिम्मेदारी थी। इन विचारों की गम्भीरता हावी होने लगी उस पर। वह ऐसा अनुभव करने लगी, जैसे वह संसार में बिल्कुल अकेली हो। एकाएक उसे मूर्छा-सी आने लगी और उसे दीवार से टिक जाना पड़ा।

उसका पति अब वहाँ नहीं था, उसने सोचा। उसने हमेशा हर चीज अपने रूखे ढंग से तय की थी। और अन्यों के बारे में क्या कहा जाय। गाँव में कोई व्यक्ति उसे कोई महत्त्व नहीं देता था और अब उस पर उन सभी तेईस गायों का उत्तरदायित्व था।

गायें अपनी जंजीरें खींचने लगीं और सुस्ती के साथ रम्भाने लगीं। लेनी ने अपने सिर की रूमाल कस ली और घास को कांटे से उठा लिया।

जब दरवाजा चरमरा कर खुला और जेगोश उसकी मदद के लिए फ्रांव सेमलर को लिए हुये अन्दर प्रविष्ट हुआ, तो लेनी ने राहत अनुभव की। उन्होंने इस संबंध में बातें कीं कि भविष्य में कैसे क्या करना होगा।

गाँव में किसी को विश्वास नहीं था कि मटके की पत्नी काम फिर से चलाने लगेगी। लेकिन अब वे देख रहे थे कि वह किस तरह जान लडा

कर कर रही थी और उन्होने देखा कि आखिरकार उसने काम सम्भाल लिया, हालाँकि इसे स्वीकार करना उन्हे अच्छा नही लगता था।

मेरी, जो अकसर लॉनी को देखने के लिए रुक जाती थी, कहती कि घास के भारी गट्ठो को लेनी का अकेले ही उठाना वडा वाहियात था, क्योकि वह वहुत दुवली-पतली और लकलक है। उसे इतनी कडी मेहनत नही करनी चाहिये। वहुत मेहनत करने की जरूरत भी नही थी। हमे उसकी पहले ही सहायता करनी चाहिये थी, उसने सोचा, लेकिन उसने शव्दो मे यह व्यक्त नही किया। तव मामला इतना न बिगडा होता।

"मटके तो वेकार आदमी है, लेकिन लेनी वु ी नही है, अगर आप उसे समझ पायें," एक दिन जव वह आलू तल रही थी, तो उसने यो ही कहा। वृद्ध श्वसुर ने हामी के भाव से मिर हिलाते हुये कहा कि उनकी सहकारिता का मामला अजीव ही है और तमाशे की वात यह कि अव उस स्त्री को वहाँ से काम सम्भालने दे रहे है, जहाँ उसके पति ने उसे छोडा था। मेरी ने उनसे चुप रहने को कहा। अगर कभी वे सही वात भी कहते थे, तो वह उसे स्वीकार करने को राजी नही होती थी, क्योकि वह स्वय सहकारिता मे थी, और उनकी भुनभुनाहट से उसे चिढ होती थी।

लेनी मटके जेगोश से शर्माती थी। वह उन किसानो से भिन्न था, जिन्हे वह जानती थी। जव वह दो महीने पहले इस गाँव आया था और उसके रहने के लिए कोई स्थान नही था, तो लेनी को याद था कि सहकारिता के रसोईदारिन ने, जिसे प्रत्येक चीज मे टाँग अडाना और गड़वडी पैदा करना अच्छा लगता था, नये अध्यक्ष को अपने यहाँ ठहरने और उसके खाने-पीने की व्यवस्था करने का प्रस्ताव किया था। लेकिन उन्होने दोस्ताना ढग से मुस्करा कर जेगोश ने इन्कार कर दिया था यह कह कर कि वह अपने ढग से काम चला लेगा। उसने कार्यालय के पीछे

वाले छोटे से कमरे मे डेरा जमा लिया और लोहे की एक पुरानी पलग अन्दर डलवा ली। वह दोपहर का खाना अन्य कर्मचारियों के साथ खाता था और शाम को अकेले ही पावरोटी और चटनी खाता था।

गाँव मे यह अफवाह थी कि कुछ लोग सुअर का मास और मक्खन ले जा कर उसे देते थे। लेकिन जेगोश ऐसा व्यक्ति नही था कि वह किसी का एहसान ले।

लेनी हमेशा उससे शर्माती रही थी। वह उससे कुछ डरती भी थी और उसे सब कुछ समझती थी। उसको यह भी पता लग सकता था कि बचा हुआ दूध मटके घर ले जाता था।

लेकिन अब जब कि जेगोश रोज ही उससे भेट करने आता था, वह अनुभव करती थी कि वह नेक आदमी है—जानवरो के प्रति भला और मनुष्यो के प्रति भी। वह अनुभव करती थी कि वह उसकी मदद करना चाहता था।

वह अकसर सोचती थी कि यदि वह मटके और उसे अलग कर देता, तो इस पर किसी को भी आपत्ति न होती। उसे उस दिन की बात सोच कर बहुत बुरा लगता था, जब कि जेगोश को मारने के लिए मटके ने लोहे का छड उठा लिया था। लेकिन इस पर जेगोश ने उन्हे निकाला नही था।

लेनी रसोईदारिन की तरह बातूनी नही थी। एक ऐसा कुत्ता जो कि हमेशा ठोकरे खाता रहा हो और जिसे अन्त मे एक ऐसा व्यक्ति मिल गया हो जिसने उसके प्रति कृपा भाव दर्शाया हो, उसके प्रति इतना अनुगृहीत न होता, जितनी कि लेनी जेगोश के प्रति थी। इसलिये वह भरसक अच्छे-से-अच्छे ढग से काम करती थी ताकि जेगोश उसके काम के सबध मे शिकायत करने को कोई मौका न मिले।

मटके अगले दिन घर आने वाला था। ग्रीष्मकाल के दो हफ्ते होते ही क्या है, जब दिन भर काम रहता हो और राते बोझिल एव छोटी ? लेनी को पता ही नही चला कि समय कैसे बीत गया। उस शाम को उसने रोज से अधिक मेहनत की। सेहन मे फैली घास को हेगी से बराबर किया और उस गर्द को साफ किया, जिसे दिन मे मुर्गियो ने खोद कर फैला दिया था।

वह पुन. गो-कक्ष मे गयी प्रत्येक गाय को कुछ कुछ चारा देने के लिए। फिर उसने रोशनी बुझा कर दरवाजा बद कर दिया और उससे टिक कर क्षण भर खडी रही। फिर वह घर की ओर चल दी।

लारी ने बच्चो को सुला दिया था और अब वह माँ के पास आयी। कल मटके वापस आ जायगा और कल ही सहकारिता निर्णय लेगी कि उनका क्या किया जाय। लेनी ने कुछ पूछना नही चाहा था।

जेगोश न मटके को सहकारिता के कार्यालय मे आने का सदेश भेजा। स्टोर के कमरो के ऊपर एक मामूली छोटे से कमरे मे कार्यालय था। वहाँ केवल एक ही आरामकुर्सी थी, जो फूलदार छापे वाले कपडे से ढँकी थी और रद्दी फर्नीचर और आल्मारियो के सामने रखी थी। जेगोश ने बिना पर्दे वाली खिडकी से बाहर झाँका। क्षितिज की पृष्टिभूमि सहित सुदूर पहाडियाँ और प्लैटो पीले रग के 'वाटर कलर' चित्र जैसे लग रहे थे।

लेकिन वह देहाती क्षेत्र वाटिका की तरह ही लहलहाता दिख रहा था। कटी फसल से ऊँचाई तक लदी गाडियाँ झूमती-झामती सडक पर गाँव की ओर आ रही थी। ट्रैक्टर ढलान के ऊपर और नीचे अनाज के पौधो ली खूटियो को कुचलते हुये चल रहे थे। मुर्गियाँ कुडकुडा रही थी और मडाई की मशीने घरघरा रही थी। यह ग्रीष्मकाल का ऐसा ही

दिन था, जैसा देहाती न देखने का [illegible] । [illegible] तो [illegible] उसे प्रदेश से प्यार था । कभी-कभी वह इच्छा [illegible] भी कि वह आस्तीनें चढ़ा कर हल की [illegible] ले और उस [illegible] को [illegible] रख दे, जो पुराना और गन्दा था । यह नवयुग [illegible] होगा, उसने सोचा । लेकिन सभी चीजों के लिए समय चाहिए—दिन, [illegible] और लोग । हर जगह उपेक्षा थी, हर जगह अज्ञान, जिद और [illegible] ।

और लोगों से निपटने में तो बड़ी दिक्कत होती थी । आप उन्हें जोत कर उनमें नये बीज नहीं बो सकते, जैसा कि खेत में किया जा सकता है । कुछ लोग तो वृक्षों के समान होते हैं, [illegible] ने सोचा । जंगल में ऐसे भी पेड़ होते हैं, जो दूसरों से ऊँचे पर बड़ी तेजी से बढ़ जाते हैं । वे दूसरों को अपने रास्ते से हटा देते हैं, रोशनी को बंद कर देते हैं और मिट्टी के सारे पौष्टिक तत्त्व खींच लेते हैं । आपको उन्हें उखाड़ फेंकना पड़ता है । वे बेकार होते हैं । तभी छोटे-छोटे पौधों को बढ़ने के लिए रोशनी और जगह मिलती है । वे बढ़ सकते हैं, अपनी शाखाएँ फैला सकते हैं, तथा सीधे और कद्दावर बन सकते हैं । लेकिन उनमें से कुछ सिकुड़-विकुड़ जाते हैं । क्योंकि उनमें से कुछ के लिए बहुत देर हो चुकी रहती है । वे जीवित नहीं रहते हालांकि धूप पा कर वे बढ़ सकते थे । खैर, मटके का क्या हो

जब मटके अन्दर आया, तो वह खिड़की से मुड़ा । मटके ने अभिवादन किया । फिर वह दब्बूपन से एक कुर्सी के सिरे पर उस तरह बैठ गया, जैसे किसी को कोई बढ़िया कुर्सी खराब हो जाने का डर लगता है । वह बेचैन था और अपनी पैंट की जेब से सिगरेट निकालने के लिए पीछे की ओर ढुलक गया । मेज के उस ओर बैठे व्यक्ति को उसने देखा और सारे शरीर में उसे गर्मी महसूस हुई ।

इसने मुझे घूँसे मार कर गिरा दिया था, मटके ने सोचा—मार कर

गिरा दिया था, सिर्फ मेरे थोडी सी पी लेने के कारण। इसी ने मुझे अस्पताल भी पहुँचा दिया था। अब यह क्या चाहता है ?

उसने सिगरेट के गहरे कश खीचे। उसने अपनी भौहे सिकोडी, जिसके कारण उसके मत्थे पर गहरी लकीरे पड गयी, जैसा कि हमेशा उस समय होता था जब उसे ज्यादा सोचना पडता था।

पडोस के एक किसान वील ने कहा था कि महत्वपूर्ण पदो वाले लोगो को अब मार-पीट न करना चाहिए। ऐसा होने भी न देना चाहिए, क्योकि यह बात तो मध्ययुग जैसी है। मटके को इन्तजार करना चाहिए, होशियार रहना चाहिए और फिर ठीक समय पर उचित कार्यवाई करनी चाहिए। वह शिकायत भी लिख कर भेज सकता है। अधिकारियो को इस बारे मे कुछ-न-कुछ करना ही पडेगा। अगर मटके न लिख पायेगा, तो वील उसकी मदद करेगा। वील ने उसे एक कृपक महिला हेलेन विट के बारे मे बतलाया था, जिसे अपने सेहन मे कार्य करने के लिए किसी आदमी की आवश्यकता थी।

जेगोश ने लेनी को अलमारी भेट की है। यह एक अच्छा लक्षण है, उसने सोचा। यह इस सारे मामले के सबध मे उसका मुँह बन्द रखवाने के लिए एक प्रकार का घूस था।

"तो, मटके, तुम आ गये," जेगोश ने उसकी विचारधारा भग करते हुए कहा—"मैने तुम्हे इसलिए बुलवाया है कि मै तुम से बात करना चाहता हूँ कि आगे हमे क्या करना चाहिए।" जेगोश क्षण भर के लिए रुका।

मटने अपने जूते की नोक को घूर रहा था और अपने पैरो को हिला रहा था।

जेगोश को बेचैनी अनुभव हुई। अब चूँकि उसे भय लगता था, वह लोगो से खुशगवार बातो पर ही बात करना पसन्द करता था। अकसर उसे कठोर होने के लिए अपने को विवश करना पडता था। कभी-कभी

कुछ लोगो को आगे बढा पाना मुश्किल हो जाता था। उस समय भी उसे मटके के विरोध की अनुभूति हो रही थी।

जेगोश ने अपनी कुर्सी पीछे खिसकाई और खिडकी के बाहर उंगली से इशारा किया। "देखो वे लोग किस तरह खेतो मे काम कर रहे है," उसने कहा—"गाडी पर खडे हो कर ला रहे है और सफाई कर रहे हैं। वे सभी साथ-साथ फसल भर काम करते रहे है। बूढे सिएर्क, जो पचहत्तर साल का है, कल ही तीन गाडियां लादे था। वह बडा ही भला है, और दूसरे लोग भी। सहकारिता के किसान।"

मटके ने बाहर नही देखा। उसने अपने हिलते पैरो का घूरना जारी रखा। "मतलब की बात कीजिए," उसने उकताहट भरे स्वर मे कहा।

"ठीक है," जेगोश ने एकाएक कहा अपनी उमडती खीझ को दबाते हुए—"मैंने कमेटी के लोगो से आज सुबह बात कर ली है। सुनो मटके, गायो का काम तुम्हे अब न करना होगा।"

मटके ने अपने सिर को पीछे की ओर झटका दिया। वह चौकन्ना हो गया।

"गायो की जिम्मेदारी बहुत बडी है। सहकारिता का आधा रुपया तो गो-कक्ष मे लगा हुआ है। हम गायो के सबध मे आगे तुम पर भरोसा नही कर सकते।" उसने देखा कि मटके का पीला चेहरा तमतमा उठा, लेकिन यह नम्र पडने का समय नही था। वह आगे कहता ही गया—"हम तुम्हे अलग नहीं करेगे। हम दूसरे ढग से भी पेश आ सकते थे, यह तुम जानते हो, और इस बात को मत भूलो।"

मटके शब्द खोज रहा था। वह अध्यक्ष को उचित उत्तर देना चाहता था। विचार उसके मस्तिष्क मे टकरा रहे थे खिडकी पर ओलो के टकराने की तरह, लेकिन वह उन्हे पकड नही पा रहा था। पसीना उसके मत्थे पर उभर आया।

"तो मामला यह है," वह भुनभुनाया। उसे कानो मे रक्त बजता अनुभव हुआ। वह किसी चीज को चूर कर देना चाहता था।

जेगोश उसे ध्यान से देख रहा था। "मुझे इस बात का अफसोस है कि मामले ने ऐसी सूरत पकडी। लेकिन इसके लिए तुम्हारे सिवाय और कोई दोषी नही है। अपने को सम्भालो। अब दिखला दो कि तुम क्या कर सकते हो। अगर तुम बदल जाओ, तो मै तुम्हारी सहायता करने को बराबर तैयार रहूँगा।"

मटके उछल पडा। मेज की ओर लपक कर उसने राखीदान मे अपनी सिगरेट मसल दी। "तो तुम कुत्ते को जजीर इस तरह कस कर पकडे रहना चाहते हो कि वह बैठ भी न सके," वह चीखा—"काम दूसरी जगह भी तो है। मैं जा रहा हूँ। लेकिन मै मामले को यही खत्म न होने दूँगा। तुम समझते हो कि तुम मुझे घूँसा मार कर गिरा दोगे और फिर ठोकर मार कर पीछे ढकेल भी दोगे। इस सब का हिसाब हम बाद मे करेंगे।"

"तुम तो स्वय ही गायो का काम बन्द कर देना चाहते थे। कितने दिनो की बात है ये ? तीन हफ्ते हो गये ?" जेगोश ने उसे याद दिलाया।

मटके को कोई जवाब नही सूझा। वह बिना कुछ कहे कमरे से बाहर आ गया और खडखडाता हुआ सीढियो पर नीचे उतरने लगा। गुस्सा उसके मस्तिष्क मे उफान खा रहा था। वह अनुभव करता कि उससे भूल हुई थी, लेकिन वह इसे स्वीकार नही कर सकता था। वह किसी चीज पर केवल वार करना चाहता था।

जैसे ही उसने अपने घर का दरवाजा तेजी से ढकेल कर खोला, उसके अन्दर कोई चीज जैसे उलट-पलट सी गयी। लम्बे बालो वाला

पाँच साल का वच्चा और टेढे पैरी वाला छोटा वच्चा—दोनो ही चिल्ल-पों कर रहे थे।

वे एक खिलौने के लिए लड़ रहे थे। मटके के वड़े हाथ ने पाँच वर्ष वाले वच्चे के चेहरे पर जोर का तमाचा जड दिया। जिस चीज़ ने आगे की सजा रोक दी, वह थी वच्चे की हैरान नज़र।

दरवाजे मे खडी लेनी ने चिल्ल-पो करते वच्चो को आँगन मे सुरक्षा के लिए खिसका दिया। मटके उसके पीछे-पीछे कमरे मे गया।

जव वह अस्पताल गया था, तो लेनी ने उससे समझदारी से काम लेने को कहा था। वे उसका सिर तो कलम कर देंगे, उसने कहा था। इस पर मटके ने उत्तर दिया था कि वापस आने पर वह क्या करेगा, यह जेगोश पर निर्भर करेगा।

लेनी जानती थी कि अव जव कि वह घर आ गया था, उन्हे निर्णय लेना पडेगा। यही वह क्षण था, जिसका उसे वरावर भय लगा था जव तक कि वह घर से दूर था। परिस्थितियाँ वदल गयी थी —क्या अव उन्हे फिर पहले ही की अवस्था मे वापस जाना चाहिये ? वह घिसट कर एक कुर्सी के पास गयी और उसने सहारे के लिए मेज़ को पकड़ लिया। वह अपने फटे और रुखड़े हाथो को देखने लगी।

फिर उसने अपने सिर को पीछे की ओर झटका। "तुम वच्चो को वेकार नही पीट सकते। मैं यह न होने दूँगी।

"इससे उसे चोट न लगी होगी," मटके ने अपने विचारो मे उलझे हुये कहा—"हमे भी अकसर मार पड़ती थी।"

"लेकिन समय अव वदल गया है," उसकी पत्नी ने कहा।

"अच्छा अव वेकार की वात मत करो," मटके ने चीखा—"वात करने के लिए इससे भी अधिक महत्वपूर्ण चीजे हैं।"

"वच्चो से अधिक महत्वपूर्ण है ही क्या ?" लेनी ने जिद से कहा।

"अधिक महत्वपूर्ण ?" मटके ने प्रश्न किया। और कुछ रुक कर

उसने आगे इस तरह कहा, जैसे उसे चोट पहुँचाने मे उसे मजा आ रहा हो। "अपना माल-असवाव बाँधना तुम्हारे लिये अधिक महत्वपूर्ण है। हम यहाँ से जा रहे है।" उसने अपना होठ काटा और अपनी घनी-घनी भौहो के नीचे से उसकी ओर देखा। "तुम जरूर उसकी खुशामद करती रही होगी। तुम गायो का काम करोगी और मुझसे कुछ और काम लिया जायगा—शायद उनके द्वारा की गयी गन्दगी को साफ करने का काम। लेकिन मैं यह सब न होने दूँगा।"

उसने कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चहलकदमी की और फिर मुट्ठियाँ जेवो मे डाले हुये वह अपनी पत्नी के सम्मुख बैठ गया।

"हेलेन विट को अपनी कृषिशाला के लिए एक परिवार की जरूरत है। मै कल वहाँ गया था। मै तो बस यह जानना चाहता था कि यहाँ सहकारिता वाले, क्या कहते हैं। क्या मै उन्हे यह बरदाश्त कर सकता हूँ कि वह शख्स मेरे साथ कूडे-करकट जैसा व्यवहार करे?"

"लेकिन हम यहाँ से जा नही सकते," उसकी पत्नी वोली। उसने हल्के नकारात्मक भाव से सिर हिलाया। "नही-नही," वह तेजी से वोली—"इससे काम न बनेगा। हम यहाँ से नही जा सकते।"

झटके ने उसे तीव्र दृष्टि से आश्चर्य मे पड कर देखा।

"क्या तुम्हे कुछ कहना है?" उसने एकाएक प्रश्न किया। फिर स्टोव के पास जा कर अपने पैर से लकडी के टुकडे को एक ओर हटाता हुआ वह तेजी से घूमा। "ऐसा उपद्रव न करो," उसने कहा—"यहाँ तुम्हे क्या मिल रहा है, ऐ? तुम जानवर की तरह यहाँ काम करती हो, बिल्कुल पहले ही की तरह। वलिक तुम्हे पहले से भी ज्यादा कडी मेहनत करनी पड रही है। लेकिन वृद्धा विट ऐसा कुछ मेरे साथ करके तो देखे। कम-से-कम उसे खरी-खरी सुनाया तो जा सकेगा।"

"नही," लेनी तेजी से वोला—"इसने काम न वनेगा।"

फिर यहाँ से जाना, लेनी ने सोचा, एक साल के लिए या शायद

छह महीने के लिए ही, क्योंकि यह व्यक्ति किसी काम पर टिकता ही नहीं। हमेशा खानाबदोश की तरह यहाँ-वहाँ भटकना। अब जब कि उसे अनुभव हो रहा है कि वह भी आदमी है, तो यहाँ से चल दिया जाय। अब जब कि उसे एक जिम्मेदारी का काम मिल गया है और बच्चों को कुछ आराम मिल सकता है, तो एक बार फिर बूढ़ा विट की नौकरानी बन जाय। और यहाँ नर्सरी स्कूल है, धूप है, जंगल है, फूल हैं, पशु हैं। अब जब कि उसे एक आल्मारी भी मिल गई है, तो फिर वह एक तुच्छ ग्वाले के झोंपड़े में वापस पहुँच जाय।

"नहीं, मटके," उसने शान्तिपूर्वक गहरे भर्राये स्वर में कहा—"हम ऐसा नहीं कर सकते। अब जब कि हमें एक आलमारी भी मिल गई है, हम ऐसा नहीं कर सकते।

ऐसा लगा जैसे उसने कुछ सुना ही न हो।

"और घूँसा मार कर मुझे गिरा देने के लिए मैं उसकी निन्दा भी करूँगा," उसने कहा और फिर सिर हिला कर जैसे उसने यह साबित किया कि वह बिल्कुल सही था। "उसे मुझ से फिर निपटना पड़ेगा।"

"तुम इस तरह की बातें कैसे कह सकते हो। वे तो हमारी भलाई चाहते हैं।"

"इसीलिये तो वे मुझे गो-वत्स से अलग कर रहे हैं, एँ ?"

"सुनो," लॉटी ने कहा, और फिर जैसे उसके गले में कुछ अटक गया, "तुम गायों की देख-रेख ठीक तरह कहाँ कर रहे थे ? और न मैं ही कर रही थी। अब मैं यह अनुभव कर रही हूँ। जब भी वे कुछ कहते थे, तो तुम्हारा पारा चढ़ जाता था। तुम पीते थे। तुम ऐसा भद्दा व्यवहार कर रहे थे कि मुझे तुम पर शर्म आती थी। मैं लोगों के सामने सिर भी नहीं उठा सकती थी।"

वह खड़ी हो गयी और फिर आलमारी से टिक गयी, क्योंकि उसे सहारे की जरूरत थी।

"और इस सब के बावजूद जेगोश हमारा भला ही चाहते है। और ऐसी हालत मे तुम यहाँ से चल देना चाहते हो। हम ऐसा नही कर सकते। वे तुम्हारी रोजी नही छीन रहे है। मै गो-कक्ष मे काम करना जारी रख सकती हूँ और फिर बाद मे तुम्हे वह काम मिल सकता है। जेगोश ने तो मेरे और बच्चो के लिए अधिक-से-अधिक किया है और तुम हो कि उसकी निन्दा करना चाहते हो। तुम ऐसा नही कर सकते। तुम ऐसा नही कर सकते। तुम ऐसा भद्दा व्यवहार नहीं कर सकते।"

मटके उसके निकट आ गया। "तुम अपनी जबान बन्द करो!" उसने धमकाते हुये कहा और आकस्मिक क्रोध उसकी आँखो मे जल उठा। उसने अपना हाथ उठाया। "क्या तुम मे जरा भी स्वाभिमान नही है? अभी भी जब कि वे तुम्हारे पति को पीछे ढकेल देना चाहते है?"

वह पीछे हट कर आलमारी से सट गयी। उसकी भयभीत आँखो के ऊपर उनकी भौहे चढ गयी। उसका मुँह इस तरह टेढा हो गया, जैसे पीडा के कारण।

"तुम जैसा चाहो कर सकते हो," वह चीखी—"तुम चाहे मुझे मारो ही, इसकी मुझे कोई परवाह नही। अगर तुम चाहो तो यहाँ से जा भी सकते हो। पीते-पीते चाहे मर भी जाओ। लेकिन तुम अपने साथ मुझे और बच्चो को घसीट कर नही ले जा सकते। मै तो यही रहूँगी। उन्हे मेरी जरूरत है। इतने दिनो तक मैने तुम्हारा साथ दिया है, लेकिन अब नही। मै अब आगे ऐसा नही कर सकती।

तेजी से शयन-कछ मे जा कर वह बिस्तरे पर धम्म से गिर पडी और तकियो मे चेहरा गडा कर फफक-फफक कर रोने लगी। उसने मटके के घर से जाने की आवाज नही सुनी।

उसने अपनी टोपी नीचे कानो तक खीच ली। वह पगडडी से मोते की ओर गया, फिर छितराई झाडियो और छोटे-छोटे वृक्षो से भरी

पहाडी पर चढ गया। पहाडी के ऊपर से हो कर ग्रालटरनोड जाने का एक छोटा रास्ता भी था।

जगल के किनारे पहुँच कर उसने ग्रपने ग्रापको कठोर जमीन पर गिरा दिया। खेत पेवदे लगे लिहाफ जैसे दिख रहे थे। उसका रग जगल के उस पार ग्रौर सुदूर पहाडियो तक फैला हुग्रा था।

उसने गाडियो पर लाद कर राई लाते लोगो को देखा। वह एक सहकारिता खेत था। वे ऐसे लोग थे, जो इस वात से खुश थे कि वह ग्रव गायो का काम न करेगा। उनमे से एक व्यक्ति भी ऐसा न होगा जिसे उसके जाने से दुख होगा।

उसने भयानक एकाकीपन ग्रनुभव किया।

वहाँ वे सभी काम करते मौजूद थे। वहाँ रह-रह कर जब घोडे ग्रागे वढते तो वह 'वढे चल' की हल्की ग्रावाजे या किसी स्त्री के तेज स्वर मे वुलाने की ग्रावाजे सुन सकता था। वहाँ नीचे से वे सब प्रसन्न थे।

वह उन्हे देखना वर्दाश्त नही कर सका। रेग कर वह झाडियो के वीच ग्रौर ग्रन्दर चला गया ग्रौर जानवर की तरह तेज महकते घास-पौधो के वीच से वह ग्रागे वढता गया।

उसे कभी इस वात की चिन्ता नही हुई थी कि सव उसके विरुद्ध थे—पहले निजी किसान ग्रौर वाद मे सहकारिता के किसान। उसने जरा भी परवाह नही की थी। लेकिन ग्रव तो उसकी पत्नी उसे नही चाहती। इन तमाम वर्षो मे एक वफादार कुत्ते की तरह लेनी उसके साथ रही है। चाहे उसने सही किया हो या गलत, लेकिन लेनी ने हमेशा उसका साथ दिया है। उसे उसके स्वभाव से कारण कष्ट भोगना पडा है। लेकिन हमेशा वार-वार उसे माफ किया है, जैसे कोई माँ ग्रपने वच्चो को क्षमा करती है। जव कि वह ग्रौरत, जो उसके साथ हमेशा रही है, जो कि उसके साथ रात मे सोई है, जिसका वह ग्रादी है शराब, हौली

और गायो की तरह, वह अब आगे उसका साथ देने से इन्कार कर रही है। बस, यही बात उसे परेशान कर रही थी। क्योकि कोई भी आदमी बिल्कुल अकेला होना बरदाश्त नही कर सकता, किसी का साथ न होना। मटके भी यह बरदाश्त नही कर सकता था। उसके बेतरतीब विचारो के बीच यह कठोर तथ्य सुस्पष्ट था कि वह अपनी पत्नी के बिना नही रह सकता।

वह देर तक वहाँ पडा रहा, यहाँ तक कि गोधूलि हो गयी। फिर उसने अपने कपडो पर छिटकी टहनियो को झाडा और वह नीचे घास के मैदान मे होता हुआ आल्टरनोड गया।

प्लैटो की ओर जाने वाली एक बस उधर आयी। वहाँ से हेलेन विट की कृपिशाला दो बस स्टापो के बाद ही थी। इसी हेलेन विट को अपने काम के लिए एक आदमी की जरूरत थी।

लेकिन वह उस बस पर नही गया। वह अपना चेहरा ऐसा विकृत बनाये हौलो मे अपनी बियर की ग्लास के ऊपर इस तरह झुका बैठा था कि किसी ने उससे बोलने की परवाह नही की।

लेकिन काफी रात हो जाने पर वह घास के मैदान से होता हुआ वापस आ गया, जहाँ कटी हुई सूखी घास की सुगधि फैली हुई थी। फिर वह पहाडी के ऊपर से स्कोलजेनब्रुएक वापस गया।

उसने अपने घर का किसी अजनबी की तरह चक्कर लगाया। क्योकि उसे भय था कि लेनी ने दरवाजे मे ताला लगा दिया होगा।

उस रात को वह ओसारे मे ही सो गया।

लेनी मटके सो न सकी। वह चाँदनी मे दीवार पर पडते खिडकी के फ्रेम के विकृत छापे को घूरती रही। ऐसी खामोशी छाई थी कि एलार्म

घडी की टिकटिकाहट पानी की बूंदो के गिरने जैसी आवाज कर रही थी। टप-टप वह सो न सकी।

वह विस्तरे मे उठी और टटोलती हुई अगले कमरे मे गयी। वच्चे गहरी नीद ने थे। उसने धीरे से वच्चे को उठा लिया, ताकि वह जग न जाय, और अपने विस्तरे पर ले आयी, ताकि वह उतनी अकेलीपन अनुभव न करे।

एलार्म घडी टिक-टिक करती रही और लेनी कानो को लगाये थी दरवाजे के खुलने की आवाज सुनने के लिए। लेकिन मटके वापस नही आया।

उसे वच्चे की गर्माहट महसूस हो रही थी। उसे उसके नन्हे पैरो का स्पर्श अपने शरीर पर अनुभव हो रहा था। आखिर उसे नीद पड गयी।

अगली सुवह किसी भी ग्रीष्मकालीन सुवह जैसी ही थी। मुर्गियाँ दरवे मे कुडकुडाती हुई दरवाजे से निकली और कूडे मे कुरेदने लगी। मुर्गा अपनी मुर्गी के चारो ओर चक्कर लगा रहा था। गडरिया अपनी भेड को मैदान की ओर हाँके लिए जा रहा था और विल्ली ने सुअर वाडे मे खिडकी के टूटे काँच के पास अँगडाई ली, जैसा कि वह हर सुवह करती थी, और आँख मलकाती हुई धूप की ओर देखने लगी। ओस से ताजी सुवह अतिरिक्त सुखद दिवस का सदेश दे रही थी। कटाई का मौसम।

जव मटके फाटक से होता हुआ वहाँ पहुँचा, तो जेगोश सेहन में अन्य लोगो के साथ खडा था।

जेगोश ने उसे तुरन्त देख लिया। वह उससे मिलने के लिए वढा,

फिर रुक कर मटके के आने की प्रतीक्षा करने लगा। ग्वाले मटके का चेहरा मलिन था, उसके गाल सामान्य से कही ज्यादा गद्देदार दिख रहे थे। वह फर्श के पत्थरो को उदास दृष्टि से घूर रहा था।

"मै सिर्फ पूछने के लिए आया था," उसने घरघराती आवाज मे कहा, और कोई भी यह अनुमान न लगा सका था कि इन शब्दो को कहते समय उस पर क्या गुजर रही थी, "मै बस यह पूछने आया था कि आज मुझे कहाँ काम करने जाना है ?"

"आओ," जेगोश बोला—"हम और लोगो के साथ ही चलेंगे।"

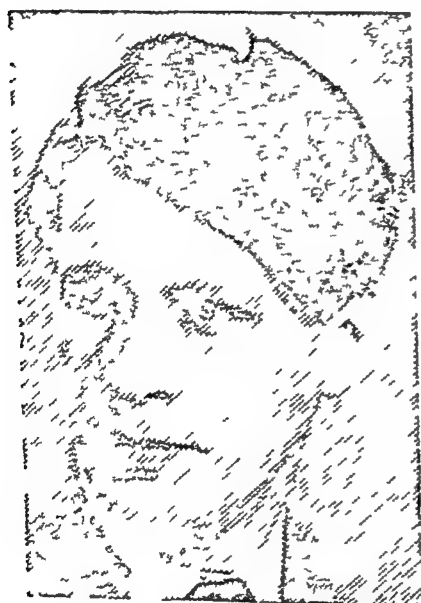


यातना शिविर कमान्डर

इस कहानी के लेखक

स्टीफेन हर्मलिन

प्रतिभा सम्पन्न गीतकार कवि हैं। सन् १९१५ ईसवी मे कार्ल मार्क्स स्टैट (तत्कालीन केमनिट्ज) में जन्म हुआ। कम्यूनिस्ट यूथ में सन् १९३१ ईसवी मे शामिल हुए और नाजियों की यातना से सन् १९३६ ईसवी में भागना पड़ा। स्पेन में



अन्तर्राष्ट्रीय टुकड़ो मे शामिल होने के पहले इजरायल, मिश्र और इंग्लैण्ड की यात्राएँ की। इसके बाद फ्रांसीसी संघर्ष में लड़े। सन् १९४५ ईसवी में जर्मनी लौटे। फ्रासीसी, अमरीकी और लैटिन अमरीकी रचयिताओं के काव्य और गद्य के अनुवाद सुप्रसिद्ध हैं। उनकी कृतियो में सम्मिलित हैं—"ट्वेल्थ बैले ऑफ दि विग टाउन्स" (सन् १९४४ ईसवी), "दि मैन्सफिल्ड ओ टोरियो" (सन् १९५० ईसवी) जो मैन्सफील्ड खदान मजदूरों पर एक गीति-नाट्य का पाठ है। "फ्लाइट ऑफ दि डोव" (सन् १९५२ ईसवी) और सन् १९६२ ईसवी में सेवेन सीज पुस्तक-माला के जर्मन रचनाकारों के अनुवाद के अन्तर्गत प्रकाशित "सिटी आन ए हिल"। प्राप्त पुरस्कारो में दो नेशनल पुरस्कार भी हैं जिनमें से एक सन् १९५० ईसवी मे और दूसरा सन् १९५४ ईसवी में प्रदान किया गया।



१७ जून, १९५३ को दोपहर के शीघ्र बाद ही दो व्यक्तियो ने साल्सटेड जेल की उस कोठरी मे प्रवेश किया जिसमे हेडविग वेबर नाम की एक स्त्री बन्द थी। यह पूछे जाने पर कि वह जेल मे क्यो थी, उस स्त्री ने बतलाया कि उसे मानवता के विरुद्ध अपराधो के लिए पन्द्रह वर्ष की सजा हुई थी।

"तुम ठीक वैसी ही हो जैसी की हमे जरूरत है।" उन्होने उत्तर दिया और उसे बतलाया कि वह रिहा कर दी गयी।

पिछली शाम को काफी देर मे सामने की कोठरी मे रह रही वेश्या और बाल हत्यारिनी रालमन ने उसे उस इशारे से खिडकी पर बुलाया था जो उनके बीच मे निश्चित हो चुका था। वेबर खिडकी पर आ गई थी, और उसने रालमन को फुसफुसा कर यह कहते सुना था कि नगर मे हडताल हो गई थी। वह और प्रश्न पूछना चाहती थी, लेकिन रालमन पहले ही अपनी खिडकी से खिसक गई थी।

उस दिन प्रात काल तडके जब वे सेहन मे कसरत कर रही थी तो उन्होने पहली बार गाने और चिल्लाने की मिली-जुली बेतरतीब आवाज सुनी थी। स्त्री वेबर धीरे-धीरे अनिच्छापूर्वक सोच रही थी, कि इस बार वे क्या मना रहे थे। उसने तारीख याद करने की बडी कोशिश की लेकिन असफल रही थी और तारीख से कुछ मतलब भी नही था।

उसने सोचा, क्योकि वे हमेशा उत्सव मनाने के लिए नये-नये बहाने खोज लेते थे। बाहर सेहन मे पुरुष कैदियो के सामने खडे-खडे उसने अनुभव किया कि उस दिन का वह मुक्तिकाल हमेशा से भी छोटा था।

एक या दो घटे बाद उसने पुन अनेक आवाजे सुनी थी हमेशा से कही अधिक निकट, तीखी और स्पष्ट किन्तु इतना स्पष्ट नही कि शब्द समझ मे आते। कुछ वर्ष पूर्व भी चोरी के अभियोग मे वेबर को चार महीने की सजा पा कर जेल मे रहना पडा था। लेकिन इस बार वह अपनी कोठरी की दीवार पर टँगे कैलेन्डर के हिसाब से अठाइसवाँ सप्ताह पार कर चुकी थी, जिसका मतलब था कि वहाँ वह इतने लम्बे अरसे तक रह चुकी थी कि जेल की सामान्य ध्वनियो की उसे चेतना ही न हो। जिस भाग मे स्त्रियाँ बन्द की जाती थी, वह सडक से कुछ पीछे था, जिस कारण बाहर से भेद कर आती हुई आवाजे हमेशा साफ-साफ समझ में नही आती थी। हॉलाकि इससे कुछ होता जाता नही था, उन आवाजो से केवल एक अनुमान या विचार क्रम मे कूद पडने का मिलता था, जैसे कोई एक चलती ट्रेन मे कूद पडे। इस सबध मे वहाँ कोई और कदम उठाने की आवश्यकता नही थी, क्योकि लोग अन्दर बन्द थे ही और हर चीज़ अपने आप वहाँ नही पहुँचती थी। उसके बाद वह अपने आप को सपने देखने मे लगा देती थी जोर-शोर से और उत्सुकतापूर्वक, किन्तु बिना किसी ध्येय या विश्वास के।

इस सबसे कोई परिवर्तन नही हुआ था उस सुबह भी नही—इस समय भी नही जब कि स्त्री रालमन ने उसे पुन खिडकी पर बुलाया था यह बताने के लिए कि उसने धुआँ देखा था। वेबर को कोई धुआँ नही दिखाई पडा था। और जगह धुआँ था भी तो क्या हुआ, उसने सोचा। कोमल दक्षिणी हवा बह रही थी और शायद सूर्य उसे धुयें को पम्प के कारखाने की चिमनियो से नीचे ढकेल रहा

था। एक धुआँ उसके अन्दर था ही। एक कुहासा उठ रहा था और उसके अन्दर जा रहा था। जहाज के सँकरे मार्ग पर पडते तेज कदमो की आहट और भीड की आवाजो से मिली-जुली नीचे से आती हल्के धक्के की ध्वनियाँ उसने सुनी। फिर उसने बहुत दूर से आयी एक चीख सुनी, जिसके प्रति उसके अन्दर अन्यमनस्कतापूर्ण प्रतिक्रिया हुई, क्योकि यह अमानवीय चीख जैसी थी जो केवल एक मानव प्राणी के मुँह से ही आ सकती थी।

कोठरियो मे अभी तक कोई आवाज नही हो रही थी। लेकिन लोग अब बाते करने लगे थे--जोर-जोर से, जल्दी-जल्दी तीखी हँसी के ठहाको के साथ। बातचीत की ध्वनि पैरो की आहटो और दरवाजो के खुलने और वन्द होने की आवाजो के साथ निकट आती जा रही थी। फिर सीखचे हटे और वेबर ने दो आदमियो को देखा। उनमे से एक, जिसने उससे यह प्रश्न किया था कि वह जेल मे क्यो थी, लम्बा, युवा और सुन्दर था। अधिक उम्र वाले व्यक्ति के सबध मे एक ही बात की ओर उसका ध्यान गया—उसके चेहरे के भाव की ओर। उत्तर देते समय दोनो की आँखे जरा देर के लिए मिली थी, वरना उसकी दृष्टि फिसल जाती थी बाल के बराबर की दूरी से। लेकिन उस जेसी दृष्टि वाले व्यक्ति पर भरोसा किया जा सकता था।

उसकी कोठरी के दरवाजे पर वे दोनो व्यक्ति खडे थे। वे चौकोर टोपियाँ और धूप के चश्मे पहने हुए थे और वह उनके पीछे सीढी पर दौडते कैदियो को देख रही थी। उसने ऊपर की मजिल पर इग ग्रूएट्-जनर को पहचान लिया। इग ने उन दोनो व्यक्तियो के सिर के ऊपर से प्रसन्नतापूर्वक उसकी ओर हाथ हिलाया और गायव हो गया। वेवर को विश्वास करने की इच्छा की एक लहर की अनुभूति हुई और विश्वास करने की असमर्थता भी उसके अन्दर तरगित हुई। वह कुहासा, जो

बाहर फैल रहा था और जो उसके अन्दर घुस रहा था, उसे चीख पड़ने गरज उठने तथा चीज़े तोड-फोड डालने की भयानक और गडबड इच्छा से परिप्लावित कर रहा था।

उस व्यक्ति ने उसे बताया कि बर्लिन मे और हर जगह बडी-बडी घटनाएँ घटित हो रही थी, सरकार का तख्ता पलट दिया गया था, साम्यवादी शासन गडबडी मे पड गया था और अमरीकी आ रहे थे।

'और रूसी लोग ?"

"रूसी लोग उल्ब्रिख्त के कारण युद्ध न छेडेगे।" सुन्दर युवक ने कहा और वह दीवार की ओर घूरता हुआ इस तरह सीटी बजाने लगा जैसे हर प्रकार की दिलचस्प चीज़े वहाँ दिख रही हो।

"रूसी पीछे वीकसेल मे हट जायेगे।"

"हमे तुम जैसे लोगो की ही जरूरत है" अधिक उम्र वाले व्यक्ति ने कहा—"तुम्हे साल्सटेड कमान्ड स्टाफ मे शामिल हो जाना चाहिए। मै उन लोगो की कल्पना कर सकता हूँ जो हमारे ऊपर चढ आयेगे। हमे इस काम के लिए अनुभव प्राप्त और विश्वास वाले आदमियो की जरूरत है।"

"क्या यह वास्तव मे सच है ? क्या मै सचमुच मुक्त हूँ ?" स्त्री वेबर ने उस कुहासे के अन्दर से पूछा, जो अभी भी उसे घेरे हुए था।

गलियारे और सडक पर हो रही आवाजो को उसने सुना, और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह एकाएक कोई अर्द्धविस्मृत सगीत सुन रही हो—बैडो के धम्म-धम्म के ऊपर बीन के तीखे स्वर जिन्होने उसके बाद होने वाले मार्च की आवाज प्रस्तुत की, फिर उस मार्च के साथ जुडा हुआ बेतरतीब गरजन "जय-जय !" गुजरित होने लगा, और वह मार्च एक सडक से दूसरे सडक पर गुजरने लगा।

इस क्षण वह उस कुहासे से वाहर निकल आयी, जो उसे ढँके हुये था। उसे साफ-साफ और बिल्कुल उदासीन भाव से उस कोठरी में व्यतीत किये गये वे सात महीने स्मरण आ रहे थे, जहाँ उसे पन्द्रह वर्ष व्यतीत करने चाहिये थे। उसे उन सात महीनो के पहले के सात वर्षो की भी याद आ रही थी—उन तमाम लोगो के जो कभी उसके अधीन थे और अब ऊपर वैठे उसकी ओर देख रहे थे और अपने समाचार-पत्रो, झडो, प्रतियोगिताओ और नारो के साथ सरकारी दफ्तरो मे आसीन नये लोगो के भी भय, छल, निराशा और अकथनीय घृणा से भरे हुये सात वर्ष। यह पूरा काल उन असीमित खतरो का एक लम्बा दु स्वप्न था, जिन्हे प्रभावित करने के लिए उसके पास कोई शक्ति नही थी, जिनसे वह इसलिये बच नही सकी थी कि उसके अन्दर कोई चीज भाग निकलने या परिवर्तन की सम्भावना पर विश्वास नही करने देती थी। उसने पुराने मित्रो को खोजा नही था। एक मित्र के घर पर, जो उसकी वास्तविक पहचान से अवगत नही था, उसने लापता व्यक्तियो के वारे मे रेडियो पर पश्चिमी बर्लिन से प्रसारित हो रही पूछ-ताँछ सुनी थी। एक दिन उसने अपना नाम भी सुना था—

'हेडविग वेबर की खोज की जा रही है, जो एक दफ़्तर मे काम करती है और जो आखिरी बार मार्च १९४५ मे फ्यूएर्सटेनबर्ग मे देखी गई थी।'

उसने लगभग अपना भेद खोल दिया था। उनके द्वारा फ्यूएर्सटेनबर्ग कहा जाना चतुराईपूर्ण ही था, क्योकि वह स्थान रावेन्सव्रुएक यातना शिविर से वहुत दूर नही था।

बार-बार वह कारखानो मे काम करना शुरू कर देती थी, लेकिन हर बार वह काम से और लोगो से ऊव जाती थी। हेल्गा श्मिट नाम से बनाये गये उसके जाली परिचय-पत्रो ने उसे एक ऐसे भूतकाल से आवद्ध

कर दिया था, जो हजार ढग से उससे भिन्न था और जिसके बारे मे वह कुछ भी नही जानती थी। समय गुजारने के लिए उसने अनेक लोगो से सबध किया था। मैजबर्ग मे वह एक ऐसे व्यक्ति से परिचित हुई थी जो उसे ओवर्सचार्फ़्यूहरर वॉरिन्गर की याद दिलाया था, जिसके साथ रावेन्सब्रुएक मे उसका सबध रहा था।

ताँबे के तार का एक लच्छा चुराने पर उसे जब चार महीने कैद की सजा हुई थी, तो उसने पहली बार सुरक्षित अनुभव किया था, क्योकि वह जानती थी कि कैदी शिमट पर खास ध्यान देने की जहमत कोई न उठायेगा, कोई भी उससे अटपटे प्रश्न नही पूछेगा, और आगे उसे इस बात से डरने की कोई जरूरत न रहेगी कि सडक पर कोई उसे पहचान लेगा। उसके बाद उसे हेनोवर से अपने पिता का एक पत्र मिला था, जिसमे उसे यह बतलाया गया था कि वहाँ अब कोई भी ऐसी बातो के सबध मे चिन्ता नही करता था। इसके विपरीत जब उन्होने न्याय-पालिका मे नौकरी के लिए आवेदन-पत्र दिया तो रीच सुरक्षा कार्यालय मे उनकी पहले की नौकरी ने सिफारिश का ही काम किया था। वह शिकायत नही कर सकता, उसने लिखा था, लेकिन उसे उनके पास आने के पहले अभी कुछ प्रतीक्षा करनी पडेगी क्योकि उन्हे अभी भी नया कमरा पाने मे परेशानी हो रही थी।

वह नीली कमीजो वाले लोगो, घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करने, सस्कृति, प्रधान विभागो और अवकाश गृहो के सारे कार्यो, लारियो मे घूमने वाली जनवादी पुलीस, और कुछ पहनने के लिए खोजने और फिर भी कुछ न पाने के उस विपाक्त जीवन से जल्द ही बिल्कुल ऊब गई थी। और इस सब के ऊपर वह सडको पर सावधान रहने और काफेयो मे अपनी ओर दूसरो का ध्यान न आकर्षित करने और यथासम्भव केवल चेहरे के अर्द्धांश को ही प्रकट करने से थक गई थी। वह इस सब से इस तरह ऊब

गई थी कि उसने हेनोवर की ट्रेन पकड लेने की बात गम्भीरतापूर्वक सोच डाली थी, हालाँकि यहाँ की अपेक्षा, जहाँ उसके होने की कोई भी आशा नही कर सकता था, वहाँ उसके खोज निकाले जाने का ख़तरा कही अधिक था।

लेकिन तभी यहाँ वह घटना हो गई थी जिसकी वह कल्पना कर चुकी थी, जिसके बारे मे वह हजारो बार सोच चुकी थी और जिसे वह असम्भव समझ रही थी—पहले के एक कैदी ने उसे यहाँ साल्सटेड मे सडक पर उस समय पहचान लिया जब वह एक दूकान से निकल रही थी। वह गिरफ्तार हो गई थी और उसे पन्द्रह वर्ष के एकाकी कारा-वास की सजा हो गई थी। .

तो दुःस्वप्न हमेशा नही रहते, स्त्री वेबर ने अब सोचा। जो बात पहले सब से ऊपर थी वह फिर सब से ऊपर हो जायगी। यह तो होना ही था। जब उसने अपने को एक विशिष्ट मुद्रा मे पाया तो उसे मुस्क-राना ही पडा—उसका हाथ एक हरकत कर रहा था और सम्भवतः कुछ समय से ऐसा कर रहा था, एक दीर्घ सुपरिचित हरकत—चमडे के एक काल्पनिक जूते के ऊपर एक काल्पनिक चाबुक दनकार रहा था।

"तुम ब्ल्यूमलीन पर भरोसा कर सकती हो," कोठरी के दरवाजे पर खडा सुन्दर युवा व्यक्ति कह रहा था—"ये सब जानते है। ये अभी कल ही जेहलेन्डार्फ मे थे। ये घास के बढने की आवाज भी सुन सकते है। इसी से इन्हे ब्ल्यूमलीन यानी नन्हा फूल कहा जाता है।"

"लगता है कि हम सभी एक दूसरे पर भरोसा कर सकते है," ब्ल्यूमलिन कहे जाने वाले व्यक्ति ने नम्रतापूर्वक कहा—"लेकिन पहली बात तो यह है कि तुम्हे दूसरे कपडे लेने पडेगे। इस तरह तो तुम पर बहुत जल्दी ध्यान आकर्षित होता है। खैर, तुम सरकारी दूकानो से

कुछ सामान ले सकती हो। उनके लिए आज तुम्हे वहाँ कुछ पैसे भी नही देने पडेगे।"

वह एक ओर बगल हो कर खडा हो गया, ताकि वेबर पहले कोठरी से निकले।

हल्के रग के बालो वाली गौरवर्णा हँसमुख महिला सन्तरी मच से ऊपर वाली सीढी पर पडी हुई थी। उसका चेहरा कुचला हुआ था, किन्तु अभी भी उसकी साँस चल रही थी।

"यह निश्चय ही सब से ज्यादा यातना देने वालियो मे से एक थी," सुन्दर युवा व्यक्ति ने उस समय कहा जब वे उसके पास से गुजर रहे थे।

वेबर को कभी भी यातना नही मिली थी। साल्सटेड के जेल में किसी को भी यातनाएँ नही दी गई थी। यह कुछ ऐसी बात थी, जो वेबर कभी भी समझ नही पाई थी। लेकिन अब क्यो? फिर उसने कहा, "क्या वह नही "

और उसने देखा कि किस तरह ब्ल्यूमलीन ने उसके ऊपर तेजी सी दृष्टि डाली। वह एक भी मांसपेशी हिलाये विना मुस्करा सकता था। उसकी दृष्टि यह कहती प्रतीत हुई, हर एक दूसरे को समझ रहे है।

वेबर को आरामदेह सुरक्षा की अनुभूति हुई। जेल अब लगभग खाली हो गया था। किसी ने रेडियो को पूरी तेजी से खोल दिया था।

"इस समय रेडियो के पास बैठना अच्छा लगेगा," ब्ल्यूमलीन ने कहा—"रियास रेडियो दिन भर विशेष सदेश प्रसारित करता रहता था।"

श्री वेबर को स्मरण हो आया कि पेरिस, स्मोलेस्क, सिम्फेरोपोल और अन्य सभी स्थानो पर कब्जा होने पर किस तरह उत्सव मनाये गये थे।

उस बारे मे न सोचना ही बेहतर होगा, उसने अपने आप से कहा।

जो कुछ उसके साथ घटित हुआ था, वह सब कुछ किसी को बतला देने की प्रेरणा उसे अनुभव हो रही थी। लेकिन उसे किसी भी ऐसे व्यक्ति की याद नही आयी। वरिन्गर इसके लिए उपयुक्त व्यक्ति होता, लेकिन वह एक स्वप्न की तरह विलीन हो गया था। उसने सुना था कि वह अर्जेन्टाइन मे था। फिर उसने हेनोवर मे रह रहे अपने पिता के बारे मे सोचा।

"एक मिनट रूकिये। मैं एक पत्र लिखना चाहती हूँ।"

वे तीनो सन्तरी-बक्स जैसे एक कैबिन मे प्रविष्ट हुये, जिसका दरवाजा अपने कब्जो पर घूम गया। वहाँ बिना पीठ की एक उल्टी पडी कुर्सी के वगल मे मेज पर एक टाइपराइटर रखा था। खिडकी के खुले फ्रेम के अन्दर से गर्म हवा अन्दर आयी। उस फ्रेम मे शीशे का एक टूटा टुकडा अभी भी अटका हुआ था। वेवर ने एक ढेर मे से कागज का एक पन्ना निकाला। दराज मे उसे एक पेन्सिल भी मिल गयी। मेज पर आधी बैठ कर वह जल्दी-जल्दी लिखने लगी—

'प्रिय पिताजी,

यह हो ही गया। पूर्व को आखिर कभी-न-कभी स्वतत्र होना ही था। हम शीघ्र ही अपने गुप्तचरो वाले प्यारे लिबास पहन सकेंगे। फिर ऐसा समय भी आयेगा जब मुझे राजनीतिक विभाग या गेस्टैपो मे पुन. काम करना पडेगा। जब तक झडा पुन. फहरा नही जाता, तब तक के लिए भले मित्रो ने मुझे अपने आश्रय मे ले लिया है। अब ज्यादा देर न होगी।

आपकी हेडी।'

उसने लिफाफा खोजा, जो उसे नही मिला। 'मै लिफाफा बाद में प्राप्त कर लूँगी,' उसने सोचा और पत्र जेब में डाल लिया।

दिन की रोशनी ने उसे चौंधिया दिया। उसने यह आशा नहीं की थी कि सडक इतनी खाली रहेगी। फाटक के इर्द-गिर्द बैठे कुछ लोगो ने उसे वहाँ से जाते देखा। आकस्मिक बौछार के बाद पानी के बहने की तरह शोर-गुल दब गया था। हर जगह सूनापन और गर्मी थी, और उसे लगा कि जैसे वह इस शून्य स्थान और गर्म वायु मे तैर रही हो—गर्मी के कारण असमय हीं सूख कर झर गई पत्तियो से कौंधा करती वायु मे। लोगो के एक गुट ने मर्सबर्गर स्ट्रास के कोने पर बियर से लदी एक-एक गाडी को रोक लिया था। दो व्यक्ति पीपो को उतार रहे थे और अन्य लोग वहाँ खडे या राह चलते लोगो को बोतले बाँट रहे थे।

वास्कट और बिना कालर वाली कमीज पहने एक वृद्धि व्यक्ति ने अपनी पसीने से तर टोपी उतार ली। स्त्री वेबर की ओर अपनी परेशान और थकी आँखो से देखते हुये उसने कहा—"आओ, तुम भी एक बोतल ले लो। इस सब के लिए पैसा अमरीकन लोग देगे।"

लाउडस्पीकर वाली एक छोटी सी कार धीरे-धीरे सडक से गुजर गयी, जो साल्सटेड निवासियो को बाजार की चौक के खुले मैदान मे छह बजे होने वाली एक सभा मे आने का अनुरोध कर रही थी। वेबर ने सिर पर रूमाल बाँधे एक व्यक्ति को देखा, जो अपने मकान के आगे बाग मे फूलो की एक छोटी सी क्यारी मे खोद-खाद कर रहा था। जब लाउडस्पीकर वाली कार गुजर रही थी तो उसने एक व्यक्ति को खिडकी बन्द करते हुए भी देखा। उसने स्वय को अपना अदृश्य चाबुक पुन दनकारते पाया। एकाएक उसकी इच्छा हुई, कि वे लोग उसके सामने अपने-अपने घरो मे, बगीचो मे और जगह मौजूद होते, ताकि वह उनके चेहरो पर वही भाव प्रगट करवा सकती जो रावेन्सब्रु्एक यातना शिविर के परेड के मैदान मे स्त्रियो के चेहरो पर दिखते थे।

जब वे फेल्ड स्ट्रास मे मुडे तो उन्होने टूटी खिडकियो वाले एक

मकान और उसके सामने तुडे-मुडे और अदृश्य लपटो से काले हो गए कागज के एक विशाल ढेर को देखा। दो या तीन व्यक्ति आग को सुलगा रहे थे जो इस मकान की दीवारो की ओर काली लपटे फेक रही थी। आवाज करता हुआ दूसरी मजिल पर स्थित एक खिडकी के फडफडाते पर्दो मे से विलम्ब से फेका गया एक पोर्टफोलियो सडक पर आ कर गिरा। नीचे वाली मजिल पर किताब की दूकान खुली पडी थी। उसकी आलमारियो मे किताबे उलटने-पलटने के कारण बेतरतीबी से पडी थी।

सुन्दर युवा व्यक्ति ने एक ढेर की सब से ऊपर वाली एक किताब झटके से उठा ली। किताबो का वह ढेर बढिया कमीज पहने एक युवक सडक पर ले जा रहा था। उसने उस पुस्तक के शीर्षक पर दृष्टि डाली और कहा, "चेकॉफ.. इवानो पर दूसरी पुस्तक। यह भी फेकी जा सकती है।"

जब लपटे किताब के इर्द-गिर्द फैलने लगी, तो वे खडे हो कर क्षण भर देखते रहे।

कमान्ड स्टाफ तीसरी मजिल पर फ्लैटो के एक समूह मे स्थापित किया गया था। वेवर को एक खाली कमरे मे कई मिनटो तक प्रतीक्षा करते रहने के लिए छोड दिया गया। फिर ब्ल्यूमलीन उसे उस कमरे मे लिवा ले गया जिसमे अन्य लोग बैठे हुए थे। छह-सात व्यक्ति थे और वह उनमे से किसी को भी नही जानती थी। उन्होने उससे रावेन्स ब्रुएक और अनेक अन्य चीजो के बारे मे प्रश्न किये। चौडे ऊँचे माथे और भारी पुतलियो वाला लम्बा सा एक व्यक्ति और ब्ल्यूमलीन वहाँ सब से अधिक महत्वपूर्ण लोग प्रतीत हो रहे थे। वह उन दोनो की वर्दीपोशो के रूप मे कल्पना कर सकती थी।

बाद मे उसने खाने के लिए कुछ माँगा और गुसलखाने मे जा कर अपने कपडे बदले। जब वह नहा रही थी, तो उसने सडक पर किसी

चीख़ की गरजन और खड़खडाहट सुनी। उसने ढकेल कर खिडकी खोली और उसकी आँखो ने सोवियत टैंको की एक छोटी-सी कतार देखी। उसे अपने गले मे सूखापन महसूस हुआ। यहाँ ऊपर से वह छतो को देख पा रही थी और यहाँ तक कि नदी की एक झलक भी मिली, क्योकि वह कस्बा बाजार के चौक से नदी की ओर ढाल पर बसा हुआ था। वहाँ सडक पर लोग दिख रहे थे, और वह उन्हे साथ-साथ चलते स्पष्ट देख सकती थी। बच्चो की गाडियाँ स्त्रियाँ इस तरह इत्मीनान से चला रही थी, जैसे वह रविवार का दिन हो। वहाँ अनेक पियक्कड़ भी थे, जिनकी दूर से आती चिल्ल-पों पतली हो कर सुनाई पड रही थी। और इन सब आवाजो के बीच से खुली कोनिंग मीनारो के अन्दर से दिख रहे कमान्डरो के सिरो के साथ टैंक अन्यमनस्कतापूर्वक और लगातार सडक पर खड़खडा रहे थे और कोने पर जजीर की एक चीख़ के साथ गायब हो जाते थे।

स्त्री वेबर तेजी से कमरे मे वापस चली गयी। लोग आते-जाते रहे—कुछ आत्म-विश्वास के साथ, और कुछ सिर झुकाये तथा आँखें इधर-उधर नचाते हुए। किसी ने खबर दी कि वे पम्प के कारखाने मे हडताल जारी रखवाने मे सफल नही रहे। श्रमिको ने डडे ले कर उन्हे कारखाने की जमीन से बाहर निकाल दिया था।

"तुम्हे लाल दल का ख्याल करना है," ऊँचे माथे वाले व्यक्ति ने उससे कहा। उसे एक कोने मे लिवा ले जा कर उसने आगे कहा—"घबराने की कोई बात नही है, पार्टी कामरेड .."

वह कुछ फुसफुसा कर बोला और मुस्करा पडा।

"बस, एक बात याद रखना। यहाँ हमारा हर प्रकार के लोगो से साबका पडता है, जो हमें ठीक नही समझते या हमे अपने रास्ते से दूर

करना चाहते हैं। हम बिल्कुल अकेले नही है, यह समझ लो। अभी भी नारा यही है 'कानूनी ढग से ताकत हथियाओ।' हम अभी इसके परे नही गये है। अमेरिकनो ने आग मे और लोहे भी डाल रखे है। इसलिये हमे इन उदारवादियो और इस प्रकार के लोगो के लिए कुछ गुजाइश रखनी है।"

ब्ल्यूमलीन भी उनके पास आ गया।

"हाँ तो, चीफ, आप इन्हे सक्षिप्त नाजी प्रशिक्षण दे रहे है ?"

"मैं तुम से यह सब इसलिये कह रहा हूँ, कि तुम्हे आज शाम को राजनीतिक कैदियो की तरफ से भाषण देना है," ऊँचे माथे वाले व्यक्ति ने अपनी बात जारी रखी—"तुम नली को सख्ती से दबा सकती हो, लेकिन वह नली हमेशा ठीक नली ही होनी चाहिये।"

वेबर ने सोवियत टैंको के बारे मे पूछा। रूसी लोगो के पीछे हटने की बात का क्या हो रहा था, इस सबध मे भी उसने प्रश्न किये।

"यह हम वक्त आने पर तय करेंगे। हमने जनवादी पुलीस का सफाया कर दिया है। वे खत्म हो चुके है। उन्होने गोली तक नही चलाई। रूसी लोग भी हार मान लेगे।"

जो लोग हमारा नेतृत्व कर रहे है उनके साथ चल कर हमारा विजयी होना निश्चित है, वेबर ने सोचा।

क्षण भर बाद ही वह अनन्त मार्चो, विशिष्ट सूचनाओ, गरजते व खुशी मनाते लाउडस्पीकरो से पूर्ण भविष्य की कल्पना करने लगी। उसने अपने मस्तिष्क की आँखो से देखा नागरिको की एक भीड के द्वारा ईर्ष्या और सम्मान से देखी जा रही रग-बिरगी वर्दी पहने चुस्त कतार, सब से ऊपर की खिडकियो से नीचे करीब-करीब सडक तक लटकते लम्बे

झडो और स्वय बिल्कुल सफेद पोशाक पहने पथा काले वस्त्रो से विभूषित वरिगर को विवाह-रजिस्ट्री कार्यालय मे प्रविष्ट होते हुए। एक अथा उमडता उन्माद उस पर हावी हो गया, और वह कमरा, बातचीत एव उसके चारो ओर हो रही आवाजे समाप्त हो गयी। उसने पुन. अपने को काम करते हुए देखा। दीर्घ-नियोजित, सतर्कतापूर्वक बॉटा गया, काम विचारपूर्ण और उपयोगी कार्य, खोज एव परीक्षण और बाद मे पुनः रावेन्स ब्रुएक—यह सब कुछ उसके लिए व्यवस्थित और अर्थपूर्ण था। लेकिन तब आप हमे ठीक-ठीक नही समझ सके थे, उसने सोचा। अगले बार आप वास्तव मे समझ जाएँगे कि हम किस तरह के है। पहला तो प्रयत्न मात्र ही था।

दो-दो तीन-तीन व्यक्तियो की टोलियाँ बाजार मे चली जा रही थी। अन्य लोग खिडकियो से बाहर की ओर झुके हुए थे और सभा की ओर जा रही भीड को देख रहे थे। लोग इत्मीनान से चल रहे थे बातचीत करते हुए और रह-रह कर सैनिक कमान्डर द्वारा प्रचारित सकटकालीन स्थिति की घोषणा करती चिपकी नोटिसो को पढने के लिए रुक जाते थे।

एक लुटी हुई दूकान के सामने खडी एक खामोश टोली के पास से गुजरते हुए वेवर ने एक आदमी को कहते हुए सुना—"यह हमारा पैसा था जो बरबाद कर दिया गया। जनता की भीड-भाड "

और एक आवाज ने तेज-तीखे स्वर मे कडाई से उत्तर दिया—"लकडी काटते समय चैलियाँ हमेशा निकलती है।"

वह व्यक्ति क्रोध से घूम गया, लेकिन उसने जो कुछ कहा उसे वह सुन नही सकी।

बाजार के प्रवेश-द्वार पर उन्हे पहला टैंक मिला। मुडे सिर वाला

एक छोटा-सा सैनिक दीवार से टिका अपने लिए एक सिगरेट तैयार कर रहा था। वेबर के सामने एक स्त्री ने नाटकीयतापूर्वक उसके पैर पर थूक दिया। उस छोटे-से सैनिक ने आश्चर्य से उसे देखा और अपना माथा उँगली से थपथपाया। कोई व्यक्ति सकोचपूर्वक हँस पड़ा।

सन्त मेरी के गिरजाघर के पीछे वक्ता का मच बनाया गया था और किसी ने उसके पीछे एक सफेद पर्दा टॉग दिया था जिस पर शब्द 'आजादी' पेन्ट किया हुआ था। स्त्री वेबर ने मच और नारे के सिवाय और कुछ भी नही देखा। वह बाजार की चौक मे हर ओर खडे टैको के प्रति सजग भर थी। चौक मे तेजी से बढ रही भीड की भी उसे कोई चिन्ता नही थी। रूसियो ने उस सभा के लिए अनुमति दे दी थी। 'किया तो अच्छा,' उसने सोचा—'लेकिन वे जल्द ही इसके लिए अफसोस करेंगे।' उसके मस्तिष्क मे घटियो की बेतरतीब टनटनाहट, परेड के मैदान मे चिल्ला-चिल्ला कर दिये जा रहे आदेश गुजरित हो रहे थे—एक जमा हुआ उन्माद जिनके बीच वह उन प्रमुख विचारो को मस्तिष्क मे रखने का प्रयास कर रही थी जो ऊँचे माथे वाले व्यक्ति ने उसके सामने प्रगट किये थे। उसने ब्ल्यूमलीन को सभा का आरम्भ करते हुए और किसी से बोलने का अनुरोध करते सुना। और कुछ देर बाद ही उसने सुना—

"और अब आप साम्यवादी यातना की एक शिकार और भूतपूर्व राजनीतिक कैदी हेल्गा श्मिट को सुनेगे।"

उसे यह समझने मे चन्द सेकण्ड लग गये कि यह उसका ही उल्लेख था। 'लेकिन शायद यह अच्छी बात थी कि उन्होने उस नाम का पुनः प्रयोग किया था,' उसने सोचा। फिर उसने एक पुरानी, अर्द्ध-विस्मृत आवाज सुनी—स्वय अपनी ही आवाज·

"वालक्सजेनॉसेन. ."

यदि उसने कोई दूसरा सम्बोधन इस्तेमाल किया होता, तो बेहतर होता। लेकिन उसके बाद उसने कोई गलती नही की। भाषण देना उसके लिए ऐसा आसान साबित हुआ, जैसे सारी जिन्दगी इस काम के सिवा और कुछ किया ही न हो। उसने कहा कि युद्धोत्तर काल के दौरान दीर्घ उत्पीडन, मध्य जर्मनी की जनता का पूरी तरह आतंकित किया जाना—इन तथ्यो ने सच्चाई प्रगट कर दी थी। लोग यहाँ वास्तव में जान गये कि आजादी और मानव-गौरव का अर्थ क्या होता है—विशेष-कर राजनैतिक कैदी। इस शासन के अन्तर्गत जेल तथा दैनिक जीवन मे, जिसकी प्रमुख विशेषताएँ भूख और दुख हैं, पश्चिम से एक अटूट एकता विकसित हुई है, जिसने पश्चिम के लिए यह एक कर्त्तव्य बना दिया है कि वह न्याय और स्वतत्रता के लिए बेचैन यहाँ की एक करोड़ अस्सी लाख जनता को स्वतत्र करे—यह मुक्ति कार्य इस समय सम्पन्न हो रहा है।

वह भीड उसकी आँखो के सम्मुख गर्द भरी पटरी की पहियो के बीच परिवर्तनशील रगीन छलको मे घुल गयी। तुम्हे इसके लिए भी भुगतान करना पडेगा, उसने सोचा, इसलिए कि हमे तुमसे इस तरह निपटना पड रहा है। उसे अनुभूति हुई, जैसे कोई उसे विशेष तरीके से देख रहा हो। उसने अपनी दृष्टि गन्दा सूट पहने बिना दाढी बने चेहरे वाले एक नाटे वृद्ध पर जमा दी, जो उसे पीली, चिन्ताकुल आँखो से घूर रहा था। उसने एक या दो बार ताली बजाई थी, एक या दो बार सिर हिलाया था। रह-रह कर कही-कही तालियाँ बज जाती थी—हिच-किचाहटपूर्ण, बेतरतीब तालियाँ जो कभी-कभी तो गलत मौके पर बजती थी।

अब वह उस गन्दे वृद्ध से बोलने लगी थी, जैसे वही उसका एक-मात्र श्रोता हो। जो हो, तुम हो कौन ? उसने सोचा। अभी तो तुम

ताली वजा रहे हो, लेकिन जव वला सिर पर आयेगी, तो तुम कोई मदद न कर सकोगे। तुम लोग कौन हो ? तुम सभी लोग न्यूनाधिक देश-द्रोही और पराजित हो। तुमने हमारा युद्ध हरवा दिया, इसलिए कि तुम हिटलर या नये योरप के वजाय सिर्फ अपने ही पेट भरने और केवल अपने ही घरो की वात सोच रहे थे। और जव अन्त आया तो तुम हम से ऊव गये और तुमने अपने आपको साम्यवादियो और वोल्शेविको की वाहो के हवाले कर दिया। अधिक-से-अधिक तुम उस चूने के समान हो, जिसकी हमे विशाल जर्मनी का निर्माण करने के लिए आवश्यकता है। और पिछली वार तुम वडे रद्दी चूना सावित हुये। अव तुम लोग हमे अपनी नन्ही उँगलियाँ थमा रहे हो, वेवकूफो, लेकिन हम तुम्हारा पूरा हाथ ही नही वल्कि वाकी शरीर भी ले लेगे और तुम सव को चक्की मे पीस कर धर देगे।

जोर से उसने कहा—"कयामत का दिन आ रहा है। लाल अत्याचारियो का शुभकाल वीता जा रहा है। अव तो ये टैंक ही उनकी रक्षा कर रहे है। तैयार हो जाओ और फिर उन्हे गोलियो और रस्सियो से उनके घर का रास्ता दिखला दो।"

वह एक कदम पीछे हटी। भीड छँटने लगी। वह वृद्ध पीछे देखे विना चला गया। टोलियाँ पास की सडको की ओर जाने लगी। पास ही उसने किसी को धन्यवाद का एक भजन गम्भीर स्वर मे गाते सुना। और भी पीछे चन्द लोग हार्स्ट वेसेल गीत गा रहे थे। गाने वालो पर कुछ लोग हमला करते उसे दिखाई दिये।

"वे पम्प के कारखाने के है," किसी ने चिल्ला कर कहा।

लेकिन तभी चौक गरजने और डोलने-सा लगा। टैंक चालको ने अपनी मोटरे चालू कर के भीड मे भगदड मचा दी थी और अपनी विशाल मशीनो पर झुक कर हँस रहे थे। टैंक निश्चल खडे थे, केवल उनके

मोटर ही चल रहे थे। स्त्री वेबर मंच से नीचे उतर आयी। उसके सामने के लोग एक ओर बगल हट गये और तब उसकी समझ में आया कि सभा समाप्त हो गयी थी। उसने ऊँचे माथे वाले व्यक्ति, ब्ल्यूमन्थाल, उस सुन्दर युवा व्यक्ति या किसी अन्य परिचित को खोजने के लिए चारों ओर दृष्टि दौड़ायी।

वह फेल्ड स्ट्रास की ओर कुछ कदम बढ़ी। फिर उसने अपने खटक वाले कोट पहने दो युवा व्यक्तियों के बीच में पाया, जिनमें से एक झुक कर टैंकों की गरजन के ऊपर उसके कान में चीखा—"हेडविग वेबर? हमारे साथ चलिये, प्लीज़?"

उसने भागने या मदद के लिए आवाज़ देने का कोई प्रयास नहीं किया। कोई भी उसकी बात न सुन पाता, कोई उसकी ओर ध्यान ही नहीं दे रहा था। सब-कुछ बिजली की कौंध की रफ्तार से इतनी जल्दी घटित हो गया कि वह सब वास्तविक प्रतीत ही नहीं हो रहा था।

यह अन्त नहीं हो सकता।

हो सकता है कि वे मुझे आज रात फाँसी दे दें, उसने सोचा।

तीन दिन बाद वह कैदियों के कटघरे में खड़ी थी। मुकदमा शुरू होने की एक रात पहले उसने सपना देखा था। घंटियों की भयंकर टनटनाहट से वायु प्रतिध्वनित हो रही थी, गरजन और चीखें सड़क पर व्याप्त थीं, खिड़कियों से हज़ारों निर्दय पैरों की धम्म-धम्म सुनी जा सकती थी, फौजी भूरी और खाकी आकृतियों की एक लम्बी फौज रेंगती हुई सारे नगर में फैली जा रही थी। उसकी कोठरी का दरवाज़ा खुला और उसके पिता काली वर्दी में अपने सिर पर लगी मृत्यु की टोपी के साथ प्रगट हुए।

"आओ, हेडी, फ्यूहरर नीचे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे है," उन्होने कहा।

उसने अदालत मे किसी चीज से इन्कार नही किया, क्योकि इन्कार करने को कुछ था ही नही। दो वर्षो तक वह रावेन्सब्रुएक यातना शिविर मे कमान्डर रही थी। उसके पहले उसने गेस्टैपो का काम भी किया था। यह पूछे जाने पर कि उसकी आज्ञा से कितने कैदियो की हत्या की गयी थी, उसने उत्तर दिया कि उसकी सख्या अस्सी-नव्वे से ज्यादा न होगी। हाँ, उसने स्वय कैदियो के साथ दुर्व्यवहार किया, उन्हे पैर से ठोकरे मारी थी, कोडे मारे थे और शिकारी कुत्ते उन पर छोड दिये थे। यह सब उसे सात महीने पहले भी स्वीकार करना पडा था, जब उसे पन्द्रह वर्ष के एकान्त कारावास की सजा दी गयी थी। वह समझ रही थी कि अब उससे वह सब फिर क्यो स्वीकार कराया जा रहा था। अदालत खचाखच भरी हुई थी और वहाँ अनेक ऐसे लोग भी जरूर रहे होगे जिन्होने बाजार की चौक मे उसे बोलते सुना होगा। उसका भाषण पूरा-का-पूरा पढ़ा गया। उसका जामातलाशी मे जो पत्र मिला था, वह भी पढा गया।

जब तक मुकदमे की शुरुआत नही हुई थी तब तक उसमे इस आशा की बराबर घटती जा रही एक हल्की चमक मौजूद थी कि वह मुकदमा कभी होगा ही नही—कि लाल शासन अन्त मे पलट दिया जायगा। सभवत अमरीकी सचमुच आ जायँगे, क्योकि उन्होने बहुत पहले ही यह समझ लिया था कि उन्हे हिटलर की ओर से युद्ध मे लडना चाहिए था। और फिर वह मुक्त हो जायगी।

सफाई पक्ष, अभियोग पक्ष या कोई गवाह के खडे होने पर जब उसे बैठने की अनुमति मिलती, तो वह कल्पनाओ और मौन कोसनो के सोते मे डूबने-उतराने लगती। वहाँ चल रही बातचीत मे उसे कोई दिलचस्पी

नहीं थी। जब हम रूसियों, फ्रांसीसियों और अन्य सभी बदमाशों से निपट लेंगे तो हम उन डरपोक अमरीकनों को भी चबा जायँगे, उसने सोचा। वे मुझे कम-से-कम बीस वर्ष या आजीवन कैद की सजा देंगे, उसने सोचा, लेकिन मुझे उसके एक चौथाई काल तक भी जेल में न रहना पड़ेगा।

उसने पुनः अपने सामने परेड का मैदान और दूर क्षितिज तक चिथड़ों की पट्टियों में फैली एक आकृतिहीन भीड़ देखी। और फिर हम हर साल गर्मी के दिनों में छुट्टी पर जाया करेंगे, उसने सोचा, और उसने रिविरा की फिल्मों की तरह, जो उसने देखी थी सागर, पर्वतों और पास के वृक्षों की दृश्यावली में वरिन्गर के साथ अपने आप की कल्पना की। और तभी तुरन्त उसे एक कामरेड की याद आ गयी, जिसने उसे बतलाया था कि किस तरह उन लोगों ने एविगॉन के निकट सारी सड़क पर दोनों ओर खड़े हर पेड़ पर एक-एक फ्रांसीसी को लटका दिया था। फिर वह रावेन्सब्रुएक में वापस पहुँच गयी यह स्मरण करती हुई कि किस तरह वह कुत्तों को बुलाया करती थी और कैदियों के पीछे पाखानों में उनको लुहा-लुहा कर छोड़ दिया करती थी—"उस पर टूट पड़ो, थीलो! उस पर टूट पड़ो, ट्यूट!"

अदालत को अपने फैसले पर विचार करने के लिए कुछ मिनटों की ही जरूरत थी। जब वह अदालत में वापस लाई गयी, तो उसका ध्यान उस गन्दे नाटे व्यक्ति की ओर आकर्षित हुआ, जिस पर बाजार की चौक में उसकी दृष्टि पड़ी थी। उसका चेहरा उसकी ओर मुड़ गया था। उसने उसमें अरुचि और घृणा के सिवाय और कुछ भी नहीं देखा। जब न्यायाधीश वापस आये तो उसने तेजी से सोचा—जिन्दगी, जिन्दगी, जिन्दगी।

उससे खड़े होने को कहा गया। उसे मृत्यु दण्ड की सजा सुनाई

गयी। उसने अपने कानो मे गूँजती भनभनाहट के बीच अलग-अलग शब्द सुने। उस सजा के विरुद्ध कोई अपील नही हो सकती थी और वह सजा तुरन्त कार्यान्वित होनी थी। वह चीखना या गिर पडना नही चाहती थी। जीवन मे पहली और अन्तिम बार उसने अपने शिकारो की दुर्बोध्य शक्ति पर विचार किया, जिसने उसके क्रोध को भडकाये रखा था। वहाँ एक जर्मन छात्रा थी, जिसने एक शब्द भी बोले बिना पिटते-पिटते अपने को मर जाने दिया था। और उसे याद आयी एक रूसी की, जिसने मरने के बिल्कुल पहले चिल्ला कर कहा था—'हिटलर मुर्दाबाद!" और चार फ्रॉसीसी स्त्रियो की याद जिन्होने "मार्सीलीज" गाते हुए मृत्यु का आलिगन किया था।

उसके अन्दर की एक आवाज जीवन के लिए विलाप कर रही थी और जब दो पुलीस स्त्रियाँ उसे ले जा रही थी, तो उसके अन्दर इस आवाज और रक्त-रंजित, बेतरतीब शून्य के सिवा और कुछ भी नही रह गया था।

माँ और बेटा

इस कहानी की लेखिका

एलफ्रीड ब्रुर्यानिग

सन् १९१० ईसवी में जन्म हुआ। एक बढ़ई की बेटी थीं और अपने ही सहारे लेखन-कार्य आरम्भ करने से पूर्व टाइपिस्ट तथा सचिव के रूप में काम किया। आरम्भ की कहानियाँ नगर के समाचारपत्रों मे प्रकाशित हुई। सन् १९३० ईसवी में कम्युनिस्ट पार्टी मे सम्मिलित हुई। तभी से वामपक्षी पत्रो के लिए लिखना आरम्भ किया। नाज़ियों ने सन् १९३५ ईसवी में गिरफ़्तार कर लिया, और बारनिम वीमेन्स प्रिजन में बन्द कर दी गयीं। कारावास की अवधि पूरी की, लेकिन सौभाग्यवश और अधिक कारावास से बच गयी। सन् १९४५ ईसवी से स्वतंत्र लेखिका तथा पत्रकार रही हैं, और बर्लिन में रह कर लिखती हैं—बहुत से उपन्यास नाजी युग से सबंध रखते हैं, लेकिन समकालीन समस्याओ पर भी अनेक हल्की-फुलकी कथाएँ लिखी है। उपन्यासों में सम्मिलित हैं, "दैट यू मे लिव," नाजी-काल में दो माताओ की कथा, और "रेजीम हेबरकार्न". जो युद्धोत्तर जर्मनी की कहानी है।



जब वह इक्यावन वर्ष की थी, तब क्लारा गटजाह्ल के लिए, जो बर्लिन की एक फाउडरी मे काम करती थी, एक नया जीवन आरम्भ हुआ, बिना उसके जाने ही। वह फरवरी, १९४९, का एक दिन था, जो अन्य दिनो की तरह ही आरम्भ हुआ। ठीक समय पर वह फाटक से अन्दर गई, अगर वह तीन मिनट देर से पहुँचती, तो दरबान को उसका नाम "देर" की सूची मे दर्ज कर लेना पडता।

यह किस्मत की बात थी, उसने सोचा, और निश्चय कर लिया कि वह फिर कभी इतनी नफासत से कामकाज न करेगी। अब जब कि उसका बेटा आ गया था, घर से बहुत तडके ही चल देना इतना आसान न था। अभी वह सो ही रहा था जब वह घर से चल पडी थी, लेकिन रवाना होने से पहले हमेशा उसके लिए कुछ और करने को मिल ही जाता था।

सहन मे कोई नही था, जब उसने उसे पार किया। दोनो ओर लगे धातु के रद्दी टुकडो के ढेरो के बीच घिसे मार्ग पर वह तेजी से चल रही थी। मलबा साफ करने वाली स्त्रियाँ आ गयी थी और पहले के ब्लाक पाच के सामने ईटो से चूना छुडा रही थी। सहन के दूर के सिरे पर स्थित केवल-मात्र पुनर्निमित इमारत मे फाउडरी थी। एक-दो खिडकियो

मे शीशा भी लग गया था, और उनके अन्दर मे निकलता चमकता प्रकाश उषा काल के धुँधलके से सघर्ष कर रहा था। चिमनी से निकलता पतला धुँआ कुहरे भरी हवा मे चक्कर खाता हुआ उठ रहा था। क्लारा गट-जाह्न कुछ काँपी, जैसा कि तडके सवेरे काम मे ठीक से लग जाने के पहले उसके साथ हमेशा होता था। लेकिन वह ब्लाक के पीछे तेजी से गयी, यद्यपि अपनी गर्म काम करने की बेंच पर पहुँचने की उसे तीव्र इच्छा थी। उन्होने पीछे की दीवार से लगा कर चन्द दिन पहले गाडी से उतार कर लकडी का ढेर लगा दिया था और वह लकडी चूल्हे मे जलाने के लिए छोटे-छोटे कुदो मे कटी अभी तक वही पडी थी। एक नजर मे ही क्लारा ने जाँच लिया था, कि वह कितने कुदे अपने थैले मे भर ले सकती थी। कितने अफसोस की बात थी कि वे भीगे थे, उसने सोचा, वह बहुत से न ले जा सकेगी। जो हो जितने वह ले जा सकेगी उतने एक शाम के लिए तो काफी ही होगे। एक क्षरण के लिए उसे तुरन्त अपना झोला भर लेने का प्रलोभन हुआ, लेकिन उसका इरादा बदल गया। कही कोई देख न ले, घर वापस जाने से ठीक पहले इसके लिए फिर आना ही बेहतर होगा, यद्यपि अन्य लोग भी उस समय आयेगे ही। हर कोई जो बर्लिन के पश्चिमी क्षेत्र मे रहता था वहाँ मौजूद होगा, क्योकि उसकी तरह ही वे भी घर पर सर्दी से जम जाना न चाहते होगे।

पाँच मिनट बाद हमेशा की तरह वह अपनी बेंच के पास खडी थी। वह इस समय ३०७ माडेल के क्रोड बना रही थी—एक ऐसा काम जिसे वह पसद नही करती थी, क्योकि इसमे उसे केवल अपने हाथ ही इस्ते-माल करने पडते थे। उसे ज्यादा पेचीदा काम पसद थे, चिपटी पैस्टरी की तरह के पतले क्रोड, या गिरजाघर की मीनारो जैसे क्रोड या घोघे तथा कार्क स्क्रू की तरह घुमावदार। इस तरह के कामो मे घटो लगातार लगे रहने मे उसे मजा आता था, यहाँ तक कि इसे करने का उसने

सर्वोत्तम तरीका निकाल लिया था और बालू उसके हाथ के लिए मोम जैसी हो गई थी। बाद मे जब कोड भट्टी के अन्दर से पक कर, बिल्कुल ठीक शक्ल का और खूब मजबूत, बाहर निकलता, तो उसे हमेशा ताज्जुब होता कि कैसे इतने अच्छे तरीके से उसने उसे बनाया। और वह छोटा-सा सन्तोष-भाव कुछ-कुछ उस विराट भावना जैसा लगता। जिसकी अनुभूति बहुत साल पहले हुई थी जब उसने अपने पुत्र को जन्म दिया था—जैसे इन कोडो को भी उसने जीवन प्रदान किया हो।

आज वह स्त्रियो के लिए कोड बना रही थी, जिनमें कागज के थैलो की तरह का एक टिन लगा होता था; अपने बालूदान मे खेलते हुए कोई बच्चा भी इन्हे बना सकता था।

क्लारा तेजी से और सफाई से काम कर रही थी। अपने हाथ के काम से वह नजर भी नही उठाती थी, इतनी पूर्णता से वह उसमे निमग्न हो जाती थी। वह बालू को चालती थी, उसमे जोडक पदार्थ मिलाती थी, और फिर उस मिश्रण को इस तरह दबाती थी, जैसे वह बालू से कुछ अधिक हो। इसी तरह लगभग पैंतीस साल से वह अपने जीवन को भी ढाल रही थी। पहले जब वह बिलकुल युवा थी, तो उसने अपने पति के साथ अपने जीवन को ढाला था। उसे अच्छी तरह याद था कि जब वह केवल सत्रह वर्ष की थी, तो किस तरह वह एक दिन उसे अपने साथ फाउन्डरी खीच ले गया था। उसने विचारहीनता से एक ग्रीष्मकालीन भडकीली पोशाक पहन ली थी।

"हम जरा देखे तो कि तुम क्या कर सकती हो," उसने कहा था।

वह कुछ भी ठीक तरह से कर नही सकी थी। उसने कोडो को भट्टी मे जल जाने दिया था और शाम को अपने बालो से तेलही कालिख साफ करते समय वह रोई थी। फिर कभी नही, उसने सोचा था। उस गदी

जगह पर जाना मुझे पसन्द नही। लेकिन अगली सुबह को वह फिर वहाँ पहुँची थी। उसके पति के दिमाग मे यह विचार जम गया था, कि वह अपनी खुद की एक फाउडरी जमायेगा, और चाहता था कि उसकी पत्नी उस काम मे उसकी सहायता कर सके।

अत मे क्लारा समझ गई थी कि वालू को किस तरह काम मे लाया जाय, और वह अपने पति को भी समझ गई थी। वे दूसरो के लिए पसीना वहाना नही चाहते थे और वे अपने ही काम से स्वय धन पैदा करना चाहते और ससार मे आगे वढना चाहते थे...

कालिख लगे वालो को आँखो पर से हटाते हुए, क्लारा ने दीर्घ निश्वास खीचा। जिस ढग से वह वालू को ढालती थी, उसी तरह वह अपने जीवन को हमेशा ढाल नही सकी थी, यद्यपि हर वर्ष उसने ऐसा पहले से बेहतर ढग से करना सीखा था। एक भरी हुई ट्रे उसने भट्टी के अन्दर खिसका दी। उसने तापमान की जाँच की और तय किया कि मध्य-प्रात का लच लेने के लिए उसके पास समय है, जो महज सूखी रोटी था। उसने रोटी निगली और तुरन्त काम पर वापस आ गयी, जैसे कि काम करते समय वह अपने विचारो को भगा देगी अपनी खुद की एक फाउडरी कायम करने का उनका स्वप्न स्वप्न के आगे कभी वढ नही सका। १६१८ मे युद्ध की लगभग समाप्ति के समय मैक्स मोर्चे पर भेज दिया गया था। और वह गोलो के लिए कोड वनाने लगी थी। वह फुटकर काम कर रही थी और सोचती थी कि उसका बनाया हर अति-रिक्त कोड मैक्स की सहायता करेगा। वह सचमुच विश्वास करती थी कि वह लडाई तेजी से जीत लेने मे मदद कर रही थी।

उसने काम अलग हटा दिया और कुछ मिनट के लिए आराम करने लगी। हाथ मे एक कागज लिए हुए, फोरमैन उसके पास आया।

"इस पर अपना नाम लिख दो," उसने कहा। "काम के वाद एक

सभा होगी। सचालन विभाग की तरफ से कोई आवश्यक बयान दिया जायेगा।"

जो कुछ उससे कहा गया था, क्लारा ने वह कर दिया और चिढे भाव से कागज वापस कर दिया। यह आखिरी तिनका है, उसने सोचा। इन लोगो की इस सभा के कारण वह देर से घर पहुँचेगी, और उस समय तक उसका वेटा निश्चय ही फिर वाहर चला गया होगा।

उसने वालू का एक तेलहा लोदा ले लिया, और उसे थपथपा और गूँध कर इच्छित रूप देने लगी। इसी तरह कभी-कभी उसने अपने बेटे को भी थप्पड जमाये थे, जब वह लड़का था। वह एक हौसले वाली माँ थी, और उसने उसे स्कूल भेजा था, ताकि किसी दिन उसे वह सब-कुछ मिल जाये, जो उसके माँ-बाप को नही मिल सका था। और इन तमाम वर्षो मे वह फाउडरी मे काम करती रही थी, ताकि जिन चीज़ो की उन दोनो को जरूरत थी, वे मिलती रहे। कुछ वर्षो तक उसने मास कूटने वालो के लिए क्रोड बनाये थे, और उसके बाद पुन. गोलो के लिए क्रोड बनाने लगी थी। लेकिन अव वह वहुत अधिक काम नही करती थी। अब उसका बेटा स्कूल से हटा जो लिया गया था।

वह फिर रुक गयी। सायरन ने तीन बार छोटी-छोटी चीखे लगायी। दोपहर हो गई थी, और वह श्रमिको को अपनी खिडकी के पास से गुजर कर कैन्टीन की ओर जाते सुन सकती थी। क्लारा ने बालू अलग हटा दी, और खाने का कटोरा मेज पर रख लिया। वह वही बैठ कर खाने लगी, ताकि वह भट्टी पर नजर रख सके। उस भट्टी को वह वैसी ही अच्छी तरह जानती थी, जैसे अपने शरीर को। उदाहरणार्थ वह विना थर्मामिटर देखे ही जान गई थी, कि भट्टी बहुत अधिक गर्म हो गई थी, और उससे कुछ ईधन निकाल लेना होगा। बिना अपने काम से सर उठाये ही वह फाउडरी के सबध की हर प्रकार की बाते जान लेती थी। वह

जानती थी कि कारखाने के दूर के सिरे पर ढलाई करने वालों को अक्सर कई-कई मिनट तक बेकार खड़े रहना पड़ता था, क्योंकि गले लोहे के अलगाये जाने तक उन्हें इन्तजार करना होता था, गलाने वाला अपनी भट्टी मे इस तरह खोद-खाद करता था, जैसे वह कोई खोखला दाँत हो और वह उसे चोट पहुंचाना न चाहता हो।

अगर क्लारा फोरमैन होती, तो ऐसा न होने देती, लेकिन वह फोरमैन नही थी, वह बस क्लारा गटजाह्न थी, एक साधारण श्रमिक स्त्री, जिसने अपने शरीर के भरण-पोषण के लिए जीवन भर कोड बनाये थे। एक समय उसे आशा हुई थी, कि वह यह काम छोड सकेगी। लेकिन जब प्रथम महायुद्ध समाप्त हुआ, और मैक्स घर वापस आया, तो तुरन्त मालूम हो गया कि वह पहले का जैसा आदमी नही रह गया था। जो रोग वह खाइयो से ले आया, वह उसे खाता जा रहा था और कुछ वर्ष बाद वह अपने पुत्र के साथ अकेली रह गयी।

जैसी वह योजना बनाती थी और आशा करती थी, उससे सदा भिन्न ही सब-कुछ होता था, अन्यो के साथ सभा मे जाते समय क्लारा सोच रही थी। वह बडा-सा हाल झडो और नारो से सजा हुआ था, और कारखाने का बैंड एक आनदमय धुन बजा रहा था। पसीना बहाते मर्दो के बीच बैठी हुई क्लारा को अनुभव हो रहा था, कि वह ऊपर उठ गई है और उस हाल से बहुत दूर पहुँच गई है। घर पर उपस्थित अपने पुत्र के सबध मे वह सोचने लगी। वह कितनी प्रसन्न हुई थी, जब वह युद्ध-बन्दियो के शिविर से वापस आया था। झीनी फटी वर्दी पहने वह सामने खडा था, और उसकी ओर, उसके पीले पडे चेहरे की ओर वह देख रही थी, जो अब भी आश्चर्यजनक रूप से युवा दिख रहा था और जिस पर वह हमेशा का-सा खोज का भाव व्यक्त था। उसका अब क्या होगा? वह सोचा करती थी। युद्ध मे वह यानचालक था, लेकिन अब तो किसी

को यानचालको की जरूरत नही थी। अभी तक उसे ठीक उत्तर नही मिला था। जो कुछ वदल गया था, उसी के वारे मे वह उसे वता सकती थी। वह अव फिर स्कूल नही जा सकता था, लेकिन उसने कोई कारवार भी तो नही सीखा था। कुछ कामो के लिए वह वहुत ज्यादा जानता था और कुछ के लिए वहुत कम—यह वह समझती थी। लेकिन अपने अन्तर्तम मे वह अव भी उसके लिए कोई विशिष्ट भविष्य चाहती थी।

सगीत वद हो गया। भाषण क्लारा के कानो मे धूसर आकाश से एकरस वरसते जल की तरह पड रहा था। जव आपको सूखी गर्म भट्टी के सामने सात घटे तक खडा रहना पडे, तो भाषणो से आपको ऊँघ आना स्वाभाविक ही है। उसने आँखे वन्द कर ली और जो कुछ कहा जा रहा था उसके टुकडे ही उसे सुनाई पडते रहे "हम जानते है कि अन्त मे हम कहाँ खडे है. आज दे दिया गया है अमानत मे, राष्ट्रीय स्वामित्व वाला उद्योग जनता का है। हमारी सम्पत्ति यह हमारी है"

"तो क्या हुआ ?" क्लारा के वगल मे बैठे व्यक्ति ने व्यगपूर्वक मुस्कराते हुए कहा। "इससे हमारे पेटो मे भोजन तो पहुँच न जायेगा।"

वर्षा का वादल कुछ सेकेडो के लिए फट गया था, लेकिन वह उसके ऊपर फिर जुड गया और मेह पहले की तरह ही एकरसता से वरसने लगा। जव वह रुका, तो पीछे की कतारे आधी खाली हो चुकी थी। लोग धक्का-मुक्की करते वाहर निकलने लगे, और क्लारा सव के आगे-आगे थी। लकडी, उसने यकायक सोचा। उसे पहले निकलने की कोशिश करनी चाहिये।

लेकिन वह कितना भी धक्का देती और धकेलती, अन्य लोग उससे भी ज्यादा तेजी दिखा रहे थे। ग्वूल एलसा पहले ही कुदो के वीच टटोल रही थी, जव वह वहाँ पहुची। क्लारा पसोपेश मे पड गयी।

"आओ, तुम भी ले लो, गुइयाँ," रेखाओ से भरे अपने वूढे चेहरे पर कटाक्ष लिये, एलसा चिल्लाई—उस चेहरे के कारण ही उसका नाम

"खुल" पड गया था—"अब यह चोरी नही है, तुम जानती हो। यह सब हमारा ही तो है।"

वह कीडे जैसी है, क्लारा ने सोचा, यकायक घृणा से भर कर एक ऐसे कीडे की तरह, जो किसी इमारत को नीचे से खाता है, यहाँ तक कि वह गिर पडती है और कोई नही जान पाता कि क्यो। वह घूम पडी, चोरी करते पकडे जाने की शर्म से। लेकिन फिर उसे घर पर सर्दी से ठिठुरते अपने बेटे का ख्याल आ गया। वह वापस लौटी, और उसने तेजी से दो कुदे अपने थैले मे भर लिये बिना यह देखे कि वह क्या कर रही है, जैसे कि उसके हाथ अपने-आप यह काम कर रहे हो।

पश्चिमी क्षेत्र से उत्तर की ओर जाने वाली ट्रेन थैलो, सूटकेसो, बोरो और चेहरो से पूरी तरह भरी हुई थी—पतले, गदे, थके, पीले चेहरे। लेकिन उनमे कुछ मोटे, पाउडर लगे और रँग-चुँगे चेहरे भी थे, उन लोगो के चेहरे, जो पश्चिमी सम्पन्न उपनगरो मे रहते थे। ये लोग हमेशा अलग-अलग रहते थे श्रमिको के समुद्र मे भद्रता के द्वीपो के रूप मे, जो हर ओर से उन पर थपेडे मारता लगता था। अपने घुटनो के बीच कुदो से भरा थैला अडाये हुए क्लारा उन द्वीपो मे से एक के पास खडी थी, और जो कुछ वे कह रहे थे उसे सुने बिना वह रह नही सकी।

"बच्चे क्या कर रहे है?"

"मेरा बेटा स्वतत्र विश्वविद्यालय मे पढ रहा है।"

"हाँ, बेशक वह इन लोगो से घुल-मिल और आपकी बेटी?"

"उसे मैंने अपने कारबार मे लगा लिया है। हम नही चाहते कि वह दूसरे लोगो के लिए काम करे। और यो भी अपने लिये काम करने मे बहुत ज्यादा प्रेरणा मिलती है।"

यह बात क्लारा के दिमाग मे जम गयी, हालांकि इसका उसे कोई ज्ञान न था, जब वह हल्की गर्म अँगीठी के पास, जिसे उसने घर

पहुँचते ही जल्दी से जला लिया था, अपने बेटे का इन्तजार करने के लिए बैठी। उसी मित्र के साथ वह फिर घूमने गया होगा, उसने सोचा। पहले-पहल उसने उस मित्रता को तोड देने की कोशिश की थी, क्योकि बगल के मकान के उस लम्बे बेढगे युवक के बारे मे, जो कभी सीधे उसके चेहरे की ओर नही ताकता था, उसकी कोई अच्छी राय नही बनी थी। लेकिन उसका बेटा एक वफादार कुत्ते की तरह उसका साथ पकडे हुए था।

वह उठी और अपनी बुनाई उठा लायी। ऊन खोलते-खोलते उसे याद आया, कि किस तरह वह रसोईघर के तौलियो के किनारो की कढाई किया करती थी, और अपनी सारी योजनाओ को भी उनमे काढ देती थी—अपने खुद के कारबार की योजनाएँ, बेटे के भविष्य की और उस समय की, योजनाएँ जब वह घर के कारबार को सँभालने के लायक हो जायेगा उसने हाथ के काम को अलग रख दिया, पूर्णतया जाग्रत अनुभव करते हुए। आँखे बन्द कर के, वह सभा मे अपनी उपस्थिति की कल्पना करने लगी। लेकिन वह भाषण, जो पहले उसके कानो मे धूसर एकरस आकाश से एकरस गिरती बूँदो की तरह पडा था, अब पूर्ण स्पष्टता से शब्दश. उसके कानो मे गूँजने लगा।

" अब आप दूसरे लोगो के लिए काम न करेंगे, अपने ही लिये काम करेंगे। राष्ट्रीय स्वामित्व के उद्योग मे। अपने ही कारखाने मे "

उस रात को वह ठीक तरह से सो नही सकी, बस करवटे ही बदलती रह गयी। लेकिन जब वह उठी, तो उसे ताजगी और विश्राम की अनुभूति हो रही थी। इस समय उसे इस बात की उतनी फिक्र न थी कि खामोशी से चले-फिरे, ताकि उसका बेटा जाग न जाय। वह जाग नही जाता, उसने विरोधपूर्वक सोचा। उसके बिस्तरे के निकट जा कर, वह उसे देखने लगी, जो तकिये मे सिर गडाये पडा था, शिथिल और बेढगा-सा दिखता। रात मे वह देर से घर लौटा था। उसके हाथ चादर पर

पखो की तरह फैले हुए थे, बडे-बडे, मजबूत हाथ, मैक्स के जैसे, उसने सोचा, असली ढलाई करने वाले के हाथ। वह कुछ समय तक वहाँ खडी रही, उसकी ओर एकटक देखती हुई। फिर वह फुरती से घूम पड़ी, क्योकि वह फिर से आखीर मे काम पर पहुँचना नही चाहती थी।

फाउडरी मे सब-कुछ हमेशा की तरह ही हो रहा था, लेकिन क्लारा को लग रहा था, कि जैसे वह सब वह पहली ही बार देख रही थी। उसने देखा कि मलबे की सफाई करती स्त्रियाँ किस तरह पूरी कतार मे एक-दूसरे को सावधानी से ईंटे थमा रही है, जैसे कि वे मात्र ईंटो के बजाय कीमती मक्खन हो।

"अगर वे इस रफ्तार से काम करेगी, तो साल भर मे भी इस स्थान की सफाई न हो पायेगी," उसने क्रोधपूर्वक सोचा।

आँख के कोर से उसने फाउडरी के पीछे पडी लकडी के बीच छायाओ को घूमते देखा। मुझे इससे क्या सरोकार है, उसने सोचा। लेकिन यह बात उसे चिन्तित करती और दिमाग के अन्तर मे कोचती रही। जब वह अपने काम की बेच पर पहुँची, तब भी वह अन्दर सीमित न हो सकी और यह देखने से बच न सकी कि दूसरे लोग क्या कर रहे है। वह गलाई करने वाले को तरल लोहे को इत्मीनान मे चलाते देख सकती थी और ढलाई करने वालो को समय बरबाद करते

फोरमैन कुछ दिनो से बीमार था और अगर किसी को किसी चीज की जरुरत होती थी, तो वह क्लारा के पास ही आता था। वे इसके भी अभ्यस्त हो गये थे।

दोपहर मे मैनेजर एक नजर देखने के लिए आया। वह क्लारा के पास आया। क्या वे गलाई करने वाले के लिए बोनस की व्यवस्था नही कर सकते? क्लारा ने पूछा। कुछ अधिक मजदूरी नही—एक-दो हफ्ते के बाद वह और माँगने लगेगा—बल्कि हर अतिरिक्त टन की गलाई के लिए अच्छा बोनस। काम को आगे बढाना होगा, वह जानती थी.

मैनेजर वहाँ अभी थोडे समय से ही था, लेकिन क्लारा उसे अच्छी तरह जानती थी। जब वे बच्चे थे, तो साथ-साथ गली मे गुट्टी खेले थे। मैनेजर ने उसके गर्म, मलिन चेहरे की ओर देखा।

"हो सकता है, कि तुम्हारी राय ठीक हो," उसने क्लारा का हाथ विचारमग्नता से दबाते हुए कहा। वह उसके लिए एक भाई जैसा था, जिससे वह आजादी के साथ बात कर सकती थी।

"और लकडी के उस ढेर को उठवा दीजिये!" पीछे से पुकार कर उसने कहा। लेकिन वह बाहर जा चुका था।

"काम करने के लिए तुम्हारे पास गर्म जगह तो है," उसके बेटे ने शिकायत की।

उत्तर मे उसने उसके हाथ मे कुछ औजार थमा दिये—एक हथौडा, एक आरी और पुरानी छोटी-सी गाडी—और कहा कि पास के जगलो मे जा कर वह कुछ लकडी इकट्ठा कर लाये।

"तब तुम्हे सर्दी मे कुडकुडाना न पडगा," उसने प्रसन्न स्वर मे कहा।

इस काम से उसे अपने मित्र के साथ सैर के लिए जाने के लिए समय ही नही मिला। उस शाम को वह बुरी तरह थका हुआ बिस्तर पर लेटा। क्लारा ने उसे सोते हुए देखा। वह पूरी तरह थक गया था, और उसके बडे-बडे, मजबूत हाथो मे खरोंचे थी।

असली काम का यह अभ्यस्त नही है, उसने सोचा, और यह उसका (क्लारा का) ही कसूर है।

उसने समय लिया; जल्दबाजी करने से फायदा न था। उसे बहुत-सा मलबा हटाना होगा पेश्तर इसके उस जमीन मे कुछ उग सके। अब वह अपने बेटे को ज्यादा गौर से देखने लगी। उसने देखा, कि वह उसकी ओर देखने से कतराता था। उससे प्रश्नो के उत्तर पाना कठिन था और उसके एक कोने मे घटो उदास बैठै रहने की आदत डाल ली थी।

उसके अन्दर से सच्ची बात निकलवा लेने मे समय लगा। उसका

"मित्र" एक कारबार सम्बन्धी यात्रा मे गिरफ्तार हो गया था, और यह किस्मत की वात थी कि वह स्वय भी गिरफ्तार होने से बच गया था।

क्लारा ने कुछ दिन और बीत जाने दिये। फिर एक शाम को, जब कि वह सारा दिन काहिली मे गुजार चुका था, उसने पूछा कि क्या समय बरबाद करने मे उसे सचमुच मजा आता है।

"मै करूँ भी तो क्या?" लडके ने गर्म हो कर कहा। "किसी ने मुझे और कुछ सिखाया भी तो नही।"

क्लारा के लिए यह सकेत था। अगली सुबह को उसने उसका अच्छा सूट निकाल कर रख दिया और उसे जगाया।

"जल्दी से कपडे पहन कर तैयार हो जाओ," उसने कहा।

वह उसे अपने साथ फाउडरी ले गयी। दरबान के पास से गुजर कर और सीढियाँ चढ कर मैनेजर के दफ्तर की ओर। उसका दिल बुरी तरह धडक रहा था, जब वह दफ्तर के अन्दर गयी।

कमरा तम्बाकू के धुएँ से बेतरह भरा हुआ था। धुएँ के परदे से एक के बाद एक चेहरे उभरने लगे। कोई क्लारा के पास आया, और उसने पूछा कि क्या वह जानती है कि शनिवार को उन लोगो ने कितना काम किया था। बेशक वह जानती थी—सात किलो लोहा और पचास किलो आलमोनियम।

"मैं जानती थी कि बोनस से यह हो सकता है," क्लारा ने मुस्करा कर कहा। "लेकिन उस बारे मे मै यहाँ नही आई हूँ।"

उसने टटोल कर अपने बेटे का हाथ पकडा और उसे लजाते हुए दबाया।

"सुनो, क्लारा, हम तुम्हे फोरमैन बनाना चाहते है," मैनेजर ने उसके पास आ कर कहा। "इसी के लिए हमने तुम्हे बुलाया है। करोगी न यह काम?"

वह बोल नही सकी। उसने सहमतिपूर्वक सिर हिलाया। उसे तो

यह भी मालूम नहीं था, कि उसे बुलाया गया है। वह तो वहाँ उन लोगो के पास दूसरे ही कारण से आई थी। जो हो, उसने सोचा, अगर उसे फोरमैन बनना ही है, तो वह एक अपरेंटिस भी रख सकती है। उसने विजय के भाव से सुपरिचित व्यक्तियो के चेहरो के उस घरेलू हल्के को देखा और उन लोगो से हाथ मिलाया। फिर उसने अपने पुत्र को धकेल कर आगे कर दिया, जिस तरह वह रोज कोडो को अपनी पुरानी प्रिय भट्ठी के अन्दर खिसका देती थी।

"अच्छा, अब देखिये कि क्या इसे आप लोग किसी काम का बना सकते हैं," क्लारा ने कहा। "अभी तक तो हमने सिवाय गोली चलाने के कुछ सीखा नहीं है।"

उसने आँखे झुका ली और लजाते हुए आगे कहा, "यह मुझे इस बात के लिए फटकारता रहा है कि इसे कभी कोई अच्छा काम सिखाया ही नहीं गया। मैं इसे बहुत समय तक रोके रही हूं। मैं नहीं चाहती थी कि यह दूसरो के लिए पसीना बहाये "

उसने फिर नज़र उठायी, तो उसकी थकी आँखे लड़की की जैसी चमक रही थी।

"मेरी हमेशा इच्छा रही है कि यह अपने ही कारबार मे काम करे," वह भुनभुनाई।

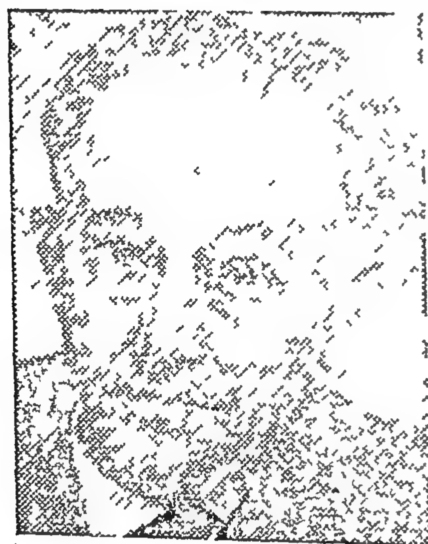


वह सुबह भी आ ही गयी

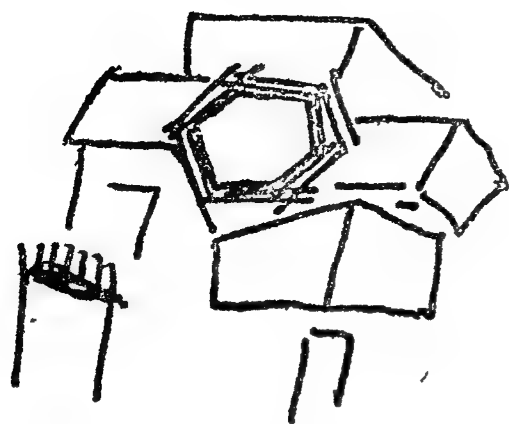
इस कहानी के लेखक

मैक्सिमिलियन शीर

व्यापक यात्रा के अनुभवों से सम्पन्न प्रचारक तथा पत्रकार है। एक ऐसे बढ़ई के पुत्र है जो समाजवादी था। जन्म राइनलैंड में सन् १८९६ ईसवी में हुआ था। रंगमच कला और साहित्य के इतिहास का अध्ययन



करने के लिए कलोन जाने के पहले कृषि फ़ार्म मे कार्य करते रहे। सन् १९३३ ईसवी मे फ्रांस चले गये, और सन् १९३९ ईसवी में एक फ्रासीसी शिविर मे कैद कर दिये गये। पुर्तगाल होते हुए वे अमरीका भाग निकले। सन् १९४७ ईसवी मे जर्मनी वापस आने के बाद से रेडियो के अधिकारी पद पर तथा साहित्यिक सम्पादक रहे हैं। इनकी रचनाओ मे विदेशो में प्रवास काल की यात्राओ पर लिखी गयी यात्रा सस्मरण की पुस्तक भी है। रचनाओ मे युद्धोपरान्त अल्जीरिया, ईरान तथा मिस्र की यात्राओ और पश्चिमी जर्मनी के अनेक दौरो पर लिखे रिपोर्ताजो की पुस्तक भी महत्वपूर्ण है। शीत-युद्ध के शिकार और सन् १९५३ ईसवी मे मृत्यु-दंड प्राप्त करने वाले एथेल तथा जूलियस रोसेनबर्ग पर लिखित एक पुस्तक तथा एक नाटक के रचयिता भी मैक्सिमिलियन शीर ही हैं। इनका दूसरा नाटक एल्बर्ट माल्ट्ज रचित 'मेरी गो राउंड' पर आधारित है।



सोरा बेडूइन कबीले के एक व्यक्ति की पुत्री थी, जिसका नाम बेन्जायबिया था। लेकिन सोरा का परिवार खानाबदोशो की तरह नही रहता था, वे एक ही स्थान पर बस गये थे, लेकिन अपना बेडूइन नाम अभी भी अपना रक्खा था और अपने कबीले से उनका अभी भी सम्पर्क बना हुआ था। विशाल अल्जीरियाई नगर कान्सटेंटाइन की सीमा पर उसके पिता की एक छोटी-सी जमीन थी और एक छोटा-सा मकान था। वह रोज अपनी बैलगाडी मे चुकन्दर, हरी सब्जियाँ और प्याज भर कर बाजार जाता था। उसके चार पुत्र और अनेक पुत्रियाँ थी और वह अपने परिवार पर कठोर बेडूइन रीति-रिवाजो के अनुसार नियंत्रण रखता था। लडके उसके बर्बाद हो चुके थे और उन्हे बहुत अधिक आजादी मिली हुई थी। लडकियो पर बडा कठोर नियंत्रण था।

केवल तेरह वर्ष की आयु मे ही सोरा को बुर्का पहनना शुरू कर देना पडा था। इसके बाद से बिना बुर्के के या पिता, भाई या चाचा के साथ के बगैर घर से बाहर निकलने की इजाजत नही मिलती थी। घर की चहारदीवारियो के बाहर की दुनिया का जो थोडा-बहुत नजारा वह

देख पाती थी उसे भी सोरा को खामोशी से ही देखना पड़ता था। मस्जिद या रिश्तेदारो के यहाँ किसी पुरुष रिश्तेदार के साथ घर से निकल कर जाते समय वह अपने पर्दे से चुपचाप झाँक कर यह देखने की कोशिश किया करती थी कि उसके चारो ओर क्या हो रहा है।

घर पर उसे उसी समय बुर्का उतारने की इजाजत थी जब वह घर के काम-काज मे अपनी माँ की सहायता करती होती थी। अपने पिता की नामौजूदगी मे उसे अपनी माँ और वहनो के सिवाय और किसी से बात करने की भी इजाज़त न थी। उसके बडे भाई उसे बात करने योग्य नही समझते थे। वह एक साधारण लडकी मात्र थी—कान्तिहीन किन्तु सुन्दर, दुनिया से अनभिज्ञ और अपने किसी भी अधिकार से विहीन। वह न तो पढ सकती थी न लिख सकती थी। परिवार से परिचित लोग उसका पुकारने का नाम तभी जान पाते थे जब वे परिवार के लिए तनिक भी अपरिचित नही रह जाते थे। उसका नाम पूछना भी उस परिवार की नजर मे अशिष्टता थी। इस तरह के प्रश्न पूछने का नतीजा अकसर पूछने वाले की मौत के रूप मे सामने आता था, क्योकि इन प्रश्नो का यह अर्थ लगाया जाता था कि प्रश्नकर्त्ता ने परिवार की इज्जत पर कीचड उछाला है।

सोरा रीति-रिवाजो की चक्की मे पिसती-घुटती जवान होती गयी। वह अकसर चुप ही रहती थी, किन्तु उसके चारो ओर फैली दुनिया उसके सबध मे खामोश रहने को तैयार न थी। उसका पिता अपने बेटो के साथ सब से पहले भोजन करता था। सब से बडी बेटी सोरा ही खाने की मेज पर बैठे लोगो को खाना परोसती थी। इसलिए वे जिन चीज़ो के बारे मे बातचीत करते थे वो उसे सुनाई पड जाया करती थी, और वे जो कुछ कहते थे उसे वह याद कर लिया करती थी।

इसी तरह उसने क्राति के सबध मे भी सुन रखा था।

"या अल्लाह, हमे अमन-चैन से रहने दे!" उसके पिता ने क्राति

की बातें करते-करते कहा था, जिसका अर्थ यही था कि अल्लाह उसे, उसके परिवार को, उसके घर को, उसके खेत को और उसकी सब्जियों तथा व्यवसाय को अमन-चैन से रहने दे। वह और उसके बेटे भी इसी दृष्टिकोण से हर चीज को देखा करते थे।

सोरा के तीन भाई अपने पिता के व्यवसाय मे ही काम करते थे। चौथा कान्स्टेटाइन मे औषधि-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर रहा था। एक बार उसने अपने इस भाई को छात्रो की हडताल के सबध मे बाते करते सुना था और उसने अपनी माँ से पूछा था कि हडताल क्या होती है।

उसकी माँ ने बताया—"जब लोग काम करने से इनकार करते है तो उसे हडताल कहते है।"

"लेकिन छात्रो की हडताल क्या होती है?"

"मेरे ख्याल से वे भी काम करने से इनकार कर देते होगे।"

'विश्वविद्यालय मे?" सोरा ने ताज्जुब से फिर प्रश्न किया।

"मेरा तो यही ख्याल है," माँ ने फिर गोल-मोल जवाब दिया क्योकि उसने पहली बार छात्र-हडताल की बात सुनी थी।

"लेकिन वे ऐसा क्यो करते है?" सोरा ने फिर ज़ोर दे कर पूछा।

"मुझे नही मालूम।"

'क्या क्रांति के कारण?"

"मैंने तुमसे कहा न, मैं नही जानती।"

एक अन्य मौके पर उसने सुना कि अस्पताल के एक नौकर को दवाइयाँ चुराते हुए पकडा गया है। कुछ दिनो से दवाइयाँ गायब रही थी इसलिए उस पर नज़र रखी गयी थी। नौकर चोरी की दवाइयाँ इजेबेल लाया था, और सोरा जानती थी कि वहाँ पहाडियो मे अल्जीरियाई सैनिक फ्रासीसियो के खिलाफ युद्ध कर रहे थे। सोरा कमरे

मे ही उन लोगो के इर्द-गिर्द धीरे-धीरे घूम रही थी, ताकि वह कहानी का अन्त सुन सके। लेकिन उसके पिता ने उसे डॉट दिया।

'आज तुम इतनी सुस्ती से क्यो चल-फिर रही हो ?"

अत वह यह नही सुन सकी कि अस्पताल के नौकर का आखीर मे हुआ क्या, लेकिन उसने अनुमान लगा लिया कि वह जरूर इजेवेल भाग गया होगा।

एक वार जव वह हाथो मे कोई खाने की वस्तु लिए हुए रसोईघर से आ रही थी उस समय उसने अपने भाई को जो कुछ कहते सुना उससे वह सवसे ज्यादा आश्चर्य चकित हुई थी।

"हाँ, हाँ, अच्छे परिवारो की लडकियाँ," वह कह रहा था—"अगर लोग लडकियो को स्कूल जाने देगे और औपधि-विज्ञान तक का अध्ययन करने देगे, तव तो यह सव होना ही है। वे इ्जेवेल मे रहने वाले लोगो के पास भागेगी ही।"

सोरा इतनी उत्तेजित हो उठी कि दरवाज़े के वाहर ही उसके हाथ से खाने की तश्तरी लगभग गिर-सी पडी।

"अभी-अभी पेट से निकली लडकी कहाँ है ?" उसका पिता क्रोध से चीख उठा।

"मुझे माफ कर दीजिए, अव्वाजान," उन लोगो के सामने सब्जी रखती हुई वह वोली। उसके हाथ कॉप रहे थे।

"तेरे हाथ और मजवूत होने चाहिए, लडकी," उसका पिता फिर गुर्राया।

"जी हाँ, अव्वाजान," सोरा वडी नम्रता से दवी ज़वान वोली।

लेकिन उसने जो कुछ सुना था उसे वह भूल नही सकी। तो लड़कियाँ भी पहाडियो की ओर जा रही है ? वो पढी लिखी है, वे निश्चय

ही बडी चतुर होगी और दुनिया के बारे मे उसकी अपेक्षा बहुत अधिक जानती-समझती होगी। उन्होने बीमार लोगो की देख-रेख करना और उनके घावो को भरना सीखा है। और इसीलिए वे पहाडियो पर गयी है—उन लोगो की सहायता करने जो गोलियाँ चला रहे हे और गोलियो के शिकार बन रहे है। यह अनुमान लगाना बहुत आसान था कि उसके भाई उनके बारे मे इतने तीखे और अपमानजनक स्वर मे क्यो बोल रहे थे। मर्दो की नजर मे वे चरित्रहीन लडकियाँ थीं। इसके अलावा उन्होने एक ऐसे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह असम्मानपूर्ण कदम उठाया था, जिसे उसका पिता निश्चित रूप से गलत नही समझता था। निश्चय ही वह उद्देश्य चिन्ता का विषय था। सोरा उन लडकियो के बारे मे दूसरी ही तरह सोचती थी। उसे उन लडकियो से ईर्ष्या हो रही थी और वह मन-ही-मन उनकी प्रशसा भी कर रही थी। वे सौभाग्यशाली थीं कि अपने घरो की अधकारपूर्ण तग गलियो से बाहर निकल सकी और अध्ययन करने का मौका पा सकी। और उनमे पहाडियो पर जाने का साहस भी उत्पन्न हुआ।

एक शुक्रवार को साप्ताहिक अवकाश के दिन साठ मील दूर एक ग्रामीण क्षेत्र मे खेती करने वाले उसके कुछ सबधी उसके घर आये। उसके चाचा पुरुषो के साथ बैठक मे चले गये। उसकी चाची उसकी माँ के साथ रसोईघर मे रह गयी। और सोरा को, जो अब सत्रह साल की हो गयी थी, उन लोगो के साथ बैठने की इजाजत मिल गयी। दोनो स्त्रियाँ परिवार, खेत के काम, वस्त्र-भूषा और यहाँ तक कि देश मे फैल रही अशाति और असतोष पर भी बातचीत करती रहीं।

"मेरे ख्याल से यह अशाति तुम्हारे शहरो के मुकाबले गाँवो मे हमे अधिक दिखाई पडती है," उसकी चाची बोली।

'यह सब मर्दों के चिन्ता करने की बात है,' उसकी माँ ने जोर दे कर कहा—"हम औरतो को इस सब से क्या लेना-देना है।"

सोरा देख रही थी कि उसकी चाची कितनी विचारपूर्ण दृष्टि से उसकी माँ को ध्यान से देख रही थी।

"गाँव मे तो बात बिल्कुल ही भिन्न है, समझी ?" प्रश्न से चाची बोली।

उनकी इस बात से सोरा के मस्तिष्क मे उन छायाओं के संबंध मे तरह-तरह के विचार उठने लगे, जो पहाड़ियो पर चली गई थी। लेकिन उसने अपनी चाची से इस संबंध मे कोई प्रश्न करना ठीक नहीं समझा, क्योकि वह जानती थी कि उसकी माँ इस संबंध मे बात करना नापसन्द करती है।

इसके कुछ ही दिन बाद उसने पुरुषो की एक और बातचीत सुनी। वे किसी ऐसे मामले पर बातचीत कर रहे थे, जिसने उसके पिता को बहुत क्रोधित कर दिया था। उसका एक भाई शायद कहानी के बीच के हिस्से को सुना रहा था जब सोरा तश्तरी मे खाने की कोई चीज लिये हुये वहाँ पहुँची।

"तो जब उसकी छुट्टियाँ समाप्त हुई तो वह ख्यातनामी सैनिक फ्रांसीसी सेना मे वापस जाना चाहता था," वह कह रहा था।

सोरा चूहे की तरह खामोशी धारण किये रही, और पुरुषो ने उसकी ओर ध्यान भी नही दिया।

उसका भाई कहता जा रहा था—"और उसकी माँ ने उससे कहा : 'तुम मेरे इकलौते बेटे हो। लेकिन यदि तुम पहाड़ियो पर जाने के बजाय फ्रांसीसियो के पास लौट जाओगे तो मैं तो यही कहूँगी कि तुम अब मेरे बेटे नही रहे ?' "

सोरा उस समय दरवाजे तक लौट चुकी थी, जब उसके पिता ने कहा—"और मैं तो कहूँगा कि वह उस लडके की माँ थी ही नही।"

उसे लगा जैसे यह कोई श्राप हो। सोरा दरवाजे के पीछे खडी हो कर कहानी का शेष हिस्सा सुनने से अपने को रोक नही सकी।

"और उस लडके ने फिर क्या किया ?"

"वह पहाडियो पर चला गया।"

सोरा जब दौडती हुई सी रसोईघर मे पहुँची तो उसका चेहरा लाल हो उठा था।

"क्या बात है सोरा ? तुम्हारी तबियत ठीक नही है क्या ?" उसकी माँ ने पूछा।

"अरे नही, मैं बिलकुल ठीक हूँ," वह बोली—"मुझे एकाएक गर्मी लगने लगी थी।"

उसकी माँ सोचने लगी, अब इस लडकी की शीघ्र शादी हो ही जानी चाहिए।

उस दिन से सोरा के दिमाग मे यह निश्चित धारणा बन गयी कि यदि वह पुरुष होती तो वह भी पहाडियो पर ही चली गयी होती। लेकिन वह कर ही क्या सकती है ?—वह तो एक बुर्केवाली ऐसी लडकी है जो इतना भी नही जानती कि घाव पर पट्टी कैसे बाँधी जाती है। मगर क्या वह यह काम सीख नही सकती है ? क्या पुरुषो ने भी बन्दूक चलाना सीखा नही है ? इसके अतिरिक्त, बन्दूक चलाने और पट्टी बाँधने के अलावा भी बहुत से काम है। लोग जब पहाडियो पर चले जाते है तो वे रहते कैसे है ? उन्हे पानी की जरुरत पडती होगी। और उनके लिए कौन पानी ढो कर लाता होगा ? उन्हे खाने की जरुरत पडती होगी। और उनके लिए कौन खाना प्राप्त करता होगा ? और उनके पास खाने के लिए अधिक कुछ न भी होता होगा तो भी किसी-न-किसी को उनके लिए खाना तो पकाना ही पडता होगा। इस तरह के जाने कितने ऐसे अन्य

काम है जिन्हे एक अनजान और अज्ञान लड़की कर सकती है। वह सोचने लगी, आखिर जो लोग युद्ध कर रहे हैं वे सभी पढ़े-लिखे ही तो नही होगे।

जब सोरा ने पहाड़ियो पर जाने का पक्का इरादा कर लिया, तो वहाँ जाने मे सामने आने वाली कठिनाइयो की बात सोच कर सोरा भय से काँप उठी। उसके माता-पिता है। वह जो कुछ करने जा रही है उसके बारे मे सोच कर भी उन्हे तो शायद ऐसा लगेगा जैसे प्रलय हो रहा हो और दुनिया का खात्मा हो रहा हो—उनकी नजर मे एक बेटी द्वारा यह एक अत्यधिक ओछी हरकत ही तो होगी, जिसने अपने आप को कलक की गहरी खाई मे बहुत नीचे गिरा लिया और खान्दान पर शर्म और अपमान का एक भारी बोझ लाद दिया।

और वह इस रास्ते को चुन कर तुरन्त भाग नही सकी। उसे पहले यह तो पता लगाना ही होगा कि वह कहाँ जाय – और वह यह कैसे पता लगा सकती है? शहर मे अवश्य कोई ऐसा गुप्त केन्द्र होगा जो पहाड़ियो पर छिपे लोगो से सम्पर्क रखते होगा। लेकिन वह उस केन्द्र का पता कैसे लगाये? उसकी ऐसी कोई मित्र नही है जिससे वह पूछ सके और वह इधर-उधर इस बारे मे सवाल पूछती चारो ओर घूम नही सकती। हाँ उसने बात-बात मे अपनी माँ से जरूर इस सबध मे कुछ ऐसे भाव से पूछताछ की जैसे वह उत्सुकतावश सब-कुछ पूछ रही हो। उसकी माँ फौरन चौकन्नी हो गयी। और जवाब दिया कि वह इस सबध मे कुछ नही जानती। और वह इस सबध मे कुछ जानना भी नही चाहती।

एक शुक्रवार को उसके माता-पिता गाँव मे अपने रिश्तेदारो के यहाँ मिलने-जुलने गये। वे बच्चो की देख-रेख करने के लिए सोरा को घर पर ही छोड़ गये। उनके लौटने के बाद सोरा ने अपनी माँ से प्रश्न पर प्रश्न पूछने शुरू कर दिये। क्या उन लोगो की यात्रा बहुत कष्टदायी

थी ? बस कहाँ से चली थो ? क्या बहुत से लोगो ने उनके साथ बस पर यात्रा की थी ? किराया कितना लगा था ? वस कितनी-कितनी देर मे ट्रिप लगाती है ? कितने-कितने वजे जाती है ? और इन प्रश्नो के अधूरे-पूरे उत्तरो से उसने इतना जान लिया कि एक बस सुबह सात वजे जाती है। यह वहुत अच्छा समय था, क्योकि उसके पिता और भाई उस समय तक घर से चले जाते हैं और वह और उसकी माँ ही छोटी बहनो की देख-रेख करने के लिए घर पर वच रहती है। उसके पास कुछ पैसे भी है, जो उसके पिता ने कभी-कभी उसे दिये थे ताकि वह पैसे बचाना सीख सके।

अंत मे वह सुवह भी आ ही गयी जब सोरा घर से भाग निकली। जब से उसने बुर्का पहनना शुरू किया था उसके बाद से यह पहला मौका था जव वह अकेली घर से निकली थी। वह चुपचाप घर से निकल कर सडक पर पहुँच गयी। काले बुर्के मे उसे देख कर केवल उसकी घनिष्ट मित्र ही उसकी चाल से उसे पहचान सकती थी। लेकिन किसी ने उसकी ओर ध्यान नही दिया। बस स्टॉप पर उसे बहुत से लोग बस का इतजार करते दिखाई दिये। वे लोग बस पर चढने मे व्यस्त रहे और वह इतजार करती रही। और फिर वह एक आदमी के पीछे-पीछे यात्रियो की पक्ति के अतिम सिरे पर खडी हो कर धीरे से वस मे चढ गयी। वह उस आदमी के बगल मे बैठ गयी और वस रवाना हो गयी।

अब उसे इस बात मे सावधानी वरतनी थी कि वह लोगो का ध्यान आकर्पित किये वगैर ही टिकट खरीद ले। उसने विल्कुल पूरा-पूरा केराया हाथ मे निकाल लिया। कडक्टर ने चुपचाप उसके हाथ मे केराया ले लिया और उसे टिकट दे कर आगे वढ गया। उसने सोचा, अभी तक तो सब-कुछ ठीक-ही-ठीक चल रहा है। अपने स्टॉप पर पहुँच कर वह वस से उतर गयी। उस गाँव की अपनी एक बहुत पहले की यात्रा का स्मरण कर के उसने उस गाँव के बारे मे अपनी याद ताजा की, और

प्रसन्नतापूर्वक अपने रिश्तेदारो के घर गयी। वहाँ उसकी चाची एकदम अकेली ही थी।

चेहरे पर से बुर्का उठा कर वह बोली—"चची जान, सलाम !"

"अरे सोरा !" उसकी चाची औचक मे बोल उठी—"तुम किसके साथ आयी ?"

"किसी के साथ नही। मै अपने आप चली आयी।"

"तुम्हारे अब्बाजान को मालूम है ?" चाची ने आश्चर्य से पूछा।

"नही" सोरा बोली, और फिर शीघ्रतापूर्वक कहने लगी—"आप जब पिछली बार हम लोगो से मिलने आई थी तो आपने अम्मी से कहा था कि गाँव मे स्थिति बिलकुल भिन्न है। देखिए चची जान, मैं पहाड़ियो पर जाना चाहती हूँ, और मैं आपकी सहायता चाहती हूँ।"

"अच्छा, अच्छा, बैठ तो जाओ," एक मोटी गद्दी जमीन पर पटक कर चाची बोली। "अच्छा, अब यह बताओ कि तुम पहाड़ियो पर क्यो जाना चाहती हो ? तुम वहाँ किसी को जानती भी हो ?"

अब सोरा ने वह सब कुछ कह डाला जो उसने सुना था, सोचा था और किया था, हालाँकि वह पहाड़ियो पर किसी को जानती नही थी।

"तुम्हारे माँ-बाप को इससे बड़ी ठेस लगेगी," अत मे चाची बोली, "क्योकि वे यही समझेगे कि तुम्हारे साथ कोई भयकर घटना हो गयी। वो समझेंगे कि कोई तुम्हे बहका ले गया, या भगा ले गया, या शायद तुम्हारी मौत ही हो गयी। वे घर पर बहुत परेशान हो जायँगे।"

"ओह, चची जान, उनके लिए मै एक मामूली लड़की मात्र हूँ," सोरा बोली।

"तुम उनकी बेटी हो," चाची ने उसे फौरन झिड़क दिया।

सोरा ने कोई जवाब नही दिया।

"लेकिन कुछ भी हो, मै तुम्हारी सहायता करूँगी," चाची ने उसके उदास चेहरे को देख कर कहा।

"शुक्रिया चची जान, बहुत-बहुत शुक्रिया !" सोरा खुशी से बोल उठी ।

"लेकिन एक मिनट रुको तो, बेटी । मै तुम्हे एकाएक यह नही बता सकती कि तुम पहाडियो मे इस रास्ते का अनुसरण करना या उस रास्ते का । इसमे समय लगेगा । तुम्हारे अब्बाजान तुम्हे ढूँढेगे । तुम्हारे चचा-जान सवाल-जवाब करेंगे । इसीलिए हम औरतो को हमेशा थोडी चालाकी से काम लेना पडता है । लेकिन फिलहाल तुम यहाँ मेरे साथ उसी तरह रह सकती हो, जैसे तुम घर मे रह रही हो । तुम यहाँ मकान से बाहर मत निकलना । क्योकि यहा औरते बुर्का नही पहनती और लोग तुम्हे देखते ही जान लेगे कि तुम कोई अजनबी हो । और तब लोग काना-फूसी करने लगेगे । हो सकता है कोई आदमी तुम्हारे अब्बाजान या भाइयो से कह भी दे और सारा मामला वही उसी वक्त खत्म हो जाय । तो यह बताओ बेटी कि जब तक मै जरूरी समझूंगी तब तक तुम यहाँ रहोगी या नही ?'

"रहूँगी, जरूर रहूँगी, चची जान ।"

"अच्छा, मुझे जरा चचा जान से बात कर लेने दो । वह खामोशी अख्तियार किये रहेगे । और अब आओ जरा मेरी मदद करो । रात का खाना समय पर तैयार करना जरूरी है ।"

धीरे-धीरे एक महीना बीत गया । सोरा की चाची कृपालु थी और लड़की की आशाओ और सपनो को सहानुभूतिपूर्वक सुनती थी । लेकिन वे पहाडियो के जीवन की कठिनाइयो की भी चर्चा करती रहती थी । उसके चाचा उसकी ओर ध्यान ही नही देते थे । और एक दिन के बाद दूसरा दिन पुराने ढर्रे पर बीतता जा रहा था ।

एक दिन सुबह-सुबह ही उसकी चाची ने गदे कपडो के एक ढेर को साफ करने को कहा । उस ढेर मे पुरुषो की बनियाइने, अडरवियर, रगील कमीजे और रूमाले थी । एक कमीज की जेब मे सोरा को खून

से सनी एक पट्टी मिली। उस पट्टी को उसने बिना किसी टीका-टिप्पणी के साफ कर दिया, क्योंकि उसने यह अदाज लगा लिया था कि वह पट्टी कहाँ से आई है। हालांकि उसकी चाची ने यह नही बताया था कि पिछली रात को पहाडियो से वहाँ कोई आया था। उसने सोचा, अब तो वे लोग यह जान ही लेगे कि वह यहाँ इतजार करती पडी है।

एक बार उसकी चाची ने उसे बताया था कि उसके अब्बाजान उसके बारे मे पूछ-ताछ कर रहे थे। और उसके बाद के दिनो मे कोई घटना ही नही हुई। लगभग दो महीने इसी तरह बीत गये। एक रात को उसकी चाची ने उसे सहसा जगाया।

'कपडे पहन लो," वह बोली— 'वक्त आ गया।"

एक बदूकधारी नौजवान रसोईघर मे इतजार कर रहा था। उसके बगल मे धुले हुए कपडो का एक बडल पडा हुआ था और खाने की चीजो का एक बैग भी रखा हुआ था, जिसे उसकी चाची ने गाँव मे इकट्ठा किया था। रात के उस सन्नाटे मे सोरा और उसकी चाची खामोशी से चलती हुई बाहर निकली। चार साल मे पहली बार वह बिना बुर्के के घर से बाहर निकली।

जब उसने यह सुना कि उसके पिता ने सैनिक कमाडर के प्रधान कार्यालय के पास यह अनुरोध लिख भेजा है कि वे लोग उनकी बेटी को घर आने की अनुमति दे दे, उस समय तक सोरा सैनिक जीवन की कठिनाइयो को काफी झेल चुकी थी। उसने एक महीने की छुट्टी की दरख्वास्त दी और उसे छुट्टी मिल भी गयी।

एक दिन शाम को काफी देर गये उसने माता-पिता का दरवाजा खटखटाया। उसके पिता ने ही दरवाजा खोला और वह चुपचाप अन्दर चली गयी।

'अल्लाह आप को सुकून दे, अब्बाजान," वह बोली।

अंधेरे गलियारे मे उसने अपना बुर्का उतार दिया। पहाडियो से आते समय अपने असबाब के बडल मे उसने बुर्का भी रख लिया था और उसे रास्ते मे उस समय पहन भी लिया था जब उसे बुर्का पहनना आवश्यक मालूम हुआ था।

उसके पिता ने उसका हाथ पकड लिया और उसे उस छोटे कमरे मे ले गया जो उसका और उसकी माँ का शयन-कक्ष था। उसकी माँ जग रही थी। "अम्मीजान," सोरा बडे कोमल स्वर मे बोल उठी।

"मेरी बच्ची! आखिर तू हमे छोड कर चली कैसे गयी?" सोरा को अपनी बाहो मे भर कर, सिसकती हुई वह फुसफुसाहट जैसी आवाज मे बोली।

"अच्छा, भाई बहुत हो गया!" उसके पिता ने कहा—"अब इसे परेशान न करो। कल हम लोग इसे ठीक से जी भर कर देखेगे और बात भी करेगे। अच्छा, सोरा, अब तुम यही लेट कर सो जाओ।"

"शुक्रिया अब्बाजान!" सोरा बोली। फिर उसने पूछा—"क्या पुलीस मेरे बारे मे पूछ-ताछ कर रही थी?"

"नही तो।"

"ठीक है। मगर आप लोग मेहरबानी कर के किसी को यह न बताइयेगा कि मै यहाँ आई हूँ, लडकियो को भी नही।"

"मगर क्यो न बतायेगे? उसकी माँ पूछ बैठी।

"पुलीस को पता लग जायगा तो वह मुझे यहाँ से पकड ले जायगी, इसलिए," उसने जवाब दिया। "मै तुम्हारे ही कमरे मे रहूँगी। और तुम से उसी समय बातचीत करूँगी जब कोई घर मे नही होगा।"

वह इतने दृढ स्वर मे बोल रही थी कि उसकी माँ भी प्रभावित हो गयी। लेकिन उसका पिता चिढ उठा। बोला—"अच्छा, अच्छा, अब सो जाओ।"

फिर भी, अगले दिन सुबह जब उसने अपने उस बेटे को जगाया जो साधारणतः उसके साथ बाजार जाया करता था, तो उसने उस लड़के से कहा कि वह अकेला ही चला जाय, क्योंकि उसकी तबियत ठीक नहीं है और वह घर पर ही रहना चाहता है।

उसके बेटे घर से चले गये। लड़कियों को खेलने भेज दिया गया और कह दिया गया कि वे दोपहर तक घर न लौटें ताकि उनके अब्बा-जान शांतिपूर्वक आराम कर सकें और सोरा की माँ ने दरवाजे पर ताला लगा दिया। तीनों पल्थी मार कर बैठ गये और एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

"तुम बहुत दुबली हो गयी हो," उसकी माँ बोली—"और तुम्हारी शकल-सूरत भी कैसी बर्बाद हो गयी है।"

सोरा कुछ नहीं बोली।

"तुम्हारी शादी होनी है," उसके पिता ने कहा—"और बहुत जल्दी ही।"

अभी भी सोरा कुछ नहीं बोली।

"तुम्हारा चचाजात भाई अली तुमसे शादी कर लेगा। आज मैं उसके अब्बाजान से कह दूँगा। कुछ ही दिनों में हम शादी कर देंगे।"

चूँकि सोरा ने अभी भी जवाब नहीं दिया, उन लोगों ने सोचा कि उसने उनकी अनुज्ञा स्वीकार कर ली है। कुछ भी हो पिता को अपने बच्चे की शादी तय ही करनी पड़ती है और बच्चा उस पर सहमत होने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकता। लेकिन सोरा ने तो कुछ कहा ही नहीं था, और न उसने विनय के भाव से अपनी नज़रें ही झुकाई थीं। वह तो अपने पिता की ओर सीधा ताक रही थी। उसने क्षण भर उसके बोलने का इंतजार किया, फिर उठ खड़ा हुआ। दोनों महिलाएँ भी उठ खड़ी हुई।

"यही तुम्हारे लिए सब से अच्छा रहेगा, सोरा," अंत में माँ ने

खामोशी तोडी । "वे लोग यहाँ से बहुत दूर नही रहते—बस से केवल चार घटे का रास्ता है । वहाँ कोई यह जानता भी नही कि तुम भाग गयी थी ।'

"मै माफी चाहती हू, अब्बाजान," अत मे सोरा बोली ही—"आप मुझे किसी के साथ बाँध सकते है, उसके हाथो मुझे सौप सकते है, लेकिन खानम मुझे हमेशा के लिए बाँध कर नही रख सकता ।"

"तो तुम हम पर शर्मिन्दगी का बोझ लादना चाहती हो," उसका पिता चीख पडा ।

"नही, मै आपकी इज्जत बढा रही हूं," सोरा ने बडे कोमल स्वर मे कहा ।

उसका पिता उन्हे छोड कर चला गया और उसकी माँ अनुनय-विनय, आँसुओ और निंदा-भर्त्सना द्वारा उसका दिमाग पलटने की कोशिश करने लगी ।

"अम्मीजान, मेहरबानी कर के अब्बाजान से कहो कि अभी इतजार करे । मै अपनी मर्जी से तुम लोगो के पास आई हूँ और मै तुम लोगो से दूरी आजादी से बात करना चाहती हू । अगर मै ऐसा नही कर सकती तो मुझे यहाँ से फौरन चला जाना होगा, और यह बात हम सब लोगो के लिए बहुत बुरी होगी ।"

उसकी माँ हैरान, परेशान कमरे से बाहर चली गयी ।

सोरा दोनो हाथो पर सर रख कर फिर लेट गयी । वह सोच रही थी, घर आना बहुत सुखद है । सफर कितना लम्बा, थकान भरा और खतरनाक था । सेना के नियम के अनुसार न तो कोई पहाडियो से नीचे जा सकता था, न सार्वजनिक वाहनो का इस्तेमाल कर सकता था ।

थोडी-थोडी देर मे सडको पर जाँच-पड़ताल होती रहती थी और औरतो तक की तलाशी ली जाती थी। शहरो के सभी वयस्क लोगो के पास परिचय-पत्र होना जरूरी था, और जब से उपद्रव शुरू हुए थे तब से परिचय-पत्र तैयार करने के लिए गाँव के लोगो की भी तस्वीरे खीची जा रही थी। यद्यपि उन्हे अभी तक परिचय-पत्र नही मिले थे, लेकिन पुलीस की फाइलो मे उनके सबध मे विस्तृत जानकारी मौजूद थी। सारा के पास परिचय-पत्र नही था, इसलिए उसे घर आने के लिए ६० मील का सफर पैदल ही गाँव-गाँव होते हुए तय करना पडा था। अब तो वह बस सोना चाहती थी।

जब कमरे का दरवाज़ा फिर खुला और उसकी नीद टूटी तो उसकी समझ मे नही आया कि वह कितनी देर सो चुकी।

"माफ कीजिये, अब्बाजान, मैं बहुत थकी हुई थी," तुरन्त उठ कर बैठती हुई वह बोली।

"उठो नही, उठो नही," उसके पिता बोले—"तुम मुझ से बात करना चाहती थी न ?"

"सब से पहले तो मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहती हूँ," वह बोली। "हमारे प्रधान कार्यालय ने मुझे बताया कि आप मुझ से मिलना चाहते है। लेकिन आपको यह मालूम कैसे हुआ कि मै पहाडियो पर हूँ ?"

"क्यो, तुम ने खुद ही तो यहाँ किसी को भेजा था।"

"तो वह यहाँ आया था ? यह तो अच्छा रहा। अब मै आपको यह बताना चाहती हूँ कि यह सब कैसे हुआ और वहाँ का जीवन कैसा है।"

और फिर उसने अपने पिता को सब-कुछ बता डाला—कैसे उसने खाने के समय अस्पताल के नौकर, वियतनामी सैनिक और महिला छात्रो के सबध मे उनकी बातचीत के कुछ टुकडे सुने थे, और फिर कैसे उसने

पहाड़ियों पर जाने का इरादा कर लिया। सोरा ने अपनी उस दुनिया के बारे में भी कुछ बातें बतायी, जिनमे उसके पिता को कोई रुचि न थी।

"हाँ, हाँ, फिर तुम अपनी चचीजान के यहाँ भाग गयी," वह गुर्राया।

"तो आपको इस बारे में भी जानकारी है ?"

"कहती जाओ, कहती जाओ," वह बोला।

सोरा पिता को और अधिक नाराज नही करना चाहती थी, इसलिए उसने अपनी चाची के बारे में और कुछ नही बताया। लेकिन वह पहाड़ियो के जीवन के बारे मे, चिकित्सा-विज्ञान की एक महिला छात्रा द्वारा दी गयी फर्स्टएडट्रेनिंग, दर्शन शास्त्र के एक छात्र द्वारा दी गयी राजनीतिक शिक्षा के बारे मे उन्हे बताती रही। उसने यह भी बताया कि वे खाना और पानी का कैसे इतजाम करते है, घायलो की मरहम-पट्टी कैसे की जाती है और उसने बदूक चलाना कैसे सीखा था।

"लेकिन तुम ने यह सब क्यो किया ?" उसने पूछा।

सोरा ने बडे सीधे-सादे शब्दो मे बात स्पष्ट करने की कोशिश की।

"हम लोग बेडूइन है, अब्बाजान। हमारे पुरखे रेगिस्तान मे रहा करते थे। अगर कोई उन्हे गुलाम बनाने की कोशिश करता था तो वे अपनी रक्षा करते थे। वे गुलामो की तरह ज़िदा रहने के बजाय लड़ते हुये जान दे देना ज्यादा पसन्द करते थे। और आज हमारे साथ बहुत कुछ ऐसी ही स्थिति हो गई है, समझे न आप।"

उसकी माँ अन्दर आयी और पूछा कि क्या बच्चो के घर वापस आने के पहले ही वह उनका खाना ले आये।

"हाँ, ले आओ। और सोरा का खाना भी लाओ।" उसने कहा।

माँ कुछ हिचकी। यह तो विलकुल ही क्रान्तिकारी विचार था। मर्दो के खाना खा चुकने के वाद ही औरतें खाती थीं, और मर्दों में जो कुछ वच-खुच रहता था वही खाती थीं।

"मैं जैसा कहूँ वैसा करो," वह गुर्रा कर बोला, क्योंकि वह यह नही चाहता था कि घर की औरतें उनकी किसी बात का कोई आशय लगायें। "जरा जल्दी करो, नही तो हमारे खा चुकने के पहले ही वे लोग आ जायेंगे।"

अगले कई दिनो तक सोरा के पिता ने यह वहाना बनाये रखा कि वह वीमार है, क्योंकि वह अपनी वेटी का मन फिर से जीतने के लिए सघर्ष कर रहा था। उसकी नजर मे खान्दान की इज्जत का जो भी अर्थ था उन्ही अर्थों मे वह घर की इज्जत को वचाने की कोशिश कर रहा था। अधिकाश समय वह सोरा के साथ बैठा रहता, उसकी बातें सुनता, उसे डाँटता-फटकारता, अनिच्छापूर्वक एक-दो वातो पर उससे सहमति प्रकट करता, अन्य वातो को अस्वीकार करता, प्रकट रूप में उसके साहस की प्रशसा करता, लेकिन शब्दो मे उसकी हरकतो की कटु निन्दा करता, और जिस अनुचित ढग से उसने पुरानी परम्पराओं को तोडा था उस पर वार-वार प्रहार करता। अपरिचित लोगो के साथ पहाडियो पर चली जाने की उसकी हरकत से वह किसी तरह समझौता नही कर पा रहा था।

यद्यपि उसने यह वात स्वीकार नही की, लेकिन वह सोरा की सुरक्षा के सवध मे भी चिन्तित था। सोरा ने उसे यह समझाने की कोशिश की थी कि स्त्री अव उसी तरह मर्द की गुलाम वन कर नही रह सकती जिस तरह अल्जीरिया अव साम्राज्यवादियो का गुलाम वन कर नही रह सकता। उसके पिता ने इस तुलना को समझा और यह तुलना उसे वडी

खतरनाक लगी, क्योकि इस वात मे उनके जीवन के तौर-तरीको के लिए खतरा निहित था।

वह वार-वार घूम फिर कर इसी वात पर आ जाता कि सोरा को शादी कर लेनी चाहिए।

"तुम यहाँ से गायव हो जाओगी और लोग शीघ्र ही भूल जायँगे कि क्या कुछ हो गया। तुम्हारे चचाजात भाई के खान्दान को तो मालूम भी नही है कि तुम कही चली गई थी।"

"लेकिन मुझे चचाज़ात भाई को फौरन सव-कुछ वता देना होगा।"

"ठीक है, तुम पहली ही रात को सव-कुछ वता देना। इससे तुम्हारे इकवाल की मिठास वढ जायगी।"

सोरा वोली—"हो सकता है कि यह मिठास कुछ दिन तक वनी रहे। लेकिन वह जल्द ही यह समझ जायगा कि फ्रासीसियो की नजर मे वह भी साजिश का हिस्सेदार वन गया है। अगर वह इन वातो के वारे मे नही भी जानता होगा तो भी फ्रासीसी उस पर यकीन नही करेगे। सारा खान्दान खतरे मे पड जायगा—उनके वाप, माँ, भाई, वहन और यहाँ तक कि उनकी जमीन और मकान भी खतरे मे पड जायगा।"

थोडी देर तक एकदम सन्नाटा छाया रहा।

"मकान के सामने ही जमीन मे जैसे एक भयकर धडाके वाली सुरग गडी रहेगी," सोरा कहती गयी—"जिसका किसी भी समय विस्फोट हो जायगा और हम सव उस विस्फोट मे उड जायँगे—वे लोग भी जो यह जानते भी नही होगे कि मकान के सामने एक विस्फोटक सुरग लगी हुई है। आज मुझसे जो कोई शादी करेगा उसे एक लमहे के लिए भी दिमागी सुकून नही मिल सकेगा, और मुझे भी कभी सुकून नही मिलेगा। हम दोनो के लिए जहन्नुमी हालात पैदा हो जायँगे।"

"लेकिन खतरा तो इन दिनों हर जगह ही है," उसने फिर अपनी बात पर जोर दिया—"और एक औरत की जगह उसके घर मे होती है, एक मर्द के साथ।"

"औरते भी उसी तरह वतन के लिए है जिस तरह मर्द।" बेटी ने तुरन्त जवाब दिया।

सोरा पाँच दिन से घर मे थी, लेकिन अभी तक वह अपने पिता को यह नही समझा सकी थी कि उसे पहाड़ियो पर वापस जाना ही है। इसलिए उसे अब अतिम तर्क का इस्तेमाल करना पड़ा—यद्यपि उसने अतिम अस्त्र का इस्तेमाल भारी मन से ही किया, क्योंकि वह अपने माता-पिता के साथ ऐसा व्यवहार करना नही चाहती थी।

"पुलीस जानती है कि मैं पहाड़ियो पर थी," उसने कहा, और फिर उसने उन्हे समझाया कि पुलीस की इस जानकारी का यही मतलब है कि वह विवाहित या अविवाहित, किसी भी हालत में जहाँ कही भी रहेगी वहाँ पुलीस द्वारा किसी भी समय वह तलाश कर ली जायगी और तब उसे मौत के मुँह मे समा जाना पड़ेगा, अरक्षित, लाचार।"

"लेकिन तुम फिर से चली जाओगी तो हम सब लोग भी खतरे मे पड जायँगे," उसका पिता बोल उठा।

"उस हालत मे कम खतरा होगा, अब्बाजान। मैं आप लोगो के पास से भाग गई थी—उसमे आप लोगो की कोई गलती न थी। लेकिन शादी होगी तो फ्रांसीसी लोग यही समझेंगे कि मेरा चचाजात भाई भी साज़िश मे शामिल था। आपको यह बात समझनी चाहिए।"

"तुम घर के बजाय पहाडियो पर ज्यादा खतरे में हो, सोरा," उसके पिता ने फिर जोर दिया।

"यदि मुझे मरना ही है तो मैं अल्जीरिया की आज़ादी के लिए

लड़ती हुई पहाड़ियो पर मर जाऊँगी, जिस तरह बहुत से बेडूइन लोग उस चीज़ के लिए मर चुके जिसे वे आजादी के नाम से पुकारते है।" वह दृढ़ स्वर मे कहती जा रही थी—"अगर मै यहाँ रहूँगी तो आज या कल मुझे सिर्फ कत्ल कर दिया जायगा। मै लड न सकूँगी।"

उसका पिता उसकी ओर बडी देर तक देखता रहा।

"तो फिर तुम पहाड़ियो पर ही वापस चली जाओ," अंत मे उसने कहा।

"अब्बाजान, आप अम्मी से पुलीस या मौत के बारे मे कुछ न कहियेगा," पिता के सामने घुटनो के बल बैठ कर बडे विनीत स्वर मे कहा। "यह बात ऐसी है जिसे केवल मर्दों को ही जानना चाहिए," उसने कहा, और घर लौटने के बाद पहली बार वह शरारत से मुस्करा उठी।

"या यो कहूँ कि इस बात को केवल औरतो को ही जानना चाहिए," उसके पिता ने असंतुष्ट स्वर मे गुर्रा कर कहा—"तुम्हारे सामने सर झुका कर मैं आधा औरत तो बन ही गया हूँ।"

"नही, अब्बाजान, नही। अब तो आप असली मर्द बन गये है," अपने अब्बाजान को चूम कर हँसती हुई सोरा बोल उठी।



सुन्दरी लियाने

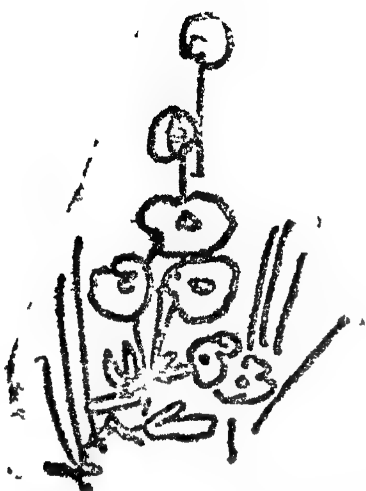
इस कहानी के लेखक

लुडविग ट्यूरेक

सन् १८९८ ईसवी में स्टेटल में जन्मे। यद्यपि कम्पोजीटरी की शिक्षा प्राप्त की, लेकिन समुद्र पर चले गये और बाद में मशीनविद के रूप में काम किया। जब कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई, तो उसमें सम्मिलित हो गये। सन् १९३० ईसवी से सन् १९३२ ईसवी तक सोवियत यूनियन में रहे, लेकिन जब हिटलर ने शक्ति ग्रहण कर ली, तो जर्मनी लौट आये। इसके शीघ्र बाद ही देश छोड़ देना पड़ा। फिर भी सन् १९४० ईसवी में वापस आने का रास्ता निकाल लिया, और युद्ध के अन्त तक गैरकानूनी रूप से रह कर गुप्त राजनैतिक कार्य करते रहे।



प्रकाशित कृतियों मे सम्मिलित हैं "ए वर्कर टेलस हिज स्टोरी' (सन् १९२९ ईसवी) "क्लियर टुटन" देश-निर्वासन के दौरान उनके अभियानों का वर्णन—सन् १९४९ ईसवी में प्रकाशित; "दि लास्ट वॉयज", समुद्र की एक कथा (सन् १९५० ईसवी); "एन लुविट्जके (सन् १९५२ ईसवी), एक स्त्री की कहानी, जिस ने बमबारी से बरबाद बर्लिन मे मलवा साफ़ करने मे सहायता की। सन् १९५९ ईसवी में गत पच्चीस वर्षों मे लिखी उनकी कहानियों का संग्रह पुस्तक-रूप में प्रकाशित हुआ।



लियाने अकनर एक सुन्दर लडकी थी, जो अ्रैडेनवर्ग के एक छोटे से नगर की फैक्टरी मे काम करती थी । अन्य लड-कियो मे वह लोकप्रिय नही थी, और इसका कारण यह था कि मर्द उसके आकर्पण से वच नही पाते थे । जव कभी कोई मर्द उसके कारखाने मे आता था, जिसमें केवल स्त्रियाँ ही काम करती थी, तो उसका ध्यान लियाने की ओर अवश्य जाता था। यह विलकुल निश्चित रहता था, कि कुछ देर इधर-उधर टहलने के वाद, वह अन्त मे लियाने के बेच के पास आयेगा और वहाँ रुकेगा । इससे अन्य लड़कियो को चिढ होती थी। और उन्हे डाह होती थी, ईर्ष्या होती थी, या नैतिक रोष होता था, खास कर इसलिए कि वह अपनी वड़ी-वडी काली सुन्दर आँखें, भरे-भरे हृदय के आकार के होठ, पुष्ट उरोज, सुरचित नितम्व और लम्वे पतले पैरो के प्रदर्शन का कोई मौका हाथ से जाने नही देती थी । उसके दो उपनाम थे, मर्द उसे "क्यूटी" कहते थे और लडकियाँ "प्रेम की गुडिया"। पहले नाम से उसे प्रसन्नता होती थी, और दूसरे की वह अवहेलना करती थी ।

लेकिन अनेक शत्रुओ मे से किसी वदमिजाज से वदमिजाज को भी कभी उसे नीचा दिखाने का मौका नही मिला, क्योकि वह बहुत अच्छी

श्रमिक थी। जब कभी फैक्टरी में कोई जलसा होता था, तो लियाने अपने सीने पर ढेरो तमगे लगा कर उपस्थित होती थी और 'कारखाने की सर्वश्रेष्ठ स्त्री श्रमिक लिखा जरी से कढा हुआ एक छोटा लाल झडा एक लम्बे अरसे से उसके काम करने की वेंच पर टँगा था। कोई यह नही कह सकता था, कि ऐसा उसके सेक्स अपील के कारण था, क्योंकि कोई भी अपनी आँखो से देख सकता था, कि उसकी उँगलियाँ जटिल औजारो के वीच कितनी तेजी और होशियारी से चलती थी। एक वार जब हल्के उद्योगो के मत्री ने उस फैक्टरी का निरीक्षण किया था, तो उसने ऐसी तेज़ चाल का प्रदर्शन किया था, कि वे तथा उनके सहयोगी लगातार सात मिनट तक मूर्तिवत खडे रह गये थे। वदनाम करने वालो ने इशारा किया था, कि उन्होने उसके व्लाउज के अन्दर झाँका था, लेकिन यह गंदा आक्षेप शीघ्र ही भुला दिया गया था।

यह तथ्य ही कि वह वहुत अच्छी तरह काम करती थी उसके नैतिक सुधार के एक वहुत वड़े आन्दोलन की असफलता का कारण था। श्रमिक संघ कमेटी के साथ पार्टी कमेटी की एक प्रारम्भिक वैठक हुई थी। वैठक मे जो झगडा हुआ, उसके वीच श्रमिक सघ के अध्यक्ष वृद्ध वर्नर सीवर्ट मेज पर घूँसा मार कर चिल्लाये :

'अपनी खट्टी नैतिक चटनी से क्या आप लोग लियाने को फैक्टरी से विलकुल भगा देना चाहते है। यह न भूलिये कि हमे अपनी योजना पूरी करनी है, और यह काम हम लियाने के विना नही कर सकते।"

पार्टी सचिव हर्वर्ट रॉचमैन ने "खट्टी नैतिक चटनी" की व्याख्या माँगी, और सघ कमेटी ने एकजुट हो कर उन्हे ढोगी और "सप्त शयालु" कहा।

" 'सप्त शयालु' से आपका क्या मतलव है ?' " सचिव ने चीख कर पूछा।

"हमारा मतलव है कि वहाँ आपके लिए लडकियाँ ही लडकियाँ है—सम्भवत. सात।"

रॉचमैन फट पडा, और उसने अपने अनैतिक आचरण का सबूत माँगा।

"तुम इस फैक्टरी मे पाँच साल से हो," सीवर्ट ने उत्तर दिया— "और इस बीच तुम्हारी कभी कोई स्थायी नारी मित्र नही रही, इसलिये तुम 'सप्त शयालु' होगे ही।"

"मै सबूत माँगता हूँ!" पार्टी सचिव गरजा।

"पहले तुम सावित करो कि यह सच बात नही है," सीवर्ट ने मुस्करा कर कहा। और किसी अन्य ने जोडा— "तुम्हारा सेक्स जीवन एक रहस्य है।"

यह कहा नही जा सकता, कि इसके बाद क्या हो जाता, यदि उनमे से सब से बड़े ओटो रीड ने यह सुझाव पेश न किया होता, कि बहस अब खत्म कर दी जाय। इस बात पर सहमति हुई, कि रॉचमैन लियाने से इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक बात करे।

"लेकिन मैं आपको चेतावनी देता हूँ," सीवर्ट ने रॉचमैन की ओर उँगली हिलायी," लियाने से जो कहियेगा सावधानी से कहियेगा, नही तो वह चिढ जायेगी और काम छोड देगी।"

लगभग उसी समय—क्रिसमस से दो सप्ताह पहले—फिटर विभाग वाली लडकियो ने एक नया शिगोफा छेडा। उनका कहना था कि प्रेम की गुड़िया मर्दों में लोकप्रिय अवश्य है, लेकिन वह किसी को अपने साथ शादी करने के लिए राजी नही कर सकती। लियाने, जो आमतौर पर पीठ पीछे अपनी बुराई का ख्याल नही करती थी, ताव मे आ गयी, और उसने नव वर्ष दिवस से पहले-पहले शादी कर लेने का बीड़ा उठा लिया। यह सनसनीखेज वादा था। वे अनुमान लगाने लगे—क्या उसकी किसी खास पर नजर थी? क्या सचमुच वह किसी से सगाई कर चुकी है? इन सब प्रश्नो के उत्तर मे उसके इनकार करने पर हँसी का एक तूफान

उठ गया। उस जैसी नाकारा से कौन शादी करेगा—अगले ही दिन वह उसे धोखा दे सकती है!

लियाने अपने वचन को गम्भीरतापूर्वक ले रही थी, यद्यपि वह अपना भेद न खुलने देने की सावधानी बरत रही थी। वह छेड़-छाड़ करती रही—पहले से कही ज्यादा जोर-शोर से। नैतिकता के कारण क्रुद्ध व्यक्ति उन घटनाओ को ले कर उलझे हुए थे, जिनकी ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया जा रहा था, ईर्ष्यालु लड़कियाँ लगभग विस्फोट की अवस्था में पहुँची जा रही थी; ईर्ष्या घास-फूस की तरह उग रही थी।

मामला इस हद तक बढ गया कि एक बार हाथापाई तक की नौबत आ गयी, और रॉचमैन पर दबाव डाला गया, कि वह तुरन्त लियाने से बात कर ले। रॉचर्मन ने कहा कि उसे एक लम्बी रिपोर्ट लिखनी है; उसके बाद उसे एक सम्मेलन मे सम्मिलित होना है, इसलिये मामले को अभी कुछ दिन और मुल्तवी रखना पड़ेगा।

जब वर्ष समाप्ति पर आ रहा था, तब एक पति प्राप्त करने में लियाने की असफलता ही एकमात्र चर्चा का विषय बन गई थी।

"हम लोग तुम्हे क्रिसमस पर एक जम्पिग (कुदक्कड) जैक भेंट करेंगे," लडकियाँ व्यग करती। "उससे तुम्हे कुछ तो सतोप होगा ही।"

विपबुझे तीरो की तरह तीखे मजाको की उस पर वर्षा होने लगी, और वह वास्तव मे परेशान होने लगी। अभी तक भाग्य ने उसका साथ नही दिया था—वह कैसे किसी को अपने साथ विवाह कर लेने का गम्भीर प्रस्ताव करने के लिए राजी करे? हर गुज़रता दिन हारी हुई लडाई जैसा होता था। अपनी चिन्ताओ को वह बहुत अधिक काम में डुबोये दे रही थी, और उसकी बेच के पास तयार पुरजो का एक बहुत बडा ढेर लग गया था। फोरमैन सोचने लगा था, कि शायद प्रारम्भिक सभा ने उसके लिये चेतावनी का काम किया है। उसने उससे इस बात की ओर इशारा करने की भूल भी की।

"अगर तुम इस तरह काम करती रहोगी, तो उन लोगों के पास तुम्हारे खिलाफ कुछ न रहेगा," उसके ऊपर झुक कर, वह फुसफुसाया।

"इससे तुम्हारा क्या मतलब है ?" लियाने ने सख्ती से पूछा।

"ऐ, तुम जानती तो होगी ही, कि उन लोगो ने तुम्हारे नैतिक आचरण के संबध मे एक सभा की थी ? रॉचमैन तुम्हे खासी फटकार सुनाने वाले थे !"

इसका विनाशकारी प्रभाव हुआ। क्षण भर लियाने तनी बैठी रही, फिर उसकी आँखे खतरनाक ढग से चमकी और फिर उसने फोरमैन पर ऐसी नजर फेकी, जिससे वह लडखडा कर सीधा खडा हो गया। फोरमैन ने उसका हाथ पकड लिया, लेकिन उसने हाथ छुडा लिया, डॉगरी उतार कर उसके पैर पर पटक दिया और कारखाने से बाहर निकल गयी। चकित लडकियो के हाथो से औजार गिर गये, और फोरमैन पीला पड गया, भाग कर खिड़की के पास गया, और उसने देखा कि लियाने ने सहन पार किया और फैक्टरी के फाटक से बाहर निकल गयी।

यूनियन कमेटी के दफ्तर मे लियाने के इस तरह चली जाने की खबर दरबान लाया। वर्नर सीबर्ट भाग कर रॉचमैन के पास गये और उसे फोरमैन को टेलीफोन करते पाया। वे बेसब्री के साथ सुनने लगे।

"तुम उसके बिना योजना पूरी नही कर सकते ? यह बिलकुल वाहियात बात है ! .. मैं जानता हूँ कि उसके पास सबसे कठिन काम था। . कोई भी अपरित्याज्य नही है। . हाँ, जरूर .."

सीबर्ट अब अपने-आप को रोक नही सके।

उन्होने रॉचमन के हाथ से रिसीवर छीन लिया।

"हॉर्स्ट ! सुनो, हॉर्स्ट। मै वर्नन हूँ। एक मिनट के लिए यहाँ आ

जाओ। यह बहुत ज़रूरी है, यह काम। हम इसे टेलीफ़ोन से तै नही कर सकते।"

"लेकिन देखिये। अभी मेरे पास समय नही है!" रॉचमैन ने विरोध किया। "पॉच मिनट मे..."

अपनी बडी-सी मुट्ठी से सीवर्ट ने मेज़ पर घूँसा मारा। "तुम जहाँ हो वही रुके रहो।" वह गरजे।

"लेकिन मुझे क्षेत्र कमेटी जाना है। योजना का प्रश्न है!" रॉचमैन ने बहस की, यह समझते हुए कि वह ट्रम्प जमा रहा है।

"यह तो ठीक है", सीवर्ट चीख़ा, "लेकिन योजनाएँ तो यहाँ फॅक्टरी मे पूरी होनी है। तुम जहाँ हो, बस वही रुके रहो!"

फोरमैन तेजी से अन्दर आया, एक कुरसी पर गिर पड़ा और विवशतापूर्वक रॉचमैन को देखने लगा।

"हमे फौरन कुछ-न-कुछ करना ही है। लियाने को वापस आना ही होगा, नही तो वर्ष के अन्त तक हम काम पूरा न कर पायेगे। हम वह सब फिटिंगे पूरी न कर पायेंगे, अगर वह वापस न आयेगी!"

सीवर्ट ने एक तरह की जिरह शुरू कर दी।

"लियाने से तुम ने वह बातचीत क्यो नही की, रॉचमैन? हम मे तो यह बात तै हो गई थी। क्या अब हम अपने प्रस्ताव कार्यान्वित नही करते?"

रौंचमैन अपराधी-सा दिखने लगा।

"लेकिन आपको मालूम है, कि मुझे कितना ढेर-सा काम करना पडता है—रिपोर्ट, सम्मेलन और...."

"हरबर्ट! तुम्हारी खोपडी मे कब यह बात घुसेगी, कि सब के ऊपर फैक्टरी है। हम हर चीज की बुनियाद मे हैं..."

उन्होने अपनी भारी मुट्ठी हरबर्ट के कधे पर रख दी।

"अब वह करो, जो मै कहूँ। लियाने के घर जाओ, लेकिन उससे वहाँ बात न करना; मकान-मालकिन को सब-कुछ सुनना न चाहिये। कार ले लो और उसे क्लब ले जाओ। फिर उसके साथ किसी एकान्त कोने मे बैठ जाओ। लियाने को वापस आना ही होगा। हार्स्ट बिलकुल ठीक कहता है। चाहे उसका स्थान लेने के लिए बाद मे हम किसी को पा भी जाये, लेकिन इस समय नही पा सकते, जब कि हम वर्ष भर का काम समाप्त कर रहे है। यह मत भूलो, हर्बर्ट, कि परसो नव वर्ष की पूर्व-सध्या है। हमारे पास केवल दो दिन बाकी है।"

बिना एक शब्द भी कहे, रॉचमैन क्लोकरूम से अपना कोट उठा लाया।

जब वह चला गया, तो वृद्ध सीबर्ट खिड़की के पास गये और बाहर सहन मे झाँकने लगे। फिर अपने झुर्रीदार नक्शो पर मुस्कराहट लिये, वह टेलीफोन के पास गये, कुछ मिनट तक सोचते खड़े रहे, फिर रिसीवर उठा लिया और क्लब को फोन किया।

मकान-मालकिन रॉचमैन को लियाने के कमरे मे लिवा ले गयी। वह कोच पर लेटी थी, उसकी आँखे लाल और सूजी थी, और उसे देख कर वह खुश नजर नही आयी। कुछ सकोच भरे मिनटो के बाद वह कोच के सिरे पर बैठ गया।

"बाहर कार खडी है, लियाने", उसने कोमल स्वर मे कहा। "मेरे साथ क्लब चलोगी ?"

"किसलिए ?"

शायद वह बता देता कि वह वहाँ क्यो आया है, लेकिन यकायक उसे अनुभव हुआ कि उसके बारे मे सभा में उसने जिस तरह बातें की थी, वह बिलकुल गलत था। उसका सुन्दर, आँसू के दागो से भरा छोटा-सा चेहरा उसकी आलोचना से मेल नही खाता था।

"हम एक गिलास शराब ही पी लेंगे साथ-साथ ?"

वह चुपचाप उठी, क्योंकि मर्दों द्वारा पेश किये गये सुझावों से सहमत हो जाना उसे हमेशा ही पसंद रहा था, और मेकअप ठीक करने के लिए आईने के पास गयी। जरा देर बाद वह रॉचमैन के बगल में कार में बैठी थी।

वे तेज़ी से क्लब-हाउस पहुँचे, जो नगर से बाहर कुछ दूरी पर था। उस समय वह लगभग खाली था और उस छोटे-से मदिरा रेस्तराँ में केवल वे ही थे।

वेटरेस ने नाम ले कर उनका स्वागत किया, लगभग इस तरह जैसे वह उनकी प्रतीक्षा ही कर रही हो, और रॉचमैन ने एक बोतल चीनी डेसर्ट शराब का आर्डर दिया। "लेकिन वह तो बहुत भारी शराब है, हर रॉचमैन", वेटरेस ने उसे याद दिलाया।

"कोई बात नही," लियाने ने कहा, "जितनी तेज़, उतनी ही बेहतर।"

इन शब्दों से वेटरेस को आश्चर्य हुआ, लेकिन रॉचमैन ने कहा कि उन्हे उसी चीज़ की जरूरत है।

पहले दो गिलासों के बाद रॉचमैन ने काम पर आ जाने की कोशिश की। उसने खाँसा, जैसे वह सभा आरम्भ करने जा रहा हो।

"अब मतलब की बात पर आया जाय, लियाने," उसने कहना आरम्भ किया। "मैंने तुम्हे यहाँ आने को इसलिये कहा..."

लियाने ने उसके माथे पर आ गये बालों को पीछे कर दिया और कोमलता से उसका गाल थपथपा दिया। इससे वह ऐसा गडबड़ा गया, कि उसे फिर से शुरू करना पड़ा।

"मैंने तुम्हे यहाँ इसलिए आने को कहा..."

"मै उसके वारे में सव जानती हूँ," लियाने उससे टिकती हुई कोमलता से बोली।

आखिर यह क्या जानती है, रॉचमेन ने सोचा। क्या किसी और ने उससे वात की है ?

उन्होने फिर गिलास मिलाये।

"अगले वर्ष आपके काम मे सफलता के लिए !" लियाने ने कहा। "क्या आप तै कर चुके कि न्यू इयर्स ईव कसे मनायेगे ?"

अजीव वात है, रॉचमेन ने सोचा। यह वात यह किस लिये जानना चाहती है ? और उसे अनुभव हुआ, कि उस सुन्दर लडकी के साथ कोई वेवकूफी कर वैठने से वचने के लिए उसे अपने-आप को नियत्रण मे रखना होगा। दूसरे उसके वारे मे क्या सोचेगे ? लेकिन उसकी उँगलियाँ वुजलाने लगी उसे छूने और यह पता लगाने के लिए कि क्या उसका सौदर्य वास्तव मे ही वैसा ही खरा था, जैसा हर व्यक्ति का कहना था। उसने अपनी वाँह लियाने के कधे से लिपटा दी। एक रेस्तराँ मे इसकी इजाजत तो है ही, उसने सोचा। लेकिन उसे इसका निश्चय नही था कि अगले क्षण लियाने ने जो कुछ किया, उसकी भी इजाजत थी, लियाने ने अपने दोनो हाथो मे उसका सिर पकड़ कर, अपनी वडी-वडी काली आँखो से उसे वडी गम्भीरता से घूरा। उसके होठ जरा-सा खुल गये, और रॉचमेन को लगा कि वह उसके लिए अपना दिल खोल रही है।

लियाने ने उसे जोश के साथ चूम लिया, और सहसा, अपने जीवन मे पहली वार, रॉचमेन को वास्तविक प्रेम के चकरा देने वाले आनद की अनुभूति हुई। वह "सप्त शयालु" रहा था, और लोगो का उसके खिलाफ यह आरोप सही था। लेकिन अव उसने निश्चय कर लिया लियाने ही, जो इतनी सुन्दर और दिल वाली थी, उसके लिए एकमात्र लड़की थी।

जब कि वह तीसरी बार उमे चूम रहा था, जब कि लियाने की लम्बी बरौनियो पर खुशी के आँसू एकत्र हो कर उसके गुलाबी कपोलो पर ढुलक रहे थे, दरवाजा खुला। यूनियन कमेटी के सीवर्ट, पार्टी कमेटी के वृद्ध गरहार्ड, लियाने का फौरमैन, फैक्टरी के मैनेजर और वीमेन्स डिमाक्रेटिक लीग की फ्राव थ्यूएमलर, लाल गुलाबों का एक विशाल गुलदस्ता लिये, अन्दर आये।

"बधाइयाँ !" दोनो के हाथ पकड़ कर वृद्ध सीवर्ट चिल्लाये। "हम ने तै कर लिया है," चमकता चेहरा लिए, प्रसन्न स्वर मे उन्होंने आगे कहा।

वेट्रेस अन्दर आयी, और उसने मुस्कराते हुए उन्हे कुहनी मारी, जिस पर उन्होने उसे बीस फ़ेनिग दिये, जो टेलीफोन करने के लिए उन पर बाकी थे।

नव वर्ष की पूर्व-सध्या को दोनो विवाह पजीकरण कार्यालय गये। लियाने के कारखाने की लडकियो ने वैवाहिक उपहार के लिए चन्दा जमा किया, और फैक्टरी ने एक शानदार विवाहोत्सव पार्टी का आयोजन किया। अर्द्धरात्रि के समय सबने अपनी-अपनी गिलासे ऊपर उठायी, और सीवर्ट ने गरज-गरज कर रोस्ट के शब्द कहे :

"लियाने और हरबर्ट की हमारी सब से कम उम्र की जोड़ी जिन्दाबाद ! भविष्य की तमाम आशाओ के साथ नव वर्ष जिन्दाबाद ! समाजवाद जिन्दाबाद ! हिप, हिप, हुर्रे !"

सब लोग खुशी से इसमे शामिल हुए और गिलासे प्रसन्नतापूर्वक खनकी।



बीसवीं सदी की आखिरी रात

स्टेफ़न हीम

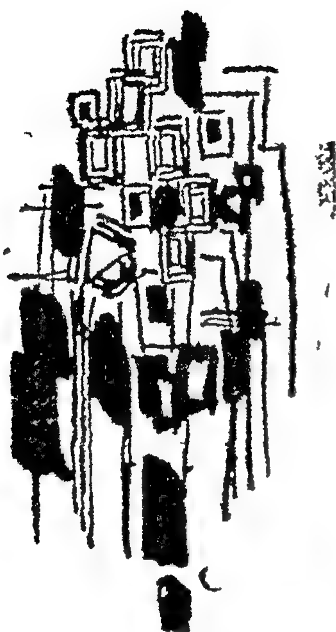
बीसवीं सदी की आख़िरी रात

इस कहानी के लेखक

स्टेफ़न हीम

एक प्रकाशित कवि थे, अभी जब कि बर्लिन के एक विद्यार्थी ही थे नाजियों के विरुद्ध एक कविता ने गेस्टैपो की सूची मे पहुँचा दिया। बीसवे जन्मदिवस, १० अप्रैल, सन् १९३३ ईसवी, को चेकोस्लोवाकिया भाग गये। दो वर्ष बाद प्रवासी के रूप में अमरीका चले गये और द्वितीय महायुद्ध में अमरीकी फौज में एक सिपाही, नॉन-कमीशंड, तथा अफसर की हैसियत से सेवा की। सन् १९५२ ईसवी मे जर्मनी वापस आ गये। मिस्टर हीम अँग्रेजी में लिखते हैं, और सभी उपन्यास न्यू यार्क और लंदन में आरम्भ में प्रकाशित हुए थे : "होस्टेजेज" (सन् १९४२ ईसवी); "ऑफ़ स्माइलिंग पीस" (सन् १९४४ ईसवी); "दि क्रूसेडर्स" (सन् १९४८ ईसवी); "दि आइज आफ़ रीजन" (सन् १९५१ ईसवी); गोल्ड्सवारो' (सन् १९५४ ईसवी)। दो कहानी-संग्रह, "कैनीवाल्स" (सन् १९५७ ईसवी) और "शैडोज ऐंड लाइट्स" (सन् १९६३ ईसवी)। सेवेन सीज ने "दि क्रूसेडर्स" और "होस्टेजेज" का पुनर्मुद्रण किया—दूसरे की "दि ग्लेसनैप केस" के नाम से। नवीन उपन्यास ऐतिहासिक कथानक पर आधारित एक बड़ी कृति है।





सन् १९९९ मे क्रिसमस-सबधी खरीदारी एक खासी समस्या थी। मेरे कहने का मतलब यह है कि साम्यवाद, जिसके अन्तर्गत हर व्यक्ति अपनी आवश्यकताओ के अनुसार पाता है, ठीक है; लेकिन जब वे आवश्यकताये पूरी हो जाती है, तो क्रिसमस के लिये उपयुक्त उपहार तलाश करने मे आपकी दुर्गति हो जाती है।

हमारे सेंट्रल डिपार्टमेट स्टोर की ८९ वी मजिल पर अन्त मे मुझे एक छोटा-सा कम कीमत का आभूषण मिला और मैने समझा कि गर्टरूड उसे पसद करेगी- बडी सुन्दरता से बनाई गई एक अँगूठी, जिस मे कबूतर के अडे के आकार का हीरा लगा था। उस हीरे मे बडी शानदार चमक थी, जो सचमुच हैरत मे डालने वाली बात थी, जब आप यह सोचते थे कि वह किसी परमाणुविक परिवर्तन प्रक्रिया से निर्मित चीज थी। विस्तार की बाते मुझ से न पूछिये, मेरे मित्र वेस्ट अफ्रीका इस्टीट्यूट ऑफ टेकनालोजी के डाक्टर पीटर एनकोमो से पूछिये, वह आपको अन्तिम परमाणु की अन्तिम मुडाव तक समझा सकते है।

अपने लिये मैंने गर्टरूड को वाबायूमाह की सम्पूर्ण कृतियो का २० जिल्दों वाला एलेक्ट्रानिक आई सस्करण खरीदने की सलाह दी, जिनके साथ विख्यात साहित्यिक आलोचक वेनवेन्यूटो मोराल्स की भूमिका तथा टिप्पणियाँ भी सलग्न थी, जो अपने गहरे "विचारो के लिये प्रसिद्ध है—ऐसे विचार जो किसी की समझ मे नही आते, स्वय उनकी समझ मे भी नही। सैंटा द्वारा अपने लिये वाबायूमाह ले आये जाने के सम्वन्ध मे निश्चिन्त हो जाने के लिये, मैंने अपना प्लैस्टिक का खरीदारी टिकट स्वचालित विक्रेता से पच करवा लिया, गर्टरूड को वस इतना ही करना था, कि वह हमारा हेली-जेट यान ले कर जाय और वह सस्करण उठा लाये।

वाबायूमाह हम दोनो को पसद है। उन्होने सत्तरवे दशक के आरम्भ काल मे लिखना शुरू किया, और साहित्यिक पोपो द्वारा पैदा की गयी कठिनाइयाँ झेलने के वाद, उन्हे वाद केकाल के समय के शेक्सपियर के रूप मे मान्यता प्राप्त हुई, और वे अन्य लोगो के साथ वृहस्पति की यात्रा करने वाले पहले अन्तरिक्ष-यान की दुर्घटना में खत्म हो गये, तो उनके लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय शोक दिवस का आयोजन किया गया। वह एक अग्रणी थे। उन्हे नई चीजे और नये विचार पसद थे और आज के स्कूली वच्चे उनके 'ओड टु क्यूरियासिटी' (कौतूहल का गीत) का पाठ करते है:

"मानव, कौतूहलयुक्त, सृजनशील, अग्रसर विश्व की ओर..."

जो हो, मुझे वही सस्करण प्राप्त करने की इच्छा थी—जो पुराने ढग की दियासलाई की डिबिया से वडा नही था, आप उसे एलेकट्रानिक आई रीडर मे लगा दीजिये, फिर सेमी-कडक्टर सेसर अपनी कनपटियो पर जमा लीजिये, वस अद्भुत शब्द तथा आकृतियाँ सीधे आपके मस्तिष्क मे प्रवाहित होने लगेंगी, और पीछे उठँग कर आप आराम कीजिये और कवि के विचारो के साथ अपने-आप को छोड दीजिये।

क्रिसमस के वाद नव वर्ष पूर्व-सध्या का प्रश्न आया और यह कि

उसके बारे मे क्या किया जाय। प्राचीन काल के लोगो को यह चिन्ता सता रही थी कि २००० ई० के वर्ष मे ससार का अन्त हो जायेगा, मै आप से कहता हूँ, कि मानव जाति विगत शताब्दी मे अनेक बार विस्फोट कर के अपने-आप को उडा देने के निकट पहुँच चुकी थी। लेकिन हर बार हम ने स्थित सँभाल ली। किसी-न-किसी प्रकार सकट की ऐसी घड़ियो मे लाखों-लाख जाग्रत हुए लोग उस पागलपन को रोक देने के लिये उठ खड़े हुए थे, और प्रथम अमरीकी क्रान्ति के ठीक दो सौ वर्ष बाद जब १९७६ आया, और सयुक्त राज्य मे वह कुछ घटित हुआ, जिसे अब हम 'दि ग्रेट चेंज' (महान परिवर्तन) कहते है, तो मुख्य खतरा खत्म हो गया।

पिछली नव वर्ष पूर्व-सध्या को एनकोमोओ के यहाँ सभी आये थे। हम भी चार हजार मील दूर से आये थे। ..और वह बडी सुन्दर पार्टी थी, युवा श्रीमती एनकोमो बडी विनयशील मेजवान साबित हुई थी, ओ, कॉवर भी, जो कागनैक गोलियाँ पी कर नशे से धुत्त हो गया था, इस बात से सहमत था। लेकिन अब जब कि एनकोमो लोगो के यहाँ एक बच्चे का जन्म हो गया था, और किसी और को पार्टी का आयोजन करना ही था, तो फिर हमी क्यो न करे ?

मैने ऑल-पर्पज कम्यूनिकेटर के इनटेक डिवाइस मे अपना रुचिकर पतो वाला टेप लगा दिया। गर्टरूड ने कहा कि मुझे अरुचिकर लोगो के पतो वाला टेप भी इस्तेमाल करना चाहिये, वह मिथ्या विश्वासी थी और यह नही चाहती थी कि २००० वाँ वर्ष अति अनुरूप पार्टी के साथ आरम्भ हो। लेकिन मैंने बहस करते हुए कहा कि मैने अपने अधिक रुचिकर परिचितो की सूची तैयार करते हुये कुछ ढीले ढग से ही लकीर खीची थी, और, कुछ भी हो, उत्तेजना उत्पन्न करने के लिये काफी खट-खटिया लोग उसमे मौजूद होगे।

ए पी सी भनभनाने लगा। डा० एनकोमो परदे पर प्रकट हुये।

अपने ताँबिया रङ्ग और पालीटोन कमीज़ मे, जिसका रङ्ग पहनने वाले की मन स्थिति और वातावरण से अपना मेल बैठा लेता था, वह बहुत अच्छे दिख रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि क्या वह और रुथ नव वर्ष मनाने के लिये मेरे यहाँ आना पसन्द करेंगे, तो उन्होने कहा कि, हाँ, बशर्ते कि वे ३१ ता० तक अपने बच्चे की स्वचालित आया को ठीक करवा ले सके। विज्ञापन मे कहा गया था, कि वह बिलकुल फूलप्रूफ है, ऐसी मशीनो मे से एक, जो न केवल कार्यक्रम के अनुसार काम करती और अपने-आप को ठीक बठा लेती है, बल्कि जरुरत पडने पर अपनी मरम्मत भी कर लेती है, लेकिन उनकी मशीन मे कुछ गडबडियाँ पैदा हो गई थी, और वह साइबेरिया प्रदेश के ब्राट्स्क नामक स्थान से मरम्मत करने वाले के आने का इन्तजार कर रहे थे, जहाँ यह गॅजेट ढेर की ढेर तैयार किया जा रहा था। मैंने सुझाव दिया कि वे स्ट्रैटो-बस पर स्थान तो सुरक्षित करा ही ले। वह राजी हो गये, लेकिन उन्हे इस बात की चिन्ता हुई, कि वे स्ट्रैटोपोर्ट से मेरे घर तक कैसे पहुँचेंगे, क्योकि नव वर्ष की पूर्व-सध्या को हमेशा की तरह हेली-टैक्सी कही मिलती नही। मैंने कहा कि मैं उन्हे और रुथ को लाने के लिये अपना जेट यान भेज दूंगा, और उन्होने कहा कि मेहरबानी कर के मैं इस बार ठीक बटन दबाऊँ। मैंने वादा कर दिया और पिछली बार के लिये फिर से माफी माँगी—पिछली बार, जब वह मेरे यहाँ आये थे, मैंने अपने डेस्क पर रखे टेलीपाइलट पर गलत बटन दबा दिया था, और मेरा हेली-जेट यान गलत स्ट्रैटोपोर्ट को चला गया था, और भूल सुधारी जाने से पहले पीटर को घटे भर तक इन्तज़ार करना पडा था—यह समय उस समय का तिगुना था जितना उन्हे पश्चिम अफ्रीका मे स्थित अपने कॉलेज से बस मे यहाँ तक उड़ कर आने मे लगा था।

हम ने शघाई से लियु लोगो को निमन्त्रित किया—लियु एक श्रमिक था, जिसने ऐसे अन्तरिक्षीय किरण अवरोधक अल्प-वजनी धातु तैयार

करने मे सहायता की थी, जिनसे अलफा सेंटारी तक, जो हमारे सूर्य से निकटतम सूर्य है, उड़ानें कर सकना सम्भव हो सकेगा। इसके बाद हम ने कामेडी फ्रेंकेइज के प्लास्टिक वीडियो एनसेम्बुल की सूजेन पेरीकार्ड से बात की, यह एनसेम्बुल डायरेक्ट-परफार्मेंस एनसेम्बुल से कुछ अच्छा है, कितनी सुन्दर लडकी थी वह ! फिर हम ने निकोलाई निकोलेयविच से सम्पर्क किया जो ओमेगा परमाणु के पिता माने जाते है, और उनकी आकर्षक पत्नी गेलीमा से जिसने '९५ के भूकम्प के बाद सेन जैकोवो के विश्वविद्यालय की प्रसिद्ध भित्ती-चित्रो का पुनर्निर्माण किया था; बम्बई के मुखर्जीयो से—मुखर्जी ऊष्ण प्रदेशीय रोगो के बचाव के विशेषज्ञ थे, प्रसिद्ध दार्शनिक-द्वय प्रो० डा० शल्ज-सैयकिग तथा प्रो० डा० ओएगेन से । .. लेकिन मैं आपको पूरी लिस्ट सुना कर बोर नही करना चाहता । हमे आशा थी कि कुल मिला कर सारे ससार से हमारे यहाँ चालीस और पचास के बीच मेहमान आयेगे, और यदि किस्मत हमारा साथ दे गई, तो एक महाशय बाह्य अन्तरिक्ष से आयेगे हैनीबॉल टी० जानसान शनि नक्षत्र के चन्द्रमाओ पर उतरने की कारवाहियो का निर्देशन करने के बाद लौटते समय ।

खाने और पीने का—गर्टरूड ने खासा लम्बा-चौडा मेनू बनाया था—हम ने कम्यून कैटरिग सर्विस से इन्तज़ाम कराया था। हम ने उसे दो फार्मो मे भेजा था—नेचुरेल और एन पिल्यूल; हमेशा ही ऐसे लोग रहते है जो अपना खाना और पीना कुछ गोलियाँ निगल कर ही खत्म कर देना पसद करते है, और कभी-कभी ओ' कॉवर जैसे किसी पेटू से साबका भी पड़ जाता है, जो कागनैक की गोलियाँ असली बियर चेजर्स के साथ लेते है। ऐसे लोगो के लिये जो अपने यत्र लाना भूल जाये, हम ने कुछ तीव्रगतिमय विद्युत-चालित एक-सम-कालीन अनुवादक यन्त्र भी मँगा रखे थे—बिलकुल हाल का मॉडेल कोट के सीने वाले भाग के नीचे पहना जाता था और 'डिस्क्रीट जो' कहलाता था, क्योकि यहकिसी भी इच्छित भाषा का अनुवाद करता था, और साथ ही आप-ही-आप कडे अनुचित शब्द

नकालता चलता था। प्रसगवश, कुछ लोग इसे फायदे की बात नहीं समझते थे।

नौ वजे रात्रि तक, ग्रीनविच मीन टाइम आपको कोई न कोई सामान्य समय तो मानना ही होता है, जब बहुत-से समय रेखाओ से आपके यहाँ मेहमान आते है—लोग आने लगे। पहले आये वृद्ध गैलेस्ज। अब तक वे १३६ साल के हो चुके थे, तीन वार रूमानियाई कायाकल्प चिकित्सा करा चुके थे, नये वाल उगा चुके थे और अपनी आखिरी पत्नी को तलाक दे चुके थे। पहले के जनरल होने के कारण वह हमेशा वक्त के पावद रहते थे। मैने अपने हेली-जेट को धीरे से छत पर उतरते सुना, और एनकोमो दम्पति, जिनकी स्वचालित वच्चे वाली यान्त्रिक आया स्पष्टत ठीक हो गई थी, सीढियाँ उतर कर नीचे आये।

दस वजे तक स्थान भर गया, और हम हर व्यक्ति को वैठा भी नही सकते थे। मैं जानता था कि पूर्व तथा पश्चिम दोनो के ही सुरुचि सम्पन्न लोगो में हमारी पार्टियाँ लोकप्रिय थी—लेकिन यह नही जानता था, कि वे इतनी अधिक लोकप्रिय थी। कम-से-कम पचास व्यक्ति ऐसे थे, जो ऐन मौके पर आ गये थे, जसा उनका कहना था, या इसलिये कि उन्होने सोचा कि वे आमन्त्रित है, या इसलिये कि वह नव वर्ष की पूर्व-सध्या थी। एक ऐगरी एग मैन थे, जो पता चला कि गहरे समुद्र मे तेल का अन्यवेपक था, अधिक आवादी की समस्या पर खासा भाषण दे डाला—कैंसर समाप्त हो जाने, हृदय की मासपेशियो के नवीनीकरण और उस जहन्नुनी रुमानियाई कायाकल्प इलाज के कारण, लोगो को कोई वहाना ही नही मिलता मरने के लिये, और जीवन की सभी आवश्यकताओ की भरपूर तथा मुफ्त पूर्ति के कारण, जरा भी प्रोत्साहन मिलते ही वच्चो का जन्म हो जाता है। रेवेरेंड मालथस अपनी कब्र मे वेचैन हो उठते, यदि वे ससार की आम तौर पर और इस पार्टी की खास तौर पर भीड़भाड़ देख पाते।

लियो ने ऐंगरी एग मैन से पूछा, कि इस पृथ्वी पर बहुत-से लो· के होने मे क्या गडबड़ी है। जितने ही अधिक लोग होगे, जितने ही सृजनशील विचार होगे, उतना ही हमारा जीवन बेहतर बनेगा। हमारे महासागर काफी बडे थे और हाइड्रोजन सयोग काफी विकसित हो चुका था १९९९ की आबादी से सौगुनी, बल्कि हजारगुनी अधिक आबादी के पोषण के निमित्त शक्ति देने के लिये। आखिर उस युवक का सुझाव क्या था? क्या शताब्दी के पूर्वार्द्ध की नीतियो की ओर वापस जाना, जब संसार के राष्ट्रो का युद्धो के द्वारा खून बहाया जाता था? क्या लोग तब बेहतर ढग से जीवन-यापन करते थे? या बहुत से देशो मे लोग भूखो मरते थे, जब कि अन्य देशो मे थोड़े-से अमीर लोग उत्पादक क्षमताओ पर एकाधिकार किये हुये थे और उन्हे अवरुद्ध कर रहे थे?

ऐंगरी एग मैन मुनमुनाया, कि वह किसी चीज पर बहस नही करना चाहता, कि वह समुद्र की एकान्त गहराइयो से आया था, जहाँ प्लास्टिक वीडियो ही एकमात्र मनोरजन था। उस शाम को जो कुछ वह चाहता था, वह था केवल यथेष्ट उपयुक्त स्थान, ताकि वह पी वी की प्रेमिका, सुघड सूजेन पेरीकार्ड के प्रति अपनी भावनाएँ प्रकट कर सके; इसके अतिरिक्त कृपया मि० लियु हर चीज मे राजनीति न घुसाये, केवल इसलिये कि वह विश्व योजना अधिकार की सदस्यता के आवेदक है।

बुद्धिमान मि० लियु ने कोई उत्तर नही दिया। वह मेरी तरफ मुड गये और मेरे पूछने पर उन्होने बतलाया, कि सयुक्त राष्ट्र मडल की कार्यकारिणी समिति के विश्व योजना अधिकार मे चायनीज पीपुल्स रिपब्लिक को दी गई १८३ सीटो मे से एक उन्हे मिल सकती है।

लेकिन उस बहस ने किसी प्रकार हर व्यक्ति के दिमाग को गम्भीर विषयो की ओर मोड़ दिया था। - काल के जल-प्लावन मे शीघ्रता से निमग्न होती शताब्दी तथा आगे आने वाले समय का प्रसग छिड गया

था। प्रो० डॉ० शल्ज-सायकैगेन तथा प्रो० डॉ० शल्ज-ग्रोएनिगेन इस बात पर सहमत थे, कि इस शताब्दी के विगत दशकों की आश्चर्य-जनक प्रगति चालीसवें और पचासवें दशकों के वैज्ञानिक, तकनीकी तथा सामाजिक विकासों में मूलभूत है; लेकिन वे इस बात पर सहमत न हो सके कि इस अद्भुत दृष्टिगत अवस्था को क्या कहा जाय। शल्ज-साय-कैगेन का कहना था कि यह एक दूसरी औद्योगिक क्रान्ति है, वैसी ही जैसी १८वीं शताब्दी के अन्त तथा १९वीं शताब्दी के आरम्भ में हुई थी, जिसका मार्क्स ने 'डास कापिटल' में वर्णन किया है। लेकिन शल्ज-ग्रोएनिगेन कहते थे कि अधिक-से-अधिक यह तकनीकी क्रान्ति है; इस स्पष्ट कारण से कि मार्क्स ने पहली औद्योगिक क्रान्ति की चर्चा की ही नहीं, तो दूसरी कैसे हो सकती है ?

हम ने उन प्राध्यापकों को अपना विद्वत्तापूर्ण झगड़ा तै करने के लिए छोड़ दिया। उस चीज़ का नाम कुछ भी हो, कुछ वर्षों के अन्दर ही मनुष्य ने अपनी शक्तियाँ दस लाख गुना बढ़ा ली थीं, उसकी यांत्रिक विचार-क्रियाएँ मशीनें ही सम्पन्न कर देती थीं, उसके अपने विचारों की गति से दस लाख गुना अधिक गति से। साइबरनेटिक्स तथा न्यूक्लियर शक्तियों के संयोग ने अंतरिक्ष विजय संभव कर दिया था, और पचासवें दशक की मशीनें पुरानी पड़ गई थी।

लेकिन पुरानी तकनीकें जितनी पुरानी पड़ गई थीं, उतनी ही पुरानी पड़ गई थी पुरानी व्यवस्था। जब कि दस मिनट के मानवीय श्रम से पहले के दस घंटों में तैयार होने वाले सामान का दसगुना तैयार हो सकता है, तो मुक्त उद्यम को नाली में बह जाना ही पड़ेगा—हालाँकि उसे धक्का देने की जरूरत पड़ेगी। कुछ समय तक, कुछ पश्चिमी देशों में बालिग आबादी ६० तथा ८० प्रतिशत के बीच "अतिरिक्तांगी" रही थी। लोगों को दबाये रखने के लिए हर चीज का प्रयोग किया गया : प्रचार, रिश्वत, सामाजिक-गणतंत्र, बन्दूक। किसी से काम नहीं चला;

अन्त मे जनता स्वय समझदार हो गयी, विशेषकर इसलिये कि ससार के पूर्वीय भाग ने अपना गठन समझदारी के आधार पर कर लिया था, और सहज बुद्धि सब कीटाणुओ से अधिक सक्रामक है। जब अन्तिम राकफेलर ने कागज के एक पुरजे पर हस्ताक्षर कर के उसे पसोपेश के साथ एक सशस्त्र निश्चयबद्ध राष्ट्रीयकरण समिति को दे दिया, तो प्राचीन व्यवस्था हमेशा के लिये समाप्त हो गयी।

लेकिन तब हमे कितनी कठिनाइयो का सामना करना पडा पुरानी विचार-पद्धतियों के कारण।

बीसवी शताब्दी की उल्लेखनीय क्रान्तिकारी घटनाओ मे से—महान अक्तूबर क्रान्ति, स्तालिनग्राद का मोर्चा, चीन की आजादी, आसवान बाँध का निर्माण, सयुक्त राज्य अमेरिका का महान परिवर्तन—सब से दिलचस्प थी भूतकाल उन्मूलन युद्ध।

दो हजारवे वर्ष का प्रवेशीकरण कराने मे आज रात को जो लोग हमारे साथ सहयोग कर रहे थे, उनमे से कुछ ने उस युद्ध मे भाग लिया था। मुझे एक अन्तर्राष्ट्रीय विशाल सभा की याद है, जो ससार भर के सभी बडे नगरो मे एक ही समय पर आयोजित हुई थी। लगता था, कि मै आज भी शक्ति-लोलुपता, अधिकार-प्रलोभन, मानसिक सकीर्णता, आत्म-सराहना तथा प्रान्तीयता के विरुद्ध निकोलाई निकोलायविच चेरेकोव की गर्जनमय आवाज सुन रहा था। ये कुछ बुराइयाँ थी, जिनके विरुद्ध वह स्वय, मि० लियु, मुखर्जी तथा लाखो-लाख सर्वश्रेष्ठ अग्रदर्शी व्यक्ति इस पृथ्वी के सभी देशो मे उन वर्षो मे सघर्ष करते रहे थे।

वह युद्ध १९८९ से १९९२ तक चलता रहा। अकसर ऐसे समय आये, जब ऐसा लगता था कि इस सघर्ष का कोई सतोष-नक परिणाम न होगा। लेकिन जीवन के तथ्य प्रगति के पक्ष मे थे। जो लोग आणुविक शक्ति वाले वायुयानो मे उड रहे थे, वे पुराने ढग की शासन प्रणालियो के तसमो से बँधे नही रह सकते थे। १९८६ के बाद उपभोक्ता

सामग्रियों की इतनी बहुतायत हो गयी, कि जीवन की आवश्यक वस्तुएँ मुफ्त दी जाने लगीं। सम्पत्ति के प्रति नयी दृष्टि ने सामुदायिक जीवन के नये प्रकारों तथा नये नैतिक मूल्यों की माँग की। जनता की विचार-शैली तथा नैतिक मूल्यों को इस प्रकार पुनर्निर्मित करना था, कि वे उत्पादन की नयी सम्भावनाओं से मेल खा सकें. पुराने अहं को दूर कर देना था. ताकि मनुष्य की निम्मीन क्षमताएँ मुक्त हो जायें।

यह सब किया गया। मेरा ख्याल है. कि इस युद्ध की समाप्ति पर साम्यवाद के युग के द्वार पूरी तरह खुल गये। बेशक कुछ असाध्य व्यक्ति भी थे। उनके लिए हमने एक प्रतिबन्ध शिविर स्थापित किया। वह पामीर पर्वत पर एक बड़े से पठार पर स्थित है, उसी स्थान के निकट जहाँ घृणित हिम-मानव के अन्तिम प्रतिरूप पाये गये थे। एक अर्द्ध-प्रवाहक कृत्रिम जलवायु नियंत्रक ने प्रतिबन्ध शिविर को एक स्थायी फ्लोरिडा बना दिया है और वहाँ उसके निवासी अपने दिन व्यतीत कर रहे हैं, और न वे हमें तंग कर रहे हैं, और न हम उन्हें।

'क्या हम इस शताब्दी में अन्तिम बार उसे देख नहीं सकते? रथ एनकोमो ने कहा।

मैंने ऑल-परसप्र कम्यूनिकेटर को स्विच दबा कर चालू कर दिया। डायल के कुछ चक्कर, पूर्ण-दृष्टि बटन की एक खटक—और वह क्रिया-शील हो गया।

जनरल गैलेस्ट्र ने, जो पक्के सैनिक से बदल कर नम्र व्यवहार वाले. सभ्य कुछ सज्जन आसानी से नहीं बन पाये थे, अपनी घड़ी पर और फिर पर्दे पर दृष्टि डाली।

'आह—भूतकाल!" उन्होंने कहा—"बहुत उपयुक्त..."

मैंने ए० पी० सी० पर डायल जमाये। जैसे कोई कैमरा किसी वस्तु पर घूम कर स्थिर होता है, हम संगमरमर के खम्भों वाली एक इमारत

के करीव पहुँच गये—प्रतिवन्ध शिविर स्टाक एक्सचेज। पूँजी लगाने वालो और दलालो मे वड़ी उत्तेजना दिख रही थी। ऐसे उद्योगो के माल, जिनका वहुत पहले ही राष्ट्रीयकरण हो चुका था, बडी तेजी से खरीदे जा रहे थे, इतनी तेज़ी से कि टिकर काम सँभाल नही पा रहा था, ठीक वैसे ही जैसे शताब्दी के मध्य के आस-पास प्राच्य मूल्यो का पश्चिमी स्टाक एक्सचजो मे व्यापार हुआ था। फिर विक्रय की एक लहर आयी; किसी ने यह अफवाह फैला दी थी, कि कम्युनिस्ट लाल सुखाई मछलियो के ढेर लगा रहे है, वस, स्टाक एक्सचेज के नेता राज्य विभाग के नाम, जिसके अब भी अस्तित्व मे होने की वे मिथ्या कल्पना करते थे, एक विरोध पत्र तैयार करने लगे।

डायल के ज़रा से घुमाव ने आदरणीय सनिक अफ़सरो के एक दल को हमारे सामने ला दिया, जो वालू के एक ढेर के चारो ओर एकत्र थे और गम्भीरतापूर्वक अल्पाकार आणुविक राकेट वन्दूको से मीलो तक विस्तृत काल्पनिक क्षेत्रो पर निशाना साध रहे थे, इस बात पर झगड़ा उठ खड़ा हुआ, कि किसका सफाया पहले हुआ था, और आधे अफसरो ने अम्पायर को पीटने की हल्की कोशिश की, जिसने दूसरे आधे भाग के पक्ष मे फैसला दिया। अन्त मे हम ने एक विशाल कार्यालय भवन देखा। मैंने पारदर्शक खटका दबाया, ए० पी० सी० एक बड़े हाल की दीवारो मे घुस गयी, जिसमे वहुत सी मेजे लगी थी, उन पर बैठे आदमी कागज़ के बड़े-बड़े ढेर खिसका रहे थे, उन पर मुहर लगा रहे थे और उन्हे बगल की मेज़ पर खिसका दे रहे थे। एक रूखी दाढी और किचड़ाई आँखो वाले आदमी के हाथ मे एक बहुत बडी मुहर थी, जिसे रह-रह कर वह उठाता और किसी अभागे दस्तावेज़ पर पटाख़ से गिराता। मुहर पर केवल एक शब्द अकित था - वरबॉटेन(वर्जित)[1] उसके पीछे की पर आदमियो की एक खासी टोली थी, जो मुद्रित सामग्री की गेलियाँ पढ़ रहे थे। वे ऐसी पक्तियो पर निशान लगा देते थे जो आपत्तिजनक लगती थी, ऐसी पक्तियाँ काट देते जो अशास्त्र-सम्मत लगती थी, और

ऐसे शब्दों पर कैंची चला देते थे, जो उनके अफ़सराना दिमाग़ को खतरनाक लगते थे।

"इसे हटा दो!" गर्टरूड ने कहा। "भविष्य पर लगाओ!"

"भविष्य का दर्शन कराने वाला यंत्र अभी नहीं बना," मैंने कहा। "हो सकता है कि उसका आविष्कार करने की हम ज़हमत ही न उठाएँ—हमें उसकी ज़रूरत ही क्या है? भविष्य और यह कि वह कैसा होगा हमारे ऊपर निर्भर करता है—उसके निर्माता हम स्वयं हैं!"

मि० लियु ने अपना नाज़ुक हाथ ए० पी० सी० के मुख्य स्विच पर रख दिया। पामीर का पठार अदृश्य हो गया। सुनहरी मीनारों वाली एक ऊँची सुन्दर इमारत परदे के ऊपर आ गयी। घंटियाँ बजने लगीं।

हार्न बजे, और फिर खिलखिलाती, ख़ुशी से छलकती हँसी की आवाजें गूँजने लगीं—४२ वें एवेन्यू और ब्रॉडवे से आती, टीन ऐन मेन, लाल चौक, अंटर डेन लिंडेन, पिकैडेली सर्कस, चैम्प्स ईलीसीज़ से और हर जगह से आती हँसी की आवाज़ें।

"नया साल मुबारक!" डॉ० एनकोसो ने कहा।

"नयी सदी मुबारक!" निकोलाई निकोलायविच चेरेंकोव बोले।

"आनन्दमय हज़ार साल!" मि० लियु ने कहा।

दरवाज़ा भड़ से खुला। उसकी दहलीज़ पर लाल बालों और चौड़े कंधों वाले हैनीबॉल टी० जॉनसन, आँखों में मुस्कराहट लिये, खड़े थे। किसी ने उन्हें सोवियत शैम्पेन का एक गिलास थमा दिया।

"शनि ग्रह से अभिवादन!" जानसन ने ज़ोर से कहा। "हम ने वह यात्रा कर ली! रूसी, चीनी भारतवासी अमरीकी, अफ़्रीकी—हर देश के लोग हर भाषा वाले लोग—कैसी शानदार टीम थी वह!"